सोवियत संघ

तथ्य और आँकड़े

सोवियत
संघ
तथ्य और आंकड़े

सोवियत भूमि पुस्तिका
१९७४

USSR
FACTS AND FIGURES
HINDI (1974)



इस पुस्तिका में प्रकाशित सामग्री
नोवोस्ती प्रेस एजेंसी के सौजन्य से

सम्पादक	वाई० एम० व्लादीमिरोव
प्रबन्ध सम्पादक	ई० ए० रुम्यानसेव
सहायक सम्पादक	वेदप्रकाश चावला
कला निर्देशक	वी० आर्तामानोव

Price Rs 1.25 मूल्य १.२५ रु०

[illegible]

विषयसूची

शताब्दी के उत्तरार्ध मे प्रवेश

सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ का अर्धशती का इतिहास सोवियत समाजवादी राज्य के ढाचे के अन्तर्गत एक्यबद्ध सभी जातियों की अटूट एकता व मैत्री के विकास का इतिहास है। यह एक एसे राज्य की अभूतपूर्व उन्नति व चतुर्मुखी विकास का इतिहास है जिसका उदभव समाजवादी क्रांति के फलस्वरूप हुआ था और जो अब विश्व की महानतम शक्तियों मे से एक है। यह इतिहास सोवियत राज्य के झडे के नीचे सगठित सभी जनतन्त्रों, देश म बसन वाली सभी छोटी-बडी जातियों की प्रौढता की दिशा मे प्रगति, उनकी आर्थिक समद्धि, राजनीतिक प्रौढता और उच्च स्तर क सास्कृतिक विकास की उपलब्धि का इतिहास है।

१९७३ की पूर्ववेला म समस्त सोवियत जनता—मजदूर वग, सामूहिक किसानो और बुद्धिजीवियो न सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ के निर्माण की ५०वी वषगाठ मनायी। इस अवसर पर २१ २२ दिसम्बर १९७२ को सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत व रूसी सोवियत सघीय समाजवादी जनतन्त्र की सर्वोच्च सोवियत की एक सयुक्त सभा आयोजित की गई थी।

सोवियत स घ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव लियोनिद ब्रेझनेव ने "सोवियत समाजवादी जनतन्त्र स घ की ५०वी जयन्ती' शीषक रिपोट पश की। इस रिपोट म सोवियत सघ की जातीय नीति के सिद्धात और व्यवहार का सोवियत सघ म बसन वाली सभी कौमो और जातियो की अर्थव्यवस्था व सस्कृति के विकास से सम्बन्धित तथा मैत्री व बन्धुत्वपूर्ण एकता पर आधारित नये अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो क गठन से सम्बन्धित पार्टी और राज्य के क्रियाकलाप का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया। रिपोट मे सोवियत जनगण के सघ के अस्तित्व की आधी सदी के दौरान उनके अनुभव के अन्तर्राष्ट्रीय महत्व को परिलक्षित किया गया। क्रातिकारी आशावाद की भावना स ओतप्रोत लियोनिद ब्रेझनव की रिपोट मे २४वी काग्रेस के निणयों को कार्यान्वित करने म पार्टी व जनता ने महान काय के परिणामो का सार रूप म पश किया गया, फौरी समस्याओ का एक सजनात्मक विश्लेषण किया गया तथा कम्युनिज्म के निर्माण की दीघकालिक योजनाओ की रूपरेखा प्रस्तुत की गयी।

सभा म भाग लेने वाले तमाम व्यक्तियो ने ससार के जनगण के नाम सन्देश—मानवजाति के प्रथम समाजवादी राज्य को निर्मित करने वाली सौ से अधिक कौमो व जातियो के प्रतिनिधियो की ओर से विश्व की समग्र जनता के नाम शान्ति और मैत्री का सन्देश—सवसम्मति से स्वीकार किया।

जयन्ती समारोह पूरे देश म बहुत उत्साह स मनाये गये। यह विश्व के प्रथम

के युग म राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक निर्माण के बुनियादी सिद्धान्तों की घोषणा की गयी। पहले के जारशाही रूस के जनगण द्वारा क्रान्ति के दौरान सर्जित सभी सोवियत जनतन्त्रों मे सघीय एकता की एक सहज आकाक्षा विद्यमान थी। समाजवादी निर्माण का पथ अपना लेने के बाद व रूसी सोवियत सघीय समाजवादी जनतन्त्र के इर्द गिर्द अधिकाधिक घनिष्ठ रूप मे गोलबद होते गये जो एक प्रकार से सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ का आद्य रूप था। सोवियत सत्ता के प्रथम पचवर्षीय काल म कौमो और जातियो के बीच नये, समाजवादी सम्बन्धो तथा सहयोग के विकास के समृद्ध अनुभव सचित हुए।

मजदूरो और किसानो के बहुजातीय राज्य का निर्माण महान अक्तूबर क्रान्ति के ध्येय की देशव्यापी क्रान्तिकारी सुधारो की अगली कडी था। यह वस्तुगत एतिहासिक विकास स प्रेरित था। लेनिन ने गहन वैज्ञानिक विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध किया कि

सोवियत जनतन्त्रो की घनिष्ठतम एकता के बगर यह असम्भव है कि विश्व साम्राज्यवाद के मुकाबले उनके अस्तित्व की रक्षा की जा सके, समाजवादी जनतन्त्र सघ को सुरक्षित रखना और सुदृढ करना ऐसा कदम है जो "हमारे लिए जरूरी है तथा विश्व पूजीपति वर्ग के खिलाफ सघर्ष म और पूजीवादी कुचक्रो से अपनी रक्षा करने म विश्व कम्युनिस्ट सर्वहारा के लिए जरूरी है,"

सोवियत जनतन्त्रो की एकता और उनके घनिष्ठ आर्थिक सहयोग के बगर साम्राज्यवाद द्वारा विनष्ट उत्पादक शक्तियो का पुनरुद्धार करना आम योजना के अनुरूप नियमित एक समाजवादी अर्थतन्त्र की रचना करना, देश के समस्त जनगण के लाभ के लिए विवेकपूर्ण सामाजिक श्रम विभाजन और प्राकृतिक ससाधनो का कारगर इस्तेमाल सुनिश्चित बनाना असम्भव है,

सोवियत जनतन्त्रो की घनिष्ठ एकता के बगर मेहनतकश जनता के रहन सहन के स्तर की सतत वृद्धि देश की सभी कौमो और जातियो की सस्कृति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित बनाना असम्भव है।

इन तमाम परिस्थितियो का अनिवार्य तकाजा था कि सोवियत जनतन्त्र एक एसे सघ राज्य मे एकबद्ध हो जो बाह्य सुरक्षा आतरिक आर्थिक प्रगति, तथा जनगण के लिए राष्ट्रीय विकास की स्वतन्त्रता सुनिश्चित बनाने म सक्षम हो।

सघ के भीतर एकीकरण सम्बन्धी फसले सभी जनतन्त्रो की सोवियतो की काग्रेसो म लिये गये। ३० दिसम्बर, १९२२ को सोवियतो की प्रथम अखिल सघीय काग्रेस ने सर्वसम्मति स सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ के निर्माण सम्बन्धी एलान स्वीकार किया। इस काग्रेस ने अपना यह दृढ विश्वास व्यक्त किया कि अक्तूबर १९१७ म जनगण के जिस शान्तिपूर्ण सहजीवन और बिरादराना सहयोग की नीव डाली गयी, नया सघ राज्य उसे सम्मानजनक रूप मे फलीभूत करेगा।

सोवियत समाजवादी जनतन्त्र सघ म सोवियत जनतन्त्रो का स्वेच्छा से प्रवेश उनकी समाजवादी सम्प्रभुता का स्पष्ट प्रमाण और इसकी विश्वस्त गारटी था। सोवियत सघ के निर्माण स सम्बन्धित सधि, एक सघ राज्य के भीतर एकीकरण सम्बन्धी सधि रूसी

सोवियत संघीय समाजवादी जनतंत्र, उक्राइनी सोवियत समाजवादी जनतंत्र, बलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र और ट्रांसकाकेशियाई सोवियत संघीय समाजवादी जनतंत्र (जिसमें अजरबैजान, आर्मीनिया और जार्जिया शामिल थे) के बीच हुई थी।

समान जनगण के स्वैच्छिक राज्य संघ के लेनिन के सिद्धांत सोवियत संघ के प्रथम संविधान की आधारशिला के रूप में इस्तेमाल किये गये जिसे अन्त में ३१ जनवरी, १६२४ को सोवियतों की द्वितीय अखिल संघीय कांग्रेस ने अंतिम मंजूरी दी।

सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ के राष्ट्रीय राज्य के निर्माण को जारी रखने और सर्वांगपूर्ण बनाने के लिए अनुकूल सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां समाजवाद के निर्माण के दौरान क्रमशः सामने आयीं। १६२४ में तुर्कमान और उजबेक और १६२६ में ताजिक सोवियत समाजवादी जनतंत्र निर्मित हुए। १६३६ में कजाख और किर्गीज स्वायत्त जनतंत्र संघीय जनतंत्रों में तब्दील हुए। उसी वर्ष अजरबैजान, आर्मीनियाई और जार्जियाई सोवियत जनतंत्र, जिन्होंने इससे पहले ट्रांसकाकेशियाई सोवियत संघीय समाजवादी जनतंत्र निर्मित किया था, सीधे सोवियत संघ में प्रविष्ट हो गये। क्रांति द्वारा पुनर्जीवित कौमों के राजनीतिक विकास को स्वायत्त जनतंत्रों, स्वायत्त प्रदेशों और जातीय क्षेत्रों के निर्माण के रूप में भी अभिव्यक्ति मिली।

५ दिसम्बर १६३६ को स्वीकृत सोवियत संघ के संविधान ने समाजवाद की विजय पर, समाजवादी समाज के सामाजिक और राज्य संगठन की, सोवियत जनगण की एकता की आधारशिला पर वैधानिक मुहर लगा दी।

१६३६-४५ में उक्राइनी जनता का फिर से एकीकरण और १६३६ में बलोरूसी जनता का फिर से एकीकरण हमारे बहुजातीय समाजवादी राज्य के जीवन की उल्लेखनीय घटनाएं हैं। १६४० में लातविया, लिथुआनिया और एस्तोनिया की मेहनतकश जनता ने क्रांतिकारी संघर्ष के दौरान फिर से सोवियत राज्यत्व की स्थापना की। लातवियाई, लिथुआनियाई और एस्तोनियाई सोवियत जनतंत्र अपने जनगण की इच्छा की स्वतंत्र अभिव्यक्ति के आधार पर सोवियत संघ में शामिल हो गये। मोल्दावियाई जनता के फिर से एकीकृत हो जाने के फलस्वरूप मोल्दावियाई स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतंत्र एक संघ जनतंत्र बन गया।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध सोवियत संघ की शक्ति की एक कठोर अग्नि परीक्षा था। मानवजाति के सबसे खतरनाक दुश्मन—हिटलरी फासिज्म—के साथ टक्कर ने यह प्रमाणित कर दिया कि सोवियत जनगण एक संघ के भीतर अपनी शक्तियों को सम्मिलित करके ही अपनी आजादी और स्वतंत्रता की और अपनी क्रांतिकारी उपलब्धियों की रक्षा कर सकते हैं। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध में उनकी ऐतिहासिक विजय ने समाज और राज्य की समाजवादी व्यवस्था की नियामतों को सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ की महती शक्ति और स्थायित्व को साफ-साफ सिद्ध कर दिया।

आर्थिक पुनरुद्धार के युद्धांतर वर्षों में तथा बाद के कम्युनिस्ट निर्माण के काल में सोवियत संघ के जनगण के बीच लेनिनवादी मित्रता की उल्लेखनीय विशेषताएं—मातृभूमि के प्रति भक्ति निष्ठा अध्यवसाय और पारस्परिक सहायता—

आर भी उभर आयी। विश्व इतिहास म दसियो कौमो और जातियो के बीच एसे सम्बधो की हितो और लक्ष्यो की, इच्छा और कम की एसी अटूट एकता की ऐसे आत्मिक लगाव, विश्वास और आपसी सरोकार की दूसरी मिसाल नही मिलेगी जसी सोवियत जनतत्रो के बिरादराना सघ म सतत देखन म आती है।

आर्थिक सामाजिक राजनीतिक और सास्कृतिक विकास के स्तरो का बराबरी पर लाया जाना और कुल मिलाकर ऊचा उठाया जाना सोवियत स घ के सभी जनतत्रो की तेज और सर्वांगीण प्रगति का एक महत्वपूण उपादान था।

१९१७ की क्राति के समय मध्य एशिया व कजाखस्तान जस दूरवर्ती कौमी इलाको के आर्थिक विकास का स्तर बिलकुल औपनिवेशिक देशो के समान था। वहा की सामाजिक सरचना मूलत सामतवादी थी तथा निधनता, बीमारी व अज्ञानता से जनसख्या का अधिकाश भाग ग्रस्त था। मध्य एशिया की जनता का ९० से ९६ प्रतिशत भाग तथा कजखस्तान को जनता का ८२ प्रतिशत भाग अनपढ था। ट्रासकाकेशियाई व यहा तक कि बेलोरूस मे अनेक प्रदेश, जो देश के केद्र के अत्यधिक निकट थे, बहुत अधिक पिछडे हुए थे।

लेनिन की पहल पर पार्टी ने दूरवर्ती कौमी इलाको का आर्थिक, सास्कृतिक व सामाजिक राजनीतिक विकास तीव्रता स करने की लाइन अपनायी। एक समय म उत्पीडित इन कौमो व जातियो ने देश के अधिक उन्नत भागो विशेषत रूसी जनता व इसके मजदूर वग से व्यापक सहायता प्राप्त की है। ट्रासकाकेशिया के जनतत्रो मध्य एशिया व कजाखस्तान को मिली सहायता म उपहारस्वरूप अनेक फक्टरिया व सयत्र, औद्योगिक विकास व सिंचाई कार्यो के लिए धन, खाद्य सामग्री व तकनीकी सहायता शामिल थे। इन दूरवर्ती इलाको म सहायता करने के लिए अनक इजीनियर, तकनी-शियन हुनरमद मजदूर शिक्षक, चिकित्सक व सास्कृतिक कर्मी गये।

अनेक वर्षों तक सघीय जनतत्रो के बजट का व्यय मुख्यत अखिल सघीय बजट के आर्थिक अनुदानो स पूरा किया जाता था। गम्भीरतम भौतिक कठिनाइयो का सामना करने वाले जनतत्रो व क्षेत्रो के लोगो को कृषि व नागरिक करो से पूरी या आशिक छूट दी गयी। इसके साथ ही कृषि उत्पाद के क्रय मूल्यो को उस स्तर पर लाया गया जिसम पहल के पिछडे हुए क्षेत्रो के आर्थिक विकास को बढावा मिले।

देश के प्रयासो व ससाधनो को जुटा कर ही अल्पतम समय मे जारशाही की विरासत—आर्थिक व सास्कृतिक पिछडेपन—को समाप्त करना, देश का उद्योगीकरण व कृषि का समाजीकरण करना, वास्तविक सास्कृतिक क्राति सम्पन्न करना समाज-वाद का निमाण करना सोवियत सघ को एक उच्च रूप म विकसित शक्ति म परिवर्तित करना तथा कम्युनिस्ट समाज का निर्माण प्रारम्भ करना सम्भव हुआ।

इस काय ने सोवियत सघ म बसन वाली तमाम कौमो व जातियो की असीम रचनात्मक शक्ति व सजनात्मक पहल का उद्घाटित किया है। सोवियत सघ की अजेय प्रतिरक्षा प्रणाली देश के जनगण तथा उनके सजनात्मक श्रम के लिए सुरक्षा, स्वतन्त्रता व स्वाधीनता मुहैया करती है। १९७२ मे देश का कुल औद्योगिक उत्पादन १९२२ की

तुलना म ३२० गुना तथा द्वितीय विश्व युद्ध म जरा पहले जितना उत्पादन था उसकी तुलना म १४ गुना बढ गया। जारशाही रूस म जो दूरवर्ती इलाके कभी सामन्तवादी और अध सामन्तवादी थे, उनम अब औद्योगिक व सास्कृतिक केन्द्र बन चुके हैं तथा सब प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त नगर व गाव विद्यमान हैं।

सोवियत सघ के निर्माण के बाद से कजाखस्तान का औद्योगिक उत्पादन ६०० गुना, ताजिकिस्तान का ४०० गुना से अधिक, उजबेकिस्तान का लगभग २४० गुना और तुर्कमेनिया का १३० गुना से अधिक बढ गया है। कपास की कुल पैदावार म उजबेकिस्तान म १२० गुनी और तुर्कमेनिया म ६० गुनी वृद्धि हुई है। आज कजाखस्तान १९२२ की तुलना म लगभग ३० गुना अधिक अनाज उपजाता है। बलोरूस, मोल्दाविया, साइबेरिया व पहले के अन्य पिछडे हुए इलाको म बडे बडे परिवर्तन हुए हैं। पहले के दूरवर्ती कौमी इलाको ने अपनी आबादी के लिये बहुत समय पहले पूर्ण साक्षरता प्राप्त कर ली है, उनके अपने विश्वविद्यालय व विज्ञान अकादमिया हैं। उनके सास्कृतिक विकास का स्तर भी ऊचा है।

१९४० की तुलना मे प्रति व्यक्ति की वास्तविक आय म चार गुना स अधिक खुदरा व्यापार म सात गुना से अधिक, चिकित्सको की सख्या म ४७ गुना तथा उच्च और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त लोगो की सख्या म ६ ५ गुना वृद्धि हुई है।

पिछले ५० वर्षों म सामाजिक सम्बन्धो के क्षेत्र मे भी आमूल परिवर्तन हुए हैं। सोवियत सघ मे मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण बहुत पहले ही सदा के लिए समाप्त कर दिया गया है। आज सम्पूर्ण सोवियत जनता समाजवादी वर्गों और सामाजिक समूहो को लेकर गठित है। यह समान उद्देश्य और दृष्टिकोण के सूत्र म आबद्ध है। इसका लक्ष्य कम्युनिज्म है और मार्क्सवाद-लेनिनवाद इसके विश्व दृष्टिकोण का आधार है। समाज की मुख्य उत्पादक शक्ति और वर्तमान युग का सबसे प्रगतिशील वर्ग मजदूर वर्ग निजी सम्पत्ति वाली मनोवृत्ति छोड देने वाले सामूहिक फार्मों के किसान और कम्युनिस्ट निर्माण के ध्येय के प्रति अपना सम्पूर्ण सृजनात्मक प्रयास समर्पित करने वाले सोवियत बुद्धिजीवी स्पष्टत बदल गये है।

सभी जनतत्रो म सघ और स्वायत्त जनतत्रो म और सभी जातीय प्रदेशो व क्षेत्रो म मजदूर वर्ग के बडे-बडे समूह गठित हुए हैं। मजदूर वर्ग ही, जो अपने स्वरूप म सभी वर्गों म सबसे ज्यादा अतर्राष्ट्रीयतावादी वर्ग है, हमारे देश की सभी जातियो और कौमो को एक दूसरे के अधिक समीप लाने की प्रक्रिया म निर्णायक भूमिका निभाता है। सुगठित उत्पादन सामूहिको म एकताबद्ध सभी जातियो के मजदूर औद्योगिक प्रतिष्ठापन खडे कर रहे हैं, चाहे ये प्रतिष्ठापन जहा भी स्थापित किये जा रहे हो। ये मजदूर रेल लाइन तैयार कर रहे है, नहर बना रहे है तेल पाइपलाइन और विद्युत सम्प्रेषण लाइनें बिछा रहे हैं और इस प्रकार देश के विभिन्न हिस्सो को सघ और स्वायत्त जनतत्रो को प्रदेशो व क्षेत्रो को एक एकीकृत आर्थिक इकाई की कडी म पिरो रहे हैं।

सोवियत समाजवादी सस्कृति की उत्पत्ति हुई और यह फल फूल रही है। यह

सस्कृति भावना और बुनियादी मूल तत्व की दृष्टि से एकरूप है तथा इसमे प्रत्येक सोवियत जाति के जीवन और सस्कृति की अधिक मूल्यवान विशिष्टताए और परम्पराए समन्वित है। इसके साथ ही कोई भी सोवियत जातीय सस्कृति केवल अपने ही स्रोतो से बल नही प्राप्त करती, बल्कि अन्य बिरादराना जातियो की सम्पदा से भी बल प्राप्त करती है तथा दूसरी तरफ उन सस्कृतियो मे कुछ योगदान करती है तथा उन्हे समृद्ध बनाती है। यह प्रक्रिया एक नयी कम्युनिस्ट सस्कृति की आधारशिला रख रही है जो किसी भी प्रकार के राष्ट्रीय अवरोधो से मुक्त है तथा सभी मेहनतकश लोगो की समान रूप से सेवा करती है।

सोवियत सघ मे जातीय प्रश्न के सफल समाधान का एक महत्वपूर्ण परिणाम है सोवियत सघ की समस्त समाजवादी कौमो व जातियो की भाषाओ का सर्वांगीण विकास। ४० से अधिक ऐसे जनगण ने जिनके पास अतीत मे कोई लिपि नही थी सोवियत काल मे अपनी वर्णमाला तयार कर ली है और अब उनके पास सुविकसित साहित्यिक भाषाए है। सोवियत सघ की सभी कौमो व जातियो ने स्वेच्छा से रूसी भाषा को समान भाषा के रूप मे चयन किया है। यह सोवियत जनगण के सम्बन्ध और एकजुटता का एक शक्तिशाली अस्त्र, अपने देश और विश्व की सस्कृति की उत्कृष्टतम उपलब्धियो के साथ उनके साहचर्य का माध्यम बन गयी है। इसके अलावा रूसी भाषा अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धो मे व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है।

सोवियत जनता के प्रयासो का परिणाम सोवियत सघ मे एक विकसित समाजवादी समाज के निर्माण के रूप मे फलीभूत हुआ है। इस समाज के भीतर

अखिल सघीय अर्थतन्त्र ने—परस्पर सम्बद्ध राष्ट्रीय आर्थिक समुच्चय ने जिसमे जनतन्त्रो के राष्ट्रीय अर्थतन्त्र सम्मिलित है तथा पूरे देश और अलग अलग हर जनतन्त्र के हित मे एक ही राजकीय योजना के अनुरूप विकसित हो रहे हैं—विकास का उच्च स्तर हासिल कर लिया है,

वर्ग और जातीय विग्रह समाप्त किये जा चुके है। सम्पूर्ण समाज तथा अलग अलग हर कौम और जाति का सामाजिक ढाचा एकरूप है और मजदूर वर्ग, सामूहिक फार्म के किसान और मेहनतकश बुद्धिजीवी उसके अग है

जनवादी केन्द्रीयतावाद और समाजवादी सघवाद के सिद्धान्तो के आधार पर सघ राज्यत्व तथा जनतन्त्रो के राष्ट्रीय राज्यत्व की अटूट एकता के भीतर सोवियत सामाजिक जनवाद का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित हो गया है,

विज्ञान प्रविधि, सस्कृति के विकास मे सभी जातियो की मेहनतकश जनता की सक्रिय शिरकत के लिये आवश्यक अपेक्षाए निर्मित की जा चुकी हैं। समाजवादी कौमो और जातियो की सस्कृतियो के प्रस्फुटित होने, परस्पर निकट आने और एक-दूसरे को समृद्ध करने की प्रक्रिया सोवियत जनता के जीवन की स्वाभाविक घटना बन गयी है,

मार्क्सवाद लेनिनवाद की विचारधारा, समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तथा जनगण की मित्रता मजबूती से बद्धमूल हो गयी है तथा भौतिक और आत्मिक मूल्यो और कर्मचारियो का आदान प्रदान सघन रूप से चल रहा है। जनगण का एक-दूसरे

पर प्रभाव डालने और उनकी पूरी जीवन-पद्धति के अंतर्राष्ट्रीयकरण की प्रक्रिया अनेक रूपों में तेज हो रही है। हर जनतंत्र की मेहनतकश जनता एक बहुजातीय समूह है जिसके भीतर राष्ट्रीय विलक्षणताएं अंतर्राष्ट्रीय, समाजवादी, सामान्यतः सोवियत विशेषताओं और परम्पराओं के साथ अभिन्न रूप में समन्वित है।

समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण के वर्षों में सोवियत संघ में जनता के एक नये ऐतिहासिक समुदाय—सोवियत जनता—का उदभव हुआ है। इसका गठन उत्पादन के साधनों के सामाजिक स्वामित्व आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन की एकता मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारधारा, मजदूर वर्ग के हितों और कम्युनिस्ट आदर्शों के आधार पर हुआ है। सोवियत मानव में उल्लेखनीय विशेषताओं का विकास हुआ है जैसे कम्युनिज्म के ध्येय के प्रति निष्ठा, समाजवादी देशभक्ति और अन्तर्राष्ट्रीयतावाद उच्च स्तर की श्रम एवं सामाजिक-राजनीतिक क्रियाशीलता, शोषण और उत्पीडन तथा राष्ट्रीय और नस्ली पूर्वाग्रहों के प्रति असहिष्णुता। वह सभी देशों की मेहनतकश जनता के साथ वर्ग एकजुटता प्रदर्शित करता है। सच्चे अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों—कम्युनिज्म के लिए निष्ठापूर्वक लड़ने वालों—की पीढ़ियां सामने आयी हैं। सोवियत संघ में हर सोवियत इंसान के लिए सृजनात्मक अवसरों में और अधिक वृद्धि करने तथा व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के लिए आवश्यक भौतिक और बौद्धिक परिस्थितियां निर्मित हो चुकी हैं।

सोवियत बहुजातीय राज्य के निर्माण के अनुभव ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के इन निष्कर्षों की शानदार पुष्टि की है

कि जातीय प्रश्न का समाज के समाजवादी पुनर्निर्माण के आधार पर ही सुसंगत रूप से हल किया जा सकता है,

कि जहां रस्मी पूंजीवादी जनवाद जातीय समानता की बातें तो करता है मगर उसे कभी अमल में नहीं लाता वहां इसके विपरीत समाजवादी जनवाद जनगण के लिए समान अधिकारों और अवसरों की गारंटी करता है, जातीय समस्याओं के समाधान के लिए अनुकूल परिस्थितियां निर्मित करता है तथा इसमें विभिन्न जातियों की मेहनतकश जनता के समभूत हितों का ध्यान में रखता है

कि सोवियत देश की सभी कौमों और जातियों का घनिष्ठतम एकता में बंधना, सर्वतोमुखी तौर पर प्रस्फुटित होते जाना और लगातार निकट आते जाना हमारी व्यवस्था के स्वरूप के परिणाम हैं तथा समाजवादी विकास का एक वस्तुगत और अभिन्न नियम है

कि समाजवादी जनतंत्रों का संघ बहुजातीय राज्य का सरस जीवन्त और सर्वांगपूर्ण रूप है जो सम्पूर्ण समाज और अलग-अलग हर कौम के हितों का समरस समन्वय करता है।

सोवियत संघ के निर्माण और सफल विकास का अपार अंतर्राष्ट्रीय महत्व है सम्पूर्ण मानवजाति की सामाजिक प्रगति में एक प्रमुख मंजिल है। एक बहुजातीय ... राज्य की रचना करके, हमारे जनगण के मिल-जुले प्रयास से एक विकसित

समाजवादी समाज का निर्माण करके तथा अत्यन्त जटिल जातीय प्रश्न का समाधान करके सोवियत संघ ने जो अनुभव प्राप्त किया है उसे विश्व भर में मान्यता मिली है, तथा यह अनुभव सामाजिक और राष्ट्रीय मुक्ति के सभी योद्धाओं को अमूल्य सहायता प्रदान करता है।

आज विश्व समाजवादी व्यवस्था पूंजीवाद, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्पीड़न तथा नस्ली भेदभाव की व्यवस्था के विरोध में खड़ी है। समाजवादी अंतर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तों का सुसंगत कार्यान्वयन बिरादराना देशों के विशिष्ट और सामान्य हितों की अधिक से अधिक पूर्ति को सुनिश्चित बनाता है। नयी समाज व्यवस्था एक नये प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का सूत्रपात करती है। लगातार बढ़ते हुए राजनीतिक आर्थिक और सांस्कृतिक सम्पर्क, आर्थिक एकीकरण का विकास, अनुभव और ज्ञान का सक्रिय आदान-प्रदान तथा विदेश नीतियों में घनिष्ठ सहयोग समाजवादी देशों के संबंधों की उत्तरोत्तर विशेषता बनते जा रहे हैं।

आज समाजवाद की स्थिति पहले की अपेक्षा सशक्त है तथा शान्ति का ध्येय एक के बाद दूसरी विजय हासिल कर रहा है। समाजवादी समाज के विकास और कम्युनिज्म के निर्माण से सम्बन्धित समस्याओं के तीव्रतम व अत्यधिक प्रभावशाली समाधान के लिए समाजवादी देशों की एकता, सहयोग और पारस्परिक रूप से लाभप्रद कारवाइयों की आज आवश्यकता है तथा इनकी भविष्य में भी आवश्यकता पड़ेगी।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी अपना प्राथमिक कर्तव्य इस बात में निहित मानती है कि वह अन्य समाजवादी देशों के जनगण के साथ सोवियत जनता की घनिष्ठतर एकजुटता तथा मित्रता के सुदृढ़ीकरण के लिए, उनके बीच राजनीतिक, आर्थिक, वैचारिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के व्यापक विस्तार के लिए निरन्तर प्रयास करे।

सोवियत संघ विश्व के मामलों में एक ऐसी शक्ति है जो शान्ति और मैत्री की नीति का दृढ़ता से और सुसंगत रूप से पालन करती है, जनगण की समानता के लेनिनवादी सिद्धान्तों का निर्वाह करती है, उपनिवेशवाद, नव उपनिवेशवाद और नस्लवाद तथा हर प्रकार के राष्ट्रीय उत्पीड़न का दृढ़ता के साथ विरोध करती है। यह नीति साम्राज्यवाद और प्रतिक्रियावाद की आक्रामक रणनीति को विफल करने में एक महत्वपूर्ण उपादान, तथा विजय-युद्धों के खिलाफ सक्रिय संघर्ष का एक अस्त्र रही है। इसने सदा जनगण की सुरक्षा एवं स्वतंत्रता के लिए, सामाजिक प्रगति के लिए कार्य किया है।

साम्राज्यवाद के खिलाफ अपने संग्राम में उपनिवेशों और अर्ध उपनिवेशों के अनेक पराधीन जनगण ने राज्यत्व प्राप्त कर लिया है। इस संघर्ष में उन्होंने सोवियत संघ और समाजवादी समुदाय की सहायता का सहारा लिया है।

सोवियत संघ ने तरुण राष्ट्रीय राज्यों के साथ समानता, पारस्परिक सम्मान, आन्तरिक मामलों में अहस्तक्षेप पर आधारित, आम साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में व्यापक सहयोग पर आधारित सम्बन्ध कायम किये। सोवियत संघ साम्राज्यवाद से आर्थिक मुक्ति के लिए तथा सामाजिक प्रगति के लिए एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमरीका के जनगण के क्रांतिकारी आन्दोलन का सुसंगत रूप से समर्थन करता है।

सोवियत स घ उन देशभक्तो के साथ अन्तर्राष्ट्रीय एकजुटता की नीति अमल में लाता है जो बची खुची औपनिवेशिक व नस्लवादी हुकूमतो के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष चला रहे हैं।

सोवियत स घ भिन्न भिन्न समाज व्यवस्थाओं वाले राज्यो के बीच शातिपूर्ण सहजीवन के लेनिनवादी सिद्धात की निरन्तर रक्षा करता है जिससे तनाव शथिल्य मे, तथा शाति और अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा की हिफाजत करने मे आसानी होती है।

सोवियत स घ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने शाति और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए जनगण की स्वतत्रता और स्वाधीनता के लिए स घर्ष का जो रचनात्मक और यथार्थवादी कार्यक्रम प्रस्तुत किया वह सोवियत स घ म शामिल सभी समाजवादी जनतन्त्रो तथा सम्पूर्ण सोवियत जनता के मूलभूत राष्ट्रीय हितो के अनुरूप है, तथा विश्व म सवत्र उसे व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ है। सम्पूर्ण विश्व आज सोवियत स घ को कम्युनिस्ट निर्माण का देश,- जनगण की मैत्री का दुर्ग, अन्तर्राष्ट्रीय क्रातिकारी मुक्ति आदोलन का गढ मानता है।

हमारे समाज का तीव्रतम विकास लेनिनवादी विचारो की सर्जनात्मक एव गतिशील शक्ति उद्घाटित कर रहा है। जनता के विशाल भाग म इन विचारो के प्रति आकर्षण बढता जा रहा है। ये विचार दैनिक जीवन और कायकलाप का आधार हैं। ये सोवियत जनता को अनुप्राणित करते है और उसे नवीन शक्ति प्रदान करते है।

देश के आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक व सास्कृतिक विकास के लिए तथा कम्युनिज्म के भौतिक व तकनीकी आधार का सृजन करने के लिए सोवियत स घ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस द्वारा निर्धारित शानदार कार्यक्रम को सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया जा रहा है।

१९९० तक लिए सोवियत स घ के आर्थिक विकास की योजना जिसे अब तयार किया जा रहा है उत्पादन के स वर्धन तथा रहन सहन के प्रतिमानो की अधिक समुन्नति की नई सम्भावनाए उन्मुक्त कर रही है।

पार्टी की नीतियो का मूल लक्ष्य मेहनतकश जनता के भौतिक व सास्कृतिक स्तर को समुन्नत करना और उसकी प्रतिभाओ व योग्यताओ के सर्वांगीण विकास के लिए सभी आवश्यक स्थितियो का सृजन करना है।

'इस आधी सदी के दौरान जो रास्ता तय किया गया है" लियोनिद ब्रेझनेव ने अपनी रिपोर्ट सोवियत समाजवादी जनतन्त्र स घ की पचासवी जयन्ती म जोर देकर कहा वह हमम अपनी पार्टी, अपने राज्य और अपनी उत्कृष्ट जनता की शक्ति के प्रति अडिग विश्वास पैदा करता है। अतीत काल म हमारे समक्ष जो बाधाए उपस्थित हुई, वे समाजवाद की दिशा म हमारे विजयी अभियान को रोकने म असफल रही, तो आज जबकि सोवियत स घ इतनी ऊचाइयो पर पहुच चुका है, कोई भी और कोई चीज हमारा रास्ता नहीं रोक सकती। लेनिन की पार्टी ने अपने समक्ष जो लक्ष्य रखे है वे सब निश्चय ही पूरे होंगे।

देश और इसकी आबादी

सोवियत संघ का क्षेत्रफल २ करोड २४ लाख वर्ग किलोमीटर है जहा बसने वाली सौ से अधिक कौमों व जातियों की आबादी २५ करोड है।

स्थिति व सीमाए

भूमण्डल पर सबसे विशाल देश सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ (सोवियत सघ) का क्षेत्रफल २ करोड २४ लाख वर्ग किलोमीटर है जो कि हमारी पृथ्वी का छठा भाग है। यह यूरोप के आधे भाग तथा एशिया के एक तिहाई भाग पर फला हुआ है।

उत्तर से दक्षिण तक सोवियत सघ लगभग पाच हजार किलोमीटर म फला हुआ है। अन्तरीप चेल्युस्किन (७७°४५'एन) महाद्वीप का सुदूरतम उत्तरी सिरा होने के कारण फ्राज जोसेफलण्ट द्वीपसमूह (८१°५०'एन) मे रुदोल्फ द्वीप के छोर से लेकर दक्षिण मे तुर्कमेनिया (३५°०८'एन) के नगर कुश्का तक फला है। पश्चिम से पूव म कालिनिनग्राद (१९°३८'इ) नगर के निकट से लेकर बेरिंग स्ट्रेट (१६९°०२'डब्ल्यू) म रातमानोव द्वीप तक यह लगभग दस हजार किलोमीटर तक फला हुआ है। अन्तरीप देझनेव पूव म महाद्वीप का सुदूरतम बिंदु (१६९°४० डब्ल्यू) है। विश्व के चौबीस समय-क्षेत्रो म से ग्यारह समय क्षेत्र सोवियत सघ म पडते है। सुदूर पूव मे जिस समय नया दिन उदय होता है पश्चिम मे शाम होती है।

देश के उत्तर मे आर्कटिक महासागर व इसके सागर—बारेन्त्स, चुक्ची, पूर्वी साइबेरियाई कारा, लाप्तेव तथा श्वेत सागर हैं दक्षिण म कृष्ण, अजोव तथा कस्पियन सागर, पूव मे बेरिंग सागर जापान सागर तथा ओखोत्स्क सागर, पश्चिम म बाल्टिक सागर हैं।

सोवियत सघ की सीमाए बारह देशो—नार्वे, फिनलण्ड, पोलण्ट, चेकोस्लोवाकिया, हगेरी, रूमानिया, तुर्की, इरान, अफगानिस्तान, चीन, मगोलिया तथा कोरियाई लोक जनवादी जनतन्त्र—से मिलती हैं। ६०,००० किलोमीटर म भी अधिक सीमा म दो तिहाई तट-रेखा है।

भू-चित्रावलि

सोवियत सघ का वणन दक्षिण और पूव मे ऊपर की ओर उठते व उत्तर व पश्चिम म नीचे की ओर झुकते एक विशाल वत्ताकार रगशाला के रूप म किया जा सकता है। इसके विशाल मदान—पूव यूरोपीय, पश्चिमी साइबेरियाई तथा तुरान व केन्द्रीय साइबेरियाई पठार—दक्षिण व पूव म ऊची काकेशियाई पामीर तिएनशान, अल्ताई, सायान व सुदूर पूव की पवतमालाओ तक विस्तृत है। कारागिय दबाव म

(समुद्र स्तर से १३२ मीटर नीचे), कस्पियन सागर के पूर्वी तट पर भूमि सबसे नीची है। उत्तर व दक्षिण तक विस्तृत यूराल पर्वतमाला (सबसे ऊंचा बिन्दु १,८९५ मी०) सोवियत संघ के यूरोपीय व एशियाई भाग को विभाजित करती है। कामचत्का प्रायद्वीप पर कोई २० सक्रिय ज्वालामुखी हैं।

सबसे ऊंचे पर्वत
[मी० म]

शिखर कम्युनिज्म	७,४९५
पोवेदा शिखर	७,४३९
लेनिन शिखर	७,१३४
खान-तगरी	६,९९५
एल्ब्रुस	५,६३३
दिख तौ	५,१९८
काज़बेक	५,०४७

जलवायु

सुदूर उत्तर की ठण्डी ध्रुवीय जलवायु से लेकर दक्षिण में उपोष्णदेशीय जलवायु तक सोवियत संघ जैसे विशाल देश की जलवायु में अत्यधिक अन्तर है। यह क्रीमिया के दक्षिणी तट पर और मध्य एशिया के कुछ घाटियों में शुष्क है तथा काकेशियाई कृष्ण सागर के तट पर तथा ईरान की सीमा पर कस्पियन तट के दक्षिण पश्चिमी भाग में यह नमी युक्त है। फिर भी देश के अधिकांश भाग में महाद्वीपीय समशीतोष्ण जलवायु रहती है।

पश्चिम में जनवरी मास में औसत तापमान शून्य से भी नीचे रहता है। देश के यूरोपीय भाग के केन्द्रीय भागों में तापमान गिरकर १०° सें० यूराल में १६° सें० पश्चिमी साइबेरिया में २४° सें० और लेना नदी बेसिन में ४०° सें० होता है। उत्तरी गोलार्ध में शीत का न्यूनतम बिन्दु वाला स्थान आइम्याकोन का गांव (याकूतिया) है। यहां जनवरी मास का औसत तापमान शून्य से ५०° कम होता है और शून्य से ७२° नीचे तक पहुंच जाता है। जैसे जैसे यह प्रशान्त महासागर के निकट होता जाता है वैसे वैसे यह अधिक गर्म होता जाता है कामचत्का के पूर्वी किनारों पर साखालिन तथा दक्षिणी समुद्रवर्ती इलाके में जनवरी मास का तापमान – १०° सें० के आसपास होता है।

जुलाई में औसतन तापमान सुदूर उत्तर में +४° सें० से +१०° सें० तक, पूर्वी साइबेरिया में +१०° सें० से +१५° सें० तक तथा पश्चिमी साइबेरिया एवं रूस के यूरोपीय भाग में +१५° से +२०° सें० तक रहता है। मध्य एशिया में जो कि महासागर से सबसे अधिक दूरी पर स्थित है अत्यन्त गर्म व तप्त मौसम रहता है। मैदानों में जुलाई का औसत तापमान +३०° सें० रहता है और कभी-कभी तो यह के नगर के आसपास +५०° सें० तक पहुंच जाता है।

कृष्ण सागर के काकेशियाई तट पर बातुमी म और इसन चतुर्दिक पूर यूरोप मे बहुत भारी [प्रतिवष २,४०० मि० मी० तक] तथा मध्य एशिया के मध्य म कम से-कम [प्रतिवष १०० मि० मी०] हिमपात होता ह ।

नदिया व झीलें

सोवियत सघ म दस किलोमीटर से अधिक लम्बी डेढ लाख स ज्यादा नदिया है जिनकी कुल लम्बाई तीस लाख किलोमीटर है ।

प्रमुख नदिया
[लम्बाइ कि० मी० म]

आब	५४१०
आमूर	४४१६
लेना	४४००
यनिसी	४,०९२
वोल्गा	३,५३१
सीर दरया	२,९९१
आमू दरया	२ ६००
कोलीमा	२ ५१३
यूराल	२ ४२८
द्नीपर	२,२०१

देश म नौगम्य जलमाग ५,२०,००० कि० मी० स भी अधिक है जिनक लगभग ३० प्रतिशत भाग पर भारी यातायात चलता है। देश के यूरोपीय भाग की नदिया नहरो के एक जाल स जुडी हुई ह जा गहरे पानी में पोत परिवहन की व्यवस्था करती हैं तथा श्वत, बाल्टिक, कैस्पियन, कृष्ण और अजाव सागरो का मिलाती है ।

सोवियत सघ में पनबिजली के विशाल ससाधन ह जा कि विश्व के कुल ससाधना के ग्यारह प्रतिशत है। देश म पनबिजली के य ससाधन ६० प्रतिशत से अधिक साइबेरिया व सुदूर पूव में है।

सोवियत सघ में लगभग २ लाख ७० हजार झील है। य अधिकतर देश क यूरोपीय भाग के उत्तर पश्चिमी, दक्षिण पूर्वी इलाका में, पश्चिम साइबरिया म तथा पूर्वी साइबेरिया के उत्तरी भागो में भी हैं। इनमें स लगभग ३० हजार झीलो का क्षेत्रफल एक वग किलोमीटर से भी अधिक है।

सबस बडी झीले
[वग कि० मी० में क्षेत्रफल]

कैस्पियन सागर	३७१,०००
अराल सागर	६६,५००

ट्रैवाल	३१,५००
लादोगा	१८,४००
बालग्याश	१८,२००
आनगा	६,६१०
इस्सिक कुल	६,२८०

बकाल झील, प्रकृति का एक आश्चय, ससार की सबसे गहरी [१६२० मी०] झील है। विश्व के सतही ताजे पानी के स्रोतों में से अधिकतम शुद्ध जल के २० प्रतिशत स्रोत इस झील में है। वहा पाये जाने वाले अधिकतर १,८०० प्रकार से भी अधिक पौधे और जीव अद्वितीय है। बकाल बसिन मे खनिज पदार्थों के विशाल स्रोत है। वहा बहुमूल्य इमारती लकडी के विशाल क्षेत्र है।

देश में व्यापक रूप से पनबिजली के निर्माण के फलस्वरूप लाखो नये मानव निर्मित 'सागरो' का आविर्भाव हुआ है। सबसे बडे जलाशय है—वोल्गा के मध्यवर्ती क्षेत्र मे स्थित कुइबिशेव जलाशय [६ ५०० वग कि० मी० क्षेत्रफल में], अगारा स्थित ब्रात्स्क जलाशय, येनिसी स्थित क्रास्नोयार्स्क जलाशय तथा वोल्गा स्थित रिबिन्स्क जलाशय।

नौपरिवहन योग्य नदी नहरो का निर्माण तेजी से जारी है जिन्हें सिंचाई के लिए उपयोग में लाने की योजना भी है। मानव निर्मित मुख्य जलमार्ग है श्वेत सागर को आनगा झील से मिलाने वाली २२७ कि० मी० लम्बी श्वेत सागर-बाल्टिक नहर जो इस प्रकार लेनिनग्राद से श्वेत सागर के बीच की दूरी ४,००० कि० मी० कम कर देती है, मस्क्वा नदी को वोल्गा से मिलाने व सोवियत राजधानी की जल समस्या हल करने वाली १२८ कि० मी० लम्बी मास्को नहर, कृष्ण सागर को कैस्पियन से मिलाने वाला सबसे छोटा जलमार्ग—१०१ कि० मी० लम्बी वोल्गा दोन नहर, पाच सागरो को एक ही गहन जल प्रणाली में संयुक्त करने तथा बाल्टिक सागर से कृष्ण सागर तक यूरोप के चतुर्दिक सागर मार्ग की दूरी आधा करने वाली ३६१ कि० मी० लम्बी वोल्गा-बाल्टिक नहर। निर्माणाधीन उत्तर क्रीमियाई नहर दनीपर का पानी क्रीमिया की सूखी स्तेपियो तक पहुंचा ही रही है। पूरी होने पर यह नहर ४०० कि० मी० लम्बी होगी।

८५० कि० मी० लम्बी परिवहन योग्य काराकुम नहर आमू-दरया का पानी तुर्कमेनिया की राजधानी अश्खाबाद लाती है। पूरी होने पर यह नहर १,३०० कि० मी० तक पानी पहुंचाया करेगी (एक ओर तो यह दक्षिण म तुर्कमेनिया के उपोष्णकटिबन्धीय प्रदेशो से जुडी होगी तथा दूसरी ओर कैस्पियन तट पर क्रास्नोवोद्स्क नगर तक जा मिलेगी)। यह विश्व की सबसे बडी स्वप्रवाहित नौगम्य नहर होगी जो लाखो हेक्टर परती जमीन की सिंचाई करेगी तथा तेजी से विकसित होते हुए नये तेल व गैस क्षेत्रो में पानी पहुंचायेगी। यह कृष्ण सागर, बाल्टिक सागर तथा श्वेत सागर को जाने वाले वर्तमान जलमार्गों को जोडेगी और इस प्रकार मध्य एशिया से कैस्पियन तक भी एक जलमार्ग का काम देगी।

पौधे एव जीव-जन्तु

विश्व के वनो का पाचवा भाग सोवियत सघ मे है। य वन देश के एक तिहाई भाग अर्थात् ७५ लाख वग कि० मी० से भी अधिक क्षेत्र मे फले हुए हैं। कुल इमारती लकडी के समाधन अनुमानत ८० अरब घन मीटर है जिनम प्रतिवष लगभग ८० करोड घन मी० की वृद्धि हो रही है। यह वार्षिक वद्धि ही ससार के सभी दशा की इमारती लकडी की जरूरतो को पूरा करने के लिए पर्याप्त है।

सोवियत सघ म वन क्षेत्र पश्चिम में बाल्टिक स लेकर पूव मे प्रशात महासागर तक फला हुआ ह। उत्तर मे यह वय टुण्डा तथा दक्षिण में आशिक वय स्तपी भूमि म बदल जाता है।

सोवियत सघ म लगभग १७ हजार प्रकार के पौधे ह जिनमे उच्चतर पाधा की लगभग आधी परिचित किस्मे शामिल है।

पशु जगत विशेपतया विविध प्रकार का है। उत्तर मे सील की अनेक जातिया है, ध्रुवीय भालू दरियाई घाडे, भेडिय और ध्रुवीय लोमडी, एरमाइन सफेद खरगोश तथा रेडियर हैं। भूमण्डल पर अवशिष्ट तीन फर सीला के समूहा म स दा प्रशात म सोवियत द्वीपा पर पाय जाते है।

वन-क्षेत्र मे आम तौर पर पाये जान वाले जानवर ह भूरा और काला भालू बाबिलाव लोमडी, शीनवक सबूल गिलहरी, चिपमक, कोलिस्की, जगली सूअर चितराला, लाल हरिणी व मृगी। उसुरी ताइगा तथा सुदूर पूव म चीता व तेंदुआ पाया जाता है। दक्षिणी स्तेपियो व मरुस्थला मे खरगोश, बडा सारग साइगा जेरान मृग, स्तेपी अर्खार, हिरण, वाघ चीता तथा लकडबग्घा पाया जाता ह। काकेशस म लाल हिरण, मऊफ्लोन मृगी, अजमृग, पहाडी बकरी तथा बडे बडे सीगा वाली जगली बकरी पाय जाते है। मध्य एशिया के पवतीय इलाको म अर्खार पहाडी बकरी लाल भेडिया, एरमाइन, पेचदार सीग वाली पहाडी बकरी तथा हिम तेंदुए पाय जाते हैं। व्यापारिक दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूण फर वाले जानवर (गिल्हरी मस्कगत सेबल ध्रुवीय लोमडी और मिक) है। फर की माला, विविधता व मूल्य की दृष्टि से सोवियत सघ किसी देश स पीछे नही है। इन फरा को खरीदने के लिए सम्पूण विश्व के व्यापारी लनिनग्राद मे आयाजित होन वाली अन्तर्राष्ट्रीय फर नीलामी म वप म दा बार आत हैं।

सोवियत सघ की झीला, नदिया व सागरो म लगभग १५०० प्रकार की मछलिया पायी जाती हैं। इनम स २५० से अधिक जातिया मत्स्य उद्योग के लिए महत्वपूण है।

मछली पकडने म सोवियत सघ का विश्व म तीसरा स्थान है।

प्रकृति परिरक्षण स्थल

सोवियत सघ मे विभिन्न भौगालिक क्षेत्रा म स्थित तथा मुख्य पौधो व जीव-जन्तुआ की जातिया वाल लगभग ८० प्रकृति परिरक्षण स्थल है। वहा वज्ञानिक शाध-

काय किया जाता है। इनमे से सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिरक्षित स्थल ये है उत्तरी यूराल म पचोरा-इलिच (७,१४,३०० हेक्टर), वेलोरूस म वेलावोझेस्काया पुश्चा (७४,२०० हेक्टर), वोल्गा डेल्टा म अस्त्राखान परिरक्षण स्थल (४२,५०० हेक्टर), वकाल याल के पूर्वी किनारा व वारगुजिन पवतमाला पर वारगुजिन परिरक्षण (२,४८,२००हेक्टर), दक्षिणी यूराल की पूर्वी ढलाना पर इल्मेन परिरक्षण (३२,००० हेक्टर) तथा वारोनेज परिरक्षण (३०,८०० हेक्टर)।

खनिज ससाधन

खनिज सम्पदा म सोवियत सघ अतुलनीय है। यहा कोयल, कच्चे लाह, मैंगनीज, प्राकृतिक गैस, सीसा गिलट, कावाल्ट, टगस्टन, मोलिवडेनम, एण्टीमोनी, गधक, एपाटाइट, एस्बेस्टस तथा अय बहुत स खनिज पदार्थों के विश्व के सबसे बडे भण्डार है।

सावियत सघ मे कच्चे लोहे के कुल अन्वेषित भण्डार विश्व के ससाधना का ४० प्रतिशत से अधिक है। कच्चे लोह के लगभग दो तिहाई स्थल देश के यूरोपीय भाग म हैं जहा क्रिवोइरोग कच्चे धातु के क्षेत्र तथा कुर्स्क चुम्बकीय अपवाद स्थित है। पूर्वी क्षेत्रा म सबसे अधिक समृद्ध स्थल यूराल कजाखस्तान व पूर्वी साइवेरिया मे है।

सोवियत सघ मे सभी विदित धातुओ, जिनम सोना व यूरेनियम शामिल हैं, के ससाधन मौजूद है।

सोवियत सघ के तल भण्डार विश्व के ससाधना का एक महत्वपूण भाग है। किसी अन्य दश की अपेक्षा वहा अन्वेषित प्राकृतिक गस के ससाधन कहीं ज्यादा है—एक खरब ६० अरब घन मीटर से अधिक। सवसे बडे भण्डार तल वाले इन नौ प्रदेशा म स्थित है पश्चिम साइवरियाई वाल्गा यूराल, क्रीमियाई काकेशियाई, यूराल-एम्बा, पश्चिम तुर्कमान मध्य एशियाई द्नीपर दोनत्स, वाल्टिक, वार्पेथियाई तथा सुदूर पूर्वी प्रदेश।

दश म अधातु खनिज पदार्थों की व्यापक किस्म भी है। विश्व के फासफोराइटस मे आधे स अधिक तथा पोटाशियम लवणा के दो-तिहाई ससाधन इस दश म विद्यमान हैं। वस्तुत यहा सोडियम क्लोराइड (टवल साल्ट) के असीम ससाधन हैं। इसी प्रकार मिराबिलाइट मारल फ्लोर-स्पार, ग्रेनाइट, पोरफिरी लाइमस्टान, वोल्कनिक टफ ग्रेफाइट तथा गधक के असीम ससाधन है। वस्तुत पुराने समय स यह देश विश्व बाजार को अभ्रक सप्लाई कर रहा है। यह अपने पन्ना व रूबिया के लिए तथा मलकाइट जस्पर एव अय अर्ध-कीमती पत्थरा के लिए प्रसिद्ध है। यहा हीरा के भण्डार भी हैं।

प्रकृति सरक्षण तथा प्राकृतिक ससाधनो का विवेकपूर्ण उपयोग

आज की तजी मे हान वाली वज्ञानिक व प्राविधिक प्रगति के साथ-साथ सोवियत सघ म प्रकृति सरक्षण व प्राकृतिक ससाधना क विवेकपूर्ण उपयाग की समस्या पर सर्वाधिक ध्यान दिया जा रहा है।

सोवियत स घ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने प्रकृति स रक्षण के लिए नये महत्वपूण उपाय निर्धारित किय जिनकी झलक १६७१ ७५ के पचवर्षीय काल की राज्य की आर्थिक विकास योजना मे मिलती है। इसके अलावा सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत स घ की मन्त्रिपरिषद न हाल ही म कस्पियन तथा वोल्गा व यूराल नदिया की घाटियो की प्रदूषण से रक्षा के लिए, बैकाल झील के ससाधना के परिरक्षण व अधिक विवेकपूण उपयोग करने व अन्य सरक्षणात्मक उपाय किये जाने के लिए कुछ उपाया की स्वीकृति प्रदान की।

सोवियत स घ की सर्वोच्च सोवियत ने २० सितम्बर, १६७२ के एक निणय म प्राकृतिक स साधना के और अधिक विवकपूण नियोजन को सुनिश्चित बनाने के लिए अन्य स रक्षणात्मक उपायो को स्वीकृति प्रदान की। इस बात पर बल दते हुए कि वज्ञानिक और तकनीकी प्रगति प्रकृति व इसक स साधना के प्रति उत्तरदायित्वपूण और सुविचारित व्यवहार के साथ अवश्य समन्वित रहना चाहिए जिससे श्रम व अवकाश के लिए अनुकूल व स्वास्थ्यकर हालत प्रदान की जा सके इस निणय म भूमि और इसके स साधना, वनों जल, वनस्पति व जीव जन्तु के परिरक्षण और वायु प्रदूषण को रोकने से सम्बन्धित कानून का सख्ती स पालन करन की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद ने १० जनवरी, १६७३ के एक वक्तव्य म सघ जनतन्त्रो की कम्युनिस्ट पार्टियो की केन्द्रीय समितियो व मन्त्रिपरिषदो तथा मन्त्रालया व विभागा को प्रकृति सरक्षण की समस्याओ पर विशेष ध्यान देने, भूक्षरण को रोकने व सतही एव भूमिगत पानी के प्रदूषण का रोकन के काय पर असरदार नियन्त्रण स्थापित करन, वनस्पति व जीव जन्तुओ की रक्षा के प्रति व वायु प्रदूषण को रोकने के लिए विशेष ध्यान देन के लिये कहा। वक्तव्य मे निगत गसो के जहरील प्रभाव को कम करन व औद्योगिक अवशेषो से वायुमण्डल के प्रदूषण को रोकने के उपाय भी शामिल थे। यह हरित क्षेत्रो का विस्तार करने तथा प्रकृति सरक्षण सम्बन्धी ज्ञान का प्रसार करने एव देश की सम्पदा के विवक पूण उपयोग सम्बन्धी कदमो को भी निर्दिष्ट करता है।

इन उपाया के ठोस परिणाम सामन आ रहे हैं। औद्योगिक केन्द्रो म पानी व वायु के प्रदूषण के स्तर मे कमी हो गई है। मत्स्य ससाधनो तथा वना की रक्षा एव पुन आपूर्ति के लिए व इमारती लकडी और अन्य प्राकृतिक ससाधना का और अधिक विवकपूण उपयोग करने के लिए औद्योगिक अवशेषा के दुष्प्रभाव को समाप्त करन के लिए भू सुधार तथा देश के बहुत से वन्य पशुओ व पक्षियो की हिफाजत के लिए प्रभावशाली काय किया जा रहा है।

प्रकृति सरक्षण के क्षेत्र मे सोवियत सघ अन्यान्य देशो व अन्तर्राष्ट्रीय सगठना से सहयोग को विस्तत करने के लिए सक्रिय कदम उठा रहा है।

जनसख्या

२५ करोड । जनसख्या की दृष्टि से सोवियत सघ का विश्व मे चीन और भारत के बाद तीसरा स्थान है। १९१७ में, महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के समय वर्तमान सोवियत सघ के क्षेत्र में लगभग १६ करोड ३० लाख लोग बसते थे। नवोदित सोवियत जनतन्त्र के प्रारम्भिक वर्ष घोर कठिनाई के वर्ष थे। पूजीपतियो एव जमीदारो द्वारा शुरू किया गया गृह युद्ध, चौदह विदेशी राज्यो द्वारा हस्तक्षेप आर्थिक नाकेबदी और एक के बाद दूसरी कठिनाइयो—महामारी, अनेक क्षेत्रो म अकाल न जनसख्या म कमी की। १९२२ से, जबकि गृह युद्ध व हस्तक्षेप समाप्त हुआ, सोवियत सघ की आबादी मे निरन्तर वृद्धि हो रही है।

१९४१ म नाजी जर्मनी के सोवियत सघ पर आक्रमण के समय देश की आबादी १९ करोड ६० लाख पहुच चुकी थी। युद्ध के दौरान दो करोड सोवियत नागरिको ने अपने प्राणो की आहुति दी। १९५५ म सोवियत सघ की जनसख्या युद्ध पूर्व सख्या तक पहुच सकी।

१९७३ के मध्य मे सोवियत सघ की आबादी २५ करोड हो गयी। इस प्रकार युद्धो और इनके परिणामस्वरूप देश पर बीती अनेक कठिनाइयो के बावजूद सोवियत सघ की आबादी म आधी सदी से थोडे ही अधिक समय म ५० प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

स्वाभाविक विकास

कुल मिलाकर आबादी का स्वाभाविक विकास पर्याप्त रूप से उच्च स्तर (जनसख्या के प्रति हजार पर ९ ३) पर है। सोवियत समाज तथा राज्य विकास की दर म अभिवृद्धि करना चाहते हैं।

जीवनमानो मे सुस्पष्ट समुन्नति निःशुल्क सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओ, तमाम मेहनतकश जनता के लिए राज्य व्यवस्थित सामाजिक सुरक्षा प्रणाली न मिलकर क्राति पूर्व के समय की मृत्यु दर को तेजी स १/४ व शिशु मृत्यु दर को १/११ तक गिराने म योगदान दिया। इस काल म औसतन जीवन अवधि दुगुनी स भी अधिक हो गई है जो अब ७० वर्ष है।

सोवियत सघ म १९७२ म ७० वर्ष स अधिक आयु वाले एक करोड २० लाख से भी अधिक व्यक्ति थे ३ १८ ००० लोग ९० वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्ति थे तथा २०,००० व्यक्ति सौ साल से अधिक आयु के थे (आबादी के प्रति लाख पर आठ)। ज्यादा वृद्ध लोग अधिकतर काकेशस म रहते हैं। कई हजार अत्यधिक वृद्ध व्यक्ति उजबेकिस्तान म एक हजार से अधिक अजरबैजान म तथा १७० याकूतिया म रहते हैं। परन्तु सोवियत सघ के दूसरे भागो का भी अत्यधिक वृद्ध लोगो की सख्या म अपना अपना है।

पुरुषो और स्त्रियो का अनुपात

युद्ध के परिणामस्वरूप अभी तक स्त्रियो की सख्या पुरुषो की अपेक्षा अधिक है, युद्ध पूर्व की पुरुष जनसख्या तक पहुचने मे युद्ध के बाद बीस वर्षो का समय लगा।

अधिकतर देशो की तरह सोवियत सघ मे नवजात लडके लडकियो का परस्पर अनुपात लगभग १०६ १०० है।

वर्ष	कुल आबादी (वर्ष के आरम्भ मे, दस लाख मे)	सम्मिलित		कुल आबादी का प्रतिशत	
		पुरुष	स्त्रिया	पुरुष	स्त्रिया
१९१३	१५९ २	७९ १	८० १	४९ ७	५० ३
१९२२	१३६ १	[illegible]	[illegible]	४६ ७	५३ ३
१९४०	१९४ १	[illegible]	१०१ [illegible]	[illegible]	[illegible]
१९५९	२०८ ८	९४ ०	११४ ८	४५ ०	५५ ०
१९७०	२४१ ७	१११ ४	१३० ३	४६ १	[illegible]
१९७१	२४३ ९	११२ ४	१३१ ५	४६ १	५३ ९
१९७२	२४६ ८	[illegible]	[illegible]	४६ २	[illegible]
१९७३	२४८ ६	११५ ०	१३३ ६	४६ ३	५३ ७

आबादी का वितरण

विभिन्न क्षेत्रो मे आबादी की वृद्धि की दर मे भिन्नता है। उदाहरणार्थ देश के यूरोपीय भाग मे गत आधी शती मे जनसख्या की वृद्धि देश के एशियाई भाग की तीन-गुना वृद्धि की तुलना मे एक चौथाई हुई है। इसका सबसे पहला कारण तो आबादी का स्थानान्तरण है। दूसरा कारण युद्ध-जनित विनाश है जो यूरोपीय भाग मे कही अधिक हुआ था, तीसरा कारण जन्म-दरो मे अन्तर है।

रूसी सघ के कुछ क्षेत्र (औद्योगिक केन्द्र), उक्राइन, मोल्दाविया तथा उजबेकिस्तान यूरोपीय देशो की तरह घनी आबादी वाले हैं। परन्तु विशाल उत्तरी क्षेत्रो और कुछ पर्वतीय क्षेत्रो मे एक वर्ग कि० मी० मे एक व्यक्ति भी नही रहता है।

सम्पूर्ण सोवियत सघ मे एक वर्ग कि० मी० मे औसतन आबादी की सघनता ११ व्यक्ति है।

शहरीकरण

सोवियत सघ के आर्थिक व सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों की असीम प्रगति ने शहर व गाव के निवासियों के अनुपात म आमूल परिवर्तन कर दिया है। क्रान्ति से पहले आबादी के पाचवें भाग से भी कम लोग शहरो म रहते थ। किन्तु १९७२ म, आधी से भी अधिक आबादी—अर्थात ५९ प्रतिशत से अधिक—शहरो, कस्बो तथा शहरी किस्म की बस्तियो म रहती थी।

क्रान्ति से पहले देश म एक लाख से अधिक आबादी वाले २९ नगर थे, १९७२ के प्रारम्भ मे इनकी सख्या २२२ तक पहुच गई। १९५९ मे सोवियत सघ म दस लाख से अधिक आबादी वाले तीन नगर थे मास्को, लेनिनग्राद तथा कीएव। १९७२ तक अन्य नौ नगर इसम शामिल हो गये—ताशकन्द, बाकू खारकोव, गोर्की नोवोसाबिर्स्क कुइबिशेव, स्वेर्दलोव्स्क, मिन्स्क और ओदेस्सा।

आज सोवियत आबादी म शहरी निवासियो का अनुपात विश्व के औसत अनुपात से कही अधिक है तथा यूरोप के शहरी निवासियो के औसत अनुपात के लगभग समान है। ऐसी आशा है कि १९८० तक सोवियत जनता का दो तिहाई भाग शहरो म रहने लगेगा।

सामाजिक ढाचा

समाजवादी पुनर्निर्माण के परिणामस्वरूप समाज के वर्ग ढाचे म आमूल परिवर्तन हुआ है। सोवियत सघ म शोषक वर्ग—जमीदार वणिक व व्यापारी नही हैं। गाव के पूजीपतियो का यानी कुलको का जो भाडे के श्रम का शोषण करते थ आज कोई अस्तित्व नही है। आज किसान कृषि उत्पादन के बडे सहकारो—सामूहिक फार्मो म सगठित हो गये है।

	१९१३	१९२८	१९३९	१९५९	१९७२
कुल आबादी (जिसम काम न करने वाले आश्रित भी शामिल है)	१००	१००	१००	१००	१००
जिसम शामिल हैं फैक्टरी कर्मी और दफ्तर कर्मचारी	१७ ०	१७ ६	५० २	६८ ०	८० ०
जिसम कामगार	१४ ०	१२ ०	३२ ८	४८ २	५६ ८
सहकारो म सगठित सामूहिक किसान व शिल्पी	—	२ ६	४७ २	३१ ४	१९ ३
सहकारो म सगठित न होने वाले अलग-अलग किसान व शिल्पी	६६ ७	७४ ९	२ ६	० ३	—
पूजीपति जमींदार व्यापारी व कुलक	१६ ३	४ ६	—	—	—

आज सोवियत समाज मजदूर वर्ग, सामूहिक फार्म के किसानों तथा मेहनतकश बुद्धिजीवियों को लेकर गठित है। नये समाज की मुख्य उत्पादक शक्ति मजदूर वर्ग के प्रतिशत में निरन्तर वृद्धि हो रही है। जनता का शैक्षणिक स्तर जैसे जैसे ऊंचा होता जाता है वैसे वैसे बुद्धिजीवियों के अनुपात में वृद्धि होती जाती है। यह एक तर्कसंगत विकास है जो सोवियत समाज में अनिवार्य है।

जातीय संरचना

सोवियत संघ एक बहुजातीय राज्य है जिसमें सौ से अधिक बड़ी छोटी जातियां बसती हैं। ऐसी बड़ी जातियों के साथ साथ, जैसे रूसी (जिसकी संख्या १२ करोड़ ९० लाख है अथवा जो १९७० की जनगणना के अनुसार कुल आबादी का ५३ ४ प्रतिशत है) और उक्राइनी (४ करोड़ ७० लाख जनसंख्या का १७ प्रतिशत), अल्पसंख्यक जातियां भी मौजूद हैं जिनकी संख्या बहुत कम है जैसे ओरोची व नगानासानी जाति की आबादी लगभग एक हजार है और युकागीर जाति की आबादी केवल पांच सौ।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस में उल्लेख किया गया था कि सोवियत संघ में समाजवादी निर्माण के वर्षों में समाजवादी कौमों व जातियों की अटूट, सतत बढ़ती हुई सामाजिक राजनीतिक व विचारधारा की एकता एक नये ऐतिहासिक जन समुदाय के रूप में प्रतिफलित हुई है—वह है सोवियत जनता।

स्वतत्र व समान जनतत्रो का सघ

सोवियत जनतत्रो की आर्थिक, सामाजिक राजनीतिक एव सांस्कृतिक क्षत्रों म द्रुत प्रगति केवल उनकी एकता एव पारस्परिक सहायता से ही सम्भव हुई है।

सोवियत सघ १५ समान प्रभुसत्तासम्पन्न जनतत्रा—रूसी सोवियत सघीय समाजवादी जनतत्र तथा उक्राइन, कजाख, उजबेक, बलोरूसी, जार्जियाइ, अजरबजान, मोल्दावियाई लिथुआनियाई, किर्गीज, ताजिक लातवियाई, आर्मीनियाई, तुर्कमान तथा एस्तोनियाइ सोवियत समाजवादी जनतत्रा का एक स्वच्छिक, सघीय सघ है।

रूसी सोवियत सघीय समाजवादी जनतत्र

यह जनतत्र ७ नवम्बर १९१७ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल १ करोड़ ७० लाख ७५ हजार ४ सौ वग कि०मी० तथा जनसख्या १३ करोड २२ लाख है। इसम बसने वाली ६० से अधिक जातियो मे रूसी (८३ प्रतिशत), तातार (३ ७ प्रतिशत), उक्राइनी (२ ६ प्रतिशत) तथा चुवाश (१ ३ प्रतिशत) शामिल है। इसके अन्तगत १६ स्वायत्त जनतत्र (बश्कीर बुर्यात, दाघेस्तान, कबारदिनो-बल्कार, काल्मिक कारेल्यिन, कोमी, मारी, मोदविनियन उत्तरी आस्सेतियन, तातार, तुविन उदमुत, चेचेनो इगुश चुवाश तथा याकूत), पाच स्वायत्त क्षेत्र—अदिगे, गार्नो-अल्ताई, जेविश, काराचाएवो चेकस्स व खाकस्स, तथा दस जातीय क्षेत्र—अगिस्की बुर्यात, कोमी पेमयाक कोयक, नेनेत्स ताइमीर उस्त-ओर्दीस्की बुर्यात, खाती मासी चुकोत, एवेंकी व यामाला-नेनेत्स शामिल हैं।

इसकी राजधानी मास्को की आबादी ७४ लाख है। इसके अन्य बड नगर हैं—लेनिनग्राद (४१ लाख), गोर्की (१२ लाख), नोवोसीबिर्स्क (१२ लाख), कुइबीशेव (११ लाख), स्वेर्दलोव्स्क (११ लाख), कजान (६,१६,०००) चल्याबिस्क (६,२८ ०००), पम (६,०१,०००), ओम्स्क (६,०५ ०००), वोल्गोग्राद (८,६६ ०००), रोस्तोव-आन दोन (८ ४५ ०००), उफा (८,४४,०००) सारातोव (८,०४ ०००), वोरोनेझ (७,१३,०००) क्रास्नोयास्क (७ ०७ ०००), यारोस्लाव्ल (५,८६ ०००) तथा नोवाकुज्नेत्स्क (५ १३,०००)।

जनतत्र म पाय जाने वाले खनिज ससाधना म कोयला, तल, गस, पीट, एपाटाइट फासफोराइट्स, पोटाशियम लवण कच्चा लोहा सोना, हीरे, दुलभ धातु तावा, सीसा जस्ता व टिन, तथा अल्युमिनियम उद्योग के लिए कच्चा माल, मैंगनीज, [illegible] और चादी शामिल हैं।

जनतत्र की अर्थव्यवस्था मे ईंधन बिजली, रासायनिक, इजीनियरिंग, इमारती लकडी व कपडा उद्योगो एव लौह तथा अलौह धातुकर्म का महत्वपूर्ण स्थान है। १९७२ के उत्पादन मे ३२ करोड १० लाख टन तेल ३५ करोड ६० लाख टन कोयला, ६० अरब ४० करोड घन मीटर प्राकृतिक गैस, ५ खरब ३६ अरब किलोवाट घटे बिजली, ४ करोड ५० लाख टन कच्चा लोहा, ६ करोड ९२ लाख टन इस्पात ११ ७७,००० मोटरगाडिया २ ३० ००० ट्रैक्टर ५ अरब १२ करोड ७० लाख वर्ग मीटर सूती वस्त्र ४९ करोड वर्ग मीटर ऊनी वस्त्र ५८ करोड ४० लाख वर्ग मीटर लिनेन वस्त्र तथा ८४ करोड ६० लाख वर्ग मीटर रेशमी वस्त्र शामिल हैं।

कृषि का समुचित विकास हुआ है और इसकी अनेक शाखाए है। यहा १३,४१५ सामूहिक फार्म, ३२० मछली पकडने वाले सहकार तथा ८ ८९७ राज्य फार्म है जिनमे १९७२ मे अनाज की कुल पदावार ९ करोड १४ लाख टन सूरजमुखी के बीज की पैदावार २१ लाख टन आलू की उपज ३ करोड ४५ लाख टन तथा चुकन्दर की उपज १ करोड ५७ लाख टन हुई थी। इसके साथ साथ पशुपालन के क्षेत्र मे कुल पशुओ के आकडे इस प्रकार है—५ करोड ३७ लाख एस जानवर जो दूध और मास देते है, ३ करोड २७ लाख सूअर, ६ करोड ६२ लाख भेडें और बकरिया। ७० लाख टन मास ४ करोड ४४ लाख टन दूध, २८ अरब ४० करोड अण्डे तथा २ लाख १३ हजार टन ऊन १९७२ के उत्पादन मे शामिल है।

१९७२ मे वहा आबादी के प्रति दस हजार के लिए ३० डाक्टर व ११५ अस्पताली बिस्तर थे। १९७२ मे सामान्य शिक्षा के १,०१,००० विद्यालयो मे २ करोड ४९ लाख विद्यार्थी पढते थे। उच्चतर शिक्षा के ४६२ सस्थानो मे विद्यार्थियो की कुल सख्या २७ लाख अथवा प्रत्येक दस हजार पर २०४ थी तथा २,४५० विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थानो मे विद्यार्थियो की सख्या २६ लाख अथवा प्रति दस हजार पर १९७ थी। जनतत्र मे ६२ ००० सार्वजनिक पुस्तकालय, ८०,००० क्लब, ३१२ थियेटर व ९५,००० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें है। प्रतिवर्ष ५५ ००० से अधिक पुस्तके १२० करोड की सख्या मे प्रकाशित होती है। वहा ४,१२५ पत्र पत्रिकायें तथा ४,२२३ समाचारपत्र प्रकाशित होते है जिनकी क्रमश १२ करोड ५० लाख तथा ९ करोड ७० लाख प्रतिया वितरित होती है।

उक्राइन सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतत्र २५ दिसम्बर, १९१७ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ६,०३,७०० वर्ग कि०मी० तथा जनसख्या ४ करोड ८२ लाख है। इसकी आबादी मे उक्राइनी (७५%), रूसी (१९ ४%), यहूदी (१ ९%), बेलोरूसी, पोल, माल्दावियाई, बुल्गेरियाई हगरियाई आदि भी शामिल हैं। इसकी राजधानी कीएव की आबादी १८ लाख २७ हजार है। इसके अन्य बडे नगरो मे खारकोव (१३ लाख), ओदेस्सा (१०,००,०००), दोनत्स्क (९,१९,०००), दनेप्रोपेत्रोव्स्क (९,२३,०००) जापोरोझिये (७,१४ ०००), क्रिवोय रोग (६,०९,०००), और ल्वोव (५,९४,०००) है।

उक्राइन जनतंत्र में कच्चा लोहा, मैंगनीज, कोयला, गंधक, प्राकृतिक गैस, खनिज नमक तथा पोटाशियम लवण पाया जाता है।

खनन और निर्माण उद्योगों एवं कृषि की अनेक शाखाओं का एक लाभप्रद ढांचा इसके अर्थतंत्र की विशेषता है। यह जनतंत्र चीनी का प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता है (५५ लाख टन) तथा कोयले व धातु और इंजीनियरी के सामान का एक मुख्य उत्पादक है।

यहां १९७२ में २१ करोड़ १० लाख टन कोयला, १ करोड़ ४५ लाख टन तेल, ६७ अरब २० करोड़ घन मीटर प्राकृतिक गैस, १२ करोड़ टन कच्चे लोहे, १ खरब ५८ अरब कि० वा० घंटे बिजली, ४ करोड़ ३१ लाख टन ढलवां लोहा, ४ करोड़ ६२ लाख टन इस्पात, १ २८,८०० मोटरगाड़ियां और १,२५,००० ट्रैक्टरों का उत्पादन हुआ था।

जनतंत्र में ८,९८१ सामूहिक फार्म, ६६ मछली पकड़ने वाले सहकार तथा १,६१५ राज्य फार्म हैं। १९७२ में जनतंत्र में २ करोड़ २७ लाख सींगों वाले पशु, ९ करोड़ ६६ लाख सूअर और ९१ लाख भेड़ें व बकरियां थीं। १९७२ में जनतंत्र के राज्य व सामूहिक फार्मों में ३ करोड़ २६ लाख टन अनाज, २ करोड़ २० लाख टन आलू, १ लाख १२ हजार टन पटसन, ४ करोड़ ६० लाख टन चुकन्दर, २४ लाख टन सूरजमुखी के बीज का उत्पादन हुआ, ५७ लाख टन सब्जी की पैदावार हुई तथा ३२ लाख टन मांस, १ करोड़ ६४ लाख टन दूध, १० अरब ४० करोड़ अण्डे व २६,००० टन ऊन का उत्पादन हुआ।

जनतंत्र की आबादी के प्रति दस हजार के लिए २६ डाक्टर व ११० अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ में सामान्य शिक्षा के २६,३०० विद्यालयों में ८४ लाख विद्यार्थी पढ़ते थे। उच्चतर शिक्षा के १३८ संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या ८,०३,००० अर्थात प्रति दस हजार पर १६६ थी तथा ७५५ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में ७,९२,००० अर्थात प्रति दस हजार पर १६४ थी। जनतंत्र में २७,५०० सार्वजनिक पुस्तकालय, २६,००० क्लब, ७१ थियेटर व २६,००० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट हैं। प्रत्येक वर्ष ८,००० से अधिक पुस्तकों की १२ करोड़ ७० लाख प्रतियां प्रकाशित होती हैं। ४९६ पत्र पत्रिकाओं व २,०६१ समाचारपत्रों की क्रमशः १ करोड़ व २ करोड़ १० लाख प्रतियां वितरित होती हैं।

बेलोरूसी सोवियत समाजवादी जनतंत्र

यह जनतंत्र १ जनवरी १९१९ को गठित हुआ था। इसका क्षेत्रफल २,०७,६०० वर्ग कि० मी० तथा जनसंख्या ९२ लाख है जिसमें बेलोरूसी (८१%) रूसी (१०.४%) पोल (४.३%) उक्राइनी (२.१%) तथा यहूदी (१.६%) हैं। इसकी राजधानी मिन्स्क है (जिसकी आबादी १० लाख ३८ हजार है)।

पोटाश खनिज नमक पोटाशियम लवण और फास्फोराइट्स तथा भवन निर्माण की सामग्री में बेलोरूस समृद्ध है। कोयले, भूरे कोयले तथा स्लेटी पत्थर के संसाधनों का सर्वेक्षण किया गया है।

जनतंत्र की राष्ट्रीय आय का ६० प्रतिशत उद्योग से प्राप्त होता है जिसमे इंजीनियरिंग व धातु निर्माण उद्योग का मुख्य स्थान है। १६७२ मे उत्पादित सामान मे हैवी ड्यूटी लारियां (३२,०००) ट्रैक्टर (८२,०००), आलू खोदने की मशीनें (२८ ०००) मशीनी औजार (३० ०००) साइ्रगा काटने के कम्बाइन (३७,१००) खनिज उर्वरक (८१ लाख टन) मोटरसाइकिल (१ लाख ६२ हजार) लिनेन वस्त्र (७ करोड ५४ लाख वर्ग मी०) तथा १४ करोड रूबल के मूल्य के विभिन्न औजार, स्वचालन उपकरण एव कम्प्यूटर शामिल हैं।

जनतंत्र मे २ १७४ सामूहिक और ८३४ राज्य फार्म है जिनमे १६७२ में ४६ लाख टन अनाज १,०७ ००० टन पटसन १४ लाख टन चुकन्दर १ करोड २६ लाख टन आलू व ८ ४६ ००० टन सब्जियों की पैदावार हुई थी। मास और दुग्ध उद्योग भी पूरी तरह विकसित है। यहा ५८ लाख सींग वाले पशु है और चालीस लाख से अधिक सूअर हैं। जलग्रस्त भूमि—जो सम्पूर्ण क्षेत्र का लगभग एक तिहाई भाग है—का पुनरुद्धार कृषि की दृष्टि से अत्यन्त संभावनापूर्ण है। अब तक १७,११ ७०० हेक्टर दलदल भूमि से पानी निकाला जा चुका है।

जनतंत्र मे आबादी के प्रति दस हजार के लिए २७ डाक्टर व १०७ अस्पताली बिस्तर हैं। १६७२ मे जनतंत्र के सामान्य शिक्षा के १०,७८३ विद्यालयों मे १६ लाख विद्यार्थी पढ़ते थे। उच्च शिक्षा के २८ संस्थानों मे विद्यार्थियों की कुल संख्या १ ४६ ००० अर्थात आबादी के प्रति दस हजार पर १४५ थी, तथा १३० विशेषीकृत माध्यमिक विद्यालयों मे विद्यार्थियों की संख्या १ ५१,००० अर्थात आबादी के प्रति दस हजार पर १६४ थी। जनतंत्र मे ७ २०० सार्वजनिक पुस्तकालय लगभग ६ ००० क्लब १४ थियेटर तथा ६,७०० फिल्म प्रोजेक्टर है। प्रत्येक वर्ष २ ६०० पुस्तकों की २ करोड ६० लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित होती हैं। १११ पत्र पत्रिकाओं व १६८ समाचार-पत्रों की क्रमश: १६ लाख प्रतियां प्रकाशित तथा ४० लाख से अधिक प्रतियां वितरित होती हैं।

उजबेक सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतंत्र २७ अक्तूबर, १६२४ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ४,४७,४०० वर्ग कि० मी० तथा जनसंख्या एक करोड २६ लाख है जिसमे उजबेक (६४ ७%), रूसी (१२ ५%), तातार (४ ८%), कजाख (४ ६%) ताजिक (३ ८%), कारा-काल्पाक (१ ६%), कोरियाई (१ ३%) तथा उक्राइनी (१%) हैं। इसमे कारा-काल्पाकियाई स्वायत्त जनतंत्र सम्मिलित है। इसकी राजधानी ताशकंद है (जिसकी आबादी १५ लाख ८ हजार है)।

उजबेकिस्तान मे पाये जाने वाले खनिज पदार्थों मे तेल, गैस, तांबा, बहुधातु, सोना, बौक्साइट, केओलिन मिट्टी, कोयला, जिप्सम, संगमरमर, खनिज व पोटाशियम लवण, गंधक, कांच के उत्पादन के लिए प्रयोग होने वाली रेत तथा सीमेंट बनाने के लिये कच्चा माल हैं। जनतंत्र मे खनिज युक्त चश्मे व स्वास्थ्य लाभ पहुंचाने वाले कीच

भी हैं। वहा ऐसे पर्वतीय झरने हैं जिनमे बिजली पैदा करने की विशाल शक्ति है जबकि नदिया व अराल सागर व्यापारिक महत्व की मछलियो से भरे पडे हैं।

इसके अलावा एक प्रमुख औद्योगिक केन्द्र होने के कारण यह जनतत्र सोवियत सघ का कपास का प्रमुख आपूर्तिकर्त्ता है। १६७२ म जनतत्र म २३ अरब ५० करोड कि० वा० घटे बिजली १४,२१ ६०० टन तेल, ३३ अरब ७० करोड घन मीटर प्राकृतिक गैस ३६,० ■ ००० टन कोयला, ३,६६,३०० टन इस्पात, ३,४६,२०० टन बेलित इस्पात, ४६,२२,००० टन खनिज उवरक, हजारो ट्रैक्टरो, कपास चुनने वाली कम्बाइनो ग्रेनो व एक्सकैवेटरो का उत्पादन हुआ।

जनतत्र मे १०४२ सामूहिक फाम, ६ मछली पकडने वाले सहकार तथा ३२२ राज्य फाम है। २८ लाख हेक्टर से अधिक भूमि की सिचाई की जाती है। कपास प्रमुख शाखा है। १६७२ मे ४७ लाख टन अपरिष्कृत कपास पैदा की गई। १६७२ म लगभग ६,६०,००० टन अनाज का उत्पादन हुआ। जनतत्र म सिल्क चावल, फलो अगूर, तम्बाकू सब्जियो व तरबूजो की पैदावार है। पशु पालन के क्षेत्र म काराकुल भेडो का प्राधान्य है। ८० लाख भेडो व बकरियो का एक रेवड पूरे साल चरागाहो मे चरता है। वहा मास और दूध देने वाले पशुओ (३० लाख), सूअरो (३,४०,०००) के विशाल झुड मौजूद है तथा मुर्गी पालन भी प्रचुर रूप मे होता है।

जनतत्र म आबादी के प्रति दस हजार के लिए २२ डाक्टर व १०० अस्पताली बिस्तर हैं। १६७२ म सामान्य शिक्षा के ६,३५३ विद्यालयो मे कुल ३५ लाख विद्यार्थी पढते थे। उच्चतर शिक्षा के ३८ सस्थानो म विद्यार्थियो की सख्या २,३१,००० अर्थात प्रत्येक दस हजार पर १७६ थी, तथा १६५ से अधिक विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थानो म विद्यार्थियो की सख्या १,७१,००० अर्थात प्रति दस हजार पर १३२ थी। वहा ५ ८२० सावजनिक पुस्तकालय, ३ ४०० क्लब, २५ थियेटर तथा ४,००० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट हैं। प्रतिवर्ष २,००० से अधिक पुस्तको की कुल ३ करोड २० लाख प्रतिया प्रकाशित होती हैं, १२४ विभिन्न पत्र पत्रिकाओ व २२५ समाचारपत्रो की क्रमश कुल ४५ लाख व ३७ लाख प्रतिया वितरित होती हैं।

कजाख सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतत्र ५ दिसम्बर, १६३६ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल २७,१७,३०० वर्ग कि० मी० तथा जनसख्या १ करोड २७ लाख है जिसमे कजाख (३२ ४%), रूसी (४२ ८%), उक्राइनी (७ २%) तथा बेलोरूसी, उजबेक, उइगुर, कोरियाई, व दुगान भी शामिल हैं।

इसकी राजधानी आल्मा अता है (जिसकी आबादी ७,६४,००० है)। अन्य बडा नगर कारागदा है (जिसकी आबादी ५,५२,००० है)।

यहा पाये जाने वाले खनिज पदार्थों (६० से अधिक) म लोहा, ताबा, सीसा, जस्ता, क्रोमाइट, वनेडियम टगस्टन कोयला तेल फास्फोराइटस दुर्लभ धातुए, तथा निर्माण सामग्री जैसे चूना खडिया मिट्टी, सगमरमर व जिप्सम शामिल हैं। यहा

विद्युत शक्ति के विराट ससाधन हैं। जनतत्र का उद्योग अपनी तमाम जरूरता को स्थानीय ससाधनो से पूरा करता है। १९७२ म यहा ४१ अरब ३० करोड कि० वा० घट बिजली, एक करोड ८० लाख टन तेल, ३ अरब ९० करोड घन मीटर प्राकृतिक गस तथा ७ करोड ४४ लाख टन कोयले का उत्पादन हुआ था।

कृषि का भी तेजी स विकास हो रहा है। उत्तर म २ करोड ६० लाख हेक्टर अछूती भूमि का सुधार होने के बाद आज यह जनतत्र रूसी सघ के बाद सोवियत सघ का दूसरा सर्वाधिक महत्वपूण अन्न का भण्डार है। दक्षिण म सिंचित भूमि पर कपास, चावल, चुकन्दर, विभिन्न सब्जियो व तरबूज की फसले होती हैं। पहाडो की तराई मे अगूरा के अनेक बाग तथा फलोद्यान पाये जात ह। फिर भी यह पशुपालन फार्मिग ही है जिससे कृषि के कुल उत्पाद का आधा स अधिक भाग प्राप्त होता है। भेडो व बकरियो (३ करोड ३६ लाख) के विशाल रेवड चरागाह के विस्तत भूभागा पर चरते है, जहा ऊटो, मास व दूध दने वाले पशुआ (७६ लाख) तथा घोडा (१३ लाख स अधिक) के झुड भी पाय जाते हैं। यहा ३ करोड ३० लाख से भी अधिक मुर्गिया मौजूद है।

१९७२ मे २ करोड ९० लाख टन अनाज, २,९२ ००० टन अपरिष्कृत कपास, २४ लाख टन चुकन्दर, लगभग २० लाख टन आलू तथा ८ २२ ००० टन अन्य प्रकार की सब्जियो की पदावार हुई थी। पशुपालन के क्षेत्र मे ६ ३४,८०० टन मास, ३,६०० टन दूध, लगभग २०० करोड अण्डे और ९१,००० टन ऊन का उत्पादन हुआ। यहा ४२५ सामूहिक फाम, २६ मछली पकडन वाले सहकार व १,६३१ राज्य फाम है।

जनतत्र में आबादी के प्रति दस हजार पर २३ डाक्टर व १२० अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ में जनतत्र के सामान्य शिक्षा के १०,०४१ विद्यालयो मे ३३ लाख विद्यार्थी पढते थे। उच्चतर शिक्षा के ४४ सस्थानो मे विद्यार्थियो की सख्या २,०२ ८०० अथवा प्रति दस हजार पर १५० थी तथा १९० विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थानो में विद्यार्थियो की सख्या २,२३,००० अथवा प्रति दस हजार पर १६२ थी। यहा ८,००० सावजनिक पुस्तकालय, ७,३०० क्लब, २५ थियेटर तथा ६,००० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट हैं। प्रतिवर्ष २,००० पुस्तका की कुल २ करोड ५० लाख प्रतिया प्रकाशित होती है, १५६ पत्र पत्रिकाओ व ३६१ समाचारपत्रो की क्रमश २७ लाख व ४० लाख स अधिक प्रतिया वितरित होती ह।

जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतत्र २५ फरवरी, १९२१ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ६९ ७०० वग कि० मी० तथा जनसख्या ४८,३८ ००० है जिसम जार्जियाई (६६ ८%), आस्सेतियाई (३ २%), अबखाजियाई (१ ७%), आर्मीनियाई (९ ७%), रूसी (८ ५%) तथा दूसरी जातिया के अलावा अजरबजानी, यूनानी, यहूदी, अदचारियाई, उक्राइनी व कुद जातिया भी शामिल हैं। इसमे अबखाजियाई व अदझारियाई स्वायत्त

जनतंत्र तथा दक्षिण आसेतियाई स्वायत्त क्षेत्र भी सम्मिलित है। इसकी राजधानी त्बिलिसी है (जिसकी आबादी ६,४६,००० है)।

इसके अर्थतंत्र की प्रमुख शाखाएं हैं—खनन, बिजली उत्पादन, एवं विकासशील इंजीनियरी उद्योग, उपोष्णदेशीय फसलों की पैदावार, अंगूर की फसल और अन्तत अन्य स्वास्थ्य सरगाहों का उपयोग। १९७२ में ९ अरब ९८ करोड़ ८० लाख कि०वा० घंटे बिजली, २१ ६० ००० टन कोयला, १८ लाख टन अधिक कच्चे मैंगनीज, ७,१०,००० टन कच्चे लोहे, १३ लाख टन इस्पात, १० ००,००० टन बेल्लित इस्पात ४,५४ ००० टन इस्पात की पाइपें, १५,८०० मोटरकारें, ५,६१,००० टन खनिज उर्वरक, १५ करोड़ ८० लाख लिटर अंगूरी व खान के साथ पी जाने वाली शराबें, १ १० ०० ००० शैम्पेन की बोतलें, १७ अरब से अधिक सिगरेटों तथा २१,६०० टन चाय का उत्पादन हुआ था।

जनतंत्र में १ २३४ सामूहिक फार्म, ५ मछली पकड़ने वाले सहकार तथा २६५ राज्य फार्म हैं। उपोष्णदेशीय फसलें, अंगूरों के बाग तथा फलोद्यान आबाद भूमि के क्षेत्रफल का २७% हैं, फार्मों की एक तिहाई भूमि के लिए सिंचाई का प्रबंध है। वहां चाय, अंगूर, संतरे नींबू, रंग पेड़, सफेदे के पेड़, बांस, ग्रेशियन जयपत्र तथा उच्च कोटि के तम्बाकू उगाये जाते हैं। आबाद क्षेत्र के ६८% भाग पर अनाज की फसलें उगायी जाती हैं। वहां २० लाख भेड़ें व बकरियां, १५ लाख मांस व दूध देने वाले पशु तथा ७ लाख सूअर हैं।

जनतंत्र में आबादी के प्रति दस हजार पर ३७ डाक्टर व ९३ अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ में सामान्य शिक्षा के ४ ५२१ विद्यालयों में दस लाख से अधिक विद्यार्थी पढ़ते थे, उच्चतर शिक्षा के १८ संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या ८६,००० अर्थात प्रति दस हजार पर १८० थी तथा १०० विशिष्टीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की कुल संख्या ५३ ००० अर्थात प्रति दस हजार पर १०६ थी। वहां ३,६४० सार्वजनिक पुस्तकालय, २ १०० से अधिक क्लब, २२ थियेटर तथा १,८०० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें हैं। प्रत्येक वर्ष २,८०० पुस्तकों की कुल १ करोड़ ७६ लाख प्रतियां प्रकाशित होती हैं। ११६ पत्र पत्रिकाओं व १४१ समाचारपत्रों की क्रमश १२ लाख व ३० लाख से अधिक प्रतियां वितरित होती हैं।

अजरबैजान सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतंत्र २८ अप्रैल १९२० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ८६ ६०० वर्ग कि० मी० व जनसंख्या ५८ लाख २० हजार है जिसमें अजरबैजानी (७३ ८%), रूसी (१०%), आर्मीनियाई (९ ४%) लेज्गिन (२ ७%) और जार्जियाई, यहूदी और अवार भी हैं। इसमें नाखीचेवान स्वायत्त जनतंत्र व नागोर्नो काराबाख स्वायत्त क्षेत्र सम्मिलित हैं। इसकी राजधानी बाकू है (जिसकी आबादी १३ लाख ३७ हजार है)।

इसकी खनिज सम्पदा म अप्शेरोन प्रायद्वीप व कस्पियन सागर म नफ्त्यानिये चाम्नी के अपतट का तल, कारादाग की प्राकृतिक गस तथा कच्चा लोहा अल्युनाइट, खनिज नमक बहुधातुए, लौह पाइराइटस, व तुफा बजरी रेत और चिकनी मिट्टी जसी भवन निर्माण सामग्री शामिल है। जनतत्र अपने खनिज पदाथ-युक्त चश्मा स सम्पन्न है।

तेल निष्कषण व तेल शोधन इसके प्रमुख उद्योग हैं। इसके अलावा इजीनियरिंग, रसायन उद्योग, गस उद्योग, विद्युत उपकरण लौह व अलौह धातुकम तथा भवन-निमाण सामग्री का उत्पादन भी इसके उद्योग हैं। १९७२ मे निम्नलिखित सामान का उत्पादन इस प्रकार था १२ अरब ७० करोड कि० वा० घटे बिजली १ करोड ८४ लाख टन तल, ६ अरब ९० करोड घन मीटर गस ७ ४८,४०० टन इस्पात, ६ २६ ००० टन वलित धातु ४,८३,००० टन इस्पात की पाइप १,३२ ००० टन गधक का तजाव, हजारा बोर होल पम्प, बिजली की मोटरें, अनेकानेक टन सीमट इटें पत्थरो के ढाचे पूवनिर्मित फैरो कक्रीट, कपडे, कालीन तथा गलीचे।

जनतत्र मे ९४८ सामूहिक फाम ४२८ राज्य फाम व सात मछली पकडने वाले महकार है। प्रसगवश यह कहा जा सकता है कि १९७२ मे ७५,००० टन मछलियो की प्राप्ति हुई। यहा प्रधानत सिंचाई द्वारा खेती होती है। १९७२ म ८ ८९ ००० टन अनाज, ४,३१,००० टन अपरिष्कृत कपास ३६,००० टन तम्बाकू ४ ६६,००० टन सब्जिया १,१५,००० टन फल तथा २ ३५ ००० टन अगूर का उत्पादन हुआ। अगूर के अलावा फलो की पदावार व सिल्क के कीडो के प्रजनन पालन ने पर्याप्त विकास हुआ है। पशु प्रजनन पालन मुख्य रूप से दूध व मास के लिए किया जाता है। इनकी सख्या १५ ६४ ००० है जिसम ६ ०७,००० से अधिक गायें व भैंसे है। यहा लगभग ४७,००,००० भेड-बकरिया है। मुर्गी पालन तो सवत्र किया जाता है। १९७२ मे ९५,९०० टन मास, ४ ९६,५०० टन दूध, ४४ करोड ६० लाख अण्डा व ७,७०० टन ऊन का उत्पादन हुआ।

जनतत्र म प्रति दस हजार आबादी पर २७ डाक्टर व ९४ अस्पताली बिस्तर है। १९७२ म सामान्य शिक्षा के ५,११५ विद्यालया मे विद्यार्थिया की सख्या १५ लाख थी, १३ उच्चतर स्कूलो म एक लाख विद्यार्थी अर्थात प्रति दस हजार पर १८३ थ तथा ७९ विशपीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थानो म ७०,००० विद्यार्थी अथात प्रति दस हजार पर १२९ थे। वहा ३,००० सावजनिक पुस्तकालय, २ २०० क्लब १२ थियटर व २ ००० से अधिक फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटे है। प्रतिवष १,३०० पुस्तको की कुल एक करोड २२ लाख प्रतिया प्रकाशित होती हैं, १८७ पत्र पत्रिकाआ व ११५ समाचारपत्रा की क्रमश १५ लाख व २२ लाख प्रतिया वितरित होती है।

लिथुआनियाई सोवियत समाजवादी जनत त्र

यह जनतत्र २१ जुलाई १९४० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ६५,२०० वग कि० मी० व जनसख्या ३२ लाख है जिसम लियुआनियाई (८० १%), रूसी

(८ ६%), पोल (७ ७%), बेलोरूसी (१ ५%), उक्राइनी व यहूदी शामिल हैं। इसकी राजधानी विलनियस है (जिसकी आबादी ४,०६,००० है)।

यह जनतन्त्र पीट चूने के पत्थर तथा चिकनी मिट्टी से सम्पन्न है। यह चिर काल से अपनी तृणमणि—अश्मीभूत हुए देवदार की राल—के लिए प्रसिद्ध है। जनतन्त्र के सर्वप्रथम बढ़िया किस्म का तेल स्वयं ऊपर फेंकने वाले कुए ने १९६३ म क्लाइपेदा के समीप फव्वारे के रूप में तेल फेंकना प्रारम्भ किया था।

निम्नलिखित सामान का उत्पादन (१९७२ म) इस प्रकार हुआ बिजली की मोटर (३ ४८,०००) बिजली के वेल्डिंग रिग (७६,६००), धातु काटने के मशीनी औजार (२७,३००), लिनेन वस्त्र (२ करोड १० लाख वर्ग मी०), सूती वस्त्र (३ करोड ८८ लाख वर्ग मी०), ऊनी कपडे (१ करोड ५१ लाख वर्ग मी०), बुने हुए वस्त्र, मोजे आदि मछली पकडने की नावें टर्बाइन, गणक मशीनें, टेलीविजन सेट, टेप रिकार्डर, साइकिल, मीटर तथा अन्य उपकरण। मछली पकडने हल्के व खाद्य उद्योगो के साथ साथ भवन निमाण व भवन निर्माण सामग्री से सम्बन्धित उद्योगो का भी यथेष्ट विकास हुआ है।

जनतन्त्र मे १ ३८४ सामूहिक फाम १ मछली पकडने वाला सहकार व २६६ राज्य फाम है। दूध व मास के लिए पशु प्रजनन पालन पर फार्मिंग म जोर दिया जाता है। पटसन, चुकन्दर व आलू और अन्य सब्जियो की व्यापक पदावार होती है। मास और दूध देने वाले पशुओ की सख्या लगभग १९ लाख है। यहा २२ लाख स अधिक सूअर हं। १९७२ मे ८ ३३ ३०० टन मास, ७५ करोड अण्डो, १६,१२ ००० टन दूध, १९ लाख टन अनाज, ९ ७५ ००० टन चुकन्दर व २४ लाख टन आलू का उत्पादन हुआ।

जनतन्त्र मे आबादी के प्रति दस हजार पर ३० डाक्टर व १०५ अस्पताली बिस्तर है। १९७२ मे सामान्य शिक्षा के ३ ४३२ विद्यालया म ६ लाख विद्यार्थी पढते थे। उच्चतर शिक्षा के १२ सस्थानो मे विद्यार्थियो की सख्या ५६ ००० अथवा प्रत्येक दस हजार पर १८० थी तथा ७६ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थाना म विद्यार्थियो की सख्या ६६ ००० अथवा प्रत्यक दस हजार पर २०५ थी। वहा २,५०० सावजनिक पुस्तकालय १ ५०० क्लब, ११ थियेटर तथा १ ५०० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट हैं। प्रति वष २,००० पुस्तका की कुल डेढ करोड प्रतिया प्रकाशित होती है, १२३ पत्र-पत्रिकाओ व ८८ समाचारपत्रा की क्रमश २० लाख व १८ लाख प्रतिया वितरित होती हैं।

मोल्दावियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतन्त्र २ अगस्त, १९४० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ३३,७०० वर्ग कि० मी० व जनसख्या ३७ २१,००० है जिसम मोल्दावियाई (६४ ६%), उक्राइनी (१४ २%) रूसी (११ ६%) गागोज (३ ५%) यहूदी (२ ७%), बुल्गारियाई (२ १%) व जिप्सी (० २५%) हैं।

इसकी राजधानी किशीनव है (जिसकी आबादी ४,१५,००० है)।

इसकी खनिज सम्पदा मे अधिकतर ऐसे भवन निर्माण सम्बन्धी सामान हैं जसे चिकनी मिट्टी मार्ल, कोक्वीना। यहा तेल व गैस वाले क्षेत्रो की भी खोज की गई है।

इसके उद्योगो मे अधिकतर खाद्य उद्योग का प्राधान्य है। १९७२ म ३ २३,००० टन चीनी टिनबद खाद्य सामग्री के १ अरब १३ करोड ६० लाख डिब्बे, १,४७ ००० टन वनस्पति घी, २७ ००,००,००० लिटर शराब व ५२ ७०,००० लिटर ब्राडी का उत्पादन हुआ था। मोजे आदि बुने हुए वस्त्रो, जूता व रेशमी कपडो का भी उत्पादन किया जाता है।

स्थानीय ससाधनो से ईंट, चूना और छत की टाइले बनाने के अलावा भवन निर्माण सम्बन्धी सामग्री बनाने वाला उद्योग सीमेट छत की स्लेटा तथा फरा कक्रीट सरचनात्मक अवयवो का भी निर्माण करता है। सूक्ष्म यत्र व इ जीनियरी के बडे उपकरण बनाने का काम तेजी से विकसित हो रहा है। १९७२ मे उत्पादित सामान मे निम्न लिखित सामान का उत्पादन इस प्रकार था ८,००० ट्रक्टर, ६९,५०० सेट्रीफ्यूगल पम्प, २,८०० काष्ठ शिल्प की मशीनें, ४ ६२ ००० कि० वा० क्षमता से युक्त बिजली की मोटरें, ६०,००० के० वी० ए० की क्षमता से युक्त बिजली के ट्रासफामर तथा विभिन्न उपकरण।

१९७२ म कृषि के क्षेत्र मे ४९४ सामूहिक फार्मों व २१३ राज्य फार्मों का उत्पादन इस प्रकार था—७,००,००० टन सब्जिया, ३९ लाख टन चुकन्दर, ८,५८ ००० टन फल, ३,८६,००० टन सूरजमुखी के बीज तथा बहुल मात्रा म अ गूर, तम्बाकू व बाष्पशील तेल युक्त पौधे। यहा पशुपालन भी यथेष्ट रूप से विकसित है। यहा १०,४३,००० मास और दूध देन वाले पशु १३,३२,००० भेड व बकरिया और १५ ५०,००० सूअर हैं।

यहा आबादी के प्रत्यक दस हजार पर २२ डाक्टर व ९९ अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ म सामान्य शिक्षा के २,१६७ विद्यालयो म ८,००,००० से अधिक विद्यार्थी पढते थे, उच्चतर शिक्षा क ८ विद्यालया म ४२,८०० विद्यार्थी अथवा प्रति दस हजार पर ११५ थे, ४६ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थाना म विद्यार्थिया की सख्या ५२,८०० अथवा प्रति दस हजार पर १४२ थी। यहा १,८९७ सावजनिक पुस्तकालय, १,७८७ क्लब, ८ थियेटर व १,८२६ फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें हैं। प्रत्यक वष १,८०० पुस्तकों की कुल एक करोड २५ लाख प्रतिया प्रकाशित होती ह, ८१ पत्र-पत्रिकाआ व ११९ समाचारपत्रा की क्रमश १३ लाख व २० लाख प्रतिया वितरित होती है।

लातवियाई सोवियत समाजवादी जनतत्र

यह जनतत्र २१ जुलाई १९४० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ६३,७०० वग कि० मी० व जनसख्या २४,३०,००० है जिसमे लत (५६ ८%) रूसी (२९ ८%) बेलारूसी (४%) पोल (२ ७%) उक्राइनी (२ ३%), लिथुआनियाई (१ ७%) व यहूदी (१ ६%) हैं।

इसकी राजधानी रीगा है (जिसकी आबादी ७,६५ ००० है)।

इस जनतंत्र में रसायन व पेट्रो रसायन उद्योगों तथा मुद्रण, इंजीनियरी, धातु शिल्प, जलपोत निर्माण लकड़ी से सामान तैयार करने के उद्योगों तथा खाद्य व हल्के उद्योगों का विकास किया गया है। कुल औद्योगिक उत्पादन का एक चौथाई भाग इंजीनियरी उद्योग का है।

१९७२ में जनतंत्र में २ अरब २० करोड़ कि० वा० घंटे बिजली का उत्पादन हुआ। निम्नलिखित सामान का यहां वार्षिक उत्पादन इस प्रकार होता है बिजली की गाड़ियां (सोवियत संघ के कुल उत्पादन का एक चौथाई हिस्सा), पसेंजर गाड़ियां (५९६) ध्वनि रहित ट्राम (२५०) मिनी बसें (२,६००), कृषि की मशीन, टेलीफोन, बिजली के यंत्र बहु प्रयोजन लोडर, डीजल इंजिन, स्वचालित टेलीप्रिंटर एक्सचेंज, रेडियो सेट बिजली की हाट-प्लेटें तकनीकी रबड़ के सामान, फार्मास्युटिकल सम्पाद मोजे आदि बुने हुए वस्त्र फर्नीचर व कागज। ६,००,००० टन से अधिक मछली पकड़ी जाती है जिसमें अधिकतर अटलाण्टिक हिल्सा व सम्राट मछलियां होती हैं (सोवियत संघ में कुल मछली पकड़ने का एक तिहाई)। यहां मांस-पैकिंग व दुग्ध उद्योग विकसित हैं।

कृषि के क्षेत्र में यहां डेयरी व पशु वंश वृद्धि में तथा (नमकीन) मांस देने वाले सूअरों के प्रजनन में विशेषता है। इसका लगभग आधा क्षेत्र उपजाऊ भूमि है जिसमें दो तिहाई आबाद जमीन है तथा शेष घास के मैदान व चरागाह हैं। वनस्पति की पैदावार पशुओं को चारा देने की दृष्टि से की जाती है तथा इसका गौण स्थान है।

यहां ६४१ सामूहिक फार्म १४ मछली पकड़ने वाले सहकार व २३० राज्य फार्म हैं। मांस और दूध देने वाले पशुओं तथा सूअरों की कुल संख्या लगभग १२,८८ ००० है जिसमें गायों की संख्या ५ ९५ ००० है, सुअरों की संख्या ११,३६,००० है भेड़ों व कुक्कुटादि की कुल संख्या क्रमश ३ ३० ००० व ६६,१६ ००० है।

१९७२ में खेती का कुल उत्पादन इस प्रकार था—६ ७२ ००० टन अनाज, ५ ००० टन पटसन के रेशे, २ ९४ ००० टन चुकन्दर १५ लाख टन आलू व २ ३८ ००० टन अन्य सब्जियां।

यहां प्रत्येक दस हजार आबादी पर ३७ डाक्टर व १२० अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ में सामान्य शिक्षा के १ २०३ विद्यालयों में ३ ६३,००० विद्यार्थी पढ़ते थे उच्चतर शिक्षा के १० संस्थानों विद्यार्थियों की संख्या ४२ ५०० अथवा प्रति दस हजार पर १७४ थी ५४ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या ३९,३०० अथवा प्रति दस हजार पर १६१ थी। यहां १,६०० सार्वजनिक पुस्तकालय एक हजार से अधिक क्लब १० थियेटर व १ ३०० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट है। प्रति वर्ष लगभग २४ ००० पुस्तकों की कुल एक करोड़ ६० लाख प्रतियां प्रकाशित होती हैं ९८ पत्र पत्रिकाओं व ७६ समाचारपत्रों की क्रमश बीस लाख व १३ लाख प्रतियां वितरित होती हैं।

किर्गीज सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतंत्र ५ दिसम्बर, १९३६ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल १,९८ ५०० वर्ग कि० मी० व जनसंख्या ३१ ४५,००० है जिसमे किर्गीज (४३ ८%), रूसी (२९ २%), उजबक (११ ३%) उक्राइनी (४ १%), तातार (२ ४%), उइगुर, कजाख व ताजिक शामिल है।

इसकी राजधानी फ्रुंजे है (जिसकी आबादी ४,६३,००० है)।

यहा पाये जाने वाले खनिजो मे पारा, एटीमोनी कोयला तेल प्राकृतिक गस, सीसा व जस्ता है। नदिया बिजली की संभावित प्रदायिका है।

यह अधिकतर अलौह धातु सप्लाई करता है जिसमे एटीमोनी, पारा, सीसा व कच्चे जस्त का प्राधान्य है। जनतंत्र म बिजली इजीनियरी भी तेजी से विकसित हो रही है। १९७२ मे किर्गीजिया म ३८,२७,००० टन कोयल ४ अरब ६ करोड कि० वा० घटे विद्युत शक्ति, ३९ करोड ५० लाख घन मी० गस तथा २ २९२ मशीन औजार का उत्पादन हुआ था। इसके उद्योग मे विद्युत उपकरणो, यत्रो मोटरगाडियो, विभिन्न प्रकार की फाम मशीना, भवन निर्माण सामग्रिया, चम व खाल ऊनी व रेशमी कपडा का उत्पादन होता है।

इसके कृषि के क्षेत्र म अल्पाइन चरागाह मे पशुपालन का प्राधान्य है तथा उत्कृष्ट व अध उत्कृष्ट ऊन वाली भेडो, मास और दूध दन वाले पशुओ और अच्छी नस्ल वाल घोडो के पालन पर जोर दिया जाता है। १९७२ मे वहा ९७ लाख भेड व बकरिया, ९,३५,८०० मास और दूध देने वाले पशु तथा २,६४ ००० से अधिक घोडे थे। सूअरो (२,८३,६००) व खरगोशो के प्रजनन तथा मधुमक्खी पालन का भी विकास हो रहा है।

१९७२ म १,८९,००० टन कपास १८,२८,००० टन चुकदर तथा ११,६८ ००० टन अनाज का उत्पादन हुआ था। स्थानीय रूप स हुई अनाज की पदावार जनतंत्र की जरूरता का सपूणत पूरा करती है। सिंचित भूमि पर केनाफ जूट, तम्बाकू और पोस्ता उगाय जाते है। बागवानी, अगूर की फसल व रेशम के कीडा का पालन यहा पूणतया विकसित है। यहा २३६ सामूहिक फाम व १०९ राज्य फाम है।

यहा आबादी के प्रत्यक दस हजार पर २१ डाक्टर व ११० अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ म सामान्य शिक्षा के १,८१० विद्यालया म ८ २३,००० विद्यार्थी पढते थे, ९ उच्चतर शिक्षा सस्थाना म विद्यार्थियो की सख्या ४९ २०० अथवा प्रति दस हजार पर १५६ थी तथा ३६ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा सस्थानो मे विद्यार्थिया की सख्या ४१,९०० अथवा प्रति दस हजार पर १३३ थी। यहा १ ४०० सावजनिक पुस्तकालय, १ ०३९ क्लब, ६ थियेटर व १ १०० फिल्म प्रोजेक्शन यूनिट है। प्रत्यक वष १,००० पुस्तका की कुल ६४ लाख प्रतिया प्रकाशित की जाती है, ४६ पत्र पत्रिकाओ व ९० समाचारपत्रो की क्रमश कुल ७,२३,००० व ६,६०,००० प्रतिया वितरित होती है।

ताजिक सोवियत समाजवादी जनतंत्र

यह जनतंत्र ५ दिसम्बर, १९२९ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल १,४३,१०० वर्ग कि० मी० व जनसंख्या ३२,०० ००० है जिसमें ताजिक (५६ २%), उजबक (२३%) रूसी (११ ९%), किर्गीज (१ २%), उक्राइनी (१ १%) तथा कजाख (० ३%) है। इसमें गोर्नो बादाग्शान स्वायत्त क्षेत्र सम्मिलित है।

इसकी राजधानी दुशाम्बे है जिसकी आबादी ४,११,००० है।

यहा पाये जाने वाले खनिजों में कोयला, तेल, गैस, कच्चा लोहा, बहुधातु जस्ता, सीसा, कच्चा अल्यूमिनियम सोना मूल्यवान पत्थर, खनिज नमकों के विशाल भण्डार तथा भवन निर्माण की सामग्री तैयार करने के कच्चे सामान शामिल है। यहा अनेक खनिज युक्त चश्मे हैं। सूती वस्त्र व खाद्य उद्योग यहा के प्रमुख उद्योग है। ओर इंजिनियरिंग भवन निर्माण की सामग्री के निर्माण, धातुकर्म इंजीनियरी व विद्युतीय इंजीनियरी के साथ साथ कोयले, तेल जस्ता सीसे और टंगस्टन का उत्पादन तेजी से विकसित हो रहा है।

निम्नलिखित सामान के १९७२ के उत्पादन-आंकडे इस प्रकार हैं ३ अरब ५४ करोड ८० लाख कि० वा० घंटे बिजली, १ ९८ ००० टन तेल, ४६ करोड ८० लाख घन मीटर गैस ९,००,००० टन कोयला, कुल १७,६३,००० के वी ए के बिजली ट्रांसफार्मर ९,६७,००० टन सीमेंट, ६,००,००० घन मी० पूर्वनिर्मित फरो कंक्रीट अवयव, ३१ करोड ३० लाख ईंटें ६ करोड ६० लाख स्लेट टाइल, २,५७,००० टन कपास का रेशा ७ करोड ८० लाख वर्ग मी० सूती कपडा, ४ करोड ३० लाख वर्ग मी० ऊनी कपडा तथा २५ लाख वर्ग मी० गलीचे व कालीन।

फार्मिंग में कपास उत्पादन, रेशम के कीडो के पालन, बागवानी व अंगूरों की खेती, गेहू और जौ की खेती तथा पर्वतीय इलाको मे पशु पालन पर जोर दिया जाता है। १९७२ में ७,४३ ००० टन अपरिष्कृत कपास पैदा हुई थी। जिन किराना फसलो की खेती की जाती है उनमें जिरेनियम तिल और तम्बाकू के पौधे भी है। वस्तुत यह जनतंत्र सोवियत संघ का प्रमुख जिरेनियम तेल का आपूर्तिकर्ता है।

पशु पालन के क्षेत्र में भेडो के प्रजनन जिसमें अस्त्राखान के मेमने शामिल हैं का प्राधान्य है और प्रतिवर्ष २,५०,००० खालें प्राप्त की जाती है। यहा १०,६० ००० मांस और दूध देने वाले पशु है जिनमे ४,०५,००० गायें, ९५ ००० सूअर और २७ लाख भेड व बकरिया शामिल हैं। १९७२ में ७० ७०० टन मास, ३,१४ ००० टन दूध ५ ००६ टन ऊन व १६ करोड ६० लाख अण्डो का उत्पादन हुआ था।

यहा २६५ सामूहिक फार्म व १०७ राज्य फार्म हैं।

यहा आबादी के प्रति दस हजार पर १६ डाक्टर व ९८ अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ मे सामान्य शिक्षा के ३,०८८ विद्यालयों में ८ ४६,००० विद्यार्थी पढते थे, उच्चतर शिक्षा के ■ संस्थानों में विद्यार्थियो की संख्या ४६ २०० अथवा प्रति दस हजार १४९ थी तथा ३९ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या

३६,७०० अथवा प्रति दस हजार पर ११८ थी। यहा १,१६३ सावजनिक पुस्तकालय, ६२६ क्लब, १० थियटर व १,००० से अधिक फिल्म प्राजेक्शन यूनिटे है। प्रतिवष ७२० पुस्तका की कुल ५७ लाख प्रतिया प्रकाशित की जाती है, ४२ पत्र पत्रिकाआ व ६०-समाचारपत्रो की क्रमश कुल ४,६०,००० व ६,८८,००० प्रतिया वितरित होती है।

आर्मीनियाई सोवियत समाजवादी जनत त्र

यह जनतत्र २६ नवम्बर १६२० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल २६ ८००वग कि० मी० व जनसख्या २६,७२,००० है जिसमे आर्मीनियाई (८८ ६%), अजरबजानी (५ ६%) रूसी (२ ७%) कुद (१ ५%) व उक्राइनी, यूनानी और अस्सीरियाई रहते है।

इसकी राजधानी येरेवान है जिसकी आबादी ८ ४३ ००० है।

यहा अलौह धातुकम रासायनिक एव विद्युतीय इजीनियरिंग उद्योग पूण समुन्नत हैं। १६७२ मे उत्पादित निम्नलिखित सामान इस प्रकार है परिष्कृत एव फफालदार ताबा, मोलीब्डेनम माद्र, अल्युमीनियम सश्लेषित रबड खनिज उवरक (३,४५,००० टन) वार्निश पेंट व रोगन गधक का तेजाब (८४,४०० टन) रासायनिक रेशे (७,८०० टन), ट्रासफामर (५० २०,००० के वी ए क्षमता वाले) ए सी जेनरटर (१०,२१,००० कि०वा० क्षमता वाले) पनटर्बाइन कम्प्रेसर धातु काटने के मशीनी औजार (११,६०० यूनिट) स्वचालन के साधन, गतिशील बिजली सयत्र, टायर, सीमेट, सूती, ऊनी व रशमी वस्त्र (क्रमश ६ करोड ८६ लाख, ६० लाख व १ करोड ३५ लाख वग मी०) गलीचे व कालीन (१६ २०,००० वग मी०) डिब्बा-बद खाद्य पदार्थ (२६ करोड टिन) तथा शराब (६ करोड लिटर)। बिजली का उत्पादन ७ अरब ५१ करोड ६० लाख कि० वा० घटे हुआ। वस्त्र जूते व शराब बनाने तथा हि ब्रावदी के उद्याग मुख्यत स्थानीय उत्पान्ति सामान पर आधारित है।

यहा २६५ राज्य फार्मो व ४७५ सामूहिक फार्मो मे खेती होती है। बुआई किये गय आधे क्षेत्र म अनाज की सफल व बाकी बची हुइ भूमि के अधिकतर भाग म चार की फसल होती है। सब्जिया व वाष्पशील तलयुक्त पौधे लगभग केवल अरारात घाटी म उगाये जात हैं। शुष्क उपोष्णदेशीय क्षेत्र की विशेषता वाले पौधे जसे बादाम जतून अजीर अनार, शहतूत अगूर, फल व तम्बाकू सागर तल से १,४०० मीटर की ऊचाई तक उगाये जाते हैं। प्राधान्यत अधिक ऊचाई पर—सागर तल से २,३०० मीटर की ऊचाई पर—गन्ने, चुकन्दर, आलू तथा कुछ स्थानो पर तम्बाकू भी उगाय जात है। उस ऊचाई स अनन्त हिम तक विस्तृत अल्पाइन चरागाहो का मुख्य रूप से भेडा क पालन पोषण के लिए प्रयोग किया जाता है।

१६७२ म २,६१,००० टन अनाज, ३,०२,००० टन सब्जियो ७१,००० टन फल, १,०४,००० टन अगूरो की फसल हुई। उसी वष पशुपालन म ५४,५०० टन मास ४,०७,६०० टन दूध, २७ करोड २० लाख अण्डो व ४ १०० टन ऊन का उत्पादन

हुआ। जनतंत्र में ७ १३,००० मांस और दूध देने वाले पशु हैं जिनमें २ ८३,५०० गायें, १,५०,००० सूअर तथा २३,१८,००० भेड़ व बकरियां हैं।

आबादी के प्रति दस हजार पर ३० डाक्टर व ८६ अस्पताली विस्तर हैं। १९७२ में सामान्य शिक्षा के १ ५११ विद्यालयों में ६,७७,६०० विद्यार्थी पढ़ते थे, उच्चतर शिक्षा के १२ विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या ५३ ९०० अथवा प्रति दस हजार पर २०० थी, ५६ विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा संस्थानों में विद्यार्थियों की संख्या ५०,२०० अथवा प्रति दस हजार पर १८५ थी। यहां १,२६६ सार्वजनिक पुस्तकालय, १,१०० क्लब १४ थियेटर व ७५२ फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें हैं। प्रतिवर्ष १,१०० पुस्तकों की १ करोड़ ५ लाख प्रतियां प्रकाशित होती हैं, १०४ पत्र-पत्रिकाओं व ७५ समाचारपत्रों की क्रमश कुल ८,६४,००० व १२ लाख प्रतियां वितरित होती हैं।

तुर्कमान सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतंत्र २७ अक्तूबर १९२५ को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ४,८८,१०० वर्ग कि० मी० व जनसंख्या २३ ६४ ००० है जिसमें तुर्कमान (६५ ६%) रूसी (१४ ५%) उजबक (८ ३%), कजाख (३ २%) तातार (१ ७%) उक्राइनी (१ ६%) व आर्मीनियाई (१ १%) हैं।

इसकी राजधानी अशखाबाद है (जिसकी आबादी २ ७३,००० है)।

यहां पाये जाने वाले खनिज पदार्थों में तेल, गैस, मिराबिलाइट, सीसा, कोयला, गंधक, बराइट, मैगनीशियम, आयोडीन ब्रोमाइन, पोटाशियम, बिदराइट तथा चूना पत्थर रतपत्थर, जिप्सम, बजरी व स्फटिक रेत जैसी लाभप्रद भवन निर्माण की सामग्री भी है।

इसकी अर्थव्यवस्था की प्रमुख शाखाएं हैं—खनिज कच्चे मालों का निष्कर्षण व शोधन गैस, रसायन व तेल संसाधन तथा इंजीनियरी उद्योगों का भी तेजी से विकास हो रहा है। यहां के विशिष्ट उद्योगों में सूती वस्त्र व सिल्क रीलिंग के हल्के उद्योग तथा विश्व प्रसिद्ध गलीचा व कालीनों का बनाना भी शामिल है। यहां के प्रमुख खाद्य उद्योग के अंतर्गत मांस पैकिंग, मक्खन बनाना, शराब बनाना तथा मत्स्य प्रक्रम है। ये सभी स्थानीय संसाधनों पर आधारित हैं।

निम्नलिखित सामान का १९७२ में उत्पादन इस प्रकार हुआ १ अरब ८३ करोड़ कि० वा० घंटे बिजली, १ करोड़ ५६ लाख टन तेल, २१ अरब ३० करोड़ घन मी० गैस, ७६ ००० टन खनिज उर्वरक ४,५६ ००० घन मी० पूर्वनिर्मित फैरो कंक्रीट अवयव १८ करोड़ ईंटें ४,६३,००० टन सीमेंट ३ करोड़ ५० लाख एस्बस्टस सीमेंट स्लेट की टाइलें, ९९ लाख वर्ग मी० खिड़की के शीशे, २,७२,००० टन सूती रेशा, ६८ ००० वर्ग मी० कालीन व गलीचे ८ ८५ ००० वर्ग मी० ऊनी वस्त्र, ५४ लाख वर्ग मीटर रेशमी वस्त्र व १ करोड़ ७६ लाख वर्ग मी० सूती वस्त्र। जनतंत्र में १,२२ ७० ००० लिटर शराब व १,८८ ००० टन नमक का उत्पादन भी हुआ।

जनतन्त्र में ३२७ सामूहिक फाम, ८ मछली पकडने वाले सहकार व ५३ राज्य फाम हैं। कृषियोग्य तमाम भूमि की सिचाई होती है। यहा मुख्यत कपास उगाई जाती है जिसम से अधिकतर कपास के उत्कृष्ट रेशे हात हैं। यहा गेहू, जौ, ज्वार व मक्का की पदावार भी होती है। सभी नखलिस्ताना म रेशम के कीडा का पालन, बागवानी व अगूर की फसल का विकास किया गया है।

१९७२ की पदावार मे शामिल है १ १४,४०० टन अनाज, ६,३१,५०० टन कपास २६ ००० टन केनाफ, १ ६६,८०० टन सब्जिया व १ ४१,६०० टन तरबूज आदि की फसल।

पशुपालन के क्षेत्र म अस्त्राखान भेडा, ऊटो व घोडा के पालन पोषण का प्राधान्य है।

१९७२ मे जनतत्र म ४,५९ ६०० मास और दूध देने वाल पशु थे जिसमे १,६३,१०० गायें, ६६,१०० सूअर व ३९ लाख भेड व बकरिया थी। यहा ३१ ३०० टन मास, १ ६७,४०० टन दूध, १३ करोड ५० लाख अण्डा व १२ ४०० टन ऊन का उत्पादन हुआ।

यहा प्रति दस हजार की आबादी पर २२ डाक्टर व १०२ अस्पताली बिस्तर है। १९७२ म सामान्य शिक्षा के १,६५३ विद्यालयो म ६ १२,५०० विद्यार्थी पढते थे, उच्चतर शिक्षा के ५ सस्थानो मे विद्यार्थियो की सख्या २९,७०० अथवा प्रति दस हजार पर १२५ थी, २६ विशेषीकृत माध्यमिक विद्यालयो म विद्यार्थियो की सख्या २८ ६०० अथवा प्रति दस हजार मर १२० थी। यहा १,१३३ सावजनिक पुस्तकालय, ७३३ क्लब ६ थियेटर व ७७५ फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें है। प्रतिवष ४६७ पुस्तका की कुल ५० लाख से अधिक प्रतिया प्रकाशित की जाती हैं, ३८ प्रत्र पत्रिकाओ व ४७ समाचारपत्रा की क्रमश ४,००,००० से अधिक व ७,७५,००० प्रतिया वितरित की जाती है।

एस्तोनियाई सोवियत समाजवादी जनतन्त्र

यह जनतत्र २१ जुलाई, १९४० को गठित हुआ। इसका क्षेत्रफल ४५ १०० वग कि० मी० व इसकी आबादी १४,०५,००० है जिसम एस्तोनियाई (६८ २%), रूसी (२४ ७%) उक्राइनी (२ १%), फिन (१ ४%), बेलोरुसी (१ ४%), तथा यहूदी (० ४%) है।

इसकी राजधानी तालिन है (जिसकी आबादी ३ ८६,००० है)।

यहा का सवप्रथम खनिज पदाथ बिटूमिनी युक्त स्लेटी पत्थर है जिसके अनुमानित ससाधन लाखा-लाख टना मे है और जिसम स लगभग २ करोड टन का वार्षिक खनन (सोवियत सघ के कुल उत्पादन का ३/५) हाता है। स्लेटी पत्थर के केन्द्र कोखत्ला जार्वे के आस पास एक प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र का आविर्भाव हुआ है।

१९७२ मे जनतत्र मे अधिक मात्रा म बिजली (कुल १४ अरब ५० करोड कि० वा० घटे) पदा की गई स्लेटी पत्थर से (५६ करोड ८० लाख घन मी०) गस निकाली गई, बिजली की मोटरो (सोवियत सघ के कुल उत्पादन के दसवें भाग से अधिक या

१,८०५) भू-सुधार के लिए १,८२८ एक्सकेवेटर्स, कागज (रूसी संघ के बाद दूसरे नम्बर पर अथवा १ अरब ४६ करोड़ ६० लाख वर्ग मी०), स्लेटी पत्थर उद्योग के लिए उपकरण व केबुल्स का निर्माण किया गया। खाद्य उद्योग—मुख्यत: मांस पैकिंग, मक्खन बनाना व विशेषतया मत्स्य प्रासेसिंग—औद्योगिक उत्पादन का एक तिहाई हैं।

यहां २३५ सामूहिक फार्म व १६८ राज्य फार्म हैं। पशु प्रजनन को वरीयता प्राप्त है। इसके अलावा जौ, जई, बनमयी व मिश्रित अनाज की खेती अधिकतर चारे के लिए की जाती है। मुर्गी-पालन व मधुमक्खी-पालन किया जाता है तथा फल उगाये जाते हैं घोड़ों का प्रजनन पालन होता है, लोम वाले जानवरों, अधिकतर रजत लोमड़ी व मिंक का पालन किया जाता है। पशु पालन में, जो फार्म उत्पादन का दो तिहाई होता है, पशुओं की वंश वृद्धि, मांस व डेयरी फार्मिंग तथा सूअर गोश्त (नमकीन) के लिए सूअरों के पालन पर जोर दिया जाता है। १९७२ में यहां ७,४३,६०० मांस और दूध देने वाले पशु थे जिनमें ३,१५,४०० गायें ६,६४,४०० सूअर व १,८२,००० भेड़ व बकरियां थे।

१९७२ में १,५२ ६०० टन मांस, १० ४५ ००० टन दूध व ४२ करोड़ ६० लाख अण्डों का उत्पादन हुआ।

आबादी के प्रति दस हजार पर ३४ डाक्टर व ११२ अस्पताली बिस्तर हैं। १९७२ में सामान्य शिक्षा के ७६६ विद्यालयों में कुल २,१६,१०० विद्यार्थी पढ़ते थे, उच्चतर शिक्षा के ६ विद्यालयों में तथा ३७ विशेषीकृत माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या क्रमश: २१,८०० तथा २३ ८०० अथवा प्रति दस हजार पर क्रमश: १५५ तथा १७० थी। यहां ८१६ सार्वजनिक पुस्तकालय, ५१८ क्लब ६ थियेटर व ५१४ फिल्म प्रोजेक्शन यूनिटें हैं। प्रतिवर्ष २ ३०० पुस्तकों की एक करोड़ ३० लाख से अधिक प्रतियां प्रकाशित की जाती हैं, १५३ पत्र पत्रिकाओं व ३४ समाचारपत्रों की क्रमश: १२ लाख प्रतियां व दस लाख से अधिक प्रतियां वितरित की जाती हैं।

●

सामाजिक और राजकीय सरचना

समाजवादी जनतन्त्रों क सघ की प्रणाली बहुजातीय राज्य क लिए अत्यधिक व्यवहार्य और कारगर है और एसी प्रणाली है जो कुल मिलाकर समाज क तथा इसमे रहन वाली प्रत्यक जाति के हितों का सामजस्य सुनिश्चित करती है।

सोवियत सघ म निर्मित विश्व का पहला समाजवादी समाज १९१७ की अक्तूबर क्रान्ति द्वारा किय गय क्रातिकारी परिवर्तनो का परिणाम था।

मानव द्वारा मानव के शोषण का अन्त करके और सभी नागरिकों को समान अधिकार और सुअवसर देकर समाजवाद न व्यक्तित्व की वास्तविक स्वतत्रता सुनिश्चित बनाई है और समाज के सभी सदस्यो के मगल कल्याण और स्वतत्र सर्वतोमुखी विकास म निरन्तर सुधार के लिए सभी अनुकूल परिस्थितिया उत्पन्न की हैं।

सोवियत सघ मे निर्मित उन्नत समाजवादी समाज सुव्यवस्थित विकास का समाज है जहा समाजवाद के, इसकी आर्थिक तथा राजनीतिक प्रणाली के सभी लाभ पूर तौर पर काम मे लाय जाते है।

सोवियत समाज की सामाजिक राजनीतिक तथा वचारिक एकता, सोवियत देश-भक्ति, सोवियत जनगण के बीच मत्री और कम्युनिस्ट पार्टी के इद गिर्द जनता की एकजुटता सोवियत सघ की शक्ति के स्रोत हैं।

सोवियत व्यवस्था की बुनियादी विशिष्टताए

सोवियत सघ के सविधान के अनुसार सार देश की सत्ता मेहनतकश जनता म निहित है जिसका प्रतिनिधित्व मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियो की सोवियत—राज्य सत्ता के निर्वाचित निकाय जो सोवियत प्रणाली की राजनीतिक बुनियाद हैं—करती है।

सोवियत समाज का आर्थिक आधार अर्थतत्र की समाजवादी प्रणाली, उत्पादन के साधनो और प्राकृतिक ससाधनो पर समाजवादी स्वामित्व है।

सोवियत समाजवादी प्रणाली न उत्पादन के साधनो के निजी स्वामित्व का हमेशा के लिए समाप्त कर दिया है जिस पर मानव द्वारा मानव का शोषण आधारित था। सोवियत समाज म जनता के बीच नय प्रकार के उत्पादन सम्बन्ध—जो साथी जसे सहयोग और पारस्परिक सहायता के सम्बन्ध है—विकसित हो चुके है। मेहनतकश जनता—मजदूर किसान और बुद्धिजीवी—दश की सम्पदा के मालिक और स्वय अपनी नियतियो के स्वामी है। सोवियत जनता का समान लक्ष्य है—कम्युनिज्म का निर्माण।

सोवियत सघ म समाजवादी सावजनिक सम्पत्तिया तो राज्य सम्पत्ति के रूप म या फिर सहकारी और सामूहिक फाम सम्पत्ति के रूप म मौजूद है।

राजकीय समाजवादी सम्पत्ति समूची जनता की दौलत है। इसमे जमीन, खनिज सम्पदा वन, पानी, सभी औद्योगिक और राज्य व्यवस्थित कृषि प्रतिष्ठान, बैंक, सचार साधन रेल, जल व वायु परिवहन सुविधाए, वैज्ञानिक, सास्कृतिक, व्यापारिक और सेवा प्रतिष्ठान, नगरो मे ज्यादातर रिहाइशी मकान, शहरनुमा बस्तिया और राजकीय प्रतिष्ठानो द्वारा उत्पन्न कुल उत्पादन शामिल हैं। राज्य अपने आर्थिक निकायो के माध्यम से जनता की ओर से राजकीय सम्पत्ति की देखरेख करता है।

सहकारी और सामूहिक फार्म सम्पत्ति विशाल सामूहिक कृषीय प्रतिष्ठानो—कोल्खोजो—मे किसानो के और साथ ही विभिन्न किस्मो की सहकारिताओ मे अन्य लोगो के अपनी इच्छा से शामिल होने के परिणामस्वरूप पैदा हुई।

सहकारी सम्पत्ति—मशीनें, सार्वजनिक इमारतें और प्रतिष्ठान, साझे स्वामित्व वाले पशुधन और सामूहिक फार्मो द्वारा उत्पन्न कृषि उत्पाद—श्रमिको की अलग-अलग सहकारिताओ की सम्पत्ति है। इस सम्पत्ति की देखरेख केवल सहकारिता के सदस्य ही करते है।

समाजवादी सहकारी और सामूहिक फार्म सम्पत्ति, साथ ही राजकीय सम्पत्ति मानव द्वारा मानव के शोषण को वर्जित करती है तथा सामान्य हितो के लिए सयुक्त श्रम पर आधारित होती है। सोवियत राष्ट्रीय अर्थतत्र मे सम्पत्ति की दो किस्मे प्रचलित है और समाजवादी उत्पादन तथा जीवन स्तर के निरन्तर विकास को सुनिश्चित करती हैं।

व्यक्तिगत सम्पत्ति सामाजिक सम्पत्ति की व्युत्पत्ति है क्योकि यह सामाजिक श्रम मे लोगो की शिरकत के लिए उनको प्राप्त आय पर आधारित है। नागरिको के लिए व्यक्तिगत सम्पत्ति का मालिक होने और उसे उत्तराधिकार मे प्राप्त करने का अधिकार कानून द्वारा सुरक्षित है। उसके निजी सामान के अतिरिक्त प्रत्येक सोवियत नागरिक को मकान, फलोद्यान, कार और उसके निजी इस्तेमाल के लिए अन्य चीजो का मालिक होने का अधिकार प्राप्त है। लेकिन किसी को कारखाने, व्यापार करने वाली फर्म या मुनाफे के लिए किराये पर देने वाली सम्पत्ति का मालिक होने का अधिकार नही है। अनर्जित आमदनी प्राप्त करने के लिए किराये का श्रम काम मे लाने वाला हर प्रकार का निजी उद्यम निषिद्ध है। कानून अलग-अलग किसानो और दस्तकारो को स्वय उनके अपने श्रम पर आधारित छोटे पूरक अर्थतत्रो की अनुमति देता है और किराये के श्रम के शोषण का वर्जन करता है।

सोवियत सघ का सविधान स्पष्ट करता है कि श्रम प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। सोवियत सघ मे व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और मगल-कल्याण उसके व्यक्तिगत श्रम से निर्धारित होते हैं। समाजवादी सिद्धान्त, "प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार, प्रत्येक को उसके अपने काम के अनुसार", को सोवियत सघ मे व्यावहारिक रूप दिया जा चुका है। यह सिद्धान्त सार्वजनिक और व्यक्तिगत हितो के सामजस्य और समाज यानी समाज के विकास के वर्तमान चरण मे अलग-अलग नागरिको के बीच भौतिक ... के अत्यधिक न्यायसगत वितरण को सुनिश्चित करता है।

सोवियत राज्य। १६१७ की अक्तूबर क्रांति ने पुराने राज्य तन्त्र को नष्ट कर दिया, पूंजीवादी वर्ग की तानाशाही को समाप्त कर दिया और एक सम्पूर्णत नये प्रकार के राज्य की—समाजवादी राज्य की सृजना की।

समाजवादी राज्य अपने विकास की दो ऐतिहासिक अवधियों से होकर गुजरता है। पहले चरण की विशेषता है पूंजीवाद से समाजवाद में सक्रमण, समाजवाद की अन्तिम और पूर्ण विजय होने तक। इस अवधि के दौरान समाजवादी राज्य सर्वहारा के अधिनायकत्व का राज्य बना रहता है।

लेनिन ने लिखा था कि सर्वहारा का अधिनायकत्व मजदूरों और किसानों के बीच मेल मिलाप का एक विशेष रूप है जिसका उद्देश्य पूंजी पर विजय प्राप्त करना और बुर्जुआ विरोध का दमन करना है ताकि समाजवाद का निर्माण किया जा सके और उसे मजबूत बनाया जा सके।

श्रमिक वर्ग अत्यधिक उन्नत और राजनीतिक तौर पर सर्वोत्तम संगठित वर्ग होने के नाते समाजवादी राज्य में अगुआ भूमिका अदा करता है। यह अपने मित्रों—मेहनतकश किसानों, बुद्धिजीवियों और दस्तकारों—की समाजवादी निर्माण के सामान्य ध्येय में अपने स्थान की खोज करने में मदद करता है।

लेनिन के अनुसार सर्वहारा का अधिनायकत्व केवल जबरदस्ती नहीं है और मुख्य रूप से जबरदस्ती भी नहीं है। प्रचण्डतम वर्ग संघर्षों की अवधियों में भी मुख्य प्रयास समाजवादी समाज का निर्माण करने और नये मानव को ढालने की ओर निर्देशित थे।

सोवियत राज्य और समाज लम्बा ऐतिहासिक मार्ग तय कर चुके हैं। समाजवाद की पूर्ण और अंतिम विजय ने सोवियत संघ को विकास के नये चरण में—सर्वहारा के अधिनायकत्व से समस्त जनता के राज्य में सक्रमण के चरण में—पहुंचा दिया है जो कुछ वर्गों के हितों को नहीं बल्कि कुल मिला कर सोवियत जनता के हितों को अभिव्यक्त करता है।

इन परिस्थितियों में सोवियत जनवाद जनसंख्या के बहुमत श्रमिक वर्ग के लिए जनवाद से सम्पूर्ण जनता के लिए समाजवादी जनवाद में विकसित हो चुका है। समग्र जनता का राज्य परिपक्व समाजवाद का राजनीतिक संगठन है जिसका प्रत्यक्ष उद्देश्य कम्युनिज्म का निर्माण करना है।

राजकीय संरचना

सोवियत संघ की सभी जातियों को समान अधिकार प्राप्त हैं और अपने विकास के लिए समान सुअवसर उपलब्ध हैं।

संविधान की धारा १२३ में कहा गया है "आर्थिक, सरकारी, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा अन्य सामाजिक गतिविधि के सभी क्षेत्रों में सोवियत संघ के नागरिकों को उनकी जातीयता या नस्ल का ख्याल किये बिना अधिकारों की समानता एक अनुल्लंघनीय कानून है।

"नागरिकों के अधिकारों पर उनकी नस्ल या जातीयता के कारण किसी भी प्रकार की अपरोक्ष या परोक्ष पाबंदी, या इसके विपरीत, उनके लिए उनकी नस्ल या जातीयता के आधार पर किसी प्रकार की अपरोक्ष या परोक्ष सुविधाएं दिया जाना और साथ ही नस्ली या जातीय अनन्यता या विद्वेष और घृणा का किसी भी प्रकार का प्रचार किया जाना कानून द्वारा दण्डनीय अपराध है।"

प्रत्येक जाति का अपना जातीय राज्य या जातीय क्षेत्रीय संघटन है—संघीय जनतंत्र, स्वायत्त जनतंत्र, स्वायत्त क्षेत्र या जातीय क्षेत्र।

सोवियत संघ एक संघीय राज्य है जिसमें १५ अंगीभूत सोवियत समाजवादी जनतंत्र शामिल हैं—रूसी संघ, उक्राइन, बेलोरूस, उजबेकिस्तान, कजाखस्तान, जार्जिया, अजरबैजान, मोल्दाविया, लिथुआनिया, लातविया, किर्गीजिया, ताजिकिस्तान, आर्मीनिया, तुर्कमेनिया और एस्तोनिया।

संघीय जनतंत्र एक जातीय संप्रभु सोवियत समाजवादी राज्य होता है।

प्रत्येक संघीय जनतंत्र का सोवियत संघ के संविधान पर आधारित अपना संविधान होता है जो जनतंत्र की राष्ट्रीय, आर्थिक तथा अन्य खास विशिष्टताओं का ध्यान रखता है।

प्रत्येक संघीय जनतंत्र का अपना न्यायतंत्र, अपना दीवानी, फौजदारी, श्रम परिवार संबंधी तथा अन्य कानून, अपनी अदालतें, नागरिकता, राष्ट्रीय गान, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न होता है। इसकी अपनी राजधानी भी होती है।

प्रत्येक संघीय जनतंत्र का सीमा क्षेत्र उसकी सहमति के बिना बदला नहीं जा सकता। जनतंत्र को विदेशी राज्यों के साथ सीधे सम्बन्ध स्थापित करने का और समझौते सम्पन्न करने का तथा उनके साथ राजनीतिक और कौंसलर प्रतिनिधियों के आदान प्रदान का अधिकार प्राप्त है।

प्रत्येक संघीय जनतंत्र में राज्य सत्ता का उच्चतम निकाय सर्वोच्च सोवियत होती है जिसका अपना एक अध्यक्षमण्डल होता है। संघीय जनतंत्र में राज्य प्रशासन का उच्चतम निकाय उसकी मंत्रिपरिषद होती है जबकि श्रमिक जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतें और उनकी कार्यकारिणी समितियां राज्य सत्ता और प्रशासन के स्थानीय निकाय होते हैं। संघीय जनतंत्र का अपना एक सर्वोच्च न्यायालय भी होता है।

प्रत्येक संघीय जनतंत्र अपने राज्य क्षेत्र में अपनी राज्य सत्ता का स्वतंत्र रूप से प्रयोग करता है। जनतंत्र की सर्वोच्च सोवियत जनतंत्र का संविधान स्वीकृत करती है तथा उन स्वायत्त जनतंत्रों के संविधानों की सम्पुष्टि करती है जो उस संघीय जनतंत्र का भाग होते हैं और जनतंत्र की आर्थिक योजना और बजट को मंजूर करती है। इस जनतंत्र को न्यायिक निकायों द्वारा दण्डादेशित किये गये नागरिकों को माफी देने का और क्षमादान का अधिकार प्राप्त है।

सभी संघीय जनतंत्रों की समानता संघ स्तर पर सभी राजकीय मामलों के प्रबंध में उनकी समान सहभागिता द्वारा सुनिश्चित की गयी है। जनतंत्रों का निम्नलिखित निकायों में समान रूप से प्रतिनिधित्व होता है

सोवियत सघ की सर्वोच्च सावियत की जातिया की सोवियत—प्रत्यक जनतत्र स ३२ प्रतिनिधि

सावियत मघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल—प्रत्यक जनतत्र से एक उपाध्यक्ष (जा परम्परागत रूप से जनतत्रा की सर्वोच्च सावियता के अध्यक्षमण्डला के अध्यक्ष हात है),

सावियत सघ की मत्रिपरिषद जिसम सघीय जनतत्रा की मत्रिपरिषदा के अध्यक्ष पदेन सदस्यो के रूप मे शामिल होने है।

सोवियत सघ का सर्वोच्च यायालय जिसम सघीय जनतत्रो के सर्वोच्च यायाल्या के अध्यक्ष पदेन सदस्या के रूप म शामिल हात है,

किसी भी सघीय जनतत्र को अ य सघीय जनतत्रा की तुलना म कोई विशेपाधिकार या अन य अधिकार प्राप्त नही है।

प्रत्यक सघीय जनतत्र को सोवियत सघ से सम्ब घ-विच्छेद का अधिकार है। सघीय जनतत्र को यह अधिकार सोवियत सघ के गठन के तत्काल बाद प्रदान किया गया था और यह सघीय प्राधिकार द्वारा न तो रद्द किया जा सकता है और न ही सीमित किया जा सकता है। सोवियत सघ से अपन सम्ब घ विच्छेद करन के सघीय जनतत्रा के अधिकार की गारटी सोवियत सघ के सविधान और सभी सघीय जनतत्रो के सविधाना द्वारा दी गयी है।

स्वायत्त जनतत्र एक सावियत समाजवादी जातीय राज्य सघटन होता है जो उस सघीय जनतत्र का, जिसमे वह शामिल होता है, अभि न अग होता है।

प्रत्येक स्वायत्त जनतत्र का अपना सविधान होता है जिसम स्वायत्त जनतत्र की खास विशेपताओ का ध्यान रखा गया है, उसकी अपनी सर्वाच्च सावियत, सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमडल, मत्रिपरिषद, सर्वोच्च यायालय और सत्ता तथा प्रशासन के अपने स्थानीय निकाय होते है।

स्वायत्त जनतत्र का अपना राज्य भेत्र होता है जा उसकी सहमति के बिना बदला नही जा सकता। उसका अपना यायतत्र, आर्थिक तथा सास्कृतिक विकास स सम्ब धित मामला के बार म अपना कानून, अपनी नागरिकता, राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न और ध्वज होता है। प्रत्यक स्वायत्त जनतत्र की अपनी राजधानी भी होती है।

प्रत्यक स्वायत्त जनतत्र का सावियत सघ की सर्वोच्च सावियत की जातियो की सावियत मे (प्रत्येक जनतत्र स ११ प्रतिनिधि) समान रूप से प्रतिनिधित्व होता है, इसके प्रतिनिधि इसकी जनसख्या के अनुपात मे अ य स्वायत्त जनतत्रो की बराबरी म उस सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सावियत मे भी रहत हैं जिसका वह अग होता है। चूकि स्वायत्त जनतत्र सघीय जनतत्र का अभि न अग हाता है इसलिए उसे सोवियत सघ से अपने सम्ब ध विच्छेद करन का काई स्वतत्र अधिकार नही हाता।

सावियत सघ के सघीय जनतत्रो म २० स्वायत्त जनतत्र ह जिनम से १६ रूसी सघ म है, बश्कीरिया, बुर्यात, चेचेनो इगुश, चुवाश, दाघेस्तान, काबार्दिनो-बाल्कार, काल्मीक, कारेलिया, कोमी, मारी, मोर्दोवियाई, उत्तरी ओस्सतिया, तातार, तुवा,

उदमुत और याकूत स्वायत्त जनतत्र। अजरबैजान सोवियत समाजवादी जनतत्र म नारिचवान स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतत्र शामिल है जबकि जार्जियाई जनतत्र म अब्खाजियाई और अजारियान स्वायत्त जनतत्र शामिल हैं और उजबेकिस्तान म कारा-काल्पाक स्वायत्त सोवियत समाजवादी जनतत्र सम्मिलित है।

स्वायत्त प्रदेश एक जातीय क्षेत्रीय सघटन होता है जिसे अपनी विशेषताओं और जातीय सरचना के कारण प्रशासनिक और राजनीतिक स्वायतता प्राप्त होती है। स्वायत्त प्रदेश सघीय जनतत्र का या एक क्षेत्र का अग होता है। स्वायत्त प्रदेश म सत्ता प्रदेश की श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की सोवियत द्वारा प्रयोग म लायी जाती है। इसका उच्चतर प्रशासनिक निकाय इस सोवियत की कार्यकारिणी समिति होती है। प्रत्येक स्वायत्त प्रदेश का सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की जातियों की सोवियत म समान प्रतिनिधित्व—प्रत्येक प्रदेश से पाच प्रतिनिधि—और जिस सघीय जनतत्र का यह अग होता है उसकी सर्वोच्च सोवियत म आनुपातिक प्रतिनिधित्व होता है।

राज्य सत्ता के निकायो, प्रशासनिक निकायो, अदालतो सरकारी वकील का कार्यालय, स्कूलो, सास्कृतिक और सार्वजनिक प्रतिष्ठानो और प्रेस का काम प्रदेश के लोगो की मातृभाषा म किया जाता है।

सघीय जनतत्रो म आठ स्वायत्त प्रदेश हैं जिनम से अदिगेइ, गोर्नो अल्ताई यहूदी, काराचाई चिर्काशियाई और खाकास्स स्वायत्त प्रदेश रूसी सघ म है, नागोर्नो काराबाख स्वायत्त प्रदेश अजरबैजान सोवियत समाजवादी जनतत्र मे है, दक्षिणी ओस्से तियाई स्वायत्त प्रदेश जार्जियाई सोवियत समाजवादी जनतत्र म और गोर्नो बादाख्शान स्वायत्त प्रदेश ताजिक सोवियत समाजवादी जनतत्र म है।

जातीय क्षेत्र की भी विशेष जातीय सरचना होती है (इसम आम तौर पर बहुत सी जातियो के लोग रहते है)। आम तौर पर यह बिखरी आबादी वाला क्षेत्र होता है।

प्रत्येक जातीय क्षेत्र का सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की जातियो की सोवियत म एक प्रतिनिधि द्वारा प्रतिनिधित्व होता है। जातीय क्षेत्रो से रूसी सघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रतिनिधि आबादी की सख्या के अनुपात से निर्वाचित होते है।

जातीय क्षेत्र म राजकीय और प्रशासनिक सत्ता का सचालन श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की स्थानीय सोवियत और उसकी कार्यकारिणी समिति करती है जो रूसी सघ के प्रशासन और राज्य सत्ता के स्थानीय निकायो की एक ही प्रणाली का अग है। राज्य सत्ता और प्रशासन के निकाय अदालते और सरकारी वकील का कार्यालय स्था नीय जाति की मातृभाषा म अपना काम चलाते है। इस प्रकार के दस जातीय क्षेत्र है अगिन्स्की-बुर्यात कोमी-पर्म्याक कोर्याक नेनेत्स ताइमीर, उस्त ओर्दिन्स्की बुर्यात, खाती मान्सी, चुकोत्स्की, एवेन्की और यामालो नेनेत्स।

सोवियत सघ म बुनियादी प्रशासनिक क्षेत्रीय इकाइया हैं—प्रदेश, जिले, कस्बे और गाव। रूसी सघ म क्षेत्र और जातीय क्षेत्र भी सम्मिलित हैं।

प्रत्येक संघीय जनतन्त्र अपने [illegible] क्षेत्रीय डिवीजन के सभी प्रश्नों पर स्वतंत्र रूप से निर्णय लेता है।

सोवियतें, जनसत्ता के [illegible]

श्रमिक जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतें राज्य सत्ता के निर्वाचित प्रतिनिधि-मूलक निकाय हैं।

सोवियत जनता की सत्ता का मूल रूप हैं। वे समस्त जनता के जीवन्त हितों का प्रतिनिधित्व और उनको अभिव्यक्त करती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक वर्ग के अनुभव को, जिसमें पेरिस कम्यून का अनुभव भी शामिल है, मूल रूप देने वाली सोवियतें रूसी सर्वहारा के ऐतिहासिक क्रान्तिकारी अनुभव का परिणाम थीं। श्रमिकों के प्रतिनिधियों की सोवियतें पहले पहल रूस के बड़े औद्योगिक केन्द्रों में प्रथम रूसी क्रान्ति (१९०५-०७) के वर्षों के दौरान प्रकट हुई थीं। उन्हें जारशाही निरंकुशता ने बड़ी निर्दयता से तोड़ दिया था। वे एक बार पुन: १९१७ में देश को अपनी लपेट में लेने वाली क्रान्तिकारी लहर के उफान के समय प्रकट हुईं। वे जनता की सत्ता के पूर्ण निकायों के तौर पर अक्तूबर समाजवादी क्रान्ति के बाद ही स्थापित हुईं।

श्रमिक जनता की प्रभुसत्ता का प्रश्न अक्तूबर क्रान्ति के प्रारम्भिक दिनों में हल कर लिया गया था। जैसा कि मेहनतकश और शोषित जनता के अधिकारों के घोषणा पत्र में कहा गया, "सत्ता पूरे तौर पर और सम्पूर्णत: मेहनतकश जनता और उसके अधिकृत प्रतिनिधियों—श्रमिकों, सैनिकों और किसानों के प्रतिनिधियों की सोवियतों—के हाथ में होनी चाहिए।"

श्रमिक जनता की प्रभुसत्ता के विचार को सोवियत संघ में इस समय लागू संविधान में मूर्त रूप दिया गया है। संविधान की धारा ३ के अनुसार "सोवियत संघ में सारी सत्ता कस्बे और देहात की श्रमिक जनता के हाथ में है जिसका प्रतिनिधित्व श्रमिक जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतों के माध्यम से होगा।

राज्य सत्ता और जनता के स्वशासन के निकायों के तौर पर सोवियतों को राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास से सम्बन्धित विषयों पर निर्णय लेने का अधिकार दिया गया है।

राज्य सत्ता के सभी निकायों का कार्य जनवादी केन्द्रवाद के सिद्धान्त पर आधारित है

ग्राम और नगर सोवियतों से सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत तक सभी सोवियतें नागरिकों द्वारा सीधे मतदान से निर्वाचित की जाती हैं, सभी प्रतिनिधि अपने मतदाताओं के प्रति उत्तरदायी होते हैं और उनके द्वारा वापस बुलाये जा सकते हैं, राज्य प्रशासन के निकाय अपनी-अपनी सोवियतों द्वारा गठित किये जाते हैं और उनके प्रति उत्तरदायी होते हैं, सत्ता के उच्चतर निकायों के कानून उन सब पर लागू होते हैं जो उनके अधीन हैं।

सोवियतो के चुनाव। सोवियत सघ मे चुनावा की व्यावहारिक पद्धति और निर्वाचन प्रणाली सभी सोवियत नागरिको को स्वतत्र रूप मे अपनी इच्छा अभिव्यक्त करने म समर्थ बनाती है। नागरिका के निर्वाचन अधिकारा पर किसी तरह की पाबन्दिया नही ह।

सोवियत सघ के सविधान क अनुसार श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की सभी सोवियतो के सदस्य सार्विक, समान और प्रत्यक्ष वोट के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित किय जात है। १८ साल की आयु वाले सोवियत सघ के सभी नागरिका को भले ही उनकी नस्ल जातीयता, लिंग, धर्म, शिक्षा, अधिवास, सामाजिक उत्पत्ति, सम्पत्ति सबधी स्थिति या पिछली गतिविधिया कुछ भी क्यो न रही हो, प्रतिनिधिया के चुनावो म वोट देन का अधिकार है, उन लोगो को छोड कर जो कानूनी तौर पर पागल प्रमाणित किये जा चुके हो।

१८ वर्ष की आयु वाला सोवियत सघ का प्रत्येक नागरिक स्थानीय सोवियत के लिए निर्वाचित हो सकता है, २१ वर्ष की आयु वाले व्यक्ति सघ या स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के लिए निर्वाचित किये जा सकते हैं और २३ वर्ष की आयु म सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के लिए निर्वाचित हो सकते है।

सोवियत सघ म चुनाव स्वरूप म सही अर्थ म लोकप्रिय है और उन्हे लोगो का अत्यधिक सक्रिय समर्थन प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए १९७० म ८वें समागम की सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के चुनावा म ९९.९ प्रतिशत निर्वाचको न भाग लिया था।

चुनावा को आयोजित करने और समस्त कार्य प्रणाली पर जन नियन्त्रण प्रयोग म लाने के लिए निर्वाचन आयोग (केन्द्रीय जिला और स्थानीय) स्थापित किय जात हैं। उनम ट्रेड यूनियनो सहकारिताओ पार्टी तथा अन्य सार्वजनिक सगठनो तथा सस्थाओ और श्रमिक जनता के विभिन्न सामूहिका के निर्वाचित प्रतिनिधि शामिल होत है। १९७३ मे स्थानीय सोवियतो के पिछले चुनावो मे ९१ लाख से अधिक प्रतिनिधियो ने निर्वाचन आयोगो के काम म भाग लिया था।

सोवियतो क चुनाव के लिए उम्मीदवार को नामजद करने का अधिकार सार्वजनिक सगठनो और सस्थाओ ट्रेड यूनियनो, सहकारी सगठनो पार्टी तरुण तथा अन्य सगठनो और प्रतिष्ठानो तथा सस्थानो म मजदूरो और कर्मचारियो की, फौजी टुकडियो म सैनिको की आम सभाओ और सामूहिक फार्मो म किसानो की आम सभाओ का रहता है। व्यवहारत उम्मीदवार आम तौर पर श्रमिक जनता की आम सभाओ म नामजद किये जाते हैं।

सोवियत सघ म चुनावो के लिए नामजद किये गये उम्मीदवार को चुनाव प्रचार के लिए कोई भी व्यय बर्दाश्त नही करना पडता। पूरे आदोलन का व्यय राज्य अदा करता है। न ही उम्मीदवारो के लिए आमदनी या जायदाद की कोई शर्त है।

सोवियत समाज म विरोधी हितो का प्रतिनिधित्व करने वाली और प्रतिनिधिक सस्थाओ निकायो म प्रधान स्थान हासिल करने के लिए लडने वाली कोई भी मुकाबले

की सामाजिक शक्ति या पार्टी नही है। फलत सोवियत सघ मे उम्मीदवार जनता के प्रतिनिधि होते है और उन्हे कम्युनिस्ट तथा गैर पार्टी लोग दोनो ही नामजद करते है।

चुनाव कानून और समस्त निर्वाचन कार्यविधि निर्वाचको की इन बैठको म प्रत्येक उम्मीदवार के बारे मे स्वतन्त्र और आलोचनात्मक बहस को सुनिश्चित करती है। नामजदगी की कार्यविधि म अतिम निर्णय बहुमत मतदान स किया जाता है। इन सभाओ म जिला निर्वाचन सम्मेलनो के लिए प्रतिनिधि निर्वाचित किये जाते है और ये प्रतिनिधि विशेष निर्वाचन जिलो म मेहनतकश जनता की सहकारिताओ और सगठनो द्वारा नामजद किये गये सभी उम्मीदवारो के नामो पर विचार विमर्श करते है और व अत्यधिक सुपात्र उम्मीदवार को चुनते है।

जो उम्मीदवार जिला निर्वाचन सम्मेलनो मे समर्थन प्राप्त करने म असफल रहते हैं वे उम्मीदवारो की सूची से अपना नाम वापस ले लेते है या वे सगठन उनका नाम हटा देते है जिन्होंने उन्हें नामजद किया होता है।

प्रतिनिधियो के चुनाव की स्वतत्रता की गारटी मतदान की स्वतन्त्रता द्वारा उपलब्ध है। पजीकृत उम्मीदवार के पक्ष में या विपक्ष म वोट देने का प्रत्येक नागरिक को अधिकार है। स्थानीय सोवियतो के १९७३ में हुए चुनावो के दौरान कुल २० लाख स अधिक उम्मीदवारो मे स ८० उम्मीदवारो को अपना नाम वापस लेना पडा क्योकि वे बहुमत वोट नही प्राप्त कर पाये।

सितम्बर १९७२ म सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने "सोवियत सघ म श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की सोवियतो के प्रतिनिधियो की स्थिति के बारे में" कानून पारित किया। यह कानून प्रतिनिधियो की व्यापक और बहुमुखी गतिविधि के लिए वैधानिक सिद्धात लिपिबद्ध करता है। यह उनके अधिकारो और कर्तव्यो को तथा विभिन्न राजकीय और सार्वजनिक निकायो के साथ उनके सम्बन्धो को भी परिभाषित करता है।

यह नया कानून प्रतिनिधियो को और अधिक व्यापकतर अधिकार प्रदान करता है जो उनके लिए सार्वजनिक जीवन के सभी क्षेत्रो की जाच-पडताल करना सम्भव बनाते है।

प्रतिनिधि के कर्तव्य। राज्य सत्ता के सामूहिक प्रतिनिधि निकाय का एक सदस्य होने के नाते डिपुटी के लिए सोवियत, स्थायी आयोगो और सोवियत के अन्य निकायो के, जिनके लिए वह निर्वाचित किया गया होता है कार्य म सक्रिय रूप से शिरकत करना अनिवार्य है।

प्रतिनिधि के लिए सोवियत कानून की मर्यादा बनाये रखना, और कानून के उल्लघन के विरुद्ध सघर्ष म सक्रिय सहभागिता करना उच्च नागरिक चेतना और कर्तव्य की भावना म मेहनतकश जनता को शिक्षित करना तथा समाजवादी बद्धता का कडाई स पालन करना अनिवार्य है।

डिपुटी सोवियत म जनता का पूर्णाधिकारी प्रतिनिधि होता है। वह सोवियत के कार्य की सामान्य प्रवृत्ति के लिए और जनता के आदेशो के पालन के लिए, जो चुनाव अभियान के दौरान जनता अपने प्रतिनिधियो को देती है और उनके माध्यम स सोवियतो

तक पहुचाती है, जिम्मेदार होना है। आदेशा मे आम तौर पर भवन और नगरपालिका सबधी निमाण, लोक सेवाआ और सुख सुविधाआ के व्यवस्थापन, स्कूल, अस्पताल इत्यादि के निमाण से सम्बधित विविध मागें शामिल रहती है।

उस सावियत के काय की पूरी अवधि म मतदाता प्रतिनिधियो के साथ सम्पक बनाये रखत है, उनके काम को नियत्रित करते है और उनके काम मे योगदान करत है। यह जनता के प्रति प्रतिनिधिया की जिम्मेदारियो और अपने प्रतिनिधियो पर जनता क नियत्रण के सविधान मे निधारित सिद्धात के सुसगत कार्यान्वयन का नतीजा है।

सावियत सघ के सविधान की धारा १४२ म कहा गया है "यह प्रत्यक प्रतिनिधि का कतव्य है कि वह अपने काय के बारे म और श्रमिक जनता के प्रतिनिधिया की अपनी सोवियत के काय के बारे म अपने निर्वाचको को रिपाट प्रस्तुत कर।"

प्रतिनिधि के लिए आवश्यक है कि वह अपने निर्वाचका को सोवियत के फसलो से अवगत करे, उन्ह उनका अथ समझाय उनके कार्यान्वयन के लिए जनता के प्रयासा को एकजुट कर और यह दखे कि इन फसला का पालन हो। प्रतिनिधि निर्वाचका का नियमित रूप से अपने काय का लेखा देता है। यह चीज प्रत्येक व्यक्ति को अपनी राय देन और प्रतिनिधि या सामान्य रूप से सोवियत के काय की आलोचना करन म समथ बनाती है और सावियतो के काय पर जनता के सीधे प्रभाव को सुनिश्चित करती है। जसा कि सावियत सघ के सविधान की धारा १४२ म कहा गया है प्रत्यक प्रतिनिधि " बहुसरयक मतदाताआ के निणय पर किसी भी समय कानून द्वारा बताये ढग स वापस बुलाया जा सकता है।" यह तब होता है जब प्रतिनिधि न मतदाताआ का विश्वास खो दिया हो या अपन पद की मर्यादा के विपरीत कायवाहिया की हो।

प्रतिनिधि को वापस बलाने का प्रश्न सावजनिक सगठनो और मतदाताआ की बठको द्वारा उठाया जाता है। उसके मतदाताआ के बहुमत से लिये निणय के बाद प्रतिनिधि को वापस बुलाया जाता है।

सोवियत कानून प्रतिनिधिया की उनके मतदाताआ पर, जिनके हिता का वे सरकारी निकाया म प्रतिनिधित्व करत है, केवल निभरता ही घोषित नही करता बल्कि वास्तव म इसकी गारटी दता है। यह लनिन के इस सिद्धात का सुसगत कार्यान्वयन है कि कोई भी निर्वाचित निकाय कवल तब ही वास्तव म जनवादी और वास्तव में जनता का प्रतिनिधिक निकाय माना जा सकता है जब अपने प्रतिनिधिया को वापस बुलान के मतदाताआ क अधिकार को स्वीकृत और कार्यान्वित किया गया हो।

प्रतिनिधि के अधिकार। सावियत राज्य प्रत्यक प्रतिनिधि के लिए अपने अधिकारा को प्रभावशाली ढग से और बिना किसी बाधा के व्यवहार म लान और अपन कतव्या का पालन करन के लिए आवश्यक परिस्थितिया उत्पन्न करता है।

अपन अधिकारा का प्रयोग म लान म प्रतिनिधि क रास्त म बाधा डालन वाल या राज्य सत्ता क एक प्रतिनिधि क तौर पर प्रतिनिधि के सम्मान और प्रतिष्ठा का अतिक्रमण करन वाल व्यक्ति कानून द्वारा दण्डनीय हैं।

प्रत्यक प्रतिनिधि का उस सोवियत के किसी भी निर्वाचित निकाय मे स्वय चुन जान या किसी का चुनने का अधिकार है जिसका वह प्रतिनिधि होता है, उसे सोवियत की क्षमता के किसी भी प्रश्न को विचार विमश के लिए उठाने और उस पर होन वाली वहस मे भाग लेने का अधिकार होता है उसे सोवियत के अधिवेशना म विचाराधीन मामला के सम्बन्ध मे कोई भी सुझाव देने का अधिकार होता है, मसौदा और प्रस्तावा मे परिवधन और सशोधन करने का अधिकार होता है, उसे अपने वोट के माध्यम स प्रस्तावा पर अपना विचार व्यक्त करने का अधिकार होता है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत या स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के प्रतिनिधि को उस सर्वोच्च सोवियत मे जिसके लिए वह निर्वाचित किया गया होता ह, कानून का सूत्रपात करन का अधिकार होता है।

प्रतिनिधि को जानकारी सम्बन्धी प्रश्न करने का अधिकार होता है। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत, सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत या स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के प्रतिनिधि को क्रमश सोवियत सघ की सरकार स, सघीय जनतत्र की सरकार से या स्वायत्त जनतत्र की सरकार से या सोवियत सघ, सघीय जनतत्रा या स्वायत्त जनतत्रा की सर्वोच्च सोवियता द्वारा स्थापित राज्य प्रशासन के निकाया के अध्यक्षा या मत्रियो से जानकारी सम्बन्धी प्रश्न पूछने का अधिकार होता है।

स्थानीय सोवियत के प्रतिनिधि को सोवियत की कायकारिणी समिति से, सोवियत क्षेत्र म स्थित प्रतिष्ठाना सस्थाना और सगठनो के प्रबधका से पूछताछ करन का अधिकार होता है।

जिस अधिकारी या राज्य एजेंसी से पूछताछ की जाती है उसके लिए कानून द्वारा निर्धारित अवधि मे उत्तर देना अनिवाय हाता है।

सोवियत सघ म सभी प्रतिनिधियो को निरापदता प्राप्त है। प्रतिनिधि जिस सोवियत का सदस्य निर्वाचित होता है उसकी सम्मति के बिना और सोवियत के अधिवेशना के बीच की अवधि म सोवियत की कायकारिणी समिति की सम्मति के बिना उस पर मुकदमा नही चलाया जा सकता, वह गिरफ्तार नही किया जा सकता या अदालती कायवाही द्वारा दी गयी प्रशासनिक सजा उसे नही हो सकती।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत, सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत या स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत का प्रतिनिधि क्रमश सोवियत सघ, सघीय जनतत्र या स्वायत्त जनतत्र के राज्य क्षेत्र मे सभी रेल, मोटर, जल और वायु यातायात साधना का मुफ्त इस्तमाल कर सकता है और साथ ही टक्सियो के सिवा सभी प्रकार के नगरपालिका यात्री-परिवहन का भी बिना टिकट के इस्तेमाल कर सकता है। स्थानीय सोवियत के प्रतिनिधि को अपनी सोवियत के राज्य क्षेत्र मे ये ही अधिकार प्राप्त हैं (सिवाय वायु परिवहन के)।

सोवियत या उसकी एजेंसियों की हिदायतों पर प्रतिनिधि राज्य एजेंसियों, प्रतिष्ठानों, सामूहिक तथा राज्य फार्मों के काम का निरीक्षण करता है। मतदाताओं द्वारा इंगित समस्याओं का जल्द से-जल्द समाधान करने की दिशा में काम करना उसकी जिम्मेदारी है। सोवियत के क्षेत्र में स्थित प्रतिष्ठानों, संगठनों और एजेंसियों के अध्यक्षों के लिए अनिवार्य है कि वे प्रतिनिधि को सभी आवश्यक सूचनाएं उपलब्ध करें।

सोवियत संघ में सभी प्रतिनिधि, सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रतिनिधियों सहित उत्पादन या अन्य क्षेत्रों में अपने नियत कार्य को बाधित किए बिना और पारिश्रमिक के बिना अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। प्रतिनिधि के रूप में उसके कार्यकलाप के दौरान होने वाला प्रतिनिधि का सारा खर्च उसकी सोवियत अदा करती है। जब प्रतिनिधि के लिए उसकी सोवियत द्वारा नियुक्त आयोग में काम करना आवश्यक होता है तब उसे अपने नियत कार्य से मुक्त कर दिया जाता है लेकिन उसे उसका सामान्य वेतन मिलता रहता है।

सोवियत प्रतिनिधि विभिन्न पेशों के लोग होते हैं। यह तथ्य कि उनके पास अपना एक स्थायी रोजगार होता है और यह कि वे जिन कार्यक्षेत्रों में काम करते हैं उनमें उनका अच्छा दखल रहता है, समस्याओं पर होने वाली बहस में और मतदाताओं के हित में समस्याओं के समाधान की खोज करने की दिशा में उनकी प्रभावशाली सहभागिता को संभव बनाता है।

सोवियत प्रणाली। श्रमिक जनता के प्रतिनिधियों की केन्द्रीय और स्थानीय सभी सोवियतें सरकारी निकायों की एक ही प्रणाली को संघटित करती हैं।

प्रत्येक सोवियत अपने अपने प्रशासी प्रादेशिक क्षेत्र में राज्य सत्ता का सर्वोच्च निकाय होती है। सभी सोवियतें जनवादी केन्द्रवाद के सिद्धान्त पर संगठित होती और कार्य करती हैं। यह सिद्धान्त सभी सोवियतों को राज्य सत्ता की एक प्रणाली में एकताबद्ध करता है। यह प्रत्येक सोवियत और समस्त सोवियत प्रणाली को कुल मिलाकर जनता के साथ घनिष्ठ अन्योन्याश्रित सम्पर्क कायम करने में समर्थ बनाता है और राज्य प्रशासन में जनता की व्यापक तथा निर्णायक सहभागिता सुनिश्चित करता है।

सरकारी निकायों की एकल, केन्द्रीकृत जनवादी प्रणाली में सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियतें १५ संघीय जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतें, बीस स्वायत्त जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतें और ५०,००० स्थानीय सोवियतें शामिल हैं।

प्रत्येक सोवियत अपना कार्यकारी निकाय गठित करती है सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद का गठन करती है संघीय जनतंत्रों की सर्वोच्च सोवियतें जनतंत्रीय मंत्रिपरिषदें और स्थानीय सोवियतें अपनी कार्यकारिणी समितियां गठित करती हैं।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत। देश में राज्य सत्ता का सर्वोच्च निकाय सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत है। सोवियत जनता का प्रतिनिधि निकाय होने के रूप राज्य प्रभुसत्ता प्रदान की गयी है। इसका संघटन सोवियत समाज की

सामाजिक तथा जातीय सरचना प्रतिबिम्बित करता है। सर्वोच्च सोवियत मे सोवियत आबादी के सभी हिस्सा के प्रतिनिधि शामिल होते है।

सोवियत सघ की वतमान सर्वोच्च सोवियत (जन १६७० मे निर्वाचित) म १५१७ प्रतिनिधि शामिल हैं जिनम ४१८ मजदूर है और २८२ सामूहिक किसान। इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से उत्पादन म लगे प्रतिनिधियो का भाग प्रतिनिधियो की कुल सख्या म आधे से कुछ थोडा अधिक हो है। ७३ प्रतिनिधि इजीनियर और तकनीशियन है, १४६ प्रतिनिधि विज्ञान, सस्कृति, साहित्य और कला के विभिन्न क्षेत्रा के कर्मी हैं ४७८ प्रतिनिधि राज्य, ट्रेड यूनियन पार्टी और तरुणा के निकाया मे काम करते है। ५७ प्रतिनिधि देश की सशस्त्र सेना का प्रतिनिधित्व करते है। ४६३ (३०,५ प्रतिशत) प्रतिनिधि महिलाए है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के प्रतिनिधि ६२ जातियो का प्रतिनिधित्व करते है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के दो सदन है जातीयता का कोई ख्याल किये बिना सभी सोवियत नागरिको के सामान्य हिता का प्रतिनिधित्व करने वाली सघ सोवियत और प्रत्येक जाति और जातीयता क उसकी अथव्यवस्था या ऐतिहासिक तथा सास्कृतिक पृष्ठभूमि की विशेषताओ से उत्पन्न होने वाले विशिष्ट हितो का प्रतिनिधित्व करने वाली जातियो की सोवियत।

इन दो सदनो का अन्तर इन निकायो की चुनाव पद्धति म प्रतिबिम्बित होता है। सघ सोवियत प्रति ३,००,००० की जनसख्या के लिए एक प्रतिनिधि क आधार पर निर्वाचित की जाती है। जातियो की सोवियत प्रत्येक सघीय जनतत्र से ३२ प्रतिनिधि, प्रत्येक स्वायत्त जनतत्र से ११ प्रतिनिधि, प्रत्येक स्वायत्त प्रदेश से पाच प्रतिनिधि और प्रत्येक जातीय क्षेत्र से एक प्रतिनिधि के आधार पर सघीय जनतत्रो स्वायत्त जनतत्रो, स्वायत्त प्रदेशो और जातीय क्षेत्रो के अनुसार नागरिको के मतदान द्वारा निर्वाचित होती है। इस प्रकार जातियो की सोवियत मे प्रतिनिधित्व के मानदण्ड जातीय राज्य सघटन के रूप पर निर्भर करता है लेकिन उसके राज्य क्षेत्र या जनसख्या के आकार पर नही। सभी सघीय जनतत्रो म विशालतम जनतत्र रूसी सघ (आबादी १३२२ लाख) की जातियो की सोवियत म उतने ही प्रतिनिधि (३२) है जितने अल्पतम जनसख्या (१४ लाख) वाले सघीय जनतत्र एस्तोनिया के।

दोनो सदनो को समान अधिकार प्राप्त हैं। उनकी काय अवधि (चार वर्ष) समान है और कानून का सूत्रपात करने क सम्बन्ध म भी उनके अधिकार समान हैं। कानून को दोनो सदनो द्वारा साधारण बहुमत से पास किये जाने पर स्वीकृति प्रदान की जाती है।

किसी भी प्रश्न पर सदनो मे मतभेद होने की स्थिति मे इसे समाधान के लिए मध्यस्थता आयोग के पास भेजना मजूर किया जाता है जिसमे दोनो सदनो के समान सख्या म प्रतिनिधि होते है। यदि आयोग कोई निर्णय नही ले पाता अथवा उसका निर्णय किसी एक सदन के लिए सन्तोषजनक नही होता तो प्रश्न पर दोनो सदनो म पुन विचार किया जाता है। दोनो सदनो म असहमति की सूरत म सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवि-

यत का अध्यक्षमण्डल सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत को भग कर देता है और नय चुनाव कराये जाते है।

जसा कि सविधान की धारा ३२ मे कहा गया है, कानून बनाने की शक्ति के प्रयोग का अधिकार केवल सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत को प्रदान किया गया है। इसका कोई भी विधायी काय कायकारिणी निकायों को नही सौपा जा सकता।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत सोवियत सघ की अतर्राष्टीय सधियो को सम्पन्न करती है अभिपुष्ट और समाप्त करती है, युद्ध और शाति के प्रश्नो पर निणय लेती है, सोवियत सघ मे नय जनतत्रो को स्वीकार करती है, सोवियत सघ के सविधान के अनुपालन को नियत्रित करती है और सोवियत सघ के सविधान के साथ सघीय जनतत्रो के सविधानो की अनुरूपता को सुनिश्चित करती है, सघीय जनतत्रो के बीच सीमाओ के परिवतन को अनुमोदित करती है, सघीय जनतत्रो की सीमा के अन्दर नये स्वायत्त जनतत्रो की स्थापना को अनुमोदित करती है, अनुबन्ध करती है और ऋण प्रदान करती है, भूमि की काश्तकारी की अवधि के और खनिज सम्पदा, वन और जल साधनो के उपयोग के बुनियादी सिद्धान्त परिभाषित करती है, शिक्षा और सावजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्रो के बुनियादी सिद्धान्तो को परिभाषित करती है, श्रम कानूनो के मूल सिद्धान्तो को परिभाषित करती है, न्याय प्रणाली और न्यायिक कायविधि सम्बन्धी कानून के मूल तत्वो को विवाह और परिवार सम्बन्धी कानून के मूल तत्वो को, दीवानी, फौजदारी और दोषनिवारक श्रम कानून के मूल सिद्धान्तो को परिभाषित करती है, सघीय नागरिकता से सम्बन्धित और विदेशियो के अधिकारो से सम्बन्धित कानून को परिभाषित करती है, और राजक्षमा के अखिल सघीय अधिनियम लागू करती है।

आवश्यकता पडने पर सर्वोच्च सोवियत अलग-अलग राज्यीय निकायो को पुनगठित करती है और उनकी सरचना और सघटन मे परिवतन करती है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत राष्टीय आथिक योजना का वार्षिक अनुमोदन करती है और सोवियत सघ के राज्य बजट को स्वीकृति प्रदान करती है और इसके कार्यान्वयन के बारे मे रिपोट देती है।

सर्वोच्च सोवियत सोवियत विदेश नीति के निधारण मे अत्यधिक महत्वपूण भूमिका अदा करती है।

सविधान के अनुसार सर्वोच्च सोवियत राज्य सत्ता के उच्चतर निकायों को निर्वाचित और नियुक्त करती है। यह सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्ष मण्डल को निर्वाचित करती है जो अधिवशनो के बीच के अतराल मे सर्वोच्च सोवियत के कायकलाप को चलाता है, और सोवियत सरकार, सोवियत सघ की मंत्रि परिषद और सोवियत सघ के मुख्य सरकारी वकील को नियुक्त करती है और सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय को निर्वाचित करती है।

सर्वोच्च सोवियत देश के सभी सरकारी निकायो और उच्चतर अधिकारियो पर नियत्रण रखती है।

अन्तर ससदीय सम्बन्धो की स्थापना के लिए सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के अन्तर्गत राष्ट्रीय ससदीय दल स्थापित किया गया था। यह अन्तर ससदीय सघ का एक सक्रिय सदस्य है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल राज्य सत्ता का स्थायी रूप से क्रियाशील उच्चतर निकाय है सोवियत सघ का मडलवद्ध अध्यक्ष है।

अध्यक्षमण्डल का चुनाव सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के दोनो सदनो की सयुक्त बैठक मे होता है। ३७ प्रतिनिधि इसके सदस्य होते हैं, सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल का अध्यक्ष १५ उपाध्यक्ष (सघीय जनतत्रो की सख्या के अनुसार), अध्यक्ष मण्डल का सचिव और २० अन्य सदस्य।

अधिवशनो के बीच के अन्तराल मे अध्यक्षमण्डल सर्वोच्च सोवियत के अधिकार क्षेत्र की समग्र समस्याओ पर फसला लेता है। उदाहरणार्थ आवश्यकता पडने पर यह कानून मे सशोधन लागू करता है सरकार के इक्का दुक्का सदस्यो को उनके पदो से हटाता है और नये सदस्य नियुक्त करता है सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के सदस्यो को निर्वाचित और सेवामुक्त करता है, इत्यादि। इन प्रश्नो पर अध्यक्षमण्डल के सभी निर्णयो का सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की स्वीकृति के लिए भेजा जाना जरूरी है क्योकि अध्यक्षमण्डल अपनी समस्त गतिविधियो के लिए सर्वोच्च सोवियत के प्रति पूरे तौर पर जवाबदेह होता है।

सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के स्थायी आयोग दोनो सदनो द्वारा स्थापित किये जाते है। प्रत्येक आयोग अपने अधिकार क्षेत्र के मामलो पर स्वतत्र निर्णय लेता है। प्रत्येक सदन के अन्तर्गत अब १३ स्थायी आयोग हैं जिनमे एक प्रमाण आयोग कानून सबधी सुझावो के लिए एक आयोग, एक योजना और बजट आयोग, वदेशिक मामलो का आयोग, युवको के मामलो से सम्बन्धित एक आयोग, उद्योग के लिए तथा यातायात और सचार साधनो के लिए एक आयोग, निर्माण और इमारती सामग्री उद्योग के लिए एक आयोग, कृषि के लिए एक आयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक अनुरक्षण के लिए एक आयोग, सार्वजनिक शिक्षा, विज्ञान और सास्कृतिक मामलो के लिए एक आयोग, व्यापार और सार्वजनिक सेवाओ के लिए एक आयोग, प्रकृति सरक्षण के लिए एक आयोग शामिल है।

स्थायी आयोगो के दायित्व हैं विल और सर्वोच्च सोवियत द्वारा जारी की गयी अन्य सामग्री का मसौदा तैयार करना, कानून के पालन और कार्यकारी निकायो के कार्य पर नियत्रण करना।

दोनो सदनो की बैठक मे सर्वोच्च सोवियत सोवियत सरकार का सोवियत सघ की मत्रिपरिषद को नियुक्त करती है।

सोवियत सघ की मत्रिपरिषद सोवियत सघ की राज्य सत्ता का उच्चतम कार्यकारी और प्रशासी निकाय है। इसमे मत्रिपरिषद के अध्यक्ष, उसके सहायक मत्रियो, राज्य समितियो के अध्यक्षगण और सभी सघीय जनतत्रो की मत्रिपरिषदो के अध्यक्षो सहित ८० से अधिक सदस्य रहते हैं।

सोवियत सरकार राज्य प्रशासन के सभी निकायो के काय को एकताबद्ध, निदे शित और समन्वित करती है। मंत्रिपरिषद का काय सामूहिक प्रयासो पर आधारित होता है।

मन्त्रिपरिषद का समस्त कायकारी और प्रशासनिक काय सोवियत कानून के अत्यधिक कडे पालन पर आधारित होता है। यह सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा लागू किये गये कानूनो के आधार पर और उनका पालन करते हुए निणय और आदेश जारी करती है। जसा कि सोवियत सघ के सविधान मे निधारित किया गया है, सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद

सोवियत सघ के मत्रालयो के और अपने अधिकार क्षेत्र के अन्तगत काम करने वाले अन्य निकायो के काम को निर्देशित और समन्वित करती है,

आर्थिक योजना तथा राज्य बजट को कार्यान्वित करने के लिए और ऋण तथा मुद्रा प्रणाली को सुदृढ बनाने के लिए कदम उठाती है,

कानून और व्यवस्था बनाये रखने के लिए, राज्य के हितो की रक्षा के लिए और नागरिको के अधिकारो की सुरक्षा के लिए उपाय करती है,

अन्य राज्यो के साथ सम्बन्धो के क्षेत्र मे सामान्य निर्देश देती है,

सैनिक सेवा के लिए बुलाये जाने वाले नागरिको के वार्षिक दल निश्चित करती है और देश की सशस्त्र सेना के सामान्य सगठन को निर्देशित करती है,

सोवियत सघ की राज्य समितियां स्थापित करती है और आवश्यकता पडने पर आर्थिक तथा सांस्कृतिक मामलो और प्रतिरक्षा के लिए सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद के अन्तगत विशेष समितियां और केन्द्रीय बोड स्थापित करती है।

सोवियत सघ की मन्त्रिपरिषद सर्वोच्च सोवियत के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह है।

सघीय जनतन्त्रों की सर्वोच्च सोवियतें सघीय जनतन्त्रो मे राज्य सत्ता के उच्चतम निकाय होती है। इनका एक सदन होता है।

सघीय जनतन्त्रो की सर्वोच्च सोवियतो के प्रतिनिधित्व का आधार प्रत्येक सविधान मे प्रत्येक जनतन्त्र की जनसख्या के आकार के अनुसार निर्धारित किया गया है।

हाल के चुनावो मे सर्वोच्च सोवियतो के लिए निर्वाचित प्रतिनिधियो की सख्या इस प्रकार थी रूसी सघ की सर्वोच्च सोवियत—८८४ प्रतिनिधि, उक्राइन—४६६ प्रतिनिधि, उज्बेकिस्तान—४२१ प्रतिनिधि, कजाखस्तान—४७६ प्रतिनिधि उजबेकिस्तान—४५८ प्रतिनिधि तुर्कमेनिया—२८५ प्रतिनिधि, इत्यादि।

सघीय जनतन्त्र की सर्वोच्च सोवियत सार्वत्रिक, समान और प्रत्यक्ष मतदान के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा चार वष की अवधि के लिए निर्वाचित की जाती है।

सघीय जनतन्त्रो की सर्वोच्च सोवियतो को प्राप्त अधिकारो मे ये अधिकार शामिल है सघीय जनतन्त्र का सविधान पारित करने और उसमे सशोधन करने या परिशिष्ट जोडने का, और सघीय जनतन्त्र मे शामिल स्वायत्त जनतन्त्रो के सविधानो को ... का सघीय जनतन्त्र का कानून लागू करने का, जनतन्त्र की आर्थिक योजना

और बजट अनुमोदित करने का, राज्य निकायो और जनतत्र के उच्चतर अधिकारियो के काम पर सर्वोच्च नियत्रण करने का अधिकार। इसे जनतत्र के अदालती निकायों द्वारा दण्डित नागरिको को राजक्षमा और माफी देने का भी अधिकार प्राप्त है।

सघीय जनतत्र की प्रभुसत्ता का मूर्त रूप होने के नाते इसकी सर्वोच्च सोवियत सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल और जनतत्र का सर्वोच्च न्यायालय निर्वाचित करती है, यह सघीय जनतत्र की मत्रिपरिषद नियुक्त करती है और आवश्यकता पडने पर इन निकायो के सघटन मे परिवर्तन करती है।

सघीय जनतत्रो की सर्वोच्च सोवियत स्थायी आयोग (प्रमाण आयोग कानूनी सुझावो के लिए आयोग योजना और बजट आयोग, विदेशी मामलो तरुणो के मामलो और प्रकृति सरक्षण के लिए आयोग और अर्थव्यवस्था तथा सस्कृति के क्षेत्रो की विभिन्न शाखाओ से सम्बन्धित आयोग) निर्वाचित करती है। इनकी सख्या प्रत्येक जनतत्र की विशेषताओ के अनुसार होती है।

सघीय जनतत्र की राज्य सत्ता का उच्चतम कार्यकारी और प्रशासी निकाय है मत्रिपरिषद—सघीय जनतत्र की सरकार। यह सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत या उसके अधिवेशनो के अन्तराल म सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के अध्यक्षमण्डल के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह होती है।

स्वायत्त जनतत्रो मे राज्य सत्ता के उच्चतम निकाय बुनियादी तौर पर सघीय जनतत्रो की राज्य सत्ता के उच्चतम निकायो के समरूप होते हैं।

स्वायत्त जनतत्रो की सर्वोच्च सोवियत जनतत्र के नागरिको द्वारा चार वर्षों की अवधि के लिए स्वायत्त जनतत्र के सविधान द्वारा निर्धारित प्रतिनिधित्व के आधार पर निर्वाचित की जाती है। इसकी सख्यात्मक बनावट ६० और १५० प्रतिनिधियो के बीच घटती बढती रह सकती है।

सर्वोच्च सोवियत को जो अधिकार प्राप्त है उनम स्वायत्त जनतत्र के सविधान को पारित करने और उसम सशोधन करने और अपने सघीय जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत के अनुमोदन के लिए इन अधिनियमो को प्रस्तुत करने स्वायत्त जनतत्र म कानून बनाने, उसके उच्चतम राज्य निकायो की नियुक्ति जनतत्र की आर्थिक योजना और बजट के अनुमोदन और राज्य निकायो जनतत्र के उच्चतर कार्यकारी अधिकारियो के काम पर सर्वोच्च नियत्रण के अधिकार शामिल हैं।

स्वायत्त जनतत्र की सर्वोच्च सोवियत सर्वोच्च सोवियत का अध्यक्षमण्डल निर्वाचित करती है मत्रिपरिषद नियुक्त करती है और सर्वोच्च न्यायालय भी निर्वाचित करती है।

श्रमिक जनता के प्रतिनिधियों की स्थानीय सोवियतें एकल सोवियत प्रणाली का अभिन्न अग होती हैं। व क्षेत्रो प्रदेशो जिलो, नगरो गावो और ग्रामीण बस्तियो म राज्य सत्ता का प्रयोग करती हैं और अपने अधिकार क्षेत्र के प्रश्नो का स्वतत्र रूप म समाधान करती हैं।

सभी स्थानीय सोवियतें दो साल की अवधि के लिए निर्वाचित की जाती हैं। प्रतिनिधित्व का आधार संघीय जनतंत्रों के संविधानों में निर्धारित किया गया है। क्षेत्रों और प्रदेशों की सोवियतें आम तौर पर १०० प्रतिनिधियों को लेकर गठित की जाती हैं जिलों की सोवियतें ७५ प्रतिनिधियों को लेकर, नगरों की सोवियत ५० प्रतिनिधियों को लेकर और ग्रामीण बस्तियों की सोवियतें २५ प्रतिनिधियों को लेकर गठित की जाती हैं।

स्थानीय सोवियत अपनी कार्यकारिणी समितियों के काम का पथ प्रदर्शन करती हैं, सार्वजनिक व्यवस्था के अनुरक्षण और कानून के पालन को सुनिश्चित करती हैं नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करती हैं, स्थानीय आर्थिक तथा सांस्कृतिक मामलों को निर्देशित करती है और स्थानीय बजट तैयार तथा अनुमोदित करती हैं। जनता के कल्याण के प्रति, कस्बे और देहात दोनों स्थानों पर जनता की जरूरतों और मांगों की भरपूर तुष्टि के प्रति रोजमर्रा ध्यान देना उनका काम है।

स्थानीय सोवियतों को राष्ट्रव्यापी प्रश्नों पर विचार विमर्श करने का तथा अपने सुझाव उपयुक्त निकायों के पास भेजने का भी अधिकार प्राप्त है।

स्थानीय सोवियतों के हाल के चुनावों मे (जून १९७३) इन निकायों के लिए लगभग २२,००,००० प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। इस संख्या मे मजदूरों और सामूहिक किसानों का हिस्सा ६५ प्रतिशत है, ४६ प्रतिशत प्रतिनिधि महिलाएं हैं। कुल प्रतिनिधियों का ५५ ५ प्रतिशत भाग गैर पार्टी सदस्यों का है। सोवियत संघ की सभी जातियों और उपजातियों को सोवियतों मे प्रतिनिधित्व प्राप्त है।

प्रत्येक चुनाव सोवियतों की बनावट में उल्लेखनीय परिवर्तनों का कारण बनता है। उदाहरण के लिए १९७३ मे निर्वाचित कुल प्रतिनिधियों मे आधे से अधिक प्रतिनिधि पहली बार प्रतिनिधि निर्वाचित हुए थे। सोवियतें लाखों मेहनतकश लोगों को राज्य प्रशासन का प्रशिक्षण प्राप्त करने और वह अनुभव प्राप्त करने के योग्य बनाती है जो सार्वजनिक मामलों मे सक्रिय सहभागिता के लिए आवश्यक है।

विधि व्यवस्था

सोवियत संघ में विधायी अधिकार, जैसा कि सोवियत संघ के संविधान की धारा ३२ में शर्त लगायी गयी है सिर्फ सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा प्रयोग में लाये जाते हैं।

तदनुसार, संघीय और स्वायत्त जनतंत्रों के संविधान अपने अपने जनतन्त्रों की सर्वोच्च सोवियतों को अपने एकमात्र विधायी निकायों के तौर पर नामित करते हैं।

सोवियत कानून सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा और संघीय तथा स्वायत्त जनतन्त्रों की सर्वोच्च सोवियतों द्वारा स्वीकृत कानूनों के समूह से बना है।

सोवियत संघ के कानून सामाजिक जीवन के मुख्य क्षेत्रों मे सामाजिक सम्बन्धों को निर्धारित करने वाले कानूनी नियम स्थापित करते हैं और बुनियादी कानूनी सिद्धांत [illegible] करते हैं जो सोवियत संघ के समूचे राज्य क्षेत्र पर लागू होते हैं।

न्याय प्रणाली। न्याय लागू किया जाता है सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय संघीय तथा स्वायत्त जनतत्रो के सर्वोच्च न्यायालयो क्षेत्रो, प्रदेशो, इलाको और नगरो की अदालतो तथा जन अदालतो द्वारा।

सभी जज पाच वर्षों की अवधि के लिए निर्वाचित किय जाते हैं। सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय का निर्वाचन सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा किया जाता है। सघीय तथा स्वायत्त जनतत्रो के सर्वोच्च न्यायालयो का चुनाव क्रमश सघीय तथा स्वायत्त जनतत्रो की सर्वोच्च सोवियतो द्वारा किया जाता है। क्षेत्रो, प्रदेशो, इलाको और नगरो की अदालतो का चुनाव श्रमिक जन के प्रतिनिधियो की सम्बधित सोवियतें करती हैं। जन अदालतें सार्वत्रिक, प्रत्यक्ष समान मत के आधार पर गुप्त मतदान द्वारा निर्वाचित की जाती हैं। जन न्यायाधीशो के पदो के लिए उम्मीदवार श्रमिको क सामूहिक नामजद करते हैं। २५ वर्ष की आयु को पहुच चुका सोवियत सघ का कोई भी नागरिक जन न्यायाधीश बन सकता है इसके लिए सम्पत्ति सम्बन्धी, सामाजिक या अन्य शर्तें नही हैं।

सभी अदालत उन सोवियतो के प्रति जवाबदेह होती है जो उन्हे चुनती हैं। जन न्यायालय अपने निर्वाचको के प्रति जवाबदेह होते हैं। जजो से श्रमिक जनता की बैठको म स्वय अपने कायकलाप के बारे म और अदालत की गतिविधि के बारे म नियमित रूप से रिपोर्ट प्रस्तुत करने की अपेक्षा की जाती है। अगर कोई जज जनता के विश्वास पर खरा नही उतरता तो उसे वापस बुलाया जा सकता है और नये चुनाव कराये जा सकते है।

सभी सोवियत अदालतो म मुकदमो की सुनवाई एक कालेजियम द्वारा की जाती है जिसम एक जज के अतिरिक्त दो जन असेसर होते है जिन्हे वही अधिकार प्राप्त होते हैं जो जज को अदालत के सामने आये मामलात पर निर्णय देने के सिलसिले म होते हैं। क्षेत्रीय और प्रादेशिक अदालतो के और साथ ही नगरो और इलाको की अदालतो के जन असेसर श्रमिक जनता के प्रतिनिधियो की सम्बधित सोवियतो द्वारा निर्वाचित किये जाते हैं। सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय और सघीय तथा स्वायत्त जनतत्रो के सर्वोच्च न्यायालयो के जन असेसर सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत और क्रमश सघीय तथा स्वायत्त जनतत्रो की सर्वोच्च सोवियतें निर्वाचित करती हैं।

जन न्यायालयो के असेसर लोग नागरिको द्वारा उनके रोजगार के स्थानो या उनके रिहाइशी क्षेत्रो म आयोजित बैठको म खुले मतदान द्वारा चुने जाते हैं। जन असेसर जीवन के सभी क्षेत्रो के लोग होते हैं। न्याय को लागू करने के सिलसिले म वे अपने जीवन के अनुभव बुद्धि और विवेक द्वारा निर्देशित होते हैं और समाजवादी आचरण तथा सोवियत कानूनो के अनुसार काय करते हैं।

सोवियत सघ म ६ ००,००० से अधिक जन असेसर हैं। जन असेसरो के चुनाव हर दो साल पर होते हैं और नतीजे के तौर पर लाखो श्रमिक जन न्याय करने म भाग लेते हैं।

जन न्यायालय। जन न्यायालय सोवियत न्याय प्रणाली का मुख्य अंग है। यह ९५ प्रतिशत से अधिक दीवानी और फौजदारी मुकदमों की जाच पड़ताल करता है।

जन न्यायालय प्रत्येक जिले और प्रत्येक उस कस्बे में सक्रिय है जो जिलों में विभक्त नहीं हुआ हो।

नगरीय, प्रादेशिक और क्षेत्रीय अदालतें, स्वायत्त प्रदेशों, राष्ट्रीय क्षेत्रों की अदालतें और स्वायत्त जनतन्त्रों के सर्वोच्च न्यायालय। ये अदालतें विशेष महत्व के दीवानी तथा फौजदारी मुकदमों की सुनवाई करती हैं और इस बात को निश्चित बनाती हैं कि जन अदालतों द्वारा दिये गये दण्डादेश और फैसले वैध और कानूनी हों। ये दीवानी और फौजदारी मुकदमों के न्यायिक बोर्डों और न्यायालयों के अध्यक्षमण्डलों को लेकर गठित किये जाते हैं।

संघीय जनतन्त्रों के सर्वोच्च न्यायालय। ये संघीय जनतन्त्रों के उच्चतम न्यायिक निकाय होते हैं। उनमें से प्रत्येक दीवानी और फौजदारी मुकदमों के बोर्डों, अध्यक्षमण्डल और पूर्णाधिवेशन से गठित होता है। संघीय जनतन्त्र के सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र में आने वाले मुकदमों का कानून अलग-अलग उल्लेख नहीं करता। इसे स्वयं अपनी पहल पर या संघीय जनतन्त्र के सरकारी वकील के आदेश पर कोई भी ऐसा मुकदमा लेने का अधिकार है जो निचली अदालत के अधिकार-क्षेत्र में आता हो लेकिन विशेष परिस्थितियों के कारण विशेष सामाजिक महत्व का हो गया हो। सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दी गयी सजाएं और फैसले किसी अपील न्यायालय में नहीं ले जाये जा सकते। संघीय जनतन्त्र के सर्वोच्च न्यायालय का पर्यवेक्षी हैसियत में काम करने वाला अध्यक्षमण्डल इन फैसलों और सजाओं की जांच कर सकता है। सर्वोच्च न्यायालय का पूर्णाधिवेशन संघीय जनतन्त्र की सभी अदालतों की गतिविधि की देखरेख करता है।

यह अदालतों को जनतन्त्र के विधान को लागू करना सिखाता है और कानूनों के लागू करने और उनके भाष्य के सिलसिले में जनतन्त्र की सर्वोच्च सोवियत को सुझाव देता है। पूर्णाधिवेशन में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और जनतन्त्र के सर्वोच्च न्यायालय के सदस्य शामिल होते हैं। पूर्ण बैठकों में जनतन्त्र के सरकारी वकील की मौजूदगी अनिवार्य है।

सोवियत संघ का सर्वोच्च न्यायालय। यह देश में मौजूद उच्चतम न्यायिक निकाय है। यह सोवियत संघ के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्णाधिवेशन, दीवानी मुकदमों के न्यायिक बोर्ड, फौजदारी मुकदमों के न्यायिक बोर्ड और फौजी न्यायिक बोर्ड से बना होता है।

सोवियत संघ के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायिक बोर्ड प्रथमतः असाधारण महत्व के उन मुकदमों की जांचते हैं जो कानून द्वारा उनके अधिकार में सौंपे जाते हैं।

उच्चतम न्यायिक संस्था होती है सोवियत संघ के सर्वोच्च न्यायालय का पूर्णाधिवेशन जिसमें संघीय जनतन्त्रों के सर्वोच्च न्यायालयों के अध्यक्ष शामिल होते हैं। पूर्ण बैठकों में सोवियत संघ के मुख्य सरकारी वकील और सोवियत संघ के न्याय मंत्री शामिल होते हैं।

सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्णाधिवशन का मुख्य काय न्याय पद्धति का निचोड प्रस्तुत करना और कानून के अत्यधिक सही और कड कार्यावयन का दगा देने के लिए अदालतो के लिए निर्देश तैयार करना है।

पूर्णाधिवशन की सिफारिश पर सोवियत सघ का सर्वोच्च न्यायालय देश म लागू विधान को सुधारने के लिए सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत को सुझाव भेजता है। इसके अतिरिक्त सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय का पूर्णाधिवशन सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के अध्यक्ष तथा सोवियत सघ के मुख्य सरकारी वकील के आवदन पर सोवियत सघ के सर्वोच्च न्यायालय के न्यायिक बोर्डों द्वारा दिय गय फसलो और सजाओ के विरुद्ध और सघीय जनतत्रो के सर्वोच्च न्यायाल्यो के आदशो के विरुद्ध प्रति वादो का जाचता है जहा कही य अखिल सघीय विधान के प्रतिकूल हात है या जहा य दूसरे सघीय जनतत्रो के हितो की उपेक्षा करत है। इस तरह सोवियत सघ का सर्वोच्च न्यायालय सभी अदालतो की न्यायिक गतिविधियो की दखरेख करता है और इस प्रकार न्याय के उचित प्रशासन को सुनिश्चित बनाता है।

सोवियत सघ का न्याय मत्रालय और उसके स्थानीय निकाय अदालतो की व्यवस्था जजो और जन असेसरो के चुनाव और अदालतो के रख रखाव की देखरेख के लिए जिम्मेदार होते है।

सजाओ की किस्मे। फौजदारी अपराधो के लिए निम्नलिखित सजाए हैं सामाजिक निदा जुर्माने विशेष पदो पर बने रहने या विशेष गतिविधियो मे लगन के अधिकारो से वचित किया जाना निर्वासन, देशनिकाला बिना जेल भेजे सुधारक श्रम और जेल।

दो और भी सजाए ह जो केवल अतिरिक्त सजाओ के तौर पर दी जाती हैं—सम्मानसूचक उपाधि या फौजी पद से वचित किया जाना और जायदाद की जब्ती।

जायदाद की जब्ती की सजा केवल उसी सूरत मे दी जाती है जब अपराध सगीन होता है। अपराधी के परिवार की सम्पत्ति और उसके लिए आवश्यक कुछ विशेष वस्तुए जब्त नही की जा सकती है।

कद के बिना सजाए सोवियत दड सहिता की विशेषता हैं। अत्यधिक प्रचलित सजा है—बिना जेल के सुधारक श्रम। अदालत सुधारक श्रम की सजा एक महीने से एक साल की अवधि तक के लिए द सकती है। अदालत यह सजा सुनाते हुए यह नही बताती कि अपराधी को सजा कहा काटनी होगी। सजायाफ्ता मुजरिम आम तौर पर अपने रोजगार के पुराने स्थान पर काम करना जारी रखते हैं। उनकी सजा मे उनकी तनख्वाह म कटौती की बात शामिल रहती है जो अदालत के आदेशानुसार पाच से बीस प्रतिशत तक होती है। यही नही जिस अवधि क दौरान व सजा भोग रहे होते है वह अवधि आम तौर म सजायाफ्ता व्यक्ति की नौकरी के रिकाड म शामिल नही की जाती।

कद की सजा की अधिकतम अवधि दस वष की रहती है। लेकिन अधिक सगीन अपराधो के लिए और विशष रूप से कठोर अपराधियो के लिए कद की अवधि १५ की हो सकती है।

कदी अपनी सजा की अवधि या तो जेलो में गुजारते हैं या बहुधा सुधारक श्रम शिविरो म । सोवियत कानून मे परोल पर छोडे जान की सम्भावना की व्यवस्था है।

कदी अपनी कद के स्थाना पर उपयोगी काम करते है जिसके लिए उन्हे भुगतान किया जाता है । वे कई एक पेशे सीख सकते है और सामान्य शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं। यह चीज उनके लिए इस बात को सम्भव बनाती है कि वे सामान्य काय-जीवन मे पहने से अधिक योग्यता प्राप्त व्यक्ति के रूप म लौट सके । सजा भोग चुके लोगो को नौकरी देना स्थानीय अधिकारियो के लिए अनिवाय है।

कानून उन मुजरिमा को जिन्हाने अत्यन्त जघन्य अपराध किया होता है, किसी को मार डालने की कोशिश की होती है या समाजवादी प्रणाली की बुनियादो पर अतिक्रमण किया होता है मौत की सजा देने की अनुमति देता है । लेकिन कानून उन लोगो को मौत की सजा देन की अनुमति नही देता जो अपराध करते समय १८ वष से कम आयु के हो या महिला मुजरिम होन की सूरत म या उक्त अपराध के समय गभवती रही हो या उस समय गभवती हो जब उसे मौत की सजा दी जानी हो। मौत की सजा को सोवियत सघ म हमेशा एक अस्थायी और अपवादिक साधन समझा गया है।

अदालत के फसलो मे सशोधन। फौजदारी मुकदमे म फसला इसके सुनाये जाने के सात दिन बाद और दीवानी मुकदमे मे दस दिन बाद लागू होता है। इस अवधि के दौरान सजायाफ्ता व्यक्ति, प्रतिवादी पक्ष का वकील स्वय को अन्याय का शिकार हुआ महसूस करने वाला व्यक्ति, मुद्दई और मुद्दालह ऊपर की अदालत म अपील कर सकते ह। इसी अन्तराल म अभियोगी अदालत के फसले के विरुद्ध अपील कर सकता है। जसे ही शिकायत या विरोध पत्र दायर किया जाता है वसे ही सजा या फसले का कार्यान्वयन उस समय तक के लिए स्थगित कर दिया जाता है जब तक कि ऊपर की अदालत उस मुकदमे पर अपना न्याई निणय नही देती।

इससे ऊपर की अदालत विरोध या शिकायत पत्र म इंगित अपील के कारणा का ख्याल किये बिना मुकदम पर पूरे तौर पर पुनर्विचार करती है। अगर यह नीचे की अदालत के दडादेश या फसले का सही समझती है ता नीचे की अदालत का फसला कायम रहता है। लेकिन सजा शुरू होने पर या अदालत का फसला लागू होने पर सरकारी वकील के कार्यालय के निकायो या उपयुक्त अदालता के पास उनकी पयवेक्षी हैसियत म शिकायत की जा सकती है। और अगर सक्षम अधिकारीगण सजा या फसले को अनुचित पाते हैं तो वे उपयुक्त अदालत का विरोध पत्र भेजते है जो तब न्यायिक पयवेक्षण की दृष्टि से मुकदमे को दोहराती है। मुकदमा को दोहराने के इस तरीके से किसी अदालत द्वारा की गयी गलती का सुधारने और किसी अनुचित सजा या फसले को रद्द करने की हर सम्भावना रहती है।

वकील समुदाय। बरिस्टरो का मण्डल सघीय जनतन्त्रा की सर्वोच्च सोवियत द्वारा स्वीकृत अधिनियमा के अन्तगत काम करता है। वे प्राथमिक जाच पडताल के दौरान और अदालत म मुलजिम की वकालत करते हैं और दीवानी मुकदमा और मध्यस्थ

अदालतों में प्रतिनिधियों के रूप में काम करते हैं और नागरिकों को तथा संस्थानों को कानूनी सहायता देते हैं।

कानून के अनुसार ऐसे न्यायिक मुकदमों में जिनमें राजकीय अभियोजक की सहभागिता अनिवार्य होती है, प्रतिपक्ष की ओर से वकील का होना जरूरी है। अगर मुलजिम प्रतिवादी वकील नहीं कर सकता तो अदालत उसे निःशुल्क वकील देती है।

सोवियत वकीलों की संख्या १५,००० है। इस संख्या में महिलाओं का हिस्सा ४० प्रतिशत से अधिक है।

सरकारी वकील का कार्यालय वैधता और न्याय का पूर्ण दृढ़ीकरण सोवियत राज्य के और अधिक विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से है। श्रमिक जन के प्रतिनिधियों की सोवियतें, संगठन और अन्य राज्य एजेंसियां तथा जनता इस बात का ध्यान रखती है कि कानून का कड़ाई से पालन हो। सभी संस्थानों, पदधारी व्यक्तियों और नागरिकों द्वारा कानून के अनुपालन की पूरी तरह देखरेख का काम सोवियत संविधान के अनुसार सोवियत संघ के मुख्य सरकारी वकील को दिया गया है।

सोवियत संघ के मुख्य सरकारी वकील को सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत सात साल की अवधि के लिए नियुक्त करती है। वह संघ और स्वायत्त जनतंत्रों के क्षेत्रों, प्रदेशों और बड़े-बड़े नगरों के सरकारी वकील को पांच वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त करती है।

सोवियत संघ के संविधान के अनुसार सरकारी वकील के कार्यालय के निकाय किसी स्थानीय निकाय के अधीन नहीं होते और स्वतंत्र रूप से अपना कार्यकलाप चलाते हैं और केवल सोवियत संघ के मुख्य सरकारी वकील के अधीन होते हैं।

सोवियत संघ के मुख्य सरकारी वकील और उसके अधीन वकीलों के निम्न उत्तरदायित्व होते हैं:

सभी मंत्रालयों और विभागों और उनके अंतर्गत काम करने वाले संस्थानों और प्रतिष्ठानों द्वारा, स्थानीय सोवियतों के कार्यकारी निकायों द्वारा और पदधारी व्यक्तियों तथा नागरिकों द्वारा कानून के अनुपालन की देखरेख करना,

अपराध करने वाले व्यक्तियों पर मुकदमा चलाना,

इस बात पर नजर रखना कि अपराधों की जांच पड़ताल के दौरान वैधता का पालन हो ताकि कोई नागरिक अनुचित रूप से दोषी न ठहराया जाय या उसके अधिकारों पर कोई रोक न लगे,

न्यायिक निकायों द्वारा दी गयी सजाओं और फैसलों के न्याय और उपयुक्तता की देखरेख करना,

सजाओं के कार्यान्वयन में वैधता की देखरेख करना।

मिलीशिया। यह राज्य सत्ता का वह समूह है जो जन सुरक्षा और व्यवस्था की देखरेख करता है। मिलीशिया नागरिकों की व्यक्तिगत सुरक्षा की हिफाजत करती है और राजकीय सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत सम्पत्ति की भी हिफाजत करती है और इस बात का ध्यान रखती है कि यातायात नियमों का पालन हो।

मिलीशिया संघीय जनतंत्रो के गृह मन्त्रालयो के और स्थानीय रूप से सोवियतो की कार्यकारिणी समितियो के सम्बद्ध विभागो और बोर्डो के अधीन होती है। देश मे अपराधो का उन्मूलन करने मे यह जिन बातो को अपनाती है उनका निर्धारण सोवियत संघ का गृह मन्त्रालय करता है।

मिलीशिया अपनी सारी गतिविधियो मे लोगो की सहायता पर निर्भर करती है।

सार्वजनिक व्यवस्था के स्वयंसेवक दस्ते। ये सार्वजनिक व्यवस्था को सुरक्षित रखने के काम मे नागरिको की सामूहिक सहभागिता के अत्यधिक सामान्य रूप का प्रतिनिधित्व करते है। वे श्रमिक जनता के सामूहिको द्वारा ऐच्छिक आधार पर स्थापित किये जाते हैं। प्रत्येक सार्वजनिक व्यवस्था स्वयंसेवक महीने मे एक बार अपने खाली समय के कुछ घंटे सार्वजनिक स्थानो पर गश्त लगाने मे व्यतीत करता है।

स्वयंसेवक दस्तो के वही प्रशासी अधिकार और काम नही है जो पुलिस के है। उनकी गतिविधि मे मुख्य रूप से किसी प्रकार की सार्वजनिक अव्यवस्था की फौरी तौर पर रोक थाम करना है। लेकिन कानून का संगीन उल्लंघन होने की सूरत मे उन्हे मुजरिम को रोकना और पुलिस के पास ले जाना होता है।

स्वयंसेवक के विरुद्ध मुजरिमाना कार्यवाही के लिए सजा उतनी ही सख्त है जितनी अधिकारी वर्ग के प्रतिनिधियो के विरुद्ध अपराध के लिए।

जनता का नियन्त्रण। जन नियंत्रण निकायो की गतिविधि प्रभावशाली नियंत्रण मे और राज्य प्रशासन मे बडे पैमाने पर आम जनता की सतत सहभागिता से सम्बन्धित लेनिन के विचारो पर आधारित है।

ग्रामीण सोवियतो मे प्रतिष्ठानो और संस्थानो मे सामूहिक और राज्य फार्मों आदि मे संगठित दल और चौकियां जनता के नियंत्रण निकायो की एक समान प्रणाली की रीढ है। इन दलो और चौकियो के सदस्य कर्मचारियो की बैठको मे दो वर्षों के लिए निर्वाचित किये जाते है। इस समय ८० लाख से अधिक व्यक्ति जन नियंत्रण प्रणाली मे लगे है। लेनिन ने इस प्रणाली को हमेशा शैक्षिक महत्व की प्रणाली माना था क्योकि इसका अर्थ यह है कि राज्य के मामलात मे भाग लेने के दौरान श्रमिक जन प्रशासन की कला सीखेंगे। वह 'व्यापक, सामान्य, सार्वत्रिक " नियंत्रण को समाजवादी पुनर्गठन का सार मानते थे।

दलो और चौकियो के अतिरिक्त देश भर मे जन नियंत्रण समितियां भी है। ये श्रमिक जन के प्रतिनिधियो की सोवियतो द्वारा बनायी जाती है और उनमे सोवियतो, सार्वजनिक संगठनो और श्रमिक जन के सामूहिको के निर्वाचित प्रतिनिधि शामिल होते हैं। इन सारी समितियो के सदस्यो मे बहुत कम स्थायी कर्मचारी होते हैं। उदाहरण के लिए, जिलो और नगर समितियो मे अध्यक्षता ही एकमात्र स्थायी नियुक्ति है। ज्यादातर काम नियन्त्रको और निरीक्षको द्वारा सार्वजनिक आधार पर किया जाता है। जब

ो जमा होता है व समिति द्वारा सौंपे गये अपने काम पूरे करने के लिए अस्था-
काय सामूहिक रूप से अपने दफ्तर की स्थायी छुट्टी ले सकते हैं।

सघीय तथा स्वायत्त जनतत्रों की जन नियत्रण समितियों के कमचारियों की
नियुक्ति की मजूरी इन जनतत्रों की मत्रिपरिषदें देती हैं और समितियों के अध्यक्ष जनतत्रों
की अपनी सर्वोच्च सोवियतों द्वारा नियुक्त किये जाते हैं।

सभी जन नियत्रण निकायों की गतिविधि सोवियत सघ की जन नियत्रण समिति
द्वारा निर्देशित होती है जो सोवियत सघ की मत्रिपरिषद और सोवियत सघ की कम्यु-
निस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के निर्देशन के अतगत काम करती है। सोवियत सघ
की जन नियत्रण समिति के कमचारियों की नियुक्ति की मजूरी सोवियत सघ की
मत्रिपरिषद देती है और इसका अध्यक्ष सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा नियुक्त
किया जाता है।

सोवियत सघ म जन नियत्रण का तरीका बहुत व्यापक है। आर्थिक, प्रशासनिक
और सामाजिक सास्कृतिक गतिविधि के सभी क्षेत्र जन नियत्रण का ध्यान आकृष्ट
करते है। जन नियत्रण निकायों को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। उनकी सिफारिश के
बल पर विभागीय प्रधानों की रिपोर्टें श्रमिकों की बैठकों म, सोवियतों के अधिवेशनों
कायकारिणी समितियों की बैठकों और पार्टी निकायों की सभाओं म सुनी जा सकती
हैं। उन्ह नजर म आने वाली कमियों को दूर करने के लिए समय सीमा निर्धारित करने
का राज्य के हितों के विपरीत काम करने वाले अधिकारियों की गरकानूनी कायवाहियों
को समाप्त करने का उन्ह पदावनत करने और उन्ह उनके पदों से हटाने का किसी
अधिकारी की त्रुटि के कारण हुई क्षति की पूर्ति के लिए उसकी तनख्वाह से कटौती
करने का आदेश देने का अनुशासनात्मक दड देने का और अपराधियों पर मुकदमा
चलाने के लिए सरकारी वकील के कार्यालय म साक्ष्य प्रस्तुत करने का अधिकार है।
लेकिन जन नियत्रण निकाय केवल पयवेक्षी हैसियत म ही काम नहीं करते और न ही
केवल सजाए देते हैं। उनका प्रथम कतव्य बदइतजामी को रोकना, लोगों को शिक्षित
करना और उन्ह काम म गलतियाँ करने से रोकना है।

जन नियत्रण निकाय प्रचार साधनों—प्रेस रेडियो और टेलीविजन—का बडे
पैमाने पर इस्तेमाल करते है। जन नियत्रण के काय म श्रमिक जनता की व्यापक
सहभागिता इसका निरतर काय और इसके कायकलाप का व्यापक प्रचार—ये सारी
चीजें इसकी उच्च प्रतिष्ठा और कायक्षमता को सुनिश्चित बनाती है। यह सोवियत
जनवाद के पहलुओं म से एक की जीती जागती अभिव्यक्ति है।

विदेश नीति

सोवियत सघ लेनिनवादी सिद्धान्तों पर आधारित विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले राज्यों क बीच शान्तिपूर्ण सहजीवन, राष्ट्रों की समानता तथा उपनिवेशवाद व किसी भी प्रकार क राष्ट्रीय उत्पीडन के विरुद्ध अनवरत सघर्ष की एक सुदृढ एव सुसगत विदेश नीति का अनुसरण करता है।

सोवियत विदेश नीति राष्ट्रा क बीच शान्ति व सहयोग की नीति है। इसका लक्ष्य सोवियत सघ म कम्युनिज्म का निर्माण करने के लिए सर्वाधिक अनुकूल अन्त र्राष्ट्रीय स्थितिया सुनिश्चित करना विश्व समाजवादी समुदाय को सुदृढ करना, एशिया, अफ्रीका व लटिन अमरीका के स्वतन्त्र राज्या के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्धा का प्रसार करना मुक्ति आन्दोलन का समर्थन करना विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओ वाले राज्या क बीच शान्तिपूर्ण सहजीवन को बढावा दना तथा विश्व शान्ति को कायम रखना व सुदृढ करना है। सोवियत विदेश नीति सब देशा की मेहनतकश जनता के हिता तथा साम्राज्यवाद व प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध व शान्ति राष्ट्रीय स्वाधीनता और सामाजिक प्रगति के लिए सघर्ष करन वाले उत्पीडित औपनिवेशिक जनगण की आकाक्षाओ के अनुरूप है।

सोवियत राज्य का पहला वैधानिक काय था लनिन की शान्ति सम्बन्धी आज्ञप्ति (नवम्बर १९१७)। इस आज्ञप्ति मे सोवियत सरकार न सभी युद्धरत राष्ट्रा व उनकी सरकारा से युद्ध समाप्त करने तथा किसी राज्य का हडपे बिना और हरजाना लिय बिना एक न्यायपूर्ण जनवादी शान्ति सम्पन्न करन के लिय तत्काल बातचीत शुरू करने का प्रस्ताव रखा था। इस आज्ञप्ति म सोवियत राज्य की विदश नीति के आधारभूत सिद्धान्त—शान्ति के लिए सघर्ष, तमाम जनगण की पूर्ण समानता को मान्यता, उनकी राष्ट्रीय व राज्यीय स्वतत्रता के प्रति आदर, सभी राज्या के साथ अच्छे पडोसी जसे सम्बन्ध कायम करना चाह उनकी सामाजिक अथवा राजनीतिक व्यवस्था जो भी हो, अन्य देशों के आन्तरिक मामला म हस्तक्षेप नही करना—अनुबद्ध थे। 'रूस तथा पूर्व के तमाम मेहनतकश मुसलमाना के नाम' अपील (दिसम्बर १९१७) म सोवियत सरकार न यह घोषित किया कि उसने जारशाही की औपनिवेशिक नीति त्याग दी है, और यह एलान किया कि पूर्व के देशा के साथ अपन सम्बन्धा म वह आग स समानता व नि स्वार्थ समर्थन के सिद्धान्ता का पालन करगी। सोवियत सरकार ने पूर्व के देशा के साथ सम्पन्न जारशाही सरकार की तमाम असमान सन्धिया रद्द कर दी, तुर्की के विभा जन से सबधित जारशाही की गुप्त सन्धिया को अवध घोषित किया स्वेच्छा से फारस मे सभी अधिकारा व सुविधाओ को त्याग दिया तथा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त करन म तुर्की अफगानिस्तान व अन्य देशा की सहायता की।

अपनी स्थापना के प्रारम्भिक दिनो से ही सोवियत सरकार न बार बार (उदा हरणार्थ १९२२ के जेनोआ व हेग के सम्मेलना म) पूजीवादी देशो के साथ शान्तिपूर्ण

आर्थिक सहयोग व हथियारो म आम कटौती करने का प्रस्ताव रखा। लेकिन य प्रस्ताव रद्द कर दिये गय। पूजीवादी शक्तियो की नाकेबदी तोड दन के बाद १६२०-२१ में सोवियत जनतत्र न शान्ति सन्धियो पर हस्ताक्षर किये तथा लिथुआनिया, लातविया एस्तोनिया फिनलड, पोलैंड, इरान अफगानिस्तान व तुर्की क साथ राजनयिक सम्बध स्थापित किये और ब्रिटन जमनी नार्वे आस्ट्रिया व इटली के साथ व्यापारिक सम्बध स्थापित किय। रपालो सधि सम्पन्न होन के बाद १६२२ मे जमनी के साथ राजनयिक सम्बन्ध पुन कायम हुए। १६२४-२५ मे सोवियत राज्य के सुदढीकरण के फलस्वरूप ब्रिटन, इटली, आस्ट्रिया, यूनान, नार्वे, स्वीडन, चीन डेनमार्क, फ्रास, जापान तथा १६३३ म अमरीका के साथ राजनयिक सम्बध स्थापित हुए। इन देशो से मान्यता प्राप्त हो जान के बावजूद साम्राज्यवादी शक्तियो ने विश्व के प्रथम समाजवादी देश को अलग थलग करन की तथा एक सोवियत विरोधी गुट (लोकार्नो समझौता, १६२७ म सोवियत ब्रिटिश सम्बधो का भग होना, विशाल यूरोप योजना आदि) बनान की अपनी योजनाओ को नही छोडा। शान्ति बनाये रखने और एक व्यापक सोवियत विरोधी गठजोड की रोकथाम के लिए सोवियत सघ ने जमनी व लिथुआनिया से (१६२६) फ्रास लातविया, एस्तोनिया पोलैंड व फिनलैंड से (१६३२), इटली से (१६३३) तथा अन्य देशो म अनाक्रमण व तटस्थता की सधियां सम्पन्न की। १६२७ व १६३४ के बीच आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनो मे सोवियत सघ ने सामान्य या कम-से-कम आशिक निरस्त्रीकरण की योजनाए पश की। राष्ट्र सघ का (१६३४) म सदस्य बनन के बाद सोवियत सघ न यूरोप म सामूहिक सुरक्षा प्रणाली स्थापित करन का प्रस्ताव रखा। १६३५ म इस, फ्रास व चेकोस्लोवाकिया के साथ पारस्परिक सहायता की सधियो पर हस्ताक्षर किय।

ब्रिटेन फ्रास व अमरीका क नतत्व म पश्चिमी शक्तियो न युद्ध रोकन क सोवियत प्रस्तावो को ठुकरा दिया इथिओपिया व स्पन पर जमनी व इटली क आक्रमण को रोकन क लिए आस्ट्रिया को सघ बनन स रोकन अथवा चीन पर जापान का आक्रमण रोकन के लिए कुछ नही किया। इसके अलावा सितम्बर १६३८ म ब्रिटन व फ्रास न म्यूनिख म जमनी व इटली के साथ एक समझौता किया जिसम उन्होन चेकोस्लोवाकिया क विभाजन की मौन स्वीकृति प्रदान कर दी। उन्हे नाजी आक्रमण का पूव म, सोवियत सघ क विरुद्ध मोडन की आशा थी। इन हालतो म और चूकि ब्रिटेन तथा फ्रास न नाजी आक्रमण क विरुद्ध सोवियत सघ के साथ सयुक्त कारवाई करन का विचार छोड दिया था इसलिए अगस्त १६३६ म सोवियत सरकार न सोवियत जमन अनाक्रमण सधि पर हस्ताक्षर किय। इस सधि स सोवियत सघ को अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत करन तथा सोवियत सना को अधुनातन साज-सामान स लस करन क लिए लगभग दो वष प्राप्त हुए।

फासिज्म क विरुद्ध युद्ध म सोवियत सघ को ही मुख्य रूप स लडना पडा और युद्ध म हानि उठानी पडी। फासी सना को तीव्रता स पराजित करन क दौरान स्वन

फासिस्ट विरोधी मोर्चे की स्थापना व सुदृढीकरण का प्रस्ताव किया तथा यूरोप म दूसरा मोर्चा खोलने के लिए जार दते हुए ग्रेट ब्रिटेन, सयुक्त राज्य फ्रास से पारस्परिक सहायता की सन्धियो व समझौता पर हस्ताक्षर किए। याल्टा (१६४५) व पोतसदाम सम्मेलनो म सोवियत सघ न विश्व म युद्धोत्तर निपटार के लिए जनवादी सिद्धान्ता को अपनाने, अपन देशा की स्वतत्रता पुनर्स्थापित करन म यूरोप के जनगण को सहायता देने तथा जमनी व उसके मित्र राष्ट्रा के विसैन्यीकरण के लिए सक्रिय प्रयास किए। इसके साथ साथ सोवियत राजनय न पराजिता के साथ सम्बन्धो मे न्यायसगत व जनवादी सिद्धान्तो के पालन पर जोर दिया।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद पूजीवादी शक्तिया के बीच अन्तर्विरोध अधिक उग्र हो गया, विश्व समाजवादी व्यवस्था का अभ्युदय हुआ साम्राज्यवाद की औपनिवेशिक प्रणाली का विघटन होन लगा तथा विश्व पटल पर शक्तिया का स तुलन समाजवाद के पक्ष मे आमूलत परिवर्तित हो गया। इन हालतो म सोवियत सघ न एक स्थायी व टिकाऊ शान्ति सुनिश्चित करन तथा समाजवाद की स्थिति सुदृढ करन के अपन प्रयास जारी रखे। इसने उपनिवेशा व उत्पीडित राष्ट्रा के जागरण को अपनी राष्ट्रीय मुक्ति व स्वतत्रता के लिए सघष म सहायता दी। यद्यपि पूजीवादी राज्या न सोवियत सघ के विरुद्ध शीत युद्ध छेडा हुआ था पर सोवियत सघ न उनके साथ शान्तिपूण सहजीवन व व्यावहारिक सहयाग के सम्बन्ध स्थापित करने के अपन प्रयास जारी रखे। सयुक्त राष्ट्र व अन्य अन्तराष्ट्रीय सगठना की स्थापना म सोवियत सघ न सक्रिय भूमिका अदा की। युद्ध के फलस्वरूप उभरे विवादास्पद प्रश्ना क न्यायसगत व जनवादी समाधान के लिए इसने एक कायक्रम पेश किया।

सोवियत सघ न आम निरस्त्रीकरण की समस्या के समाधान व पारमाणविक अस्त्रा पर पाबदी लगान के लिए अनेक प्रस्ताव पश किये। सयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रथम अधिवेशन (१६४६) म इसन हथियारा म सामान्य कमी करन की एक योजना सामन रखी जिसम सनिक उद्देश्या के लिए आणविक ऊजा के उत्पादन व प्रयोग पर पाबदी शामिल थी। तीसरे अधिवेशन (१६४८) म सोवियत सघ न आणविक अस्त्रा पर पाबदी लगाने तथा अमरीका ग्रेट ब्रिटेन फ्रास, चीन व सोवियत सघ की सन्य शक्ति म एक तिहाई कमी करने से सम्बद्ध एक प्रस्ताव का प्रारूप सामने रखा। अमरीका के 'आणविक राजनय'' तथा आणविक अस्त्र प्रयोग करन की धमकियो ने सोवियत सघ को अपन पारमाणविक अस्त्र बनान के लिए बाध्य कर दिया। इसके बावजूद सोवियत सघ जन विनाश के आणविक, हाइड्रोजन व अन्य प्रकार के अस्त्रो पर बिना किसी शत के प्रतिबन्ध लगाने पर जार देता रहा। सयुक्त राष्ट्र महासभा के १४व व १५वें अधिवेशना म सोवियत सघ न आम व पूण निरस्त्रीकरण के लिए एक सन्धि का प्रारूप पश किया। सोवियत सघ की पहल पर वायुमण्डल मे, बाह्य अन्तरिक्ष म तथा जल के भीतर पारमाणविक परीक्षणा पर रोक लगान के सम्बन्ध मे एक सन्धि पर हस्ताक्षर हुए तथा इसके पश्चात पारमाणविक अस्त्रो के अप्रसार, बाह्य अन्तरिक्ष म राज्या की गतिविधिया को

प्रभावित करने वाले सिद्धान्तों (जन विनाश करने वाले अस्त्रों से युक्त अन्तरिक्षयान के कक्षा में चक्कर लगाने पर रोक लगाने), समुद्र-तल व महासागर तल पर जन विनाश के पारमाणविक व अन्य अस्त्रों के रखे जाने पर रोक लगाने की संधियां सम्पन्न हुईं।

शान्ति बनाये रखने व उसे सुदृढ़ करने के लिए कुछ सुनिश्चितता प्रदान करने वाली सामूहिक सुरक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में सोवियत संघ ने १९५४ में यह प्रस्ताव रखा कि यूरोपीय राज्यों व अमरीका यूरोप में सामूहिक सुरक्षा के लिए एक संधि सम्पन्न करें। पश्चिमी ताकतों ने यह प्रस्ताव रद्द कर दिया और इसकी बजाय जर्मन संघ गणराज्य को उत्तर अतलांतिक संधि गुट (नाटो) में शामिल कर लिया। इन हालतों में सोवियत संघ व यूरोपीय समाजवादी देशों के सामने १९५५ में प्रतिरक्षात्मक वारसा संधि सम्पन्न करने के अलावा कोई विकल्प नहीं रह गया जो यूरोप में एक महत्वपूर्ण प्रतिरोधक बन गयी।

विश्व समाजवादी व्यवस्था की स्थापना से इसके सदस्यों के बीच एक नये प्रकार के अन्तर राज्यीय सम्बन्धों का विकास हुआ। राष्ट्रीय राजसत्ता तथा आर्थिक व सांस्कृतिक विकास की प्रगति के अलावा ये सम्बन्ध कुल मिला कर समाजवादी व्यवस्था को सुदृढ़ व विकसित करने की ओर लक्षित हैं। अपने सम्बन्धों को समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तों पर आधारित कर सोवियत संघ सुसंगत रूप से समाजवादी देशों के जनगण के बीच एकता व मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों तथा विश्व समाजवादी समुदाय की शक्ति के सर्वतोमुखी सुदृढ़ीकरण की नीति का सुसंगत रूप से समर्थन करता है।

लेनिनवादी विदेश नीति का अनुसरण करते हुए सोवियत संघ एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमरीका के जनगण के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को सर्वतोमुखी व प्रभावशाली सहायता प्रदान करता है। सोवियत संघ की पहल पर संयुक्त राष्ट्र महासभा के १५वें अधिवेशन ने औपनिवेशिक देशों व जनगण को स्वतंत्रता देने की घोषणा स्वीकार की जिसने राष्ट्रीय मुक्ति के उनके संघर्ष को महत्वपूर्ण ढंग से अनुप्राणित किया।

स्थायी शान्ति व अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा की उपलब्धि तथा विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले राज्यों के बीच अच्छे पड़ोसियों जैसे परस्पर लाभप्रद व समानतापूर्ण सहयोग का प्रसार करना सोवियत संघ की विदेश नीति के हमेशा प्राथमिक लक्ष्य रहे हैं। राज्यों के बीच शान्तिपूर्ण सहजीवन के समर्थन की यह सुसंगत नीति किसी भी साम्राज्यवादी आक्रमण का मुंहतोड़ जवाब दिये जाने के साथ अटल रूप से समन्वित है।

शान्तिपूर्ण सहजीवन की लेनिनवादी नीति का अनुसरण करते हुए कम्युनिस्ट पार्टी इसके विचारधारात्मक सिद्धान्तों मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा व समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सुस्थिर सिद्धान्तों का दृढ़ता से अनुपालन करती है।

१९७१ में आयोजित २४वीं पार्टी कांग्रेस ने अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में लेनिनवादी नीति के कार्यान्वयन में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के दृढ़ संकल्प की पुष्टि की। यह नीति शान्ति व अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा की, समाजवादी देशों के बीच मित्रता व सहयोग का प्रसार करने की तथा पूंजीवादी देशों में मजदूरों के आन्दोलन के साथ अन्तर्राष्ट्रीय

एकजुटता मजबूत करने की, जनगण के राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष का समर्थन करने की तरुण राज्यों की क्रान्तिकारी जनवादी पार्टियों व तमाम साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों के साथ सम्बन्धों का प्रसार व उनको सुदृढ करने की नीति है।

२४वीं कांग्रेस ने केन्द्रीय समिति द्वारा प्रस्तुत व्यावहारिक व दूरगामी कार्यक्रम को सर्वसम्मति से पारित किया। शांति व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा जनगण की स्वाधीनता व स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के इस कार्यक्रम में निम्नलिखित आधारभूत लक्ष्य निरूपित किये गये हैं

पहला, दक्षिण-पूर्व एशिया और मध्य-पूर्व में युद्ध स्थलों को खत्म करना तथा आक्रमण के शिकार राज्यों और जनगण के न्यायोचित अधिकारों के प्रति समादर के आधार पर उन क्षेत्रों में राजनीतिक समाधान का संवर्धन करना आक्रमण और अंतर्राष्ट्रीय निरंकुशता के किसी भी कार्य का तत्काल और दृढतापूर्वक जवाब देना। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की संभावनाओं का भी पूरा उपयोग किया जाना चाहिए, अनसुलझे सवालों का हल निकालने के लिए बलप्रयोग की धमकी का या इसके इस्तेमाल का परित्याग, समुचित उभयपक्षीय या क्षेत्रीय संधियां सम्पन्न किया जाना।

दूसरा, द्वितीय विश्व युद्ध के फलस्वरूप यूरोप में हुए क्षेत्रीय परिवर्तनों की अंतिम मान्यता स्वीकार करते हुए आगे बढ़ना, यूरोप में तनाव शैथिल्य और शांति की ओर आमूल मोड हासिल करना, सुरक्षा और सहयोग संबंधी अखिल यूरोपीय सम्मेलन का बुलाया जाना और उसकी सफलता सुनिश्चित करना, सोवियत संघ व जर्मन संघ गणराज्य तथा पोलैंड लोक जनतंत्र व जर्मन संघ गणराज्य के बीच हुई संधियों के यथाशीघ्र अनुसमर्थन व कार्यान्वयन के लिए तथा पश्चिम बर्लिन की समस्या के समाधान के लिए प्रयास करना। सोवियत संघ व प्रतिरक्षात्मक वारसा संधि संगठन के अन्य सदस्य इस संधि और उत्तर अतलांतिक संधि को एक साथ भंग कर दिये जाने या पहले कदम के रूप में उनके सैनिक संगठनों को तोड़ दिये जाने के लिए सहमत होने की अपनी तत्परता की पुनर्पुष्टि करते हैं।

तीसरा, नाभिकीय रासायनिक और जीवाणु सम्बन्धी हथियारों पर रोक लगाने वाली संधियां सम्पन्न की जाय, नाभिकीय परीक्षणों को समाप्त करने के लिए कार्य किया जाय, विश्व के विभिन्न भागों में नाभिकीय शस्त्रास्त्र मुक्त क्षेत्रों की स्थापना को बढ़ावा दिया जाय, सोवियत संघ नाभिकीय निरस्त्रीकरण का समर्थन करता है तथा इस उद्देश्य के लिए पांच नाभिकीय शक्तियों—सोवियत संघ, अमरीका, चीन लोक जनतंत्र, फ्रांस और ब्रिटेन—का एक सम्मेलन बुलाये जाने की हिमायत करता है।

चौथा, हथियारों की होड़ रोकने के संघर्ष को जोरदार बनाना, निरस्त्रीकरण की समस्याओं पर विचार करने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन के लिए काम करना तथा विदेशी क्षेत्रों में सैनिक अड्डे भंग किये जाने के लिए और सशस्त्र सेनाओं व हथियारों में कमी करने के लिए काम करना, विशेषतः उन क्षेत्रों में और सबसे अधिक मध्य यूरोप में जहां समाजवादी व साम्राज्यवादी राज्यों में प्रत्यक्ष सैनिक मुका-

बना है, ऐसे पग निर्धारित करना जो संभावित दुर्घटनावश या जालसाजी द्वारा नाभिकीय संघर्ष छिड़ने और उनको अंतर्राष्ट्रीय संकटों और युद्ध के रूप में विकसित होने की सम्भावना कम करें। सोवियत संघ सैनिक व्यय कम करने, सर्वोपरि बड़ी शक्तियों द्वारा सैनिक व्यय कम करने के लिए करारों पर वार्ता के लिए तैयार है।

पांचवां बचे खुचे औपनिवेशिक शासनों का अंत करने के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र संघ के फैसलों का पूरी तरह कार्यान्वयन सुनिश्चित करना। नस्लवाद और पृथकवाद की अभिव्यक्ति और उसे व्यवहार में लाने वाले राज्यों की सार्वत्रिक निन्दा और बायकाट सुनिश्चित करना।

छठा, उन सब पूंजीवादी राज्यों के साथ जो अपनी तरफ भी वैसा करना चाहें, शांतिपूर्ण सहजीवन तथा व्यावहारिक व परस्पर लाभप्रद सहयोग के सम्बन्धों का विस्तार करना। सोवियत संघ अन्य देशों के साथ आर्थिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और सांस्कृतिक सम्बन्ध विकसित करने तथा समग्र मानवजाति से सम्बद्ध समस्याओं—जैसे, प्रकृति संरक्षण, बिजली का विकास और अन्य प्राकृतिक समाधनों का विकास, अंतर्राष्ट्रीय परिवहन और संचार सम्बन्धों का विकास, अत्यंत खतरनाक और बड़े पैमाने पर फैली हुई बीमारियों की रोकथाम और उन्मूलन तथा बाह्य अंतरिक्ष और दुनिया के महासागरों की खोजबीन और विकास में सहयोग करने को तत्पर है।

समग्र विश्व के प्रगतिशील विचारधारा के लोगों ने शांति व अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के संघर्ष के इस कार्यक्रम का पुरजोर समर्थन किया है। गत दो वर्षों में शांति कार्यक्रम आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण बन गया है तथा शांति, स्वाधीनता व राष्ट्रों की सुरक्षा के संघर्ष के लिए एक सक्रिय उपादान बन गया है।

सोवियत संघ व अन्य समाजवादी देशों के कार्यकलाप तथा उनकी सामान्य विदेश नीति के परिणामस्वरूप विश्व समाजवादी व्यवस्था के सुदृढीकरण में महत्वपूर्ण सफलता हासिल हुई है। इतिहास के समग्र घटनाक्रम ने मानवजाति के विकास के सिलसिले में विश्व समाजवादी व्यवस्था को सामने ला दिया है तथा यह अब तमाम सच्ची क्रांतिकारी व प्रगतिशील शक्तियों का विश्वसनीय दुर्ग बन गयी है। सिद्धांतनिष्ठ लेनिनवादी विदेश नीति का उद्देश्य है तमाम समाजवादी देशों की एकता व उनके बीच सहयोग का विकास करना। सामूहिक प्रयासों से गठित समाजवादी देशों की एकता अधिकाधिक मजबूत होती जा रही है तथा वारसा संधि और पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य राज्यों के बीच बिरादराना सहयोग की एक विश्वसनीय प्रणाली विकसित हो रही है। इनके कार्यकलाप में प्रत्येक सदस्य राज्य के हितों के साथ समाजवादी समुदाय के समान हित समन्वित है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देशों के समाजवादी आर्थिक एकीकरण का सर्वांगपूर्ण कार्यक्रम भी सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

जून १९७३ म बिरादराना पार्टिया के नेताओ के बीच क्रीमिया मे हुइ बठक ने समाजवादी देशो के प्रयासो के समन्वय एव समाजवादी और कम्युनिस्ट निर्माण के ध्यय को आग बढाने मे महत्वपूण योगदान किया।

साम्राज्यवादी आक्रमण के विरुद्ध और शाति तथा राष्ट्रो की स्वाधीनता के लिए सघप म वियतनाम की वीर जनता की विजय एक असाधारण सफलता है जो सोवियत सघ, अन्य समाजवादी देशो और विश्व की तमाम शातिप्रेमी शक्तिया की सहायता से प्राप्त हो मकी है।

वियतनाम की मेहनतकश जनता पार्टी व वियतनाम जनवादी जनतन्त्र की सरकार क एक प्रतिनिधिमण्डल की ९ से १६ जुलाई १९७३ की सोवियत सघ की सरकारी यात्रा के दौरान वियतनाम की मेहनतकश जनता पार्टी की केन्द्रीय ममिति के प्रथम सचिव कामरड ले दुआन ने कहा कि वियतनामी जनता को उसकी मातभूमि की मुक्ति के सघप म तथा समाजवादी निर्माण म सोवियत जनता की मूल्यवान महायता व समथन ने वियतनामी जनता की विजय म भारी योगदान किया।

इसराइली आक्रमण के दुष्परिणामो को खत्म करन के लिए अरब जनगण के न्यायसगत अधिकारो की बहाली के लिए तथा सयुक्त राष्ट सुरक्षा परिषद के प्रस्तावो के अनुरूप मध्य पूव म एक न्यायपूण राजनीतिक समाधान के लिए सोवियत सघ अरब जनगण के न्यायोचित सघप का अटल समथन करता है।

समाजवादी देशो, तमाम शातिप्रिय व प्रगतिशील शक्तिया की अन्तराष्ट्रीय एकजुटता अब अत्यधिक महत्वपूण हो गई है तथा उसका एशियाई अफ्रीकी व लटिन अमरीकी देशो म चल रहे मुक्ति सघप और वहा होन वाले सामाजिक व राजनीतिक परिवतनो पर भारी प्रभाव पडा है। इससे शाति, राष्टीय प्रभुसत्ता व सामाजिक प्रगति के लिए सघपरत शक्तियो के विकास को बढावा मिलता है।

विश्व के मामलो म गुट निरपेक्ष राज्यो का महत्व दिन न दिन बढता जा रहा है। सोवियत सघ इस आन्दोलन की साम्राज्यवाद विरोधी प्रवत्तियो का उच्च मूल्याकन एव समथन करता ह।

विश्व म घटित हो रही वतमान प्रगतिशील घटनाए अधिकतर सोवियत सघ व अन्य समाजवादी देशो के सक्रिय, सुसगत व सम्मिलित कार्यो का ही परिणाम है। ये कोरी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ को हल करन म इन देशो द्वारा अनुसरित नीति के बढत हुए प्रभाव का प्रमाण है। दूसरी तरफ य पूजीवादी देशो की नीति को प्रभावित करती है जो अन्तर्राष्टीय समस्याओ के समाधान म अधिक यथाथवादी दष्टिकोण दिखान लग हैं और इसके साथ-साथ विभिन्न सामाजिक प्रणालियो वाले राज्यो के बीच शातिपूण सहजीवन का सिद्धान्त व्यापक मान्यता प्राप्त कर रहा है।

अन्तराष्ट्रीय परिस्थिति म शीत-युद्ध से तनाव शथिल्य और पारस्परिक लाभप्रद सहयोग की दिशा म परिवतन इसका एक अन्य प्रमाण है।

इस सम्बन्ध म लियोनिद ब्रेझनव की जमन सघ गणराज्य अमरीका व फ्रास की यात्राओ का अधिक महत्व है। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत क अध्यक्षमण्डल के अध्यक्ष निकोलाई पदगोर्नी व सोवियत सघ की मत्रिपरिषद के अध्यक्ष अलक्सेइ कोसिगिन न भी कुछ देशो की यात्रा की।

यूरोपीय महाद्वीप की राजनीतिक परिस्थिति मे भी मूलभूत व आशाजनक परिवतन हुए है। यूरोप के लिए युद्धोत्तर व्यवस्थाए दढता से स्थापित हो चुकी है अखिल यूरोपीय सम्मेलन का सफलतापूवक प्रारम्भ हुआ है। इस सम्मेलन का बुलाया जाना ही सोवियत सघ, अन्य समाजवादी देशो व समग्र यूरोप की प्रगतिशील शक्तियो के अनक वर्षो के प्रयासो का एक सर्वाधिक महत्वपूण परिणाम है। इस सम्मेलन का उद्देश्य यूरोप को स्थायी शाति, अच्छे पडोसी जसे सम्बन्धो व सहयोग के एक क्षेत्र म रूपातरित करन के लिए एक दढतर आधार तयार करना है। मध्य यूरोप म सशस्त्र सेनाओ व हथियारो की कमी पर विचार करन के लिए हाल में वियना म हुई बातचीत महाद्वीप मे तनाव शथिल्य की प्रक्रिया को आगे बढान म भी योगदान करगी।

शातिपूण सहजीवन की नीति के रचनात्मक स्वरूप का एक उदाहरण सोवियत सघ व फ्रास के पारस्परिक लाभप्रद सम्बन्ध है। सोवियत सघ व फ्रास क बीच सहयोग के सिद्धात आधार रूप म स्वीकार किय गये हैं। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव लियोनिद ब्रेझनव और फ्रास गणराज्य क तत्कालीन राष्ट्रपति जाज पम्पिदू के बीच जनवरी १९७३ मे जास्लाव्ल (बेलोरूस) और जून १९७३ म परिस म हुई बातचीत स इन सम्बन्धो का और अधिक विकास हुआ है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव लियोनिद ब्रेझनव की फ्रास के राष्ट्रपति जाज पम्पिदू क साथ जून १९७३ की बठक ने यूरोप व तमाम विश्व म तनाव म कमी करन म सकारात्मक प्रभाव डाला है।

इस सम्बन्ध म सयुक्त विज्ञप्ति म अभिव्यक्त दोनो पक्षो के इस इरादे का अत्यधिक महत्व है कि सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ व फ्रास के बीच सहयोग के सिद्धान्तो तथा सोवियत फ्रास घोषणा के सुसगत कार्यान्वयन पर आधारित सोवियत फ्रास सम्बन्धो का अधिक दढीकरण किया जाय।

जमन सघ गणराज्य क साथ सोवियत सघ व पोलैड लाक जनतत्र की सधिया, पश्चिम बर्लिन पर चतुष्पक्षीय समझौता तथा जमन जनवादी जनतत्र व जमन सघ गणराज्य के बीच सधि—य सब शाति व सुरक्षा की ओर यूरोप के अग्रसर होन के महत्वपूण मील-स्तम्भ हैं। य मील-स्तम्भ युद्धोत्तर सीमाओ की अनुल्लघनीयता स्थापित करन में और यूरोप म शातिपूण सहयोग के और विकास के लिए पथ प्रशस्त करते हैं।

मई १९७३ म सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव की जमन सघ गणराज्य की यात्रा तथा तत्कालीन चासलर विली ब्राट क साथ उनकी [illegible] न सोवियत सघ व जमन सघ गणराज्य क बीच सम्बन्धो म मोड की पुष्टि की।

१९७० की मास्को संधि व एक वर्ष पश्चात ओरियण्डा में हुए करार में निरूपित पथ पर आगे बढ़ते हुए कामरेड लियोनिद ब्रेझनेव की चांसलर विली ब्रांट से हुई वार्ताएं, जर्मन संघ गणराज्य की कामरेड लियोनिद ब्रेझनेव की यात्रा के दौरान सोवियत संघ व जर्मन संघ गणराज्य के बीच हस्ताक्षरित हुए करारों तथा यात्रा के परिणामों के सम्बन्ध में पक्षों के संयुक्त वक्तव्य शांति के हित में सोवियत समाजवादी जनतंत्र संघ व जर्मन संघ गणराज्य के बीच अच्छे सम्बन्धों व अच्छे पड़ोसी जैसे सहयोग के लिए नयी सम्भावनाएं प्रदान करते हैं। दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्धों तथा उनके दीर्घकालिक औद्योगिक, तकनीकी एवं सांस्कृतिक सहयोग पर भी यह बात पूरी तरह से लागू होती है।

सोवियत संघ तथा इटली, फिनलैण्ड जैसे देशों व स्केण्डेनेवियाई देशों के बीच भी सम्बन्ध पारस्परिक लाभप्रद आधार पर सफलतापूर्वक विकसित हो रहे हैं। सोवियत संघ तथा ब्रिटेन के बीच भी सम्बन्धों में किसी हद तक सुधार हो रहा है।

हाल ही में सोवियत संघ व अमरीका के बीच सम्बन्धों में काफी परिवर्तन हुए हैं। जून १९७३ में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव ने अमरीका की यात्रा की थी जहां अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के साथ उनकी फलप्रद बातचीत हुई थी।

मई १९७२ की मास्को की सोवियत अमरीकी शिखर वार्ताओं के बाद का समय सोवियत अमरीकी सम्बन्धों में सुधार करने के लिए पक्षों द्वारा उठाये गये कदमों का औचित्य व सामयिकता सिद्ध करता है। मास्को बैठक जिसमें दोनों देशों के बीच सम्बन्धों के आधारभूत सिद्धांतों की दस्तावेज पारित की गयी थी तनावों में कमी करने, संबंधों के सामान्यीकरण व पारस्परिक सहयोग की ओर सोवियत अमरीकी संबंधों में एक मोड़ सिद्ध हुई है।

जून १९७३ में हुई सफल वार्ताओं ने सोवियत अमरीकी सम्बन्धों के सामान्य विकास व दोनों देशों के बीच पारस्परिक लाभप्रद सहयोग के दृढ़ीकरण के लिए एक अच्छा आधार तैयार किया। तनाव में कमी करने की सामान्य विश्वव्यापी प्रक्रिया के अंग के रूप में इन वार्ताओं ने इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में बहुत काम किया।

सोवियत संघ व अमरीका द्वारा सर्वदा के लिए पारमाणविक युद्ध की रोकथाम के सम्बन्ध में हुआ करार पारमाणविक युद्ध के खतरे को कम करने और अंततः समाप्त करने की ओर तथा अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा की वास्तविक गारंटी की एक प्रणाली पैदा करने की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था। पारित करारों का व्यावहारिक कार्यान्वयन, आणविक टकराव से नाभिकीय युद्ध की रोकथाम का कदम तथा शांतिपूर्ण साधनों से तमाम विवादास्पद प्रश्नों को हल करना समग्र मानवजाति के लिए ऐतिहासिक महत्व की बात होगी।

प्रक्षेपास्त्र विरोधी मिसाइल प्रणालियों तथा सामरिक आक्रामक अस्त्रों के परिसीमन सम्बन्धी संधि और करार में बहुत आशाएं बंधी हैं। सामरिक अस्त्रों के और

अधिक परिसीमन व सम्भावित कमी करने के सम्बन्ध में सोवियत संघ व अमरीका के बीच वार्ताओं के नये दौर को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए सोवियत जनता भरसक प्रयत्न करेगी।

आणविक ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोग के क्षेत्र में वैज्ञानिक व तकनीकी सहयोग का करार भी बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका प्रमुख उद्देश्य ऊर्जा के नये अत्यंत प्रभावशाली साधन जुटाना है।

दोनों देशों के बीच विभिन्न क्षेत्रों में शान्तिपूर्ण सहयोग का सर्वतोमुखी विकास तथा इन देशों के बीच व्यापार और आर्थिक सम्बन्धों को और अधिक बढ़ाने की नयी सम्भावनाएं सोवियत अमरीकी सम्बन्धों को अधिक टिकाऊ बनायेंगे।

दोनों राज्यों द्वारा मान्य दायित्वों का सुसंगत कार्यान्वयन सोवियत-अमरीकी सम्बन्धों को अन्तर्राष्ट्रीय शांति में योगदान का एक स्थायी उपादान बनाने की पूर्वावश्यकता है। सोवियत अमरीकी सम्बन्धों में सुधार, पारस्परिक सम्बन्धों व एक दूसरे के मित्र राष्ट्रों के सम्बन्धों में अथवा अन्य देशों के सम्बन्धों में बलप्रयोग या इसकी धमकी न देने की दोनों देशों की प्रतिबद्धताएं, राज्यों के अधिकारों व हितों का समादर करने की दोनों पक्षों की स्पष्टतः अनुबद्ध इच्छा—ये सब अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण में आमूल सुधार करने तथा तमाम अन्य देशों के साथ सहयोग के लिए शानदार सम्भावनाएं प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण उपादान है।

उल्लेखनीय है कि तनाव शैथिल्य की प्रक्रिया में एशिया बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले रहा है। सोवियत संघ इस तथ्य का स्वागत करता है कि भारत व पाकिस्तान के बीच सम्बन्ध सामान्य होते जा रहे हैं। गणप्रजातंत्री बंगलादेश की अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति भी सुदृढ़ होती जा रही है।

सोवियत संघ व भारत के बीच मित्रता व सहयोग के विकास में लियोनिद ब्रेजनेव की भारत यात्रा एक महत्वपूर्ण कदम है।

सोवियत संघ के अफगानिस्तान से परम्परागत मित्रतापूर्ण सम्बन्ध सफलतापूर्वक विकसित हो रहे हैं। सोवियत संघ के ईरान व तुर्की के साथ सामान्य सम्बन्ध हैं।

हाल ही में सोवियत जापानी सम्बन्धों में सकारात्मक परिवर्तन हुए हैं। सोवियत संघ ने हमेशा यह माना है कि इन सम्बन्धों का अच्छे पड़ोसी जैसा मित्रतापूर्ण स्वरूप होना चाहिए तथा इस अब जापान की विस्तृत सामाजिक राजनीतिक शक्तियां अधिकाधिक समझ रही हैं व समर्थन कर रही हैं।

चीन से सम्बन्ध में सोवियत संघ २४वीं पार्टी कांग्रेस द्वारा निर्दिष्ट पथ का सुसंगत रूप में अनुसरण करता है। हमारा चीन पर न तो क्षेत्रीय दावा है और न आर्थिक। हम चीन गणराज्य जनतंत्र से सम्बन्धों का सामान्यीकरण तथा सोवियत चीनी मित्रता की पुनर्स्थापना करना चाहते हैं। ऐसा राजनीतिक पथ समाजवादी समुदाय व विश्व शान्तिकारी आन्दोलन के हितों में तथा सोवियत संघ व चीन के जनगण के जीवंत हितों में है।

सोवियत संघ व अन्य समाजवादी देशों ने सामान्य व पूर्ण निरस्त्रीकरण के कार्यक्रम के कार्यान्वयन के उद्देश्य से अनेक अवसरों पर रचनात्मक प्रस्ताव रखे हैं। संयुक्त राष्ट्र महासभा में अब विचाराधीन सोवियत प्रस्ताव में इन्हीं उद्देश्यों पर जोर दिया गया है। इसमें प्रस्ताव किया गया है कि जो देश संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य हैं उन्हें अपने सैन्य बजट में दस प्रतिशत की कमी करनी चाहिए तथा इस प्रकार बचायी हुई रकम को विकासमान देशों की सहायता पर खर्च किया जाय।

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शीत-युद्ध की नीतियों के स्थान पर तनाव शैथिल्य की नीति अपनाने सैनिक टकराव के स्थान पर सुरक्षा व अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को सुदृढ़ बनाने की बुनियादी प्रवृत्ति है।

परन्तु विश्व में पूर्णतया स्वस्थ राजनीतिक वातावरण सुनिश्चित करने के लिए अभी एक लम्बा रास्ता तय करना बाकी है। मध्य-पूर्व में हाल में युद्ध का भड़कना तथा चिली में खूनी प्रतिक्रांतिकारी शासन परिवर्तन जैसी घटनाएं स्वरूप में भिन्न होने पर भी विश्वव्यापी तनाव शैथिल्य के रास्ते को रोकने की साम्राज्यवादी प्रतिक्रियावादी ताकतों की चालें हैं।

इसीलिये आज का आधारभूत कार्य जैसा कि सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के अप्रैल १९७३ में हुए पूर्णाधिवेशन में जोर देकर कहा गया था, *अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में अनुकूल परिवर्तनों को अपरिवर्तनीय बनाना है।*

पूर्णाधिवेशन ने विश्व में स्थायी शांति तथा कम्युनिज्म का निर्माण करने वाली सोवियत जनता के लिए विश्वसनीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के पोलिट ब्यूरो द्वारा किये जा रहे काम को पूर्ण स्वीकृति प्रदान की। पूर्णाधिवेशन ने इन कार्यों को पूरा करने की दिशा में लियोनिद ब्रेझनेव के व्यक्तिगत महान योगदान को भी नोट किया।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव लियोनिद ब्रेझनेव को 'राष्ट्रों में शांति के प्रसार के लिए' १९७३ का लेनिन पुरस्कार प्रदान किये जाने के समाचार का सोवियत जनता ने व विश्व की जनता के व्यापक हलकों ने हार्दिक स्वागत किया था।

युद्ध व शांति की समस्याओं के समाधान में जनता, उसके जन संगठनों व राजनीतिक दलों का सक्रिय सहभाग आज के अन्तर्राष्ट्रीय विकास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपादान है।

शांति के लिए संघर्ष करने वाली शक्तियों में शामिल होने वाले प्रगतिशील विचारधारा के लोगों की संख्या समग्र विश्व में बढ़ती जा रही है। यह अक्तूबर १९७३ में मास्को में आयोजित शांति शक्तियों की विश्व कांग्रेस में स्पष्ट रूप से उजागर हो गया था। दुनिया ने बड़ी दिलचस्पी से कांग्रेस की कार्यवाही पर ध्यान दिया। इस कांग्रेस में १४३ देशों के १,१०० राष्ट्रीय व विभिन्न राजनीतिक प्रवृत्तियों वाले १२० से अधिक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के ३,२०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। यह तथ्य शांति के लिए आन्दोलन के व्यापक सामाजिक आधार की पुष्टि करता है।

'शांति शक्तियों की विश्व कांग्रेस", कांग्रेस की अपील में कहा गया, "वर्तमान खतरों व आशंकाओं के प्रति विश्व के साधारण लोगों की प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है। यह मानवजाति के ज्ञान श्रम व सम्पदा को लोगों के लाभ के लिए न कि मनुष्यजाति के विनाश या पराधीनता के लिए प्रयोग किये जाने के नये प्रयासों को सुनिश्चित करने का आह्वान करती है।"

शांति शक्तियों की विश्व कांग्रेस महान अंतर्राष्ट्रीय महत्व की एक घटना है। इसमें कोई सन्देह नहीं हो सकता कि कांग्रेस द्वारा की गई अपीलें तथा इसमें भाग लेने वालों की आवाजें शांति के समर्थकों, तमाम महाद्वीपों के जनगण की खुशहाली व सुरक्षा के योद्धाओं की संख्या में अभिवृद्धि करेंगी।

'सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी व सोवियत राज्य की सुसंगत शांतिप्रिय नीति लियोनिद ब्रेझनेव ने कांग्रेस में अपने भाषण में कहा, "कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस के शांति कार्यक्रम द्वारा वर्तमान चरण में मूर्त रूप में प्रस्तुत है। इस कार्यक्रम को पेश करते हुए हमने अनुभव किया कि तनाव के स्थलों का उन्मूलन करने में सहायता करना एवं ताप नाभिकीय विनाश के भय से छुटकारा पाने में मानवजाति की सहायता करना तथा हर सम्भव तरीके से तनाव शैथिल्य को बढ़ावा देना हमारा कर्तव्य है। इन उदात्त लक्ष्यों के लिए तमाम मेहनतकश जनता के लाभ के लिए हम अनवरत रूप से काम करते आये हैं और करते रहेंगे।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी

लेनिन द्वारा संस्थापित सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने जो मार्ग तय किया है उसकी मिसाल किसी भी अन्य राजनीतिक दल के इतिहास में नहीं मिलती। अपेक्षाकृत एक छोटी सी भूमिगत संस्था से यह एक करोड़ पचास लाख कम्युनिस्टों की सशक्त, संयुक्त सेना तथा संसार के सर्वप्रथम समाजवादी राज्य के प्रमुख दल के रूप में परिवर्तित हुए है। श्रमिक वर्ग की यह पार्टी समस्त सोवियत जनता का हिरावल दस्ता बन गई है। जैसा कि लेनिन ने कहा था, पार्टी में 'हमारे युग का ज्ञान, सम्मान एवं अन्तःकरण' मूर्तिमान है।

सर्वहारा के उच्चतम वर्ग संगठन के रूप में लेनिन ने कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। सर्वहारा एक अद्वितीय वर्ग है। इतिहास में यह एक ही ऐसा वर्ग है जो सत्ता के लिए इस उद्देश्य से नहीं लड़ा कि स्थायी रूप से अपना प्रभुत्व जमा सके बल्कि इसलिए कि धीरे धीरे सभी वर्गों को समाप्त किया जा सके तथा किसी भी एक वर्ग अथवा समाज के किसी समूह का प्रभुत्व नहीं रह सके अर्थात इसका उद्देश्य कम्युनिस्ट समाज की स्थापना करना है। श्रमजीवी वर्ग की यह खास भूमिका ही समाज में इसकी राजनीतिक पार्टी की विशेष भूमिका निर्धारित करती है।

संघर्ष एवं विजय का मार्ग ३० जुलाई १९७३ को सोवियत जनता ने रूसी सोशल डिमाक्रैटिक लेबर पार्टी (आर एस डी एल पी) की दूसरी कांग्रेस के आयोजन की ७०वीं वर्षगांठ मनाई। यह कांग्रेस विश्व पैमाने पर ऐतिहासिक महत्व रखती है, क्योंकि इसी कांग्रेस के अवसर पर रूस की क्रांतिकारी मार्क्सवादी पार्टियां एक हुईं और लेनिन द्वारा प्रस्थापित वैचारिक, राजनीतिक एवं संगठनात्मक सिद्धान्तों के आधार पर रूसी श्रमजीवी वर्ग की पार्टी बनाई गई। एक नए प्रकार की सर्वहारा पार्टी, बोल्शेविकों की पार्टी, महान लेनिनवादी पार्टी अस्तित्व में आई। लेनिन ने लिखा "एक राजनीतिक विचारधारा तथा एक राजनीतिक पार्टी के रूप में बोल्शेविकवाद का अस्तित्व १९०३ में ही बना हुआ है।"

लेनिन ने रूसी सर्वहारा के क्रांतिकारी संघर्ष के महत्व तथा सारतत्व की व्याख्या निम्नलिखित शब्दों में की है "इतिहास ने अब हमारे समक्ष ऐसा तात्कालिक दायित्व उपस्थित किया है जो उन सभी तात्कालिक दायित्वों से सर्वाधिक क्रांतिकारी है जो इस समय किसी भी अन्य देश के सर्वहारा के सामने है। इस दायित्व की पूर्ति न केवल यूरोपीय बल्कि एशियाई (अब ऐसा कहा जा सकता है) प्रतिक्रियावाद के अत्यंत शक्तिशाली किले को नष्ट करने के इस दायित्व की पूर्ति रूसी सर्वहारा को अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी सर्वहारा का हिरावल दस्ता बना देगी।"

कायक्रम जो सवहारा की दूरगामी समस्याओ अथात समाजवादी समाज के निर्माण से सम्बधित समस्याओ के विषय म था।

इस काग्रेस म लेनिन तथा उनके अनुयायिया न मार्क्सवाद की मुख्य प्रस्थापना —समाजवादी क्राति के प्रमुख प्रश्न सवहारा के अधिनायकत्व सम्बधी शिक्षा—का समथन किया। उनके आग्रह पर इस भी पार्टी कायक्रम म शामिल कर लिया गया। यह एक ऐतिहासिक विजय थी जिसका प्रभाव क्रातिकारी आदोलन के पूरे दौर पर पडा।

दूसरी काग्रेस में लेनिन तथा उनके अनुयायिया न एक विचार पश किया जिसका सम्बध एक विशुद्ध क्रातिकारी पार्टी के सगठनात्मक ढाचे स था और निमभ कहा गया कि एसी पार्टी श्रमजीवी वग की एक उन्नत, राजनीतिक सूझबूझ रखने वाली तथा सुसगठित टुकडी है जो सामाजिक विकास तथा वग सघष सम्बधी पूण ज्ञान से लैस है और क्रातिकारी गतिविधि का अनुभव रखती है। उन्होने न केवल समय समय पर इस विचार की रक्षा की बल्कि बाद म इसे मूत रूप भी दिया। उनका कहना था कि केवल वही पार्टी श्रमजीवी वग के सत्ता हतु सघष का नतत्व करने और उसे विजय तक पहुचाने के योग्य हो सकती है जो वचारिक दृष्टि से सुगठ एकताबद्ध तथा केन्द्रबद्ध हो।

रूस म क्रातिकारी सवहारा पार्टी की स्थापना एक अतर्राष्ट्रीय राजनीतिक सगठन के रूप म की गई। एक ऐसे बहुजातीय देश म यह काम आसान नही था जहा की ५७ प्रतिशत आबादी गर रूसी थी और जहा जारशाही विभिन्न जातियो के महनतकश वर्गों म फूट डालने की भरपूर कोशिश म लगी थी। लेनिन न लिखा कि ' निरकुश शासन के विरुद्ध सघष, समस्त रूस के पूजीपति वग के विरुद्ध सघष से सम्बधित मामलो म हम एक ही और केन्द्रीकृत जुझारु सगठन के रूप म काम करना चाहिए, भाषा अथवा जातीय भेदभाव के बगर समस्त सवहारा वग हमारे पीछे होना चाहिए ।'

और बोल्शेविको की पार्टी की स्थापना हो गई। एक विशुद्ध सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावादियो की पार्टी के रूप मे इसका विकास हुआ। इसमे सभी जातियो के प्रगतिशील सवहारा एकजुट हुए। इसके साथ साथ बोल्शेविको की पार्टी शुरू स ही अतर्राष्ट्रीय श्रमजीवी वग आन्दोलन की अखण्ड जुझारु टुकडी रही है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के विकास का आधार व सद्धातिक राजनीतिक तथा सगठनात्मक सिद्धात बने जिन्ह लेनिन ने निरूपित किया था और जिनके अनुसार रूसी सोशल डिमाक्रटिक लेबर पार्टी की दूसरी काग्रेस म नए प्रकार की पार्टी की स्थापना की गई थी।

विश्व श्रमजीवी वग आदोलन के इतिहास म रूसी सोशल डिमाक्रटिक लेबर पार्टी की दूसरी काग्रेस एक महत्वपूण मोड थी। इसके निणयो स न केवल रूसी अवसरवादियो की नीतियो को गहरा आघात पहुचा बल्कि दूसरे देशो के सशोधनवादियो को भी पुरजोर धक्का लगा।

यथार्थ के गहन मार्क्सवादी विश्लेषण के आधार पर तथा सामाजिक विकास सम्बन्धी महान अन्तर्दृष्टि की सहायता से लेनिन ने साम्राज्यवाद के दौर में वर्ग संघर्ष की रणनीति और कार्यनीति और समाजवादी क्रांति तथा कम्युनिस्ट निर्माण के सिद्धान्त की व्याख्या की जो बाल्शेविक पार्टी तथा समस्त श्रमजीवी वर्ग एवं कम्युनिस्ट आन्दोलन के लिए मार्गदर्शक बने।

रूस में उस समय बड़ी कठिन परिस्थितियां थीं और उसका जारशाही सरकार उत्पीड़न एवं कड़ा दमन कर रही थी। फिर भी बाल्शेविकों की पार्टी ने लेनिन के नेतृत्व में सभी उपलब्ध साधनों एवं अवसरों का उपयोग किया और मजदूरों तथा अन्य श्रमजीवियों में बड़े पैमाने पर वैचारिक, राजनीतिक तथा संगठनात्मक कार्य संपन्न किया। यह पार्टी का ही काम था कि श्रमजीवी वर्ग १९०५-०७ की पहली रूसी क्रांति के दौरान, स्तोलिपिन प्रतिक्रियावाद के दिनों में, १९१२-१४ की नई क्रांतिकारी लहर के वर्षों में, प्रथम महायुद्ध के दौरान तथा फरवरी १९१७ की क्रांति के दिनों में जनवाद एवं समाजवाद के लिए संघर्ष हेतु प्रेरित हुआ।

रूस में जारशाही का तख्ता उलटना संसार भर की प्रतिक्रियावादी शक्तियों के लिए गहरा आघात था। इसके बाद लेनिन के नेतृत्व में पार्टी ने समाजवादी क्रांति की विजय का मार्ग तैयार किया। पार्टी ने सफलतापूर्वक तत्कालीन क्रांतिकारी आन्दोलनों —समाजवाद के लिए श्रमजीवी वर्ग का संघर्ष, भूमि के लिए किसानों का संघर्ष, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन, अन्तर्राष्ट्रीय शांति आन्दोलन—को एकजुट किया। इसका मुख्य उद्देश्य था साम्राज्यवाद का तख्ता उलटने के लिए संघर्ष करना। इस क्रांति का नेतृत्व सर्वहारा वर्ग के हाथों में था जिसके निकटतम साथी थे अत्यन्त निर्धन किसान। लेनिन की रहनुमाई में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के अन्तर्गत महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति विजयी रही और इस प्रकार मानवजाति के इतिहास में एक नया युग आरम्भ हुआ— पूंजीवाद से समाजवाद और कम्युनिज्म में संक्रमण का युग।

सोवियतों के देश की कम्युनिस्ट पार्टी ने देश की [illegible] पार्टी के रूप में [illegible] पर सभी [illegible] जनता के प्रयासों को समाजवादी क्रांति की उपलब्धियों की रक्षा तथा एक नए समाज के निर्माण की ओर निर्देशित किया। सोवियत जनता [illegible] समाजवादी परिवर्तन [illegible] जो [illegible] विस्तार तथा शक्ति की दृष्टि से [illegible] थे। [illegible] कठिनाइयों पर काबू पा लिया गया और सोवियतों का देश [illegible] समाजवादी [illegible] बन गया।

कम्युनिस्ट पार्टी के [illegible] में सोवियत जनता [illegible] में जो [illegible] सामाजिक [illegible] परिवर्तन [illegible] उनका प्रमुख परिणाम है [illegible] समाजवादी समाज का निर्माण। आज कम्युनिस्ट पार्टी पूर्ण विश्वास के साथ सोवियत जनता को कम्युनिज्म [illegible] मार्ग पर निर्देशित कर रही है जिसे लेनिन [illegible] किया था।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी मार्क्सवाद-लेनिनवाद की पार्टी है। [illegible] [illegible] अर्थात् कम्युनिस्ट पार्टी की मुख्य [illegible] इस शब्द में निहित है

कि इसकी गतिविधि मार्क्सवाद-लेनिनवाद के सिद्धांत द्वारा निर्देशित होती है। लेनिन ने हमें यह शिक्षा दी कि वही पार्टी हिरावल पार्टी की भूमिका निभा सकती है जो उन्नत सिद्धांत द्वारा निर्देशित हो। मार्क्सवादी सिद्धांत श्रमजीवी वर्ग के संघर्ष की पताका है। पार्टी को चाहिए कि इस सिद्धांत को और अधिक विकसित करे और इसे मूर्त रूप दे। इसके साथ ही वह संशोधनवादियों और अवसरवादियों के अतिक्रमणों से इस सिद्धांत की रक्षा भी करे।

पूंजीवादी तथा निम्न पूंजीवादी विचारधारा के विरुद्ध तथा संशोधनवाद, वाम्पन्थीवाद, दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवाद, सामाजिक-अंधराष्ट्रवादियों, राष्ट्रीय-विचलनवादियों, संक्षेप में कहा जा सकता है कि क्रांतिकारी मार्क्सवादी सिद्धांत के सभी शत्रुओं के विरुद्ध समझौताविहीन संघर्ष के लिए लेनिन ने पार्टी की रचना की, इसे सुदृढ़ एवं सशक्त बनाया।

लेनिन ने मार्क्स और एंगेल्स की शिक्षा का व्यापक विकास किया और इसे ऊपर उठाते हुए एक नए उच्चतर चरण पर पहुंचाया। लेनिनवाद मार्क्सवाद का नए तर एवं सृजनात्मक विकास है। यह वह मार्क्सवाद है जिसका सम्बन्ध साम्राज्यवाद तथा सर्वहारा क्रांतियों के युग से है, सोवियत संघ में समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माण के युग से है, विश्व समाजवादी प्रणाली के उदय और विकास के युग, राष्ट्रीय मुक्ति क्रांतियों के युग तथा उपनिवेशवाद के पतन के युग से है और मानवजाति के कम्युनिज्म की ओर संक्रमण के युग से है।

मार्क्स, एंगेल्स और लेनिन के निष्ठावान शिष्यों एवं अनुयायियों ने हमेशा मार्क्सवाद-लेनिनवाद की रक्षा की है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग, और राष्ट्रों की राष्ट्रीय तथा सामाजिक मुक्ति के हित में और समाजवाद तथा कम्युनिज्म के निर्माण के लिए संघर्ष की वर्तमानकालीन परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए इस सिद्धांत का विकास जारी रखा है।

पार्टी ने अपने विकास के सभी चरणों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद की शिक्षा के आधार पर अपनी नीति निरूपित की है तथा उसका पालन किया है। ऐसा करते हुए पार्टी ने यह ध्यान रखा है कि उसकी नीति श्रमजीवी वर्ग, मेहनतकश किसानों तथा देश की समस्त जनता के हितों के अनुकूल हो तथा मातृभूमि के हितों, सोवियत संघ में कम्युनिज्म की विजय के हितों व विश्व समाजवाद के ध्येय के हितों को पूरा करे।

कम्युनिस्ट पार्टी ने सर्वहारा के अधिनायकत्व की विजय के लिए संघर्ष सम्बन्धी अनुभव का विशाल भण्डार एकत्र कर लिया है। अक्तूबर क्रांति से पहले के काल में, भूमिगत गतिविधि की कठिन परिस्थितियों में बोल्शेविकों ने वैचारिक, राजनीतिक तथा संगठनात्मक प्रश्नों की सैद्धांतिक व्याख्या की और उनसे सम्बन्धित समस्याओं के व्यावहारिक हल प्रस्तुत किये और इस आधार पर पूंजीवादी जनवादी तथा समाजवादी क्रांतियों में विजय प्राप्त की। इस प्रकार उन्होंने क्रांतिकारी मार्क्सवादी पार्टी—एक

नए प्रकार की पार्टी—सम्बन्धी शिक्षा को विकसित किया और इस प्रकार की नयी पार्टी की स्थापना की, साम्राज्यवाद के युग के सन्दर्भ में समाजवादी क्रांति के सिद्धान्त की व्याख्या की, पूंजीवादी-जनवादी तथा समाजवादी क्रांतियों की रणनीति और कार्यनीति निरूपित की, जारशाही तथा पूंजीवाद को पराजित करने के उद्देश्य से सर्वहारा का नायकत्व स्थापित करने के लिए मजदूर आंदोलन की रचना के लिए, मजदूर वर्ग के नायकत्व में श्रमिक वर्ग और किसानों की एकजुटता के लिए उत्पीड़ित जातियों को सर्वहारा के पक्ष में लाने के लिए संघर्ष किया। वे रूसी तथा अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी एवं श्रमजीवी वर्ग आन्दोलन में मार्क्सवाद के शत्रुओं से लड़े। पार्टी ने यह सिद्ध कर दिया कि उसमें संघर्ष एवं गतिविधियों के कानूनी और गैर-कानूनी तथा संसदीय और गैर संसदीय रूपों को समन्वित करने और नई ऐतिहासिक परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार उनमें तत्काल परिवर्तन करने की योग्यता है।

सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व तथा समाजवाद एवं कम्युनिज्म के निर्माण के दौरान पार्टी को प्राप्त हुआ अनुभव विपुल एवं विविधतापूर्ण है। मानवजाति के इतिहास में पहली बार एक ऐसे विशाल बहुजातीय देश में समाजवाद का निर्माण किया गया है जो अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ था और जहां किसानों की संख्या बहुत अधिक थी। कठिनाइयों में इस कारण कई गुना वृद्धि हो गई कि कई वर्षों तक सोवियत संघ संसार में एकमात्र समाजवादी राज्य था और शत्रुतापूर्ण साम्राज्यवादी जगत के क्रूर हमलों का निशाना बना रहा जिसने उसे घेर रखा था। पार्टी को समाजवाद का निर्माण करने सम्बन्धी अत्यंत जटिल समस्याओं का सैद्धांतिक विशदीकरण करना पड़ा। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के ऐतिहासिक अनुभव में ऐसे अनेक प्रश्न एवं समस्याएं शामिल हैं जिनका सम्बन्ध साम्राज्यवाद से समाजवाद में संक्रमण तथा समाजवादी समाज की कम्युनिज्म की ओर प्रगति से है। कम्युनिज्म के प्रधान सिद्धांत निम्नलिखित हैं

सोवियत समाज के विकास के विभिन्न चरणों में सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व तथा समाजवादी जनवाद की स्थापना समाजवाद तथा कम्युनिज्म के पूर्ण निर्माण काल में श्रमजीवी वर्ग के नेतृत्व में श्रमजीवी वर्ग एवं किसानों का मोर्चा कायम करना, सोवियत राज्य में जातीय प्रश्न का समाधान तथा समाजवादी जातियों के राष्ट्रमंडल की स्थापना, समाजवाद से कम्युनिज्म में संक्रमण से सम्बन्धित मुख्य समस्याओं की व्याख्या,

अर्थतंत्र के समाजवादी रूपों की स्थापना, देश का उद्योगीकरण तथा समाजवाद के भौतिक एवं तकनीकी आधार की स्थापना कृषि का सामूहिकीकरण तथा बड़े पैमाने पर यंत्रीकृत समाजवादी खेती का विकास शोषक वर्गों तथा मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का उन्मूलन पूंजीवादी मंजिल को लांघते हुए भूतपूर्व पिछड़े लोगों का समाजवाद में संक्रमण,

सोवियत जनता तथा संसार के श्रमिक जन के हितों को ध्यान में रखते हुए देशों के आपसी सम्बन्धों के नए नियम निरूपित करना, सार्वत्रिक शांति के लिए संघर्ष तथा

समाजवादी राज्य की सुरक्षा क्षमता का निर्माण, समाजवादी देशों के साथ मैत्री तथा पारस्परिक सहायता की नीति अपनाना तथा इस समुदाय का दृढ़ीकरण, साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के विरुद्ध नवोदित राष्ट्रीय राज्यों का तथा राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनों का समर्थन करना, भिन्न-भिन्न सामाजिक प्रणालियों वाले राज्यों के साथ शांतिपूर्ण सह-जीवन की नीति,

समाजवादी विचारधारा तथा वैज्ञानिक मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्व दृष्टिकोण की सुदृढ़ स्थापना, सांस्कृतिक क्रांति लाना, सोवियत विज्ञान का विकास तथा श्रमजीवियों में से बड़े पैमाने पर नए बुद्धिजीवियों का प्रशिक्षण, समाजवादी अन्तर्राष्ट्रीयतावाद तथा सोवियत देशभक्ति की कम्युनिस्ट भावना में सोवियत जनता की शिक्षा,

कम्युनिस्ट पार्टी को शोषण प्रणाली का तख्ता उलटने वाली शक्ति से कम्युनिस्ट समाज निर्मित करने में सहायक शक्ति के रूप में परिवर्तित करना, सर्वहारा अधिनायकत्व की प्रणाली में इसकी प्रमुख भूमिका लागू करना, मार्क्सवाद लेनिनवाद के आधार पर पार्टी की एकता को सुदृढ़ बनाना, पार्टी भीतरी जनवाद सामूहिक नेतृत्व के सिद्धांत और पार्टी जीवन के लेनिनवादी मानकों का विकास पार्टी कार्यकर्ताओं तथा सभी पार्टी सदस्यों की शिक्षा तथा उनका वैचारिक प्रशिक्षण, मार्क्सवाद-लेनिनवाद तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धांतों के आधार पर बिरादराना कम्युनिस्ट तथा मजदूर पार्टियों के साथ सम्बन्ध सुदृढ़ बनाना।

आज कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में सोवियत संघ कम्युनिस्ट समाज का निर्माण कर रहा है और मानवजाति को कम्युनिज्म की ओर मार्गदर्शन कर रहा है। नई परिस्थितियों में पार्टी ने क्रांतिकारी सिद्धांत के प्रति एक वास्तविक मार्क्सवादी लेनिनवादी दृष्टिकोण की मिसालें पेश की है और मार्क्सवाद-लेनिनवाद को नए प्रमुख सैद्धांतिक निष्कर्षों तथा प्रस्थापनाओं से समृद्ध बनाया है।

अपने कार्यक्रम में, कांग्रेसों तथा पूर्ण बैठकों के निर्णयों में तथा महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की ५०वीं वर्षगांठ, लेनिन की जन्म शताब्दी और सोवियत संघ की स्थापना की ५०वीं वर्षगांठ से सम्बंधित पार्टी दस्तावेजों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी ने देश में समाजवादी तथा कम्युनिस्ट निर्माण का अनुभव तथा वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी आन्दोलन का निचोड़ पेश किया है और इस प्रकार मार्क्सवाद लेनिनवाद को रचनात्मक ढंग से समृद्ध बनाया है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन की समय की परीक्षा में परखी हुई एक लड़ाका टुकड़ी है। सिद्धांत के क्षेत्र में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कार्य और इसकी सिद्धांतनिष्ठ लेनिनवादी नीतियों का और समाजवादी समुदाय की एकता के लिए इसके लगातार संघर्ष तथा मार्क्सवाद लेनिनवाद व सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के आधार पर समस्त अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता के लिए और पूंजीवादी विचारधारा, सुधारवाद तथा दक्षिणपंथी और वामपंथी अवसरवाद

के विरुद्ध इसके सुदृढ सघर्ष का बिरादराना मार्क्सवादी लेनिनवादी पार्टियो ने हमेशा समर्थन तथा अनुमोदन किया है। लेनिनवादी सिद्धातो के कार्यान्वयन, क्रातिकारी सघर्ष के मार्गदर्शन तथा समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण मे सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का व्यापक अनुभव तथा हर नई ऐतिहासिक अवधि की आवश्यकतानुसार स्वय पार्टी को विकसित करने मे इसका अनुभव आज समस्त अतर्राष्ट्रीय क्रातिकारी आन्दोलन को उपलब्ध है। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के विकास के लिए यह अनुभव अपरिहार्य है।

विश्व समाजवादी प्रणाली की लगातार वृद्धि और इसे अधिकाधिक सुदृढ बनाना सुनिश्चित करने के अपने महान ऐतिहासिक दायित्व की पूर्ति मे कम्युनिस्ट पार्टी कोई कसर उठा नही रखती। सोवियत सघ मे कम्युनिज्म के निर्माण तथा इसकी सुरक्षा शक्ति मे वृद्धि को कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत जनता का महान अन्तर्राष्ट्रीय कर्तव्य समझती है—एक ऐसा कर्तव्य जो पूरी विश्व समाजवादी प्रणाली तथा अतर्राष्ट्रीय क्रातिकारी आन्दोलन के हित मे है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी शाति और सभी देशो के जनगण की मैत्री की ध्वजवाहक है।

पार्टी सगठन के सिद्धात पार्टी के सगठनात्मक ढाचे का बुनियादी सिद्धात तथा राजनीतिक सगठन के रूप मे इसकी गतिविधि का आधार है जनवादी केन्द्रीयता। इसका मतलब है कि सभी मुख्य पार्टी निकायो के लिए चुनाव किए जाते हैं, इन पार्टी निकायो को एक निश्चित अवधि के भीतर अपने पार्टी सगठनो को तथा उच्चतर पार्टी निकायो को रिपोर्टें भेजनी पडती हैं, कडा पार्टी अनुशासन रखा जाता है, निर्णय बहुमत से लिए जाते हैं और उच्चतर निकायो के निर्णयो का पालन निचले निकायो के लिए अनिवार्य होता है। जनवादी केन्द्रीयता का अर्थ है जनवाद और केन्द्रीयता का समन्वय, जनवाद के बिना पार्टी अथवा व्यक्तिगत सगठनो की इच्छा जानना असभव होता है, केन्द्रीयता तथा अनुशासन के बिना न तो कार्यगत एकता सम्भव होती है और न ही पार्टी के निर्णयो को कार्यान्वित किया जा सकता है

जनवाद कम्युनिस्ट पार्टी की अतर्निहित विशेषता है। कोई पार्टी एक स्वैच्छिक राजनीतिक सगठन होती है—मिलते जुलते राजनीतिक दृष्टिकोण रखने वाले लोगो का सघ। इसीलिए स्वाभाविक है कि पार्टी सदस्यो मे पारस्परिक सम्बन्ध वही होने चाहिए जो समान मतव्यो वाले और समान उत्तरदायित्व रखने वाले समान लोगो के बीच हो सकते हैं।

पार्टी के भीतर जनवाद पार्टी नियमो मे दिए गए निम्नलिखित सिद्धातो द्वारा सुनिश्चित है पार्टी के सभी प्रमुख निकाय निर्वाचन द्वारा बनाए जाते है, पार्टी नेतृत्व का सामूहिक रूप होता है, अग्रणी पार्टी निकाय पार्टी के आम सदस्यो के प्रति उत्तरदायी और जवाबदेह हैं, पार्टी जीवन को गुप्त नही रखा जाता, सभी पार्टी सदस्यो को समान अधिकार प्राप्त हैं और वे समान रूप से पार्टी के अनुशासन के अधीन हैं।

केन्द्रीयता का सारतत्व यह है कि सभी पार्टी संगठन एक ही राजनीतिक और संगठनात्मक सिद्धांतों का पालन करते हैं। उनका कार्यक्रम तथा उनके नियम एक ही होते हैं और वे समान रूप से पार्टी अनुशासन के अधीन होते हैं।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी का एक उच्चतर प्रमुख निकाय है कांग्रेस और कांग्रेसों के बीच में केन्द्रीय समिति। सभी पार्टी संगठनों की रचना क्षेत्रिय उत्पादन के सिद्धांत के आधार पर की जाती है। उच्चतर पार्टी निकायों के निर्णय तथा निर्देश निचले पार्टी संगठनों के लिए मानना आवश्यक है। संगठनों में अल्पमत को बहुमत का निर्णय मानना पड़ता है। सभी पार्टी संगठनों को स्थानीय समस्याएं हल करने के मामले में स्वायत्तता प्राप्त होती है, बशर्ते यह हल पार्टी नीतियों के विरुद्ध न हो। साथ साथ पार्टी नियमों में विवादास्पद प्रश्नों पर अलग पार्टी संगठन के भीतर और कुल मिला कर पार्टी के भीतर विचार विमर्श की व्यवस्था है। पार्टी की ओर से प्रत्येक सदस्य को आलोचना करने तथा अपना सुझाव देने की स्वतंत्रता का अधिकार प्राप्त है।

इस प्रकार, जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांतों में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी और इसके सभी स्थानीय संगठनों के क्रियाकलाप में सच्चे जनवाद के साथ केन्द्र बद्ध नतेत्व और एक ही प्रकार के अनुशासन की आवश्यकता अत्यंत कारगर ढंग से समन्वित है।

जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांत समाज के राजनीतिक संगठन के इतिहास के विश्लेषण, क्रांतिकारी संगठनों के अनुभव तथा मार्क्स और एंगेल्स की रचनाओं के आधार पर लेनिन ने प्रस्थापित किए थे।

जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांत का अनुपालन पार्टी की एकता की विश्वस्त गारंटी है, एक ऐसी एकता जो लेनिन के शब्दों में, समस्याओं पर बातचीत करने भिन्न-भिन्न राय सुनने और कहने बहुमत जानने और उस आधार पर निर्णय करने और निष्ठा-पूर्वक उस निर्णय को कार्यान्वित करने में निहित है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी इस बात को बहुत महत्व देती है कि पार्टी की गतिविधि में जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांत को और अधिक विकसित किया जाए और इसे सृजनात्मक ढंग से लागू किया जाए। जैसा कि २४वीं पार्टी कांग्रेस में प्रस्तुत सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की रिपोर्ट में कहा गया "जनवाद के नाम पर अनुशासन का अराजकतापूर्ण अभाव और नौकरशाहाना केन्द्रीयता दोनों ही कम्युनिस्टों की गतिविधि और पहलकदमी के विकास में बाधा डालते हैं और मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी के लिए समान रूप से हानिकारक हैं।"

पार्टी का ढांचा सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी क्षेत्रीय उत्पादन के सिद्धांत के आधार पर निर्मित है। प्राथमिक संगठन कम्युनिस्टों के कार्य स्थल पर बनाए जाते हैं राज्य एवं सार्वजनिक एजेंसियों और औद्योगिक तथा कृषि प्रतिष्ठानों में। प्राथमिक संगठन क्षेत्रीय सिद्धांत के आधार पर पार्टी संगठनों में एकजुट किए जाते हैं।

प्राथमिक सगठन पार्टी के ढाचे का आधार हैं। वे जनता मे रह कर काम करते है जहा समाज की समस्त भौतिक एव सास्कृतिक सम्पत्ति की रचना होती है। ये सगठन पार्टी की मुख्य प्रेरक शक्ति हैं, इसके शक्ति स्रोत हैं।

एक स्वतन्त्र प्राथमिक इकाई की स्थापना के लिए कम से कम तीन पार्टी सदस्यों का होना आवश्यक है। यह सगठन पार्टी नियमो तथा पार्टी जीवन के आदर्शों के अनुसार काम करता है। औसतन, देश के एक औद्योगिक प्रतिष्ठान के पार्टी सगठन मे ८६ सदस्य होते हैं, निर्माण स्थल पर ३६ राज्य फार्म पर ६६ तथा सामूहिक फार्म पर ४९ सदस्य होते हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के ३,७८,००० से अधिक प्राथमिक सगठन है। प्राथमिक सगठनो की भूमिका और महत्व मे बराबर वृद्धि हो रही है। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस के निर्णयो से भी इस तथ्य की पुष्टि होती है। काग्रेस ने प्राथमिक सगठनो की भूमिका मे वृद्धि करने और प्रतिष्ठानो तथा एजेंसियो के काम पर इनका प्रभाव बढाने के सम्बन्ध मे कुछ कदम निर्धारित किए हैं।

प्राथमिक सगठन का उच्चतम निकाय है इसके सदस्यो की आम सभा। १५ से कम पार्टी सदस्यो वाले छोटे सगठन दैनिक कामकाज करने के लिए एक सचिव और उसका सहायक निर्वाचित करते हैं जिससे इनके लिए इकट्ठा होना और मिल कर समस्याओ का हल ढूढना आसान होता है। १५ से अधिक पार्टी सदस्यो वाले सगठन एक ब्यूरो निर्वाचित करते है और तीन सौ से अधिक पार्टी सदस्यो वाले सगठन एक पार्टी समिति का चुनाव करते है। पार्टी ब्यूरो अथवा पार्टी समिति के सदस्यो की सख्या की पार्टी नियमो मे कोई सीमा नही रखी गई है। इसका निर्णय प्रत्येक सगठन स्वय करता है। व्यावहारिक रूप से देखने मे आया है कि पार्टी ब्यूरो मे प्राय पाच से नौ तक पार्टी सदस्य होते है और पार्टी समिति मे १३ से १५ तक। पार्टी ब्यूरो और पार्टी समितिया अपने पार्टी सगठनो के समस्त दैनिक कामकाज का नेतृत्व करती है और अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्नो पर बातचीत के लिए समय समय पर सभी पार्टी सदस्यो की आम सभा का आयोजन करती हैं।

ब्यूरो का निर्वाचन वर्ष मे एक बार और समिति का निर्वाचन दो या तीन वर्ष मे एक बार होता है। यही नियम क्षेत्रीय पार्टी निकायो पर भी लागू होता है जिनमे प्राथमिक सगठन एकजुट होते हैं जैसे जिला नगर, प्रादेशिक और क्षेत्रीय पार्टी समितिया। इनका चुनाव अपने अपने पार्टी सम्मेलनो मे होता है। सघ जनतत्रो की कम्युनिस्ट पार्टियो की काग्रेसें पाच वर्ष मे एक बार बुलाई जाती है। वे अपने उच्चतर निकायो—केन्द्रीय समितियो और केन्द्रीय लेखा परीक्षण आयोगो—का निर्वाचन करती हैं।

प्राथमिक सगठनो से लेकर सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तक सभी पार्टी निकायो का चुनाव गुप्त मतदान द्वारा होता है। इनकी सरचना का

विधिवत नवीकरण होता रहता है और इस प्रकार नेतत्व का नरन्तय सुनिश्चित रहता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का सर्वोच्च निकाय पार्टी काग्रेस है। काग्रेसें नियमित रूप से प्रति पाच वर्ष मे कम से कम एक बार बुलाई जाती है। काग्रेस केन्द्रीय समिति, केन्द्रीय लेखा-परीक्षण आयोग तथा अन्य केन्द्रीय निकायो की रिपोर्टे सुनती और उन्हे स्वीकृति प्रदान करती है, पार्टी कायक्रम तथा नियमो का सशोधन तथा अनुमोदन करती है, घरेलू तथा विदेश नीति से सम्बन्धित मामलो म पार्टी लाइन निर्धारित करती है, कम्युनिज्म के निर्माण की महत्वपूण समस्याओ पर विचार करती है तथा निणय लेती है, और केन्द्रीय समिति तथा केन्द्रीय लेखा परीक्षण आयोग का निर्वाचन करती है। पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा केन्द्रीय लेखा परीक्षण आयोग के सदस्यो की सख्या काग्रेस ही निश्चित करती है। माच १९७१ म हुई सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस न केन्द्रीय समिति के २४१ सदस्य तथा १५५ एवजी सदस्य निर्वाचित किए और केन्द्रीय लखा परीक्षण आयाग के ८१ सदस्यो का चुनाव किया। दो काग्रेसो के बीच की अवधि म केन्द्रीय समिति सभी पार्टी गतिविधियो का निर्देशन तथा अपनी निर्वाचक काग्रेस द्वारा निरूपित नीति एव अन्य कदमो का कार्यान्वयन करती है।

केन्द्रीय समिति की पूण बठको म केन्द्रीय समिति के सभी सदस्य तथा एवजी सदस्य शामिल होते है। य बठके प्रति छ मास म कम से कम एक बार बुलायी जाती हैं।

केन्द्रीय समिति की पूण बठको के बीच की अवधि म पार्टी गतिविधि के निर्देशन के लिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति पोलिट ब्यूरो का निर्वाचन करती है। अन्य सामयिक पार्टी काय के निर्देशन के लिए मुख्यत कायकर्ताओ की नियुक्ति तथा पार्टी के निणयो की पूर्ति के सत्यापन के लिए केन्द्रीय समिति एक सचिवालय का भी निर्वाचन करती है। केन्द्रीय समिति अपना महासचिव निर्वाचित करती है तथा केन्द्रीय समिति की पार्टी नियत्रण समिति का सगठन करती है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के पोलिट ब्यूरो के सदस्य है एल आई ब्रेझनव, वाई वी आन्द्रोपोव ए ए ग्रेचको, वी वी ग्रिशिन ए ए ग्रोमिको, ए पी किरिलेन्को, ए एन कोसिगिन एफ डी कुलाकोव डी ए कुनायव के टी माजुरोव, ए जे पल्से एन वी पोदगोर्नी, डी एस पोल्यान्स्की, एम ए सुस्लाव, ए एन शेलपिन और वी वी श्चेरबित्स्की।

पोलिट ब्यूरो के एवजी सदस्य है पी एन देमिचेव पी एम माशेराव बी एन पोनोमारेव, एस आर रशीदोव, जी वी रोमानोव, एम एस सोलोमेन्तसव और डी एफ उस्तीनोव।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव है एल आइ ब्रेझनव।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के सचिव है पी एन देमिचेव वी आई दोल्गिख, आई वी कापितोनोव, के एफ कातुशेव, ए पा किरिलको, एफ डा कुलाकाव, वी एन पोनोमारेव, एम ए सुस्लोव, डी एफ उस्तीनाव।

पार्टी नियत्रण समिति के अध्यक्ष है ए जे पल्स।
लेखा-परीक्षण आयोग के अध्यक्ष है जी एफ सिजाव।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता समाजवाद की पूर्ण विजय के बाद सोवियत सघ म न तो समाजवाद का विरोधी वग रहा और न ही कोई एसा सामाजिक समूह जो समाजवाद के विरुद्ध हो। सवहारा के अधिनायकत्व का सोवियत राज्य धीरे धीरे समस्त जनता के राज्य मे विकसित हो गया है जो सभी वर्गों एव सामाजिक समूहो तथा कुल मिला कर समस्त जनता के हितो का प्रतिनिधित्व एव उनकी हिफाजत करता है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के एक करोड ४८ लाख सदस्य हैं। इन सदस्या म अगणी है श्रमिक, किसान और बुद्धिजीवी। जनता की अभेद्य सामाजिक, राजनीतिक तथा वचारिक एकता उन्नत समाजवादी समाज की विशिष्टता है। यह एकता आबादी के सभी वर्गों, हिस्सा तथा सभी पीढ़िया के हिता की समानता पर आधारित है। यह एकता पार्टी के सदस्या के और अधिक गुणात्मक सुधार की पूर्वपेक्षा है और इससे पार्टी के सामाजिक आधार का भी पयाप्त विस्तार होता है।

इसके साथ ही पार्टी का प्रधान अवलम्ब अब भी श्रमजीवी वग ही है। पहले ही की भाति यह समाज की प्रमख उत्पादक शक्ति और समाज के कम्युनिस्ट पुनगठन के लिए अत्यत सुसगत एव दृढसकल्पित योद्धा है।

पार्टी के नए बनाए जाने वाले सदस्या म प्रतिवष मजदूरो की सख्या म वद्धि हो रही है। जबकि १९६६ म नए पार्टी सदस्या म मजदूरो की सख्या ४५ ४ प्रतिशत थी १९७० म यह ५५ ४ प्रतिशत और १९७२ मे बढ कर ५७ ३ प्रतिशत हो गई।

इस समय सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कुल सदस्या म मजदूरो की सख्या ४० ७ प्रतिशत है जो ६० लाख स अधिक है। राजनीतिक परिपक्वता, उच्च स्तर की सामान्य शिक्षा और पशेवर प्रशिक्षण तथा सामाजिक एव राजनीतिक गतिविधि के क्षेत्र म अनुभव इनकी विशिष्टता हैं।

पार्टी म २२ लाख स अधिक सामूहिक फार्मों के किसान शामिल हैं जो पार्टी की कुल सदस्यता के १४ ७ प्रतिशत हैं। आज पार्टी म जो सामूहिक किसान आ रहे हैं उनमें अधिकाश ट्रैक्टर ड्राइवर, कम्बाइन आपरेटर और अन्य मशीनो के चालक हैं।

सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में ६६ लाख वेतन पर काम करने वाले श्रमिक तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से सम्बद्ध विशेषज्ञ हैं। यह संख्या कुल पार्टी सदस्यता का ४४ ६ प्रतिशत है। इसके साथ ही यह बताना भी आवश्यक है कि कम्युनिस्ट समाज के निर्माण में बुद्धिजीवियों मुख्यत तकनीकी विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों की भूमिका में ज्यों ज्यों वृद्धि होती जाती है त्यों त्यों वे अधिकाधिक संख्या में पार्टी में सम्मिलित हो रहे हैं।

कम्युनिस्ट पार्टी हमेशा अपने सदस्यों में नौजवानों की संख्या बढ़ाने की इच्छुक रही है, विशेषकर तरुण कम्युनिस्ट लीग से आने वाले नौजवानों की जो युवकों की उन्नत टुकड़ी है। पार्टी इसे पीढ़ियों एव पार्टी की क्रातिकारी भावना की निरंतरता एव एकता की अभिव्यक्ति तथा अपनी लड़ाकू एव काम की परम्पराओं का सातत्य मानती है। पार्टी में लिए गए तरुण कम्युनिस्ट लीग के सदस्यो—जिनकी उम्र २३ वर्ष से कम होती है—की संख्या १९६६ में ४० १ प्रतिशत थी जो १९७२ में बढ़ कर ६३ प्रतिशत हो गई। सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी में ३४ लाख नारियां हैं जो कुल सदस्यता का २३ प्रतिशत है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत सघ के जनगण की अटूट मैत्री, एकता एव एकजुटता का मूर्त रूप है। इसके सदस्यों में सोवियत सघ में रहने वाली सभी जातियों और उपजातियों के प्रतिनिधि हैं।

पार्टी का सतत विकास पार्टी तथा श्रमजीवी आम जनता के दृढ़ सम्बन्धों का सबूत है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नियमों के अनुसार कोई भी सोवियत नागरिक जो पार्टी का कार्यक्रम तथा नियम स्वीकार करता हो, जो कम्युनिज्म के निर्माण में सक्रिय भाग लेता हो, किसी पार्टी सगठन में काम करता हो, पार्टी के नियमों का पालन करता हो तथा पार्टी का चन्दा देता हो वह पार्टी का सदस्य हो सकता है।

१८ वर्ष की आयु वाले व्यक्तियों के लिए पार्टी में प्रवेश का द्वार खुला है। नए सदस्य एक साल की परख अवधि पूर्ण कर चुके उम्मीदवार सदस्यों में से लिए जाते हैं।

प्रत्येक पार्टी सदस्य को एक पार्टी कार्ड दिया जाता है, उम्मीदवार सदस्य को उम्मीदवारी का कार्ड मिलता है।

चूंकि कार्डों की अवधि समाप्त हो चुकी है इसलिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति ने २४वीं पार्टी कांग्रेस के निर्णय पर अमल करते हुए पहली मार्च १९७३ से पार्टी कार्डों का नवीकरण प्रारम्भ किया है। परम्परानुसार कार्ड न० एक पर वी आई लेनिन का नाम अंकित है। इस कार्ड पर सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के महासचिव एल आई ब्रेझनेव ने हस्ताक्षर किए।

जैसा कि सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की मई १९७२ की पूर्ण बैठक में कहा गया था पार्टी कार्डों का नवीकरण मात्र औपचारिकता नहीं है,

कि उस नए काड जारी कर दिए जाए। यह महत्वपूर्ण राजनीतिक अभियान प्रथमत पार्टी-कतारो का सुदृढ बनाना, प्रत्येक पार्टी सदस्य की पहलकदमी को प्रोत्साहन देना तथा उसके दायित्व म वद्धि करने और २४वी पार्टी कांग्रेस द्वारा देश के सामाजिक तथा आर्थिक विकास के लिए निरूपित कायक्रम को मूत रूप देन म कम्युनिस्टो की हिरावल भूमिका म वृद्धि करन की ओर लक्षित है।

पार्टी कार्डो के इस नवीकरण का शुद्धीकरण अभियान स कोई सम्बन्ध नही है जिसका इस्तमाल कभी पार्टी स विजातीय तत्वो का निकालन के उद्देश्य स किया जाता था। सोवियत सघ म समाजवाद की विजय के बाद तथा शोषक वर्गों का उन्मूलन हो जान के बाद इस प्रकार के शुद्धीकरण अभियानो की कोई आवश्यकता नही रही। परन्तु साथ-साथ इसका यह मतलब कदापि नही है कि पार्टी अपनी कतारो के भीतर वैसे लोगो की उपस्थिति बर्दाश्त कर लेगी जो पार्टी नियमो का उल्लघन करते है और पार्टी को बदनाम करते हैं।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी का कहना है कि ज्यो ज्यो सोवियत समाज के नेता के रूप मे पार्टी की भूमिका बढती जाती है, त्यो-त्यो प्रत्येक पार्टी सदस्य के दायित्वो म भी वद्धि होती जाती है। प्रत्येक कम्युनिस्ट को अपने काम म सवश्रेष्ठ होना चाहिए। उसे सावजनिक कत्तव्यो की पूर्ति मे दूसरो के लिए मिसाल पेश करनी चाहिए। उसे कम्युनिस्ट नैतिकता एव सदाचार का नमूना रूप होना चाहिए।

सोवियत समाज की निर्देशक शक्ति सोवियत सघ मे समाजवाद एव कम्यु निज्म के निर्माण के अनुभव से पता चलता है कि समाजवादी समाज के विकास के साथ साथ समाज के जीवन के सभी पहलुओ पर कम्युनिस्ट पार्टी का वैचारिक, राजनीतिक तथा सगठनात्मक प्रभाव बढ रहा है न कि घट रहा है। यह वस्तुनिष्ठ सामान्य नियम न केवल वैसी हालतो म काय करता है जैसी कि सोवियत सघ मे विद्यमान हैं, बल्कि इसका स्वरूप सार्वत्रिक है, और सामान्यत समाजवादी समाज पर लागू होता है।

निजी स्वामित्व तथा निजी प्रतिष्ठान पर आधारित समाज के विपरीत नयी समाज व्यवस्था—समाजवाद एव कम्युनिज्म स्वत स्थापित अथवा विकसित नही होता। यह जनता के सचेत एव उद्देश्यमूलक प्रयासो का परिणाम होता है। लेकिन पुरानी प्रणाली की तुलना म नई प्रणाली के भले ही कितने वस्तुगत लाभ क्यो न हो कम्युनिस्ट पार्टी जैसी जन निर्देशक शक्ति द्वारा मार्गदर्शन के बिना समाजवाद अथवा कम्युनिज्म हासिल नही किया जा सकता। उद्देश्य की एकता के सूत्र मे आबद्ध, समाज के विकास सम्बन्धी वस्तुनिष्ठ नियमो के अपने ज्ञान, लक्ष्य तक पहुंचने के मार्गों के स्पष्ट सज्ञान के सहारे और सगठन के लेनिनवादी सिद्धान्तो पर आधारित केवल पार्टी ही उद्देश्यो की सफल उपलब्धि के लिए समाज की सभी शक्तियो को एकजुट कर सकती है विकास के मुख्य रास्ते ठीक ठीक बता सकती है और नए समाज के विकास के लिए जनता के प्रयासो को उद्देश्यमूलक वैज्ञानिक एव विधिपूर्ण स्वरूप प्रदान कर सकती है।

सोवियत संघ में एक परिपक्व, उन्नत समाजवादी समाज का निर्माण हो चुका है। देश में सुयोग्य सरकार है तथा अनुसंधान निकाय हैं जो अर्थतंत्र की प्रगति तथा सांस्कृतिक विकास की योजना बनाने में समर्थ हैं। यहां सुदृढ सार्वजनिक संगठन हैं जो अपने सदस्यों के विशेष हितों की रक्षा करते हैं। यहां स्थानीय सरकारी निकाय हैं जो अपने जातीय प्रदेशों एवं जनतंत्रों आदि के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। और ये शक्तियां जितनी सक्रिय हों उनके प्रयासों को समन्वित करना उतना ही आवश्यक होता है ताकि राष्ट्रव्यापी और स्थानीय तथा सामान्य एवं विशेष हितों का समुचित समन्वय सुनिश्चित हो।

पार्टी द्वारा सामाजिक नियमन का उद्देश्य ठीक यह है कि सामाजिक अवयव के सभी अंगों का उद्देश्यमूलक, सुसमन्वित सुसन्तुलित विकास हो। समस्त जनता की हिरावल कम्युनिस्ट पार्टी ही यह कार्य सम्पन्न कर सकती है जिसमें सभी जातियों गतिविधि के सभी क्षेत्रों तथा पेशों के श्रेष्ठतम एवं राजनीतिक दृष्टि से अत्यन्त सचेत प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यह काम कम्युनिस्ट पार्टी ही सम्पन्न कर सकती है जो सभी वर्गों, सामाजिक समूहों जातियों तथा सभी पीढियों के हितों तथा विशिष्टताओं को ध्यान में रखने की क्षमता रखती है और अपनी नीतियों में इसे समुचित ढंग से अभिव्यक्त भी कर सकती है।

इसलिए पार्टी ही समाज के विकास की मार्गदर्शक तथा निर्देशक शक्ति है। अपने स्थानीय संगठनों द्वारा सरकारी निकायों तथा सार्वजनिक संगठनों द्वारा पार्टी समाज का राजनीतिक मार्गदर्शन करती है। राजनीतिक मार्गदर्शन का तात्पर्य कदापि यह नहीं है कि पार्टी आज्ञाएं जारी करती है और हर कोई उनका पालन करता है। राज्य निकायों तथा अन्य सार्वजनिक संगठनों के सम्बन्ध में पार्टी तथा पार्टी संगठनों को कोई प्रशासनिक अधिकार प्राप्त नहीं है। अनुनय द्वारा तथा अपने काम की जगह पर कम्युनिस्टों द्वारा कायम की गई व्यक्तिगत मिसालों द्वारा पार्टी समाज के मार्गदर्शन का काम करती है।

समाजवादी समाज में पार्टी की लगातार बढती हुई भूमिका तथा प्रभाव से एक वस्तुनिष्ठ प्रवृत्ति का पता चलता है जो उन बढती हुई समस्याओं के विस्तार तथा पेचीदगी का परिणाम है जिन समस्याओं का समाज को हल निकालना पडता है और जिन्हें हल करने के लिए अधिकाधिक उच्चतर स्तर के राजनीतिक मार्गदर्शन तथा संगठन की आवश्यकता होती है। परन्तु इसका मतलब कदापि यह नहीं कि पार्टी राज्य के प्रबंध का काम अपने हाथ में ले लेती है या राज्य तथा सार्वजनिक संगठनों की ओर से काम करती है या उन संगठनों की निगरानी करती है। इसके विपरीत कम्युनिस्ट पार्टी की नीति इस उद्देश्य की ओर लक्षित है कि इन संगठनों की पहलकदमी और स्वतंत्रता को हर संभव तरीके से विकसित किया जाए, जन संगठनों की गतिविधि को जहां तक हो सके उत्प्रेरित किया जाए और यह कोशिश की जाए कि ये संगठन सोवियत राज्य के जीवन

और सोवियत समाज के राजनीतिक संगठन में अधिकाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करें।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत राजनीतिक प्रणाली को सशक्तपूर्ण बनाने के लिए उद्देश्यमूलक तथा बहुमुखी काम कर रही है। इसके लिए पार्टी समाजवादी जनवाद के और अधिक विकास, मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियों की सोवियतों की जो सच्ची जनवादी सत्ता के निकाय हैं, ट्रेड यूनियनों, कोम्सोमोल तथा अन्य सार्वजनिक संगठनों की बढ़ती हुई भूमिका को और अधिक बढ़ाने की ओर विशेष ध्यान दे रही है।

एक मार्गदर्शक के रूप में पार्टी की सफलता प्रथमतः इसकी सदस्यता के गुणों तथा पारित निर्णयों के कार्यान्वयन में सभी कम्युनिस्टों के संगठित रूप में भाग लेने पर निर्भर करती है। यह पार्टी अनुशासन के स्तर पर, कम्युनिस्टों की वैचारिक शिक्षा तथा सैद्धांतिक प्रशिक्षण पर, जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धांत के सुसंगत परिपालन पर, पूरे देश में और सभी क्षेत्रों से सम्बद्ध लोगों के साथ कम्युनिस्टों के दिन प्रतिदिन के सम्बन्धों पर भी प्रत्यक्षतः निर्भर करती है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी हर प्रकार से पार्टी नेतृत्व की विधियों एवं शैली को परिपूर्ण बनाने की लगातार कोशिश कर रही है। यह भरसक प्रयत्न करती है कि इसके सभी संगठनों के रूढ़ाकपन में वृद्धि हो। यह त्रुटियों के प्रति बाल्शेविकों की विशिष्ट असहिष्णुता की भावना में कम्युनिस्टों को शिक्षा देती है आलोचना तथा आत्मालोचना के लिए उपयुक्त स्थितियाँ पैदा करती है।

कम्युनिस्ट पार्टी जनता के लिए है और जनता की ही सेवा करती है।

श्रमजीवियों के अधिकाधिक संख्या में सक्रिय रूप से पार्टी की गतिविधि में भाग लेने, उनके लगातार समर्थन तथा विश्वास के परिणामस्वरूप सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी एक लम्बा रास्ता तय करके अलग थलग मार्क्सवादी समूहों की हैसियत से आज कम्युनिज्म के ध्येय के प्रति निष्ठावान एक विराट संगठन का रूप धारण कर चुकी है। पार्टी के पूरे इतिहास से पता चलता है कि इसकी शक्ति तथा अजेयता का स्रोत है मार्क्सवाद-लेनिनवाद के प्रति इसकी वफादारी, श्रमजीवी वर्ग तथा समस्त जनता के साथ इसके जीवंत अटूट सम्बन्ध, इसकी वैचारिक तथा संरचनात्मक एकता, और इसके सदस्यों की राजनीतिक चेतना तथा अनुशासन का उच्च स्तर।

पार्टी तथा समस्त सोवियत जनता के हितों की एकता, श्रमजीवियों द्वारा पार्टी की नीति तथा गतिविधियों का चतुर्दिक समर्थन सोवियत समाज को अजय शक्ति बना देता है जिससे सोवियत समाज को हर प्रकार की परीक्षाओं का सामना करने और विश्वासपूर्वक आगे बढ़ने की क्षमता प्राप्त होती है।

सोवियत संघ में सार्वजनिक संगठन नागरिकों की एच्छिक संस्थाएं हैं जिनकी स्थापना उनके स्थानों तथा इच्छा के अनुसार होती है। इन संगठनों के माध्यम से लाखों नागरिक सार्वजनिक कामकाज तथा उद्योग के प्रबंध में भाग लेते हैं। ये संगठन सोवियत जनता को एक सुगठित सामूहिक में एकजुट करते हैं जिसमें सभी सदस्यों के हित एवं लक्ष्य एक समान हैं।

ट्रेड यूनियन सोवियत श्रमिकों के सबसे बड़े जन संगठन हैं जिनकी सदस्यता ६ करोड़ ८० लाख से अधिक है।

अपनी समस्त गतिविधि में सोवियत ट्रेड यूनियनें कम्युनिस्ट पार्टी की लेनिनवादी नीति से निर्देशन प्राप्त करती हैं। १६०५-१६०७ की प्रथम रूसी क्रांति की कठोर परीक्षा के अवसर पर जन्मी ट्रेड यूनियनों ने पार्टी के नेतृत्व में एक लम्बा रास्ता तय किया है।

सोवियत ट्रेड यूनियनें एक ऐसे समाज में काम करती हैं जहां समाजवाद की स्थापना हो चुकी है। और यह तथ्य उनकी प्रमुख लाक्षणिक विशिष्टताएं निश्चित करता है। सोवियत संघ में ट्रेड यूनियनों का काम मजदूरों के भौतिक हितों की हिफाजत करने तक ही सीमित नहीं है। सोवियत ट्रेड यूनियन सीधे तौर पर पूरे समाज के विकास, उत्पादन बढ़ाने इसकी कार्यकुशलता में वृद्धि करने में तथा राष्ट्रीय अर्थतंत्र की व्यवस्था में भाग लेती हैं। वे श्रमजीवियों के काम, रहन सहन तथा संस्कृति सम्बन्धी सभी हितों का ध्यान रखती हैं।

ट्रेड यूनियनों तथा उनके निकायों, यूनियन की सभाओं तथा निर्वाचित स्थायी उत्पादन सम्मेलनों के माध्यम से श्रमिक उत्पादन व्यवस्था में सीधे तौर पर भाग लेते हैं। यूनियन सभाएं नियमित रूप से प्रशासन की रिपोर्टों का सारांश सुनती हैं जिनमें प्रतिष्ठान के निदेशक की रिपोर्ट भी शामिल होती है। उत्पादन सम्मेलनों में हमेशा आम श्रमिक शामिल रहते हैं। जैसा कि लेनिन ने कहा था सोवियत परिस्थितियों में ट्रेड यूनियन श्रमिकों के लिए प्रबन्ध प्रशासन तथा कम्युनिज्म की शिक्षा के विद्यालय बन जाती हैं।

शोषक प्रणाली का उन्मूलन करने और श्रमिक जन को पूंजीवादी अत्याचार से छुटकारा दिलाने के बाद अक्तूबर समाजवादी क्रांति ने उनके लिए ऐसी परिस्थितियां जुटायीं जिनमें वे अपने लिए तथा समस्त सोवियत समाज के लिए काम कर सकें, ऐसी परिस्थितियां जिनमें वे उद्देश्यमूलक सृजनात्मक प्रयास कर सकें। यह साथ-साथ ट्रेड यूनियनों की भूमिका तथा कार्यों में भी आमूल परिवर्तन लाए जाने का द्योतक था। पूंजीवाद के अधीन ट्रेड यूनियनें सर्वहारा के लिए वर्ग संघर्ष का विद्यालय होती हैं एक

ऐसा स्थान जहा वे अपने आर्थिक एव राजनीतिक हितो की रक्षा करते हैं। लेकिन जब सत्ता मजदूरो के हाथो म आ जाती है तो ट्रेड यूनियनें नई प्रणाली का प्रधान आधार बन जाती हैं। वे समाजवादी समाज की सक्रिय निर्माता बन जाती है।

ट्रेड यूनियनो का ढाचा सोवियत सघ के सविधान की धारा १२६ श्रमजीवियो के ट्रेड यूनियन बनाने के अधिकार की गारटी करती है।

सोवियत ट्रेड यूनियनो म ऐच्छिक आधार पर मजदूर, सभी पेशो के दफ्तर कर्मी शामिल होते है। इस सम्बन्ध मे नस्ल, जाति, लिंग भेद तथा धर्म की कोई पाबन्दी नही है।

सोवियत सघ म ट्रेड यूनियनें फक्टरी अथवा उद्योग के सिद्धात पर सगठित की जाती हैं। एक प्रतिष्ठान अथवा उद्योग की एक शाखा मे काम करने वाले श्रमिक, वे चाहे किसी भी पेशे मे सम्बद्ध हो एक ही ट्रेड यूनियन मे शामिल होते है।

प्राथमिक सगठन ट्रेड यूनियनो की मूलभूत इकाइया होते हैं। इनका गठन सभी प्रतिष्ठानो एव सस्थानो म किया जाता है। १९७३ मे प्राथमिक ट्रेड यूनियन सगठनो की सख्या ६ ४६ ००० थी। इनके बाद जिला नगर प्रदेशीय, क्षेत्रीय तथा जनतत्रीय ट्रेड यूनियन समितिया आती है जिनका गठन शाखा के सिद्धात पर किया जाता है। सभी ट्रेड यूनियन निकायो का निर्वाचन गुप्त मतदान द्वारा होता है। ट्रेड यूनियन काग्रेस सर्वोच्च निकाय है। इसका आयोजन पाच वर्ष म कम स कम एक बार अवश्य किया जाता है। काग्रेस नियमो की स्वीकृति प्रदान करती है काय निर्धारित करती है केन्द्रीय राज्य योजना तथा आर्थिक निकायो की रिपोर्टों को सुनती है तथा राष्ट्रीय आर्थिक योजनाओ के क्रियान्वयन म जीवन स्तर म सुधार लाने म, सास्कृतिक स्तर उपर उठाने म तथा श्रमिको व दफ्तर कर्मियो की राजनीतिक चेतना बढाने के काम म ट्रेड यूनियन के भाग लेने सम्बन्धी कार्य निर्धारित करती है। गत, १५वीं काग्रेस मार्च १९७२ म हुई थी।

काग्रेसो के बीच की अवधि म ट्रेड यूनियन गतिविधि का मार्गदर्शन ट्रेड यूनियनो की अखिल सघीय परिषद करती है। इसके अध्यक्ष प्रसिद्ध ज[illegible] ए एन शेलेपिन हैं। इसका पता है ४२ लेनिन प्रासपक्त, मास्को।

शाखा ट्रेड यूनियन का सर्वोच्च निकाय काग्रेस होती है जिसका आयोजन हर पाच वर्ष म [illegible] किया जाता है। काग्रेसो के बीच की अवधि म शाखा केन्द्रीय समिति ट्रेड यूनियन का कामकाज निर्देशित करती है।

कुल मिला कर देश म २५ शाखा ट्रेड यूनियन हैं। इनम सबस बडी वे हैं जिनम शामिल हैं धातुकर्मी, खनिकर्मी, इजीनियरिंग कमचारी, कोयला खनक, रासायनिक तथा [illegible] उद्योग कमचारी व्यापारी कमचारी शिक्षा तथा विज्ञान कर्मी व सास्कृतिक [illegible] म सम्बद्ध कमचारी।

हाल के वर्षों म कृषि कर्मियो तथा सामूहिक फार्मों के मिस्तरियो एव राज्य फार्मों के श्रमिको सहित विशेषना की टेड यूनियन की सदस्यता म महत्वपूण वद्धि हुइ है।

शाख ट्रेड यूनियनें अपनी गतिविधिया मात्र अपने क्षेत्र तक ही सीमित नही रखती। उनका काय समन्वित करने के लिए क्षेत्रीय सिद्धात के आधार पर नगरा प्रदेशो, क्षेत्रा तथा अगीभूत सघ जनतत्रा म ट्रेड यूनियन परिषदा का निर्वाचन किया जाता है।

ट्रेड यूनियनो के काय सोवियत टेड यूनियनें चार प्रमुख क्षेत्रा मे काय करती हैं

सोवियत ट्रेड यूनियन श्रमिका को प्रबध एव आर्थिक नियत्रण की शिक्षा देती हैं उनम उत्पादन के प्रति उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करती है और उत्पादन व्यवस्था म उन्हे सीधे शामिल करके उत्पादन तथा आर्थिक समस्याओ का हल निकालने के प्रति उनम रचनात्मक पहलकदमी विकसित करती हैं।

ट्रेड यूनियनो म यह भी उम्मीद की जाती है कि व श्रमिका के कानूनी अधिकारा तथा भौतिक हिता की रक्षा करें श्रमिका की काय एव जीवन परिस्थितिया तथा मनोरजन सुविधाओं मे सुधार के लिए काम करें सावजनिक स्वास्थ्य का बढावा दें तथा श्रम कानूना एव श्रमिका के अधिकारो के अनुपालन पर नजर रखें।

सुशिक्षित, परिश्रमी तथा उच्च नतिक स्तरो वाला नया आदमी ढालने के उद्देश्य में बडे पमाने पर शक्षिक एव सास्कृतिक काय के विकास के लिए ट्रेड यूनियनें जो हो सकता है करती हैं।

सोवियत ट्रेड यूनियनें प्रगतिशील ट्रेड यूनियन आदोलन की सबसे बडी और अत्यत जुझार टुकडिया मे से एक है। ये अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय हैं। य विश्व के पमाने पर मजदूरो की वग एकजुटता बनाने तथा शाति जनवाद और सामाजिक प्रगति के लिए सघष के क्षेत्र मे विश्व ट्रेड यूनियन आदोलन की एकता की ओर अपने प्रयास निर्देशित करती है।

ट्रेड यूनियनो के अधिकार सविधान ट्रेड यूनियनो के लिए सभी काय स्थलो पर स्वतत्रतापूवक अपनी गतिविधिया चलाने का अधिकार सुनिश्चित करता है। वहा उनका सभा भवन, उनके अपने क्लब, पुस्तकालय और खेलकूद सबधी सुविधाए होती है। ट्रेड यूनियनो के अपने प्रकाशन गह तथा समाचारपत्र एव पत्रिकाए होती हैं।

सोवियत सघ म श्रम, पगार अथवा काय एव जीवन की स्थितियो सम्बधी कोई भी कानून टेड यूनियनो की सहमति के बिना स्वीकार नही किया जा सकता।

टेड यूनियनें राष्ट्रीय आर्थिक विकास योजनाए तथा जनता के भौतिक एव सास्कृतिक स्तर ऊचा उठाने सम्बधी योजनाए तयार करने मे प्रत्यक्ष रूप से भाग लेती हैं। इन सभी समस्याओ पर राज्य एव आर्थिक निकाय जो निणय लेते हैं उनम ट्रेड यूनियन सगठनो की राय का पूरा पूरा ध्यान रखा जाता है।

ट्रेड यूनियनों ने नवी पचवर्षीय योजना के विशदीकरण एव कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से भाग लिया। नवी पचवर्षीय योजना में श्रमिकों तथा उनके परिवारों के काम एव जीवन की स्थितियों में सुधार के लिए एक व्यापक सामाजिक आर्थिक कार्यक्रम शामिल है।

सोवियत ट्रेड यूनियनों को विधि निर्माण सम्बन्धी पहलकदमी का अधिकार प्राप्त है। इसका अर्थ यह हुआ कि वे श्रमिकों की भौतिक स्थितियों तथा खुशहाली और सास्कृतिक सेवाओं में सुधार एव इस क्षेत्र में ट्रेड यूनियनों द्वारा अदा की जाने वाली भूमिका में वृद्धि की ओर लक्षित कानूनों के मसौदे तैयार करके उन्हें स्वीकृति के लिए सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत तथा उसके अध्यक्षमण्डल को दे सकती हैं। सोवियत ट्रेड यूनियनें अपने इस अधिकार का व्यापक उपयोग करती हैं। उदाहरणार्थ १९७१ में इनकी पहलकदमी पर सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने "फैक्टरी तथा दफ्तर ट्रेड यूनियन समितियों के अधिकार" नामक नए विनियम स्वीकार किए। इन्हें ट्रेड यूनियनों की अखिल सघीय परिषद ने प्रस्तुत किया था। ट्रेड यूनियनों की पहलकदमी पर श्रम सुरक्षा प्रणाली सामाजिक बीमा तथा पेंशन प्रणाली सम्बन्धी कई कानून स्वीकार किए जा चुके हैं।

१९७० में सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने सोवियत सघ तथा सघ जनतन्त्रों के विधि निर्माण के मूल सिद्धान्त से सबधित कानून स्वीकार किया। इसे तैयार करने में ट्रेड यूनियनों ने प्रत्यक्ष भाग लिया था और इसका असाधारण महत्व है। इस सम्बन्ध में सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत में ट्रेड यूनियनों की अखिल सघीय परिषद के एक सचिव ने इस प्रश्न पर रिपोर्ट पेश की थी।

राज्य सामाजिक बीमा के प्रशासन का काम ट्रेड यूनियन करती है। वे श्रम कानून तथा सुरक्षा सबधी इजीनियरी व्यवस्था पर राज्य नियत्रण लागू करती हैं। काम की स्थितियों तथा पगार सबधी निर्णय ट्रेड यूनियनों की स्वीकृति तथा प्रस्तुत कानूनों के आधार पर किये जाते हैं। सरकारी एजेंसियों के साथ साथ ट्रेड यूनियन भी सार्वजनिक भोजनालय प्रतिष्ठानों व्यापार एव सामुदायिक सेवाओं के काम की निगरानी करती हैं। उन्हें मकानों के निर्माण तथा मकानों के आवटन किये जाने के काम की निगरानी का भी अधिकार प्राप्त है। वे जनता के लिए व्यवस्थित दैनिक सेवाओं तथा सास्कृतिक सेवाओं के प्रश्नों का भी ध्यान रखती हैं। सार्वजनिक नियत्रण के विविध क्षेत्रों में ट्रेड यूनियनें सक्रिय भाग लेती हैं।

ट्रेड यूनियनें और प्रशासन फैक्टरी तथा दफ्तर ट्रेड यूनियन समितियाँ वार्षिक आधार पर प्रशासन के साथ सामूहिक सौदा करती हैं। इस प्रकार के करार उत्पादन, काम एव जीवन स्थितियों पगार तथा मजदूरों की काम कुशलता बढ़ाने के क्षेत्र में कर्मचारियों तथा प्रशासन के बीच पारस्परिक प्रतिबद्धताओं पर आधारित होते हैं। दूसरे शब्दों में यह सामूहिक सौदा कर्मचारियों के जीवन में सम्बद्ध सभी प्रश्नों के बारे होता है। सामूहिक सौदे पर स्वीकृति से पहले श्रमिकों की आम सभा में सर्वांगपूर्ण

विचार किया जाना आवश्यक है। व्यवस्थापको द्वारा अपनी प्रतिबद्धताओं की पूर्ति किए जाने की विधिवत निगरानी का काम ट्रेड यूनियन समितियां करती हैं।

फैक्टरी और दफ्तर ट्रेड यूनियन समितियों को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। वे उत्पादन योजनाएं, प्रतिष्ठानों के विस्तार की योजनाएं तथा मकानों के निर्माण एवं मरम्मत की योजनाएं तैयार करने में भाग लेती हैं। व्यवस्थापकगण कीमतों, श्रेणियां, उत्पादन के कोटा, पगार प्रणालियां तथा बोनस आदि के बारे में निर्णय ट्रेड यूनियन समितियों की सहमति के बिना नहीं ले सकते।

किसी भी प्रतिष्ठान में किसी कर्मचारी को व्यवस्था अथवा निगरानी के उच्चतर स्थान पर नियुक्त करने से पहले ही ट्रेड यूनियन की राय जानना अनिवार्य है। वर्तमान कानून के अनुसार प्रबन्धक किसी भी कर्मचारी को ट्रेड यूनियन समिति की सहमति के बगैर उसके पद से हटा नहीं सकता। इसके अतिरिक्त किसी भी कर्मचारी को कानून में दिए गए विशेष हालात में ही उसके पद से हटाया जा सकता है।

उत्पादन के कोटे तथा पगार निश्चित करने में भी ट्रेड यूनियनों को व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। व्यवस्थापकगण प्रोत्साहन कोष का निश्चय तथा संचालन ट्रेड यूनियन समिति की सहमति से ही करते हैं।

कभी-कभी प्रबन्ध तथा कर्मचारियों के बीच विवाद खड़े हो जाते हैं। ये विवाद स्थानीय ट्रेड यूनियन समिति के शिकायत आयोगों तक पहुंचा दिए जाते हैं। ये आयोग समता के आधार पर संगठित किए जाते हैं और इनमें प्रबन्ध तथा ट्रेड यूनियन के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यदि आयोग विवाद निपटाने में असफल रहें तो फैसला ट्रेड यूनियन समिति पर छोड़ दिया जाता है। यह फैसला प्रबन्ध को मानना पड़ता है और इसे अदालत के आदेश द्वारा ही रद्द किया जा सकता है। लेकिन इस प्रकार भी रद्द तभी किया जा सकता है यदि फैसले में श्रम कानून का उल्लंघन किया गया हो।

यदि कर्मचारी को ट्रेड यूनियन समिति अथवा प्रबन्ध का निर्णय स्वीकार न हो तो वह अपने श्रम हितों की रक्षा के लिए राज्य की सहायता ले सकता है जैसे सरकारी वकील के कार्यालय या जन न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकता है जिसे दस दिनों के भीतर मामले की जांच करनी ही पड़ती है।

ट्रेड यूनियनें अपने सदस्यों की कार्य-स्थितियों में सुधार करने, उनके स्वास्थ्य की रक्षा करने तथा उनके लिए विश्राम एवं मनोरंजन की श्रेष्ठतम सुविधाएं उपलब्ध करने की ओर विशेष ध्यान देती हैं।

ट्रेड यूनियनें श्रम कानूनों, सुरक्षा नियमों तथा औद्योगिक स्वास्थ्य व्यवस्था के नियमों के पालन की निगरानी भी करती हैं।

कोई भी नया प्रतिष्ठान ट्रेड यूनियनों की स्वीकृति के बिना चालू नहीं किया जा सकता। यदि प्रतिष्ठान में किसी भी प्रकार की सुविधाओं की कमी हो या वह स्वच्छता स्तरों पर पूरा न उतरता हो तो यह स्वीकृति प्राप्त नहीं हो सकती। यदि कोई प्रतिष्ठान

अथवा खाता सुरक्षा सबधी आवश्यकताओ की कसौटी पर खरा नही उतरता तो ट्रेड यूनियन समितिया उसे बन्द किए जाने की माग कर सकती है।

ट्रेड यूनियनो के पास छ श्रम सुरक्षा वैज्ञानिक अनुसधान सस्थान हैं। ये सस्थान शोर पर काबू पाने की विधिया मे सुधार पर काम कर रहे हैं। श्रमिको की बिजली आदि से सुरक्षा आवश्यक सुरक्षा उपकरण तथा काय स्थितियो और सुरक्षा इजीनियरी व्यवस्था मे सुधार की विधियो पर भी ये सस्थान काम करते हैं।

ट्रेड यूनियन तथा उत्पादन प्रबन्ध सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस म पेश की गई केन्द्रीय समिति की रिपोट मे कहा गया है "पार्टी का एक मुख्य काम है श्रमिक जनता को अधिकाधिक बडे पमाने पर उत्पादन प्रबन्ध मे शामिल करना। पार्टी अपने प्रयास इस प्रकार निर्देशित कर रही है कि हर सचेत कर्मी, हर सचेत मजदूर लेनिन के शब्दो मे यह महसूस करे कि "वह न केवल अपनी फक्टरी का स्वामी है बल्कि देश का एक प्रतिनिधि भी है।"

श्रमिक जनता को उत्पादन प्रबन्ध मे शामिल करने के काम मे ट्रेड यूनियन तथा उनके निकाय और श्रमिको की सभाए महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। लगभग २० लाख श्रमिक फक्टरी तथा अन्य स्थानीय ट्रेड यूनियन समितिया और उनके लेखा परीक्षण आयोगो के लिए निर्वाचित किए गए है। जिला, नगर, प्रादेशिक क्षेत्रीय तथा जनतत्रीय ट्रेड यूनियन समितिया तथा परिषदो के सचिवो मे अधिकाशत साधारण श्रमिक ही है।

स्थायी उत्पादन सम्मेलन उत्पादन प्रबन्ध मे मजदूरो के भाग लेने का सक्रिय रूप हैं। इस प्रकार के सम्मेलनो के सदस्य आम सभाओ मे एक वष की अवधि के लिए निर्वाचित किए जाते हैं। इनमे शामिल होते है फक्टरी मजदूर, दफ्तर कमचारी, ट्रेड यूनियनो प्रबन्ध पार्टी तथा अन्य सावजनिक सगठनो के प्रतिनिधिगण। इन सम्मेलनो के कामकाज का निर्देशन ट्रेड यूनियनें करती है। ये रिपोर्टें सुनने और उत्पादन पगार उत्पादन काट काय स्थितियो सम्बन्धी सभी प्रश्नो तथा रहन सहन की हालतो व सास्कृतिक सेवाओ म सुधार करने के विषय म व्यवस्थापको को सिफारिश भेजने का अधिकार होता है।

आज देश म लगभग १ ६० ००० स्थायी उत्पादन सम्मेलन मौजूद हैं जिनकी सदस्यता म लगभग ६० लाख श्रमिक शामिल हैं।

जन नियत्रण चौकिया तथा ग्रुपो की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। इन चौकियो और ग्रुपो म ८० लाख से अधिक मजदूर शामिल हैं। ये नियमित रूप स राज्य योजनाओ की पूर्ति की निगरानी करते हैं उत्पादन रिजव का लेखा-जोखा करते हैं और प्रतिष्ठानो की उत्पादन वित्तीय तथा आर्थिक गतिविधि का निरीक्षण करते हैं।

श्रमिक जन सक्रिय रूप से अपने आविष्कार तथा युक्तिकरण सबधी सुझाव पेश करने और उत्पादन को सर्वांगपूर्ण बनाने के काम मे उनके भाग लेने के जन रूप का ... है। हजारो प्रतिष्ठानो म स्थानीय इजीनियरी अनुसधान सस्थाए तथा नवप्रवर्तको

एव आविष्कारको की सस्थाए मौजूद है। इनमे एक करोड दस लाख से अधिक वज्ञानिक, इन्जीनियर, तक्नीशियन तथा श्रमिक शामिल है। १९७२ मे ३६ लाख से अधिक आविष्कार तथा युक्तिकरण सुझाव राष्ट्रीय अथतत्र की विविध शाखाओ म कार्यान्वित किए गए जिनसे तीन अरब रूबल की वार्षिक बचत होती है।

श्रेष्ठतम उत्पादन परिणाम दिखलान के लिए भिन्न भिन्न श्रमिको एव श्रमिको के जत्थो के बीच समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा श्रम की ओर सोवियत मजदूरो के नए रुझान की अभिव्यक्ति है। यह रुझान नए समाजवादी समाज की उन परिस्थितियो म ही ठोस हो सका जिनम उत्पादन के स्वामी तथा अपन देश के स्वामी होने की भावना ने श्रम की ओर नए रचनात्मक दृष्टिकोण को जन्म दिया। हर मजदर प्रत्यक्ष रूप से अपने श्रम के परिणामो म तथा पूरे प्रतिष्ठान के काय के परिणामो म दिलचस्पी लेन लगा।

समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा के कोई स्वाथपूण लक्ष्य नही होत। सामान्यत प्रतियोगिता" का जो अथ समझा जाता है उससे भी इसका कोई वास्ता नही होता। समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा निम्नलिखित सिद्धान्त पर आधारित है 'एक व्यक्ति अच्छा काम करता है दूसरा उससे अच्छा करता है, तीसरा इनसे पीछे है—जो तुमसे अच्छा काम करते हैं उनकी तरह काम करने की कोशिश करो जो तुम से पीछे रह गए है उनकी सहायता करो और कुल उत्पादन बढान के लिए मिल कर काम करो।" समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा समाजवादी समाज के स्वरूप के सवथा अनुकूल है जिसम जनता के परस्पर सम्बन्ध साथियो की भाति एक दूसर से सहयोग करन तथा आपसी सहायता पर आधारित होते है। मत्रीपूण प्रतिस्पर्द्धा म श्रमिको को अपनी पहलकदमी तथा व्यक्तिगत रचनात्मक योग्यताए प्रदर्शित करन के व्यापक अवसर प्राप्त होत ह।

समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा की शुरुआते १९१९ के कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक के दिनो स जुडी हुई है। उस अवसर पर रेलवे कमचारियो न अपन खाली समय म बिना वेतन के इजिनो की मरम्मत का काम किया और श्रम उत्पादकता का उच्च स्तर प्राप्त कर लिया। यह श्रम की ओर एक नया, अत्यत ईमानदार, कम्युनिस्ट दृष्टिकोण था।

प्रथम पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना (१९२९ ३३) के दौरान पूर श्रमिक वग ने समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा का माग अपना लिया। सामूहिक खेती की प्रणाली जब पूरी तरह जम गई तो समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा न एक वास्तविक जन आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा म भाग लेने वाले लोगो की सख्या म दिन-प्रतिदिन वद्धि होती रही। इससे उन्ह अपने अनुभव को समृद्ध करने तथा अपनी काय कुशलताओ म सुधार करन म सहायता मिली।

आज सात करोड से अधिक लोग इस होड म लगे है कि नवी पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना (१९७१ ७५) को समय स पहले पूरा करने का सम्मान प्राप्त करे। यह योजना सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी कांग्रेस म स्वीकार की गयी थी। श्रमिको के इस प्रयास का आखिरी मतलब है उत्पादन निपुणता म वद्धि करना और इस प्रकार जनता के जीवन स्तर को ऊपर उठाना।

नए नए लक्ष्यो न होड के भी नए नए रूपो को जन्म दिया। २४वी काग्रेस म प्रस्तुत सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केद्रीय समिति की रिपोट मे लियोनिद ब्रेझनेव ने कहा कि इस समय सोवियत जनता के सामने जो काम है वह " ऐतिहासिक महत्व का है समाजवादी आर्थिक प्रणाली के लाभो के साथ वनानिक तथा तकनीकी क्राति की उपलब्धियो को अभिनत समन्वित करना, विज्ञान तथा उत्पादन को एक दूसरे से मिलान के हमारे अपने स्वाभाविक समाजवादी तरीका का व्यापक प्रस्तुत।"

इन लाभो म से एक यह है कि राष्ट्रीय अथ तत्र के विकास तथा उत्पादन प्रबध म श्रमिक जन व्यापक रूप से भाग लेते है। समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा के वतमान लक्ष्या से भी यह स्पष्ट है अधिक उत्पादन, कम से कम लागत पर और बेहतर क्वालिटी।

श्रमिक जन अपनी योजनाए तयार करते है और उनमे अपने लिए जो लक्ष्य रखन हैं वे राज्य योजनाओ म दिए गए आकडा से अधिक होते है। वे कम खच पर उच्चतम क्वालिटी के माल तयार करने, नई प्रविधि म प्रवीणता प्राप्त करने तथा उत्पादन क्षमता बढान की होड म लग जाते है। समाजवादी प्रतिस्पर्द्धा सामाजिक प्रगति के विकास का एक सशक्त साधन बन गई है।

सामाजिक बीमा तथा श्रमिको के लिए विश्राम सोवियत सघ म श्रमिको के सामाजिक बीमा का पूरा खच राज्य उठाता है। परन्तु सामाजिक बीमा के क्षेत्र म सभी खर्चे ट्रेड यूनियन समितियो के निणयो के आधार पर किए जाते ह।

१९७३ म सामाजिक बीमा का बजट २१ अरब ४० करोड रूबल था।

सामाजिक बीमा प्रणाली का विकास जिन अय सुविधाओ स जुडा हुआ है व है स्वास्थ्य सवाओ म लगातार सुधार, श्रमिको के मनोरजन की व्यवस्था का ट्रेड यूनियनो द्वारा ध्यान रखा जाना, स्वास्थ्य केन्द्रो म सिनटोरियमो की सख्या म वद्धि तथा पयटन एव व्यायाम का विकास। निम्नलिखित आकडो से पता चलता है कि ट्रेड यूनियनो द्वारा स्वास्थ्य निमाण एव खेलकूद के क्षेत्र म किया जा रहा काय कितना विस्तारपूण है ट्रेड यूनियनो के पास २ ६०० स्टेडियम, दो लाख से अधिक फुटबाल मदान तथा वालीबाल, बास्केटबाल और टनिस कोट, १२,००० खेलकूद के मदान, लगभग ७ ००० व्यायामशालाए और हजारो नौकाचालन केन्द्र, स्कीइग स्थल तथा तरण म तालाब हैं। लाखो लोग इनका नि शुल्क लाभ उठाते हैं।

सोवियत सघ म ३२ ट्रेड यूनियन खेल कूद सस्थाए (१,०५ ००० सस्थ पर) हैं जिनकी सदस्यता दो करोड तीस लाख से भी अधिक है। इनम सबस बडी सस्थाए है स्पार्ताक "दूम", "बुरवेस्तनिक" तथा लोकोमोतिव"।

ट्रेड यूनियनो १८,००० सिनटोरियम स्वास्थ्य रक्षा केन्द्र, पयटन होटल तथा अन्य मनोरजन सुविधाओ का सचालन करती है। केवल १९७३ म इन केन्द्रो न ८० लाख म अधिक लोगो का उपचार करन एव अवकाश बिताने की सुविधाए उपलब्ध [illegible] १९७३ म ही श्रमिक जनो के ७७ लाख ५० हजार बच्चो [illegible] केन्द्रो द्वारा [illegible]

स्थित ग्रीष्मकालीन स्वास्थ्य शिविरो मे अपनी छुट्टिया बिताईं। अधिकाश श्रमिक जन यहा निःशुल्क निवास करते हैं या उन्हे इस खर्च मे ७० प्रतिशत की छूट प्राप्त होती है।

ट्रेड यूनियन बडे पैमाने पर सास्कृतिक एव शिक्षा कार्य भी कर रही हैं।

ट्रेड यूनियनो की अखिल सघीय केन्द्रीय परिषद तथा ट्रेड यूनियन केन्द्रीय समितिया अनेक समाचारपत्र व पत्रिकाए स्वय अथवा मत्रालयो और अन्य एजेन्सियो के साथ मिल कर प्रकाशित करती हैं।

प्रमुख ट्रेड यूनियन समाचारपत्र "त्रुद" ५० लाख से अधिक प्रतियो मे छपता है।

ट्रेड यूनियनो का अपना बहुत बडा प्रकाशन गृह है जिसका नाम है "प्रोफिज्दात।"

ट्रेड यूनियनो के पास ३०,००० से अधिक पुस्तकालय है जिनमे चलते फिरते पुस्तकालय भी शामिल है। इनके अतिरिक्त २१ ००० से अधिक क्लब तथा सास्कृतिक प्रासाद एव सास्कृतिक गृह हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सबध सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धान्तो पर अमल करते हुए सोवियत ट्रेड यूनियनें अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता के लिए लगातार कटिबद्ध रही हैं। वे समाजवादी देशो की ट्रेड यूनियनो के साथ बिरादराना सहयोग विकसित कर रही है अन्य देशो के प्रगतिशील ट्रेड यूनियन केन्द्रो तथा समस्त विश्व के श्रमिको के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध बढा रही है।

पूजीवादी देशो मे इजारेदारियो के विरुद्ध मजदूरो के सघर्ष को और राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलनो को सोवियत ट्रेड यूनियनो का सहयोग सदैव प्राप्त रहता है।

सोवियत ट्रेड यूनियनो के ११६ देशो की ट्रेड यूनियनो के साथ सम्बन्ध हैं तथा वे उनके साथ सक्रिय सहयोग करती है।

सोवियत ट्रेड यूनियन विश्व ट्रेड यूनियन सगठन का अग है। वे यूनेस्को तथा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम सगठन के कार्य मे भी भाग लेती हैं।

अखिल सघीय लेनिनवादी तरुण कम्युनिस्ट लीग (कोम्सोमोल) प्रमुख सोवियत युवजन का एक जन सगठन है। इसका मुख्य काम है कम्युनिस्ट समाज के उच्च शिक्षा प्राप्त ईमानदार युवा निर्माता तयार करना जो अपनी समाजवादी मातृभूमि के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हो। कोम्सोमोल सदस्यो का यह कर्तव्य है कि वे अपने काम द्वारा सोवियत तरुणो के समक्ष मिसाल पेश करें अपने ज्ञान एव शिक्षा का विस्तार करें, देश के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन मे सक्रिय हो, सोवियत सघ के जनगण के बीच मैत्री बढाए तथा सभी देशो मे श्रमिक युवजन के साथ बिरादराना सम्बन्ध सुदृढ बनाए। कोम्सोमोल सगठन के अपने नियम तथा केन्द्रीय एव स्थानीय नेतृत्वकारी निकाय है। कोम्सोमोल की सभी गतिविधिया सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व मे चलती

है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी राज्य एवं आर्थिक विकास के हर क्षेत्र में काम माल को अपना सर्वप्रथम सहायक मानती है।

कोम्सोमोल की स्थापना मजदूर और किसान युवक संगठनों की पहली अखिल संघीय कांग्रेस के अवसर पर की गई थी। यह कांग्रेस २६ अक्तूबर १६१८ को हुई थी। कोम्सोमोल का नाभिकेन्द्र प्राथमिक संगठनों को लेकर गठित किया गया है जिनकी स्थापना फार्मों फक्टरियो, कार्यालयो, स्कूलो, संस्थानो तथा सोवियत सेना की टुकड़ियों में जहां कहीं भी कम से कम तीन कोम्सोमोल सदस्य हों, की जाती है।

१९७३ में कोम्सोमोल के चार लाख से अधिक प्राथमिक संगठन थे जिनकी सदस्यता लगभग तीन करोड थी। कोम्सोमोल की सदस्यता १४ और २८ वर्ष के बीच की आयु के सभी युवक युवतियों के लिए खुली है। संगठन का सर्वोच्च निकाय अखिल संघीय तरुण कम्युनिस्ट लीग की कांग्रेस है। कांग्रेसो के बीच की अवधि में कोम्सोमोल की गतिविधियां तरुण कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति निर्देशित करता है। यह समिति अपने सदस्यों में से एक ब्यूरो और एक सचिवालय निर्वाचित करती है। तरुण कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति के प्रथम सचिव ई एम त्याझेल्निकोव हैं।

तरुण कम्युनिस्ट लीग के सदस्य विश्व जनवादी युवक संगठन, अन्तर्राष्ट्रीय विद्यार्थी संघ तथा विश्व युवक समारोहो के काय मे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। एक सौ से अधिक देशो के युवजन ३० अन्तर्राष्ट्रीय संगठनो और एक हजार विभिन्न राष्ट्रीय युवा एवं विद्यार्थी तथा बाल संगठनो से कोम्सोमोल के सदस्यों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं।

तरुण कम्युनिस्ट लीग की ओर से १६० कोम्सोमोल एवं किशोर पायोनियर समाचारपत्र, २६ युवक पत्रिकाएं तथा ४० किशोर पायोनियर तथा बाल पत्रिकाएं सोवियत संघ की २२ भाषाओं में छपती हैं। कुल मिला कर ये प्रकाशन ६ करोड ४० लाख प्रतियो में छपते हैं (समाचारपत्रों में ८० लाख से अधिक छपने वाला कोम्सोमोल्स्काया प्राव्दा तथा पायोनेर्स्काया प्राव्दा केन्द्रीय पत्र हैं)। कोम्सोमोल के २८६ युवा सपाद मंडल रेडियो, टलीविजन तथा तीन प्रकाशनगृह— 'मोलोदाया ग्वार्दिया', "मोलोद" (उक्राइन) तथा 'यश ग्वार्दिया' (उजबेक सोवियत समाजवादी जनतंत्र)—में काम करते हैं। 'मोलोदाया ग्वार्दिया" का सचालन तरुण कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति करती है।

अखिल संघीय किशोर पायोनियर संगठन इस संगठन का नाम लेनिन के नाम पर रखा गया है। यह एक एच्छिक कम्युनिस्ट जन संगठन है। २ करोड ५० लाख से अधिक बच्चे इसके सदस्य हैं। इसका संगठन १६ मई १९२२ को किया गया था।

इसकी दैनिक गतिविधि का निर्देशन अखिल संघीय लेनिनवादी तरुण कम्युनिस्ट लीग करती है।

किशोर पायोनियर सगठन स्कूली और सावजनिक सगठनो के साथ मिल कर मातभूमि से प्रेम की भावना कम्युनिस्ट पार्टी के प्रति निष्ठा एव जनगण के बीच मत्री की भावना म बच्चो का परिपोषण करता है। यह उन्ह सामाजिक जीवन म सक्रिय रूप से हिस्सा लेन, मेहनती और शारीरिक एव नतिक दोना दृष्टि से स्वस्थ रहन की शिक्षा देता है।

१० और १५ वष के बीच की आयु का कोई भी बच्चा किशोर पायोनियर हो सकता है। प्रवेश का निणय एक किशोर पायानियर इकाई की रली मे किया जाता है।

किशोर पायोनियर सगठन आम तौर पर उन किशोर पायोनियर इकाइया को लेकर गठित किये जाते है जिनके सदस्य स्कूल म एक ही ग्रुप के बच्चे होन ह। (इकाइया निवास स्थानो म भी बनाई जा सकती है।) ये इकाइया जत्था के रूप म सगठित रहती हैं जो स्कूला बालगृहा या बोर्डिंग स्कूलो म काम करती है।

प्रत्येक सगठन की अपनी लाल पताका होती है और हर इकाई का अपना छोटा सा झण्डा होना है। किशोर पायानियरा के अय प्रतीक हैं एक तिकोनी लाल टाई पायोनियर सलाम और उद्देश्य वाक्य "कम्युनिस्ट पार्टी के ध्येय की खातिर लडने के लिए तयार रहो!" जिसके उत्तर म कहा जाता है "हमेशा तयार है!"

किशोर पायोनियर रैलिया, सैर-सपाटे तथा यात्राए आयोजित करत हैं जिनका उद्देश्य होता है अपन देश के बारे मे अधिक जानकारी प्राप्त करना, युवा कलाकारो के कायक्रम, खेलकूद तथा सैनिक खेलकूद भी आयोजित किय जाते है। क्लबा म किशोर पायोनियर विज्ञान एव प्रविधि के किशोर मित्र ग्रुपो म तथा कला ग्रुपो म एकजुट होत हैं। व पडोसिया तथा अपन निवास क्षेत्र के अय लोगा की सहायता के लिए भी ग्रुप सगठित करत है।

लाखा की सख्या म सोवियत स्कूली बच्चे अपनी छुट्टिया किशोर पायानियर शिविरो, पयटन केन्द्रा तथा सिनेटोरियमा म बिताते है। उदाहरणाथ, १९७५ मे लगभग १०,००० ग्रामीण क्षेत्रीय शिविरो का ५० लाख से अधिक बच्चो न लाभ उठाया। काला सागर के तट पर क्रीमिया मे देश के सबसे बडे शिविर आर्तेक मे प्रतिवष ३०,००० से अधिक बच्चा के लिए व्यवस्था है।

सोवियत सघ मे ३,५०० से अधिक किशोर पायानियर तथा स्कूली बच्चा के गृह और प्रासाद है, लगभग ६०० किशोर तकनीशियनो एव प्रकृतिवादियो के केन्द्र तथा पयटन केन्द्र, २,५०० से अधिक खेलकूद विद्यालय, ३,२०० सगीत, कला तथा बले विद्यालय, १२७ बाल थियटर तथा ३२ बाल रेलवे है। वयस्का के क्लबो एव सस्कृति प्रासादा में भी बच्चा के लिए विशेष स्थान है। बच्चा के अपने पाक, स्टेडियम, एक छोटा नौका बेडा तथा मोटर माग हैं।

बच्चा के लिए २७ समाचारपत्र तथा लगभग ४० पत्रिकाए प्रकाशित की जाती हैं। किशोर पायोनियरा का मुख्य समाचारपत्र पायोनेर्स्काया प्रावदा ९० लाख प्रतिया

म छपना है। विशेष प्रकाशनगृह बच्चो के लिए लाखा की सख्या म पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करत हैं।

सोवियत किशोर पायोनियरा के ६० से अधिक देशो के बाल सगठनो क साथ सम्बन्ध स्थापित है।

सोवियत महिला समिति सोवियत महिला समिति की स्थापना १९४१ में सोवियत महिलाओ की एक फासिस्ट विरोधी समिति के रूप मे की गई, इसे वर्तमान नाम १९५६ मे दिया गया। समिति के उद्देश्य हैं—सोवियत सघ और दूसरे देशा की महिलाओ के बीच मत्रीपूर्ण एव पारस्परिक सदभावना के सम्बन्ध सुदढ बनाना, महिलाओ एव बच्चो के अधिकारो की रक्षा के लिए अन्तर्राष्ट्रीय जनवादी आन्दोलन में भाग लेना।

समिति की पूर्ण बठक इसका प्रबन्ध काय करती है। पूर्ण बठका के बीच की अवधि मे यह काय अध्यक्षमण्डल करता है। ससार की पहली महिला अतरिक्षयात्री वालन्तीना तेरेश्कोवा समिति की अध्यक्षा है। समिति अन्तर्राष्ट्रीय जनवादी महिला सगठन म सम्मिलित है।

यह समिति अखिल सघीय केन्द्रीय टेड यूनियन परिषद के साथ मिल कर **सोवियत नारी** पत्रिका दस भाषाओ मे प्रकाशित करती है।

पता है २३ पुश्किन स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत सघ के युवक सगठनों की समिति इस समिति की स्थापना १९५६ में की गई थी (उससे पहले १९४१ से १९५६ तक इसका नाम फासिस्ट विरोधी सोवियत युवक समिति था)। इसकी गतिविधि का लक्ष्य है साम्राज्यवाद के विरुद्ध और शाति, राष्ट्रीय स्वतत्रता तथा सामाजिक प्रगति के लिए युवजन के प्रयास निर्देशित करना तथा उन्ह प्रोत्साहन देना। विदेशी युवक एव छात्र सगठनो तथा विभिन्न अन्तर्राष्टीय सगठनो के साथ सोवियत युवक सगठना का सहयोग सुदढ बनाना भी इस समिति का उद्देश्य है। सोवियत सघ के युवक सगठनो की समिति के १२६ देशो के युवक सगठना स सम्बन्ध है। यह समिति सोवियत युवजन के विभिन्न सावजनिक, व्यावसायिक, छात्र सास्कृतिक, खेलकूद सबधी एसोसिएशनो तथा अन्य ऐसे सगठना को भी एक जुट करती है जो सोवियत युवजन के बीच सक्रिय है।

नवम्बर १९७२ म सोवियत युवक सगठना की समिति की पहल पर श्रमजीवी युवका की एक अन्तर्राष्टीय बठक मास्को मे हुई।

समिति म छात्र सगठनो का प्रतिनिधित्व सोवियत सघ की छात्र परिषद करती है। विश्व जनवादी नौजवान सगठन के ब्यूरो इसकी पत्रिका **वर्ल्ड यूथ** के सपादकमडल अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सघ के सचिवालय तथा अन्तर्राष्ट्रीय छात्र सघ की पत्रिका **वर्ल्ड स्टूडेंट न्यूज** क सपादकमण्डल म सोवियत सघ के युवक सगठना का स्थायी प्रतिनिधित्व है। सोवियत युवक समिति की शाखाए देश के सभी जनतत्रा क्षेत्रा एव प्रदेशो म हैं।

...त सघ के युवक सगठना की समिति के अध्यक्ष जी आई यानायेव है।

पता है ८/७ बोल्शोई कोम्सोमोल्स्की परयुलोव, मास्को।

विदेशों के साथ मैत्री एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों की सोवियत संस्थाओं का संघ इस संघ की स्थापना १९५८ में हुई। इससे पहले १९२५ से १९५८ के बीच विदेशों के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों की अखिल संघीय संस्था मौजूद थी। इस संस्था का उच्चतम निकाय अखिल संघीय सम्मेलन है जो संघ की परिषद का निर्वाचन करता है। यह परिषद सम्मेलनों के बीच की अवधि में संघ की गतिविधि निर्देशित करती है। सम्मेलन लेखा परीक्षण आयोग का भी निर्वाचन करता है। निर्वाचित परिषद अपना कार्यकारी निकाय—अध्यक्षमण्डल—निर्वाचित करती है। सुविख्यात जननेत्री एन वी पोपोवा अध्यक्षमण्डल की अध्यक्षा है।

यू एस एम एफ एक जन संगठन है जिसकी गतिविधि में लाखों सोवियत नागरिक भाग लेते हैं। इसमें शामिल हैं विदेशों के साथ मैत्री एवं सांस्कृतिक सम्बन्धों की ५८ संस्थाएं एवं एसोसियेशन, विभिन्न विज्ञानों, संस्कृति एवं कलाओं के १६ विभाग एवं एसोसियेशन, सोवियत एवं विदेशी नगरों के बीच सम्बन्धों के एसोसियेशन, संघ जनतंत्रों में स्थापित १४ मैत्री संस्थाएं, रूसी संघ के नगरों (लेनिनग्राद वोल्गोग्राद, इर्कुत्स्क, खाबारोव्स्क, सोची, तोग्लियाती) में स्थापित इस संघ की छः शाखाएं, मैत्री संस्थाओं की संघ जनतंत्रों, क्षेत्रों, प्रदेशों, नगरों एवं जिलों में स्थापित ७९५ शाखाएं और लगभग २०,००० सामूहिक सदस्य (जिनमें प्रतिष्ठानों, संस्थानों सामूहिक एवं राज्य फार्मों, सार्वजनिक, सांस्कृतिक तथा शिक्षा संगठनों, शिक्षा संस्थानों आदि के कर्मचारीगण)।

मास्को में विदेशों के जनगण के साथ मैत्री गृह तथा लेनिनग्राद में शांति एवं मैत्री गृह मौजूद है। इस संघ की ओर से मास्को न्यूज नामक समाचारपत्र अंग्रेजी, फ्रांसीसी, स्पेनी तथा अरबी भाषाओं में और कल्चर एण्ड लाइफ नामक पत्रिका रूसी, अंग्रेजी, स्पेनी, जर्मन तथा फ्रांसीसी भाषाओं में प्रकाशित की जाती है।

मैत्री संस्थाओं के संघ के १३५ देशों के ६,००० से अधिक सार्वजनिक वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठनों और वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक जगत के महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ सम्पर्क स्थापित हैं।

इस संघ का पता है १४ कालिनिन प्रोस्पेक्त, मास्को।

भूतपूर्व सोवियत सैनिकों की समिति इस समिति की स्थापना सितम्बर १९५६ में की गई थी। इसका उच्चतम निकाय अखिल संघीय पुराने सैनिकों का सम्मेलन है और सम्मेलनों के बीच की अवधि में गतिविधि का निर्देशन समिति की पूर्ण बैठक करती है। समिति के अध्यक्ष है जनरल पी आई बातोव।

यह समिति भूतपूर्व सैनिकों प्रतिरोध आन्दोलन के योद्धाओं फासिज्म के सताए हुए एवं कैद में रखे गए लोगों तथा युद्ध में अपंग हुए लोगों के अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठनों के साथ सम्बन्ध स्थापित एवं विकसित करती है। समिति अंतर्राष्ट्रीय

प्रतिरोध आन्दोलन सघ तथा आस्त्र विटज, माउथासेन तथा डाखाउ नजरबन्दी शिविरो के भूतपूर्व पीडितो की अन्तराष्ट्रीय समितियो की सदस्य है।

पता है ४ गोगोल बुलेवाड, मास्को।

सोवियत शान्ति समिति इस समिति की स्थापना १६४६ म की गइ थी। यह सगठन सोवियत सघ के शाति आन्दोलन को समन्वित करन का काम करता है। इसका निर्देशक निकाय है अध्यक्षमण्डल जिसके प्रधान है प्रसिद्ध सोवियत लेखक एव लेनिन पुरस्कार विजेता एन एम तिखोनाव।

समिति एक मासिक समाचार बुलेटिन बीसवीं सदी और शान्ति रूसी, अग्रेजी, स्पेनी, फ्रासीसी तथा जमन भाषाओ म प्रकाशित करती है।

पता है १० क्रोपोत्किन्स्काया स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत अफ्रीकी एशियाई एकजुटता समिति इस सगठन का लक्ष्य अफ्रीकी एशियाई एकजुटता आन्दोलन की एकता और एकजुटता को सुदृढ बनाना और सोवियत जनगण एव अफ्रीका तथा एशिया के जनगण के बीच मैत्री तथा सहयोग के सम्बद्धन के लिए काय करना है। इसकी स्थापना मई १६५६ म की गई थी। इसक अध्यक्ष हैं विख्यात ताजिक सोवियत लेखक मिर्जो तुर्सुन-जाद। अफ्रीकी एशियाई जनगण एकजुटता सगठन के स्थायी सचिवालय म समिति के प्रतिनिधि शामिल हैं।

पता है १० क्रोपोत्किन्स्काया स्ट्रीट मास्को।

यूनानी जनवादियो के साथ एकजुटता की सोवियत समिति यूनान म सनिक विद्रोह के बाद अखिल सघीय ट्रेड यूनियनो की केन्द्रीय परिषद, सोवियत शाति समिति, सोवियत सघ के युवक सगठनो की समिति, सोवियत महिला समिति, भूतपूव सोवियत सनिको की समिति विदेशो के साथ मैत्री एव सास्कृतिक सम्बन्धो की सोवियत सोसाइटियो के सघ सोवियत पत्रकार सघ तथा सोवियत लेखक सघ न यूनानी जनवादियों के साथ एकजुटता की सोवियत समिति की स्थापना की। समिति के सदस्यो मे विशिष्ट सावजनिक विभूतिया शामिल है। इसके अध्यक्ष है प्रसिद्ध लेखक सेर्गेई स्मिर्नोव।

यह समिति एक मासिक बुलेटिन रूसी यूनानी, फ्रासीसी अग्रेजी तथा जमन भाषाओं मे प्रकाशित करती है।

समिति का पता है १० क्रोपोत्किन्स्काया स्ट्रीट मास्को।

यूरोपीय सुरक्षा की सोवियत समिति इसकी स्थापना जून १६७१ म हुइ। ट्रेड यूनियनो, युवको महिलाओ अनुसधान सहकारिता के सगठनो तथा अन्य सावजनिक सगठनो कला एव साहित्य सगठनो के सदस्यो तथा सोवियत सघ के ससदीय ग्रुप ने इस समिति की स्थापना की। सावजनिक विभूतिया राजनेतागण, मजदूर, किसान, वैज्ञानिक लेखक तथा सास्कृतिक कर्मी इस समिति के सदस्य है। सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की सघ परिषद के अध्यक्ष तथा सोवियत सघ के ससदीय ग्रुप के

प्रधान ए पी शितिकोव इस समिति के अध्यक्ष है। समिति रूसी, फ्रांसीसी अग्रेजी तथा जर्मन भाषाओ म एक पत्रिका प्रकाशित करती है।

समिति का पता है १० क्रोपोत्किस्काया स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत सघ की स युक्त राष्ट्र स स्था इसकी स्थापना १९५६ मे हुई। इसके नेतत्वकारी निकाय केन्द्रीय बोर्ड के अध्यक्ष है अकादमीशियन का स्तातिनोव। सस्था के दस सामूहिक सदस्य हैं—सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी ट्रेड यूनियनो की अखिल सघीय केन्द्रीय परिषद, अखिल सघीय ज्ञानियो सोसाइटी, आदि। इन सदस्यो द्वारा यह सस्था सयुक्त राष्ट्र सघ के उद्देश्यो एव सिद्धान्तो का प्रचार करती है शाति अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा जनगण के बीच पारस्परिक सदभावना एव मत्री के लिए भी काम करती है।

सोवियत सघ की सयुक्त राष्ट्र सस्था विश्व सयुक्त राष्ट्र सस्था सघ से सम्बद्ध है।

पता १९ दिमत्री उल्यानोव स्ट्रीट, मास्को।

अन्तर्राष्ट्रीय कानून का सोवियत एसोसियेशन इसका सगठन १९५६ म हुआ। यह एक राष्ट्रीय शाखा के रूप मे अन्तर्राष्ट्रीय कानून सस्था से सम्बद्ध है जिसका प्रधान कार्यालय लन्दन मे है।

एसोसियशन के सदस्यो मे शामिल है अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओ के विधिवेत्ता विशेषज्ञ, उच्चतर शिक्षा सस्थानो के अध्यापक, मत्रालयो के अधिकारी राजनयिक और अन्तर्राष्ट्रीय कानून के विशेषज्ञ व्यक्ति। सस्था की कायकारिणी समिति के अध्यक्ष है जी आई तुन्किन।

सस्था की ओर से एक वषबोध अन्तर्राष्ट्रीय कानून का सोवियत वषबोध प्रकाशित किया जाता है।

पता १० फ्रुन्जे स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत स घ की स्लाव समिति इस समिति की स्थापना १९४७ म की गई। यह समिति सोवियत जनगण एव विदेशो मे रहने वाले स्लावो के बीच बिरादराना मत्री बढाने का काम करती है। इसके अध्यक्ष हैं ए एस गुन्दोरोव।

पता है १० क्रोपोत्किस्काया स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत रेड क्रास एव रेड क्रेसे ट सोसाइटी सघ इस सघ की स्थापना १९२३ म की गई। अन्तर्राष्ट्रीय रेड क्रास सगठनो मे इसका प्रतिनिधित्व सोवियत सघ की रेड क्राम एव रेड क्रेसेट सोसाइटी सघ की कायकारिणी समिति करती है। काय कारिणी समिति के अध्यक्ष है एन वी त्रोयान।

इस सघ के सोवियत सघ मे ४ २३,००० प्राथमिक सगठन है जिनके ८ करोड ५० लाख से अधिक सदस्य है, जो रोग निरोधक कार्यो, छूत के रोगो से लडन, पर्यावरण सुरक्षा तथा रक्तदान आन्दोलन सगठित करने मे चिकित्सा सस्थानो की सहायता करते हैं।

सोवियत रेड क्रास एवं रेड क्रेसेंट सोसाइटी सघ अनेक अफ्रीकी और एशियाई देशों को अस्पताल और क्लीनिक निर्मित करने, महामारियों से लड़ने तथा राष्ट्रीय चिकित्सा कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने में सहायता पहुंचाता है। यह उन देशों की भी सहायता करता है जहां प्राकृतिक सकट आन पड़े हों। सोवियत नागरिकों तथा अन्य देशों के लोगों के लिए खोए हुए रिश्तेदारों की तलाश करने में भी यह सघ सहायक होता है।

कार्यकारिणी की ओर से एक मासिक पत्रिका सोवियत रेड क्रास प्रकाशित की जाती है।

कार्यकारिणी का पता है ५ प्रथम चेर्योमुश्किन्स्की प्रोयज्द, मास्को।

अखिल सघीय सस्था "ज्नानिये" (ज्ञान) यह एक वैज्ञानिक शैक्षणिक सस्था है। इसकी स्थापना जुलाई १९४७ में की गई। निर्देशक निकाय इसका बोर्ड है। अध्यक्ष है अकादमीशियन आई आई आर्तोबोलेव्स्की। सस्था में १,३१,८२२ प्राथमिक सगठन शामिल है।

सस्था के २५,००,००० सदस्यों में सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी तथा सघ जनतत्रों की विज्ञान अकादमियों के १,७०० अकादमीशियन तथा सवादी सदस्य, १०७,००० डाक्टर तथा विज्ञान के कैंडीडेट शामिल हैं। १९७२ में सस्था के सदस्यों ने २०,००० लेक्चर दिए जिनमें श्रोताओं की सख्या ९५ करोड से अधिक थी। इसके अतिरिक्त ३ लाख रेडियो एवं टेलीविजन कार्यक्रम पेश किए गए। लगभग ७०,००,००० वार्ताएं, तथा ८,००,००० सम्मेलन, वैज्ञानिक विचार विमर्श तथा भिन्न भिन्न प्रकार की बैठकें हो चुकी हैं। सस्था का अधिकाश कार्य २२ ५०० जन विश्वविद्यालयों में होता है (जिनमें सदस्यों की सख्या ५० लाख है)। मास्को स्थित बहुतकनीकी सग्रहालय, केन्द्रीय लेक्चर एजेंसी अनेक शहरों की लेक्चर एजेंसियां, वैज्ञानिक तकनीकी प्रचारगृह (मास्को लेनिनग्राद तथा कियेव में), केन्द्रीय बहुतकनीकी पुस्तकालय तथा मास्को फ्रुंजे एवं ताशकन्द (कीवा की एक शाखा सहित) स्थित वैज्ञानिक नास्तिकवाद गृह इस सस्था से सम्बद्ध हैं। सस्था के ३२ नक्षत्रालय भी है।

इस सस्था के सगठनों द्वारा १९७३ में जो लोकप्रिय विज्ञान साहित्य प्रकाशित किया गया उसकी प्रतियों की सख्या १० करोड से अधिक थी।

पता ४ प्रोयज्द सेरोवा मास्को।

स्थल सेना, वायु सेना एवं जल सेना के साथ सहयोग की ऐच्छिक सोवियत सोसाइटी यह एक सैनिक देशभक्त जन सगठन है। स्थल सेना के साथ सहयोग की ऐच्छिक सस्था जल सेना के साथ सहयोग की ऐच्छिक सस्था तथा वायु सेना के साथ सहयोग की ऐच्छिक सस्था—इन तीनों प्रतिरक्षा सोसाइटियों को १९५१ में मिला कर एक करने के फलस्वरूप इस सोसाइटी की स्थापना हुई। इस सगठन का सर्वोच्च निकाय है अखिल सघीय काग्रेस जो केन्द्रीय समिति तथा केन्द्रीय लेखा-परीक्षण आयोग का निर्वाचन करती है। इसके अध्यक्ष है वैमानिकी के

मादाल ए आई पोर्किश्किन। इन्हे तीन बार सावियत सघ के वीर की उपाधि प्रदान की जा चुकी है।

पता ८८/३ वोल्वोग्रास्कोय माग मास्वा।

सोवियत सघ की वज्ञानिक तकनीकी सोसाइटिया इनम उत्पादन शाखाओ द्वारा सगठित देश की २३ वज्ञानिक तकनीकी सोसाइटिया शामिल है। य ट्रेड यूनियनो के निर्देशन म काय करती है और अखिल सघीय वज्ञानिक तकनीकी सोसाइटियो की परिषद मे एकजुट हैं। अध्यक्ष हैं ए वाई इश्लिन्स्की। १९७३ म ५५ लाख के लगभग इन सस्थाओ के सदस्य तथा १ ००,००० व्यायिक सदस्य पजीकृत हुए। प्रतिष्ठानो, निमाण स्थलो, सामूहिक और राज्य फार्मों, अनुसधान एव डिजाइन सस्थाना म इस सगठन के प्राथमिक सगठना की सख्या १,०० ००० हो चुकी है। प्राथमिक सगठनो की ४४,००० से अधिक परिषदें है जो प्रतिष्ठाना की उत्पादन एव तकनीकी परिषदो का काय करती है।

औद्योगिक, निर्माण, यातायात एव कृषि प्रतिष्ठाना म इस सस्था के सगठनो के नेतत्व मे ३,००,००० से अधिक नव प्रवतन दल, आर्थिक विश्लेपण ब्यूरो प्रयोगशालाए, तकनीकी सूचना ब्यूरो तथा काम को वैज्ञानिक ढग स सगठित करन की परिषदें काम कर रही हैं। इस सोसाइटी के अधीन ३३ प्राविधिक गह है जो बडे शहरा म स्थित है। इसके सगठन प्राविधिक प्रगति एव आर्थिक ज्ञान का प्रसार के उद्देश्य से २,५०० जन विश्वविद्यालय चलात है जिनकी सदस्य सख्या ६,००,००० से अधिक है। इस सोसाइटी का केन्द्रीय बोड मत्रालया एव विभागा के साथ मिल कर ५६ वज्ञानिक तकनीकी पत्रिकाए प्रकाशित करता है। अखिल सघीय वज्ञानिक-तकनीकी सोसाइटी की परिषद के मुखपत्र का नाम है **एन टी ओ एस एस एस आर** (वज्ञानिक तकनीकी सोसाइटी) है।

सोवियत सघ की वज्ञानिक तकनीकी सोसाइटी अनक देशा की वज्ञानिक, इजीनियरी तथा तकनीकी सस्थाओ से सम्बन्ध रखती है। कुछ सोवियत सोसाइटिया अन्तर्राष्ट्रीय सगठनो की सदस्य है। इस सस्था की अखिल सघीय परिषद इजीनियरी सगठना के विश्व सघ की सदस्य है।

पता ४२ लेनिन प्रास्पेक्त, मास्को।

अखिल सघीय आविष्कारक एव युक्तिकारक सोसाइटी इस सस्था की स्थापना १९५८ मे हुई। इसकी दखभाल ट्रेड यूनियनो के हाथ मे है।

१९७३ म सस्था की सदस्यता लगभग ६०,००,००० थी और प्राथमिक सगठना की सख्या ६९,००० थी। १९७२ म लगभग ३५ ०० ००० आविष्कार एव नवीन क्रियाए लागू की गई जिनके फलस्वरूप तीन अरब रूबल से अधिक वार्षिक बचत हुई।

केन्द्रीय परिषद के अध्यक्ष है जी पी सोफोनोव।

सोसाइटी की ओर से एक मासिक पत्रिका आविष्कारक एवं प्रवर्तक प्रकाशित की जाती है जिसकी स्थापना १९२६ मे की गई थी।

पता ४२ लेनिन प्रास्पेक्त मास्को।

अखिल संघीय वैज्ञानिक चिकित्सा सोसाइटियां १९७२ म २८ अखिल संघीय वैज्ञानिक चिकित्सा सोसाइटियो के लगभग ३ ००,००० सदस्य थे। इन संस्था के कार्य का निर्देशन सोवियत संघ के सार्वजनिक स्वास्थ्य मंत्रालय के परामर्श निकाय वैज्ञानिक चिकित्सा सोसाइटियो की परिषद द्वारा किया जाता है। इसके अध्यक्ष ई वी बुलिन है।

अखिल संघीय वैज्ञानिक चिकित्सा सोसाइटियो की ओर से ३७ वैज्ञानिक पत्रिकाए प्रकाशित की जाती हैं और ये संस्थाए २९ अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से सम्बद्ध है।

परिषद का पता है ३ राह्मानोव्स्की पेरेयुलोक, मास्को।

सोवियत लेखक संघ इस संघ की स्थापना १९३४ म हुई। इसकी सदस्य संख्या ७ ३०० है। सोवियत लेखक संघ के बोर्ड के प्रथम सचिव है जी एम मार्कोव। संघ एव स्वायत्त जनतंत्रो तथा अनेक क्षेत्रो एव प्रदेशो के अपने स्थानीय लेखक संगठन है। संघ की ओर से लगभग एक सौ पत्र-पत्रिकाए प्रकाशित की जाती है जिनमे **लितरातुर्नाया गजेता** (साहित्यिक गजट) **ज्वेज्दा** (तारा), **ज्नाम्या** (पताका), **द्रुज्बा नारोदोव** (राष्ट्रो की मैत्री) **इनोस्त्रानाया लितरातुरा** (विदेशी साहित्य) **नोवी मीर** (नया विश्व) तथा **युनोस्त** (युवजन) भी शामिल है। "सोवेत्स्की पिसातेल" (सोवियत लेखक) तथा "लितरातुर्नाया गजेता" प्रकाशन गृह, गोर्की साहित्यिक संस्थान तथा सोवियत संघ का साहित्यिक फण्ड भी इस संघ से सम्बद्ध है। साहित्यिक फण्ड संस्था इस संघ के सदस्यो की खुशहाली एव रचनात्मक गतिविधि को बढावा देता है।

पता ५२ वोरोव्स्की स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत कलाकार संघ इस संस्था मे १० ००० से अधिक सोवियत कलाकार तथा कला समीक्षक शामिल है। सोवियत कलाकार संघ के बोर्ड के प्रथम सचिव विख्यात कलाकार एन ए पोनोमारेव है। इस संघ की स्थापना १९५७ म सोवियत कलाकारो के उन संघो के आधार पर की गई जो १९३२ से चल रहे थे। इसकी पत्रिकाओ म है—**इस्कुस्स्त्वो** (कला) **त्वोर्चेस्त्वो** (रचनात्मक कृति) तथा **डेकोरेटिव्नोए इस्कुस्स्त्वो एस एस एस आर** (सोवियत संघ म सज्जा कला)। इस संघ से सोवियत कलाकार कोष भी सम्बद्ध है जिसका काम संघ के सदस्यो की खुशहाली और सृजनात्मक गतिविधि को बढावा देना है।

पता १० गोगोल बुलवार मास्को।

सोवियत वास्तुविद संघ १९३२ म जब विभिन्न वास्तुविद ग्रुपो का एकीकरण हुआ तो इस संघ की स्थापना हुई। सोवियत वास्तुविद संघ के बोर्ड के प्रथम

सचिव हैं जो एम ओर्लोव, जा एक प्रख्यात वास्तुविद है। इसके सदस्यो की सख्या १२,००० से अधिक है। सोवियत वास्तुविद सघ की ओर स आर्खितेक्तुरा एस एस एस आर (सोवियत सघ की वास्तुकला) नामक पत्रिका तथा सोवेत्स्काया आर्खितेक्तुरा (सोवियत वास्तुकला) नामक सकलन प्रकाशित किए जाते है। इस सघ के अधीन सोवियत वास्तुकला कोष भी है जा सघ के सदस्यो की खुशहाली और सजनात्मक गतिविधि म योगदान करता है।

पता ३ श्चुसेव स्ट्रीट मास्को।

सोवियत फिल्म कर्मी स घ इस सस्था म फिल्म उद्योग स सम्बन्धित सभी पेशा क कमचारी एकबद्ध है। इसकी स्थापना १९६५ म की गई। इससे पहले यह १९५७ मे गठित एक सचालन समिति के रूप म थी। इसके सदस्या की सख्या ४,००० से अधिक है। सोवियत सघ क फिल्म कर्मी सघ के बोड क प्रथम सचिव फिल्म निर्देशक एल ए कुलिदजानोव है। सघ जनतत्रा म स्थानीय सगठन मौजूद है। सघ की ओर से *इस्कुस्सत्वो किनो* (फिल्म कला) तथा *सोवेत्स्की एकान* (सोवियत रजतपट) नामक पत्रिकाए प्रकाशित की जाती है। सोवियत सिनकला का प्रचारमण्डल तथा केन्द्रीय सिनमा गह सोवियत फिल्म कर्मी सघ के ही अधीन है।

पता १३ वासिल्येव्स्काया स्ट्रीट, मास्को।

सोवियत स गीतकार स घ इसकी स्थापना १९३२ म हुई। सोवियत सगीतकार सघ मे १५ जनतत्रीय सघा के लगभग २,००० कलाकार शामिल है। सोवियत सगीतकार सघ के बोड के प्रथम सचिव लोकप्रिय सगीतकार टी एन ख्रेनिकोव है। इसकी पत्रिकाए है **सोवेत्स्काया म्युजिका** (सोवियत सगीत) तथा **मुजिकाल्नाया झिज्न** (सगीतमय जीवन)। अखिल सघीय सगीतकार गह तथा सोवियत सघ का सगीत कोष इस सघ से ही सम्बद्ध है। सोवियत सगीत कोष की स्थापना सगीतकारा एव सगीत समीक्षको का उनके काय म सहायता पहुचान तथा उनके सुरा कल्याण म सुधार करने के उद्देश्य स की गई थी।

पता ८/१० नज्दानोवा स्ट्रीट मास्को।

सोवियत पत्रकार स घ इसकी स्थापना १९५९ म हुई और १९७३ मे इसकी सदस्य सख्या ५०,००० थी। इसका सर्वोच्च प्रबध निकाय अखिल सघीय काग्रेस है। काग्रेसा क बीच की अवधि म सघ के काय की निगरानी बोड करता है और इसकी सजनात्मक गतिविधि की देखभाल का काम सचिवालय का उत्तरदायित्व हाता है।

बोड के अध्यक्ष समाचारपत्र प्रावदा के प्रधान सपादक एम वी जिम्यानिन है।

सोवियत पत्रकार सघ अतर्राष्ट्रीय पत्रकार सगठन का सदस्य है और सौ देशा के प्रगतिशील पत्रकारा से सम्बध रखता है।

जा रुबेझोम (विदेश) **जुर्नालिस्त** (पत्रकार) **सोवेत्स्कोये फोतो** (सोवियत फोटो) तथा **'देमोक्रातिचेस्की जुर्नालिस्त** (जनवादी पत्रकार) इस सघ

द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाए हैं डेमोक्रातिचेस्की जुर्नालिस्त अतर्राष्ट्रीय पत्रकार सगठन की पत्रिका का रूसी प्रकाशन है।

पता ३० मीर प्रास्पक्त, मास्को।

नोवोस्ती समाचार एजेंसी (ए पी एन) यह सोवियत सार्वजनिक सगठना की सूचना एजेंसी है। इसकी स्थापना १९६१ म की गई। इसका सर्वोच्च प्रशासनिक निकाय सस्थापक सदस्यो का सम्मेलन है और सम्मेलनो के बीच की अवधि में सस्थापक सदस्यो की परिषद। ए पी एन बोड सगठनात्मक काय करता है। ए पी एन बोड के अध्यक्ष है आई आई उदाल्तसोव। १०४ अन्तर्राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय एजेंसियों १२० प्रकाशन फर्मों और १८३ रेडियो एव टलीविजन कम्पनियो के साथ ए पी एन बो के सम्बन्ध स्थापित है। ए पी एन स्वय भी टी वी फिल्म एव टी वी कायक्रम तयार करता है और विदेशी टी वी कम्पनिया के साथ मिल कर भी। विदेशा म ५२ सोवियत पत्रिकाओ ६ समाचारपत्रा तथा १०० से अधिक समाचार बुलेटिनो के प्रकाशन के लिए ए पी एन सामग्री जुटाता है। इन प्रकाशनो की प्रतियो की कुल सख्या लगभग २५ लाख है। स्पुत्निक पत्रिका रूसी, अग्रेजी, फ्रासीसी, जमन, चेक तथा उर्दू में प्रकाशित होती है। ४६ विभिन्न भाषाओ मे नोवोस्ती समाचार एजेंसी प्रकाशन गृह की ओर से प्रतिवष पुस्तक पुस्तिकाए, गाइड-बुक आदि की लगभग २ करोड प्रतिया प्रकाशित की जाती ह, विदेशो मे होने वाली सोवियत प्रदशनियो तथा मेलो के लिए यह आवश्यक सूचना सामग्री देती ह और विदेशी प्रकाशको की पाण्डुलिपियो सम्बन्धी आडर पूरे करती है।

बयासी देशो म ए पी एन ब्यूरो मौजूद हैं तथा सवाददाता। के पद कायम हैं। ऐसे ब्यूरो एव पद सोवियत सघ के सभी सघ जनतत्रो तथा कुछ प्रमुख नगरो में भी है।

पता २ पुश्किन स्क्वायर मास्को।

राष्ट्रीय अर्थतंत्र

सोवियत संघ में आर्थिक विकास का नियोजन एवं निर्देशन राज्य द्वारा किया जाता है। इससे राष्ट्रीय सम्पत्ति में वृद्धि और पूरी आबादी के रहन सहन एवं सांस्कृतिक स्तरों में समुन्नति सुनिश्चित होती है।

अर्थतंत्र का संगठन

सोवियत समाज का आर्थिक आधार उत्पादन तथा प्राकृतिक साधनों के सार्वजनिक स्वामित्व तथा आर्थिक प्रबंध की समाजवादी प्रणाली में निहित है। सोवियत संघ में लगभग ५०,००० प्रमुख राज्य औद्योगिक प्रतिष्ठान, ३२ ००० सामूहिक फार्म तथा १५ ५०० राज्य फार्म अर्थात राजकीय कृषि प्रतिष्ठान है।

सोवियत अर्थतंत्र एक एकीकृत राज्य योजना के अनुसार विकसित होता है। इससे उद्योग का अधिकाधिक युक्तिसंगत संगठन संभव होता है और उत्पादन के क्षेत्र में अराजकता के कारण उत्पन्न होने वाली क्षति से भी समाज को मुक्ति मिल जाती है। आर्थिक क्षेत्र में हर प्रकार के संकट और मंदी को दूर करते हुए यह लगातार आर्थिक विकास को सुनिश्चित करता है।

समाजवादी उत्पादन का चरम लक्ष्य सभी नागरिकों के लिए विपुल भौतिक एवं सांस्कृतिक सम्पत्ति सर्जित करना है। सोवियत संघ में एक कम्युनिस्ट समाज के निर्माण के लिए समाजवादी उत्पादन का अधिकाधिक विकास एक अपरिहार्य पूर्वावश्यकता है। उस समाज में "हर एक से उसकी योग्यतानुसार, हर एक को उसकी आवश्यकतानुसार" का नियम लागू किया जाना है।

राज्य आर्थिक योजनाएं अस्थायी पूर्वानुमान नहीं होती, बल्कि राष्ट्रीय अर्थतंत्र, इसकी सभी शाखाओं तथा प्रतिष्ठानों के विकास के लिए वैज्ञानिक आधार पर बनाया गया कार्यक्रम होती है। केंद्रबद्ध नियोजन में हर प्रतिष्ठान एवं उससे सम्बद्ध एसोसियशनों की स्थानीय पहल को अधिकाधिक प्रोत्साहन देना तथा उत्पादन के प्रबंध में मेहनतकश लोगों की सक्रिय शिरकत एक साथ समन्वित रहते हैं।

दीर्घावधि योजनाएं जो प्रायः पांच वर्ष की अवधि के लिए होती हैं उत्पादन के कुल लक्ष्य निश्चित करती है तथा देश के आर्थिक विकास के लिए प्रगतिशील स्थान पैदा करती हैं, ये योजनाएं अर्थतंत्र की विभिन्न शाखाओं तथा देश के विभिन्न भागों आर्थिक क्षेत्रों एवं जनतंत्रों में ठोस रूप में सामने आती है। दीर्घावधि योजना को निश्चित वर्षों के आधार पर विभाजित किया जाता है और इस आधार पर प्रतिवर्ष के लिए अलग-अलग योजनाएं बनाई जाती है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी सोवियत समाज की संगठनकारी एवं निर्देशनकारी शक्ति है और पंचवर्षीय योजनाएं देश का विकास सुनिश्चित करती हैं। इसलिए इन योजनाओं पर विचार-विमर्श पार्टी कांग्रेसों में किया जाता है और वहीं इन्हें निर्देश के रूप में पारित किया जाता है। मार्क्सवादी लेनिनवादी सिद्धांत के आधार पर और जनता की इच्छाओं एवं अनुभवों को ध्यान में रखते हुए पार्टी एक सामाजिक-आर्थिक नीति का निर्धारण करती है। इस नीति का प्रधान उद्देश्य कम्युनिज्म का निर्माण करना है। यह नीति देश के विकास के हर ऐतिहासिक चरण में जनता के हितों पर पूरा उतरती है।

कांग्रेस के आयोजन से बहुत पहले पार्टी राष्ट्रीय विकास योजनाएं प्रस्तुत करती है जिन पर देश भर में बहस होती है। लाखों लोग इन पर अपनी राय देते हैं और अपनी ओर से सुझाव तथा संशोधन प्रस्तुत करते हैं। योजनाएं पूरे राष्ट्र के लिए बहुत महत्व रखती हैं। इनका देश के हर व्यक्ति पर प्रभाव पड़ता है। राष्ट्रव्यापी विचार विमर्श के दौरान तथा कांग्रेस में प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किए गए सुझावों को ध्यान में रखते हुए पार्टी कांग्रेस पंचवर्षीय योजना के लिए निर्देश पारित करती है जो सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद द्वारा योजना को अंतिम विशदीकरण देने का आधार होते हैं।

राज्य योजनाएं तैयार करने में मेहनतकश लोग सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। कारखानों और फैक्टरियों, खानों, राज्य तथा सामूहिक फार्मों और अनुसंधान संगठनों की उत्पादन योजनाओं पर मजदूरों की सभाओं और उत्पादन सम्मेलनों में विचार विमर्श किया जाता है। विचार विमर्श के परिणाम सामने आने के बाद योजनाओं का मसौदा हर शहर, जिले, प्रदेश तथा जनतंत्र के योजना निकायों के सामने रखा जाता है, जहां आवश्यक विचार विमर्श एवं संशोधन किया जाता है। जनतंत्रीय योजनाओं के मसौदे सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद की राज्य नियोजन समिति में प्रस्तुत किए जाते हैं।

यह समिति सम्बद्ध मंत्रालयों तथा विभागों एवं ट्रेड यूनियनों के साथ मिल कर तथा वैज्ञानिक कर्मियों एवं प्रख्यात विशेषज्ञों की सहायता से देश के राष्ट्रीय आर्थिक विकास के लिए, सभी प्रदेशों के लिए और अर्थतंत्र की सभी शाखाओं के लिए योजना का मसौदा तैयार करती है। मसौदे में आवश्यक परिवर्तन के बाद सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद इसे विचार विमर्श तथा स्वीकृति के लिए सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत के समक्ष प्रस्तुत करती है। सोवियत संसद की स्वीकृति राज्य योजना को प्राप्त हो जाने के बाद यह कानून बन जाती है।

बहुत ही कम समय में सोवियत संघ में एक आधुनिक एवं अत्यंत विकसित अर्थतंत्र का निर्माण हुआ है। यद्यपि तकनीकी एवं आर्थिक दृष्टि से रूस पश्चिम के उन्नत देशों से ५० १०० वर्ष पीछे था, परंतु वह चार से कम दशकों में एक ताकतवर औद्योगिक शक्ति बन गया। इन चार दशकों में से बीस वर्ष युद्ध लड़ने और युद्ध में नष्ट हुए ... के पुनर्निर्माण में लग गए।

पहले विश्व युद्ध, गृह-युद्ध तथा विदेशी हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप १९२० में देश का औद्योगिक उत्पादन १९१३ की तुलना में घट कर सातवां हिस्सा रह गया। ऐसी कठिनाइयों पर जिन पर विश्वास करना भी मुश्किल है, अकाल और आर्थिक नाकेबन्दी पर काबू पाने के बाद और बगर किसी बाहरी मदद के १९२७ तक सोवियत जनता आर्थिक उत्पादन को युद्ध-पूर्व के स्तर पर लाने में सफल हो चुकी थी। नष्ट अर्थतंत्र के पुनर्निर्माण के दौरान सोवियत लोग उत्पादन प्रक्रिया का प्रबंध करना सीख गए।

पहली पंचवर्षीय विकास योजनाएं समय से पहले ही पूरी कर ली गईं—पहली १९२९ ३२ में, दूसरी १९३३-३७ में, तीसरी योजना (१९३८ ४२) की पूर्ति में १९४१ के हमलावर फासिस्ट युद्ध से बाधा पड़ी।

सोवियत संघ की प्रारम्भिक योजनाओं को, उनके प्रत्येक लक्ष्य को पश्चिम में कल्पना मात्र ठहराया गया। परन्तु पूंजीवादी पश्चिम की भविष्यवाणियों के विपरीत सोवियत संघ शीघ्र ही एक पिछड़े हुए कृषिप्रधान देश से एक उन्नत औद्योगिक शक्ति में परिवर्तित हो गया। प्रारम्भिक पंचवर्षीय योजनाओं की सफल पूर्ति के फलस्वरूप एक शक्तिशाली उद्योग एवं बड़े पैमाने पर सामूहिक कृषि की नींव पड़ी। इस सफलता ने सोवियत संघ को फासिज्म पर विजय के लिए आर्थिक आधार प्रदान किया।

दूसरा विश्व युद्ध सोवियत जनता के लिए अभूतपूर्व कष्ट और विनाश लेकर आया। दो करोड़ से अधिक लोगों की जानें गईं और देश की राष्ट्रीय सम्पत्ति का एक तिहाई नष्ट हो गया।

परन्तु जनता के निष्ठापूर्ण प्रयास एवं सोवियत समाजवादी प्रणाली की महान सृजनात्मक शक्ति के परिणामस्वरूप १९५० तक औद्योगिक उत्पादन १९४० के स्तर की तुलना में ७० प्रतिशत अधिक हो चुका था। १९७२ में यह वृद्धि इस स्तर की तुलना में लगभग १४ गुना अधिक थी। मात्र १९७२ में देश का औद्योगिक उत्पादन युद्ध पूर्व की सभी पंचवर्षीय योजनाओं की अवधियों के कुल उत्पादन से दुगुना था।

१९१३ में जारशाही रूस का औद्योगिक उत्पादन विश्व औद्योगिक उत्पादन में चार प्रतिशत से कुछ अधिक था, १९७२ में सोवियत संघ का हिस्सा लगभग २० प्रतिशत था।

उत्पादन साधनों के सार्वजनिक स्वामित्व, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण के उन्मूलन आर्थिक संकटों एवं बेरोजगारी के कारणों का दूर करने, समाजवादी आर्थिक प्रबंध के फलस्वरूप उत्पादन के क्षेत्र में पूंजीवाद की तुलना में समाजवाद के निर्णायात्मक लाभ सुनिश्चित हो गये।

सोवियत संघ में औद्योगिक उत्पादन प्रमुख पूंजीवादी देशों की तुलना में कहीं अधिक तेज गति से बढ़ रहा है। २१ वर्ष की अवधि (१९५१ ७१) में औद्योगिक उत्पादन की वृद्धि की औसत दर अमरीका में ४ १ प्रतिशत तथा सोवियत संघ में १० ० प्रतिशत थी। १९५० में सोवियत संघ में औद्योगिक उत्पादन अमरीका के उत्पादन की तुलना में एक तिहाई कम था। अब यह उत्पादन दो तिहाई से भी अधिक है।

विभाग एक राज्य प्रशासनिक निकाय होता है। इसके विपरीत औद्योगिक समान्त्न पूर्णत आत्मनिर्भरता के आधार पर काम करता है। यह अपने अधीन सगठनो के सभी भौतिक वित्तीय तथा श्रम ससाधनो की देखभाल स्वय करता है और इन चलन का पूरी जिम्मेदारी इस पर होती है। इस प्रकार मत्रालयो के लिए सम्बद्ध शाखा के दीर्घावधि विकास तथा उत्पादन कुशलता मे वृद्धि के बनध्यो की ओर ध्यान दे सभव हो जाता है।

इसके अतिरिक्त सोवियत सघ की राज्य योजना समिति तथा सघ जनतन्त्रो मत्रिपरिषदो की जिम्मेदारी है कि वे खरीदारी, मरम्मत तथा अन्य सेवा प्रतिष्ठानो को मिला कर अन्तर शाखा समुच्चयो के रूप म उन्हे सकेन्द्रित करने के लिए ऐसी व्यवस्था करे ताकि वे सम्बद्ध जनतत्र के क्षेत्र मे स्थित सभी सगठनो एव प्रतिष्ठानो का सेवा काय पूरा कर सकें।

इसम कोई सदेह नही है कि शाखा सकेन्द्रण और क्षेत्रीय सकेन्द्रण को मिला देने से सोवियत उद्योग के विकास के लिए नई और विशेषत भारी सभावनाए उत्पन्न हो जाती हैं।

आर्थिक प्रबन्ध प्रणाली मे और अधिक सुधार जनता के जीवन स्तर को ऊचा उठाने का एक महत्वपूर्ण साधन सिद्ध होगा।

मनुष्य की भलाई के लिए जैसा कि २४वी पार्टी काग्रेस मे कहा गया, सोवियत अथतत्र का विकास इस प्रकार हो रहा है जिससे दीर्घावधि आर्थिक विकास की समस्याए हल करना सभव होता है और इसके साथ साथ जनता की आवश्यकताए अच्छी तरह पूरी करना और उसका जीवन स्तर और अधिक ऊपर उठाने हेतु राष्ट्रीय प्रयास और धन का अधिकाधिक मात्रा मे सकेन्द्रण सभव होता है।

१९७१ ७५ की पचवर्षीय योजना म दज प्रावधान ऐसे है कि उनसे वास्तविक आमदनी म वृद्धि का सतुलन उपभोक्ता माल के बढे हुए उत्पादन द्वारा सुनिश्चित होता है। जो उद्योग यह माल तयार करते है उनके विकास का गति तेज की जाएगी। हल्के उद्योग और खाद्य उद्योग मे अभूतपूर्व पूजी विनियोग किया जा रहा है। सोवियत राज्य के इतिहास मे पहली बार पचवर्षीय योजना की पूरी अवधि मे उपभोक्ता माल के उत्पादन की विकास दर भारी उद्योग के उत्पादो की तुलना मे अधिक रहेगी। १९६१ ६५ मे उत्पादन साधनो के उत्पादन मे ५८ प्रतिशत की वृद्धि हुई और उपभोक्ता माल के उत्पादन म ३६ प्रतिशत की, १९६६ ७० मे ये आकडे क्रमश ५१ और ४९ प्रतिशत थे। १९७१ ७५ म इनकी विकास दर क्रमश ४६ ३ प्रतिशत और ४८ ६ प्रतिशत हो जाने की आशा है।

इसका मतलब यह कदापि नही कि सोवियत सघ भारी उद्योग की ओर किसी भी प्रकार स कम ध्यान देता है। भारी उद्योग की भूमिका और महत्व म आज भी कोई अन्तर नही पडा, क्योकि यह राष्ट्रीय अथतत्र का आधार है उसकी रीढ है। भारी के बिना हल्के उद्योग सहित अन्य शाखाओ की प्रगति भी नही हो सकती। इसके

साथ ही यह भी याद रखना आवश्यक है कि भारी उद्योग के प्रतिष्ठान स्वय भी उपभोक्ता माल पैदा करते हैं (मोटरकारें टलीविजन सेट, रेफ्रिजेरेटर आदि)। और उपभोक्ता माल के उत्पादन मे भारी उद्योग के हिस्से मे लगातार वृद्धि हो रही है १९६५ म १९ प्रतिशत से बढ कर १९७० म यह हिस्सा २३ प्रतिशत हो गया और १९७५ म २६ प्रतिशत होने का अनुमान है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस द्वारा पारित १९७१ ७५ की आर्थिक विकास की पचवर्षीय योजना के निर्देशो म जोर देकर कहा गया है "पचवर्षीय योजना का मुख्य दायित्व है समाजवादी उत्पादन के विकास की उच्च दर के आधार पर जनता के भौतिक एव सास्कृतिक स्तरो का काफी ऊपर उठाया जाना सुनिश्चित करना, इसकी कायकुशलता म, वैज्ञानिक एव तकनीकी प्रगति म वद्धि लाना तथा श्रम उत्पादकता के विकास म तजी लाना।"

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस द्वारा पारित सामाजिक विकास के कायक्रम का लक्ष्य है

जनता के सभी हिस्सो के लिए काम करने और जीवन बिताने की बेहतर स्थितिया पैदा करना,

श्रम पारिश्रमिक तथा आर्थिक प्रोत्साहना की प्रणालिया को और अधिक समुन्नत कर जनता की आमदनी बढाना,

नवोदित पीढी के पालन-पोषण के लिए, बडे परिवारो की सहायता के लिए तथा घर पर और कायस्थल पर महिलाओं के लिए आसानी पैदा करने हेतु राजकीय बजट म आवटन बढाना,

सार्वत्रिक माध्यमिक शिक्षा लागू करने का काम पूरा करना, विशेष शिक्षा का विकास करना तथा जनता के सास्कृतिक एव तकनीकी स्तरो को ऊपर उठाना,

ग्रामीण जनता के जीवन-स्तर को शहरी जनता के जीवन स्तर के निकट लाना।

यह कायक्रम "१९७१ ७५ के लिए सोवियत सघ की राजकीय पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना सम्बधी" कानून में शामिल है जिसे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत की स्वीकृति प्राप्त है। योजना म निश्चित लक्ष्या को वर्षों मे विभाजित किया गया है और सोवियत जनता का जीवन स्तर ऊपर उठान के लिए इन लक्ष्या का हासिल किया जाना आवश्यक है।

१९७१ ७५ की अवधि मे सोवियत सघ की राष्ट्रीय आमदनी म ३८ ६ प्रतिशत की वद्धि होनी है। औद्योगिक उत्पादन ४७ प्रतिशत बढेगा, उत्पादन साधना मे ४६ ३ प्रतिशत की वृद्धि तथा उपभोक्ता माल के उत्पादन म ४८ ६ प्रतिशत की वद्धि होगी। कृषि उत्पादो के औसत वार्षिक उत्पादन मे २० २२ प्रतिशत की वृद्धि होगी।

प्रति व्यक्ति वास्तविक आमदनिया मे ३१ ८ प्रतिशत की वद्धि होगी। सोवियत नागरिको को जो विभिन्न भुगतान पेशनो, अनुदानो, भत्तो तथा नि शुल्क शिक्षा और

चिकित्सा सेवा के खर्च के रूप में राज्य की ओर से सामाजिक उपभोग कोषों में किए जाते हैं उनमें लगभग ६० अरब रूबल की वृद्धि होगी जो ४० प्रतिशत होती है।

तैयार माल और खाद्य पदार्थों की जनता द्वारा खपत में भी काफी वृद्धि होगी, खुदरा व्यापार ४० प्रतिशत बढ़ेगा और दैनिक सेवाएं दुगुनी हो जाएंगी।

पांच वर्षों में ६ करोड़ लोगों को बेहतर आवास प्राप्त होंगे। २० लाख बच्चों के लिए स्कूल पूर्व संस्थान तथा ६० लाख बच्चों के लिए स्कूल बनाए गए हैं। सार्वत्रिक माध्यमिक शिक्षा में संक्रमण का काम पूरा हो जाएगा। उच्चतर एवं माध्यमिक विशेषीकृत स्कूलों में लगभग ९० लाख विशेषज्ञों को प्रशिक्षण मिलेगा।

ये हैं संक्षेप में नवीं पंचवर्षीय योजना के व्यापक सामाजिक-आर्थिक कार्यक्रम के प्रमुख लक्ष्य।

लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाने और उद्योग, कृषि तथा राष्ट्रीय अर्थतंत्र की अन्य शाखाओं के विकास की ओर लक्षित इन पगों की पूर्ति के लिए भारी धनराशि खर्च करने की जरूरत होगी। बजट से प्राप्त राजकीय खर्च में तथा कुछ प्रतिष्ठानों द्वारा सुलभ कराये जाने वाले व्यय में पंचवर्षीय अवधि में ४० प्रतिशत की वृद्धि की जाएगी और १९७५ तक यह राशि बढ़ कर तीन खरब साठ अरब रूबल हो जाएगी।

१९७१-७५ की योजना के पहले दो वर्षों के परिणामों से पता चलता है कि सोवियत अर्थतंत्र सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस के निर्णयों के अनुसार सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है। इन दो वर्षों में पूंजी विनियोग की राशि लगभग एक खरब अस्सी अरब रूबल रही और राष्ट्रीय आमदनी में १० प्रतिशत की वृद्धि हुई और यह तीन खरब दस अरब रूबल पर पहुंच गई।

औद्योगिक उत्पादन १८ प्रतिशत बढ़ा और उद्योग के क्षेत्र में श्रम उत्पादकता में ११.८ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

इन दो वर्षों में राष्ट्रीय आमदनी का ८० प्रतिशत उपभोग पर व्यय किया गया। लगभग तीन करोड़ चालीस लाख लोगों की पगार तथा पेंशन अथवा छात्रवृत्ति में वृद्धि हुई। १९७० की तुलना में वास्तविक प्रति व्यक्ति आय में ८.२ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

उद्योग

सोवियत उद्योग में आधुनिक उत्पादन की सभी शाखाएं शामिल हैं। इसमें अर्थतंत्र का चतुर्दिक विकास तथा सोवियत जनता की बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति सुनिश्चित है। १९७२ में देश का कुल औद्योगिक उत्पादन क्रांति-पूर्व उत्पादन की तुलना में सौ गुना से भी ज्यादा था।

ईंधन उद्योग लम्बे समय तक कोयला देश का प्रमुख ईंधन के रूप में इस्तेमाल होता रहा। युद्धोत्तर काल में तेल और गैस जैसे कम खर्चीले ईंधनों के अधिक

उत्पादन की ओर ध्यान दिया जाने लगा। १९७२ में ईंधन के कुल उत्पादन में तेल और गैस का हिस्सा ६२ प्रतिशत था, जबकि १९५० में यह १९.७ प्रतिशत और १९५८ में ३२ प्रतिशत था। १९७५ में कुल उत्पादन में इन ईंधनों का हिस्सा ६७ प्रतिशत हो जाएगा।

कोयला देश के कुल ईंधन संतुलन में यद्यपि कोयले का हिस्सा घटता जा रहा है, फिर भी यह एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है और इसका उत्पादन बराबर बढ़ रहा है। १९७२ में इसका उत्पादन ६५ करोड़ ५० लाख टन (विश्व उत्पादन का लगभग एक चौथाई) था जबकि १९४० में यह १६ करोड़ ६० लाख टन था। दोनतस्क तथा मास्को के निकटस्थ पुराने कोयला क्षेत्रों तथा नए क्षेत्रों में, विशेषकर देश के पूर्वी प्रदेशों में खनन बढ़ाने की योजना है। पूर्वी साइबेरिया तथा कजाखस्तान के कोयला भण्डार सतह के निकट हैं और वहां खुली खानों का निर्माण संभव है। इस समय भी कुल कोयला उत्पादन का एक चौथाई खुले मुंह की विधि से प्राप्त किया जाता है और १९७५ तक इस विधि द्वारा कोयला निकालने का काम कुल काम का ३० प्रतिशत हो जाएगा। १९७५ में सोवियत संघ ६९ करोड़ ५० लाख टन कोयला निकालेगा।

तेल सोवियत संघ में तेल निकालने का काम तेजी से बढ़ रहा है। १९७२ में इसका उत्पादन ३९ करोड़ ४० लाख टन था। तरल ईंधन के निष्कर्षण में सोवियत संघ अमरीका के बाद दूसरे स्थान पर है (अमरीका में १९७० में उत्पादन ४७ करोड़ ५० लाख टन था), और इस अंतर को तेजी से समाप्त किया जा रहा है।

पिछले बीस वर्षों में तेल के उत्पादन में औसत वार्षिक वृद्धि अमरीका में एक करोड़ चार लाख टन और सोवियत संघ में एक करोड़ ५७ लाख टन रही। १९७१-७२ के दो ही वर्ष में सोवियत संघ के तेल उत्पादन में १९५० में देश में कुल तेल उत्पादन की तुलना में ४ करोड़ ४५ लाख टन की वृद्धि हुई। यह योजना है कि १९७५ तक उत्पादन ५० करोड़ टन तक हो जाय।

जारशाही रूस में केवल बाकू क्षेत्र ही एकमात्र प्रमुख तेल क्षेत्र था। १९७१ में देश में तेल और गैस वाले क्षेत्रों की संख्या ५०० से भी अधिक हो चुकी थी। १९७१ और ७२ के दो वर्षों में ७० नए तेल भण्डार नए क्षेत्रों में खोज निकाले गए और पुराने क्षेत्रों में १०९ नए भण्डारों का पता लगा।

आज सोवियत संघ का सबसे बड़ा तेल उत्पादक क्षेत्र वोल्गा और यूराल के बीच में स्थित है। यहां देश के कुल तेल उत्पादन का तीन चौथाई निकाला जाता है। यहीं से पाइपलाइनों के जरिए देश के औद्योगिक केन्द्रों को तेल पहुंचाया जाता है। सोवियत संघ में पाइपलाइनों की कुल लम्बाई ४०,००० किलोमीटर से भी अधिक है। इनमें आधी से ज्यादा गत दशक के भीतर चालू की गई। शीघ्र ही पश्चिमी साइबेरिया के नये तेल क्षेत्रों को भी पाइपलाइन द्वारा देश के केन्द्रीय भाग से जोड़ दिया जाएगा।

१९७२ में २८ करोड ८० लाख टन तेल एवं तेलजन्य पदार्थ पाइपलाइन द्वारा भेजे गए। वर्तमान पंचवर्षीय अवधि के अंत तक १९७० की तुलना में पाइप द्वारा भेजे जाने वाले तेल की मात्रा दुगुनी हो जाएगी।

द्रुज्बा पाइपलाइन संसार की सबसे बड़ी पाइपलाइन है जो तातारिया से शुरू होकर ५,५०० किलोमीटर की लंबाई तक फैली हुई है। प्रतिवर्ष इस पाइपलाइन द्वारा दो करोड ५० लाख टन सोवियत तेल पोलैण्ड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया तथा जर्मन जनवादी जनतंत्र पहुंचाया जाता है। १९७५ तक यह संख्या ५ करोड टन हो जाएगी।

युद्धोत्तर वर्षों में पश्चिमी तुर्कमेनिया के रेगिस्तानों में कैस्पियन सागर के पूर्वी तट पर एक नया तेलयुक्त क्षेत्र का पता लगाया गया है जहां भारी मात्रा में तेल मिलने की आशा है। मागीश्लाक प्रायद्वीप में विपुल तेल एवं गैस भण्डार खोज निकाले गए हैं। साखालिन द्वीप में, उजबेकिस्तान, कजाखस्तान तथा किर्गीजिया के कुछ क्षेत्रों में तथा पेचोरा नदी घाटी में नए तैलयुक्त क्षेत्र तैयार किये गये हैं। कार्पेथियन प्रदेशों तथा देश के पश्चिमी छोर पर, बेलोरूस में तेल निष्कर्षण का काफी विस्तार किया गया है।

फिर भी पश्चिमी साइबेरिया में हाल ही में खोजे गए एक विशाल तेल एवं गैस क्षेत्र ने पुराने सभी क्षेत्रों को पीछे छोड दिया है। यहां १२० से अधिक तेल भण्डार ढूंढ निकाले गये हैं। इन क्षेत्रों में हुआ तेल उत्पादन १९७० में देश के कुल तेल उत्पादन का लगभग दसवां हिस्सा था। पश्चिमी साइबेरिया में बनाया जा रहा सोवियत संघ का एक प्रमुख तेल क्षेत्र १९७५ तक १२ करोड ५० लाख टन तेल पैदा करने लगेगा जो देश के कुल नियोजित उत्पादन का एक चौथाई होगा।

सोवियत तेल उद्योग में आधुनिकतम उपकरणों का उपयोग किया जाता है। सोवियत इंजीनियर तथा वैज्ञानिक विश्व तेल उद्योग के क्षेत्र में नई खोजें कर रहे हैं।

गैस सोवियत गैस उद्योग का निर्माण मुख्यत युद्धोत्तर वर्षों में हुआ और आज इसका विस्तार तेल उद्योग की तुलना में भी तेज गति से हो रहा है। संसार के विदित गैस भण्डारों में सबसे अधिक सोवियत संघ में है। इनकी कुल मात्रा है १७९ खरब घनमीटर (अमरीका में विदित गैस भण्डारों की मात्रा है ९० खरब घनमीटर)। प्रारम्भिक तखमीना के अनुसार सोवियत संघ में संभाव्य गैस साधनों की मात्रा एक हजार खरब घनमीटर है। निष्कर्षण के प्रमुख क्षेत्र है पश्चिमी साइबेरिया, तुर्कमेनिया तथा उत्तरी काकेशस, वोल्गा क्षेत्र तथा उनसे मिला हुआ बश्कीर स्वायत्त जनतंत्र, पश्चिमी तथा दक्षिण पूर्वी उक्राइन, ट्रांसकाकेशिया तथा उजबेकिस्तान। ताजिकिस्तान, साखालिन, पेचोरा क्षेत्र तथा कुछ अन्य स्थानों पर भी गैस भण्डार मौजूद हैं।

देश में बड़ी बड़ी गैस पाइपलाइनें देखते ही देखते बिछा दी गई हैं। इनके द्वारा देश के औद्योगिक केन्द्रों को गैस पहुंचायी जा रही है। इनमें शामिल हैं मास्को ओस्त्रोगोजस्क व्लादिमीर उफा गोर्की, काजान तथा कई अन्य शहरों की पाइपलाइनें जो एक समाकलित प्रणाली के अंतर्गत काम करती हैं ताकि देश के गैस संसाधनों का अधिक ... ढंग से उपयोग किया जा सके।

समस्त देश के लिए मुख्य गस पाइपलाइनो को एक प्रणाली मे पिरोने की योजना तयार की गई है जो अपनी क्षमता तथा उस क्षेत्र के आकार की दृष्टि से बेमिसाल है जिसे इस प्रणाली के अ तगत ईधन प्राप्त होगा।

इस समय निर्माणाधीन गैस पाइपलाइन भी इस प्रणाली का मुख्य हिस्सा बन जायेंगी। इनम शामिल है मध्य एशिया-केन्द्रीय सोवियत सघ पाइपलाइन का तीसरा व चौथा भाग और त्युमेन को देश के मध्य हिस्स से मिलान वाली पाइपलाइन जो इसके बाद देश की पश्चिमी सीमा से जा मिलती है। त्युमेन को यूरोप के केन्द्रीय भागा से मिलाने वाली पाइपलाइन ५,००० किलोमीटर लम्बी होगी। विश्व की इस उच्चतम क्षमता की पाइपलाइन के द्वारा लगभग ३० अरब घनमीटर गस एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाई जाएगी। यह ससार की उच्चतम क्षमतायुक्त पाइपलाइन होगी।

सोवियत सघ के भीतर बिछाई जान वाली पाइपलाइन प्राय १०२०-१२२० मिलीमीटर व्यास की होती थी, लेकिन अब १४२० मिलीमीटर और इससे भी अधिक व्यास की पाइपलाइनें बिछाई जान लगी है। सोवियत पाइपलाइनो की कुल लम्बाई ८०,००० किलोमीटर है और इन पाइपलाइना द्वारा २ खरब ५० अरब घनमीटर गैस एक स्थान से दूसरे स्थान को पहुचाई जाती है। १९७० की तुलना मे १९७५ तक सोवियत सघ मे एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुचाई जान वाली गस की मात्रा मे ५० प्रतिशत की वृद्धि होगी और देश की पाइपलाइना की कुल लम्बाई एक लाख किलोमीटर हो जाएगी।

सोवियत सघ मे हर सभव तरीक से गस निष्कासन की गति तेज की जा रही है। १९६० म जहा ४७ अरब घनमीटर गस का उत्पादन हुआ था, १९७२ मे यह मात्रा २ खरब २१ अरब घनमीटर पर पहुच जायेगी। १९७५ में गस का उत्पादन ३ खरब २० अरब घनमीटर हो जाएगा।

इस समय सोवियत सघ पालण्ड और चेकास्लोवाकिया को गस सप्लाई कर रहा है। हगरी, बुल्गारिया, जमन जनवादी जनतत्र, आस्ट्रिया, फ्रास, इटली जमन सघ गणराज्य तथा फिनलैण्ड को गस सप्लाई करने के सम्बन्ध मे करारो पर हस्ताक्षर हो चुके हैं। युगोस्लाविया को गस सप्लाई करने के बार मे भी एक करार सम्पन्न हो चुका है। जापान तथा अमरीका सोवियत गस मे दिलचस्पी ले रहे हैं।

बिजली उत्पादन क्राति पूव रूस म विद्युत शक्ति उत्पादन प्रारम्भिक स्थिति म था। १९२० मे देश मे ५० करोड किलोवाट-घटे से थोडी अधिक बिजली पदा की जा रही थी। इतनी बिजली आज देश का एक छोटा सा बिजलीघर पैदा करता है।

१९७२ मे ८ खरब ५८ अरब किलोवाट घटे बिजली पदा की गई जबकि १९६० म २ खरब ९२ अरब किलोवाट पदा की गई थी।

पिछले बीस वप मे सोवियत सघ मे बिजली उत्पादन मे औसन वार्षिक वृद्धि ११ प्रतिशत और अमरीका मे ७ ५ प्रतिशत रही है। १९७५ म सोवियत सघ मे बिजली उत्पादन १० खरब ६५ अरब किलोवाट-घटे हो जाएगा।

सोवियत संघ में इस समय २४ लाख किलोवाट की उत्पादन शक्ति वाले बड़े बड़े ताप बिजलीघर हैं और इनसे भी बड़े निर्माणाधीन हैं। केवल १९७२ में इन बिजलीघरों में १८ यूनिट लगाए गए जिनमें प्रत्येक की क्षमता २ ३ लाख किलोवाट है। ५-८ लाख किलोवाट की क्षमता वाली शक्तिशाली मशीनों का उत्पादन शुरू हो चुका है। इनमें से कुछ मशीनें तो काम भी करने लगी हैं। १२ लाख किलोवाट की क्षमता वाली एक टर्बाइन इस समय निर्माणाधीन है। यह एक टर्बाइन इतनी बिजली पैदा करेगी जितनी क्रांति पूर्व रूस के सभी बिजलीघर मिल कर भी नहीं करते थे।

ताप बिजलीघर वर्तमान समय में कुल उत्पादन का ८० प्रतिशत पैदा करते हैं।

सोवियत संघ ने संसार में सबसे पहले १९५४ में एक परमाणु बिजलीघर निर्मित किया। अब देश के विभिन्न भागों में बड़े-बड़े परमाणु बिजलीघर काम कर रहे हैं।

आगामी १०-१२ वर्ष में ३ करोड़ किलोवाट की कुल क्षमता वाले परमाणु बिजलीघर चलाने की योजना है। यह प्राय उन क्षेत्रों में बनाए जाएंगे जहां ईंधन और ऊर्जा के उत्पादन संसाधनों की कमी है। वर्तमान पंचवर्षीय योजना की अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लेनिनग्राद और कोला परमाणु बिजलीघर अपनी पूरी क्षमता पर काम करने लगेंगे और रूस के यूरोपीय हिस्से के केन्द्रीय भागों तथा उक्राइना में नए परमाणु बिजलीघरों का निर्माण शुरू हो जाएगा। इन बिजलीघरों की कुल क्षमता ६०-८० लाख किलोवाट तक होगी और इस प्रकार पंचवर्षीय योजना की अवधि में क्षमताओं में जो कुल वृद्धि होगी ये उस वृद्धि के ११ १२ प्रतिशत के भागी होंगे। शक्तिशाली आणविक रिएक्टर लग जाने से लेनिनग्राद बिजलीघर में दस लाख किलोवाट का परमाणु ऊर्जा का उत्पादन खर्च इतना कम हो जाएगा कि यह ताप बिजलीघरों में बिजली के उत्पादन खर्च के लगभग बराबर पहुंच जायेगा।

सोवियत संघ में पनबिजलीघरों के निर्माण कार्य का व्यापक विकास हुआ है। १९३२ में दनीपर पनबिजलीघर जो उस समय यूरोप का अत्यंत क्षमतापूर्ण बिजलीघर था निर्माण कार्य पूर्ण हो गया था (उस समय इसकी क्षमता ५ लाख ६२ हजार किलोवाट थी)। इस समय इसका आधुनिकीकरण किया जा रहा है और इसकी क्षमता १५ लाख किलोवाट की जाएगी।

परन्तु पनबिजलीघरों का एक के बाद एक निर्माण युद्धोत्तर वर्षों के बाद ही शुरू हुआ। इस समय सात पनबिजलीघर वोल्गा के किनारे स्थित हैं। इनमें शामिल हैं २३ लाख किलोवाट से अधिक की क्षमता वाला लेनिन पनबिजलीघर और २५ लाख किलोवाट से अधिक की क्षमता वाला २२वीं कांग्रेस पनबिजलीघर (लेनिन पनबिजलीघर पहला बिजलीघर था जिसने १६ लाख ४० हजार किलोवाट की क्षमता वाले अमरीकी ग्रैण्ड कोलिन्स बिजलीघर को पीछे छोड़ दिया था)। दनीपर, दनीस्तर पश्चिमी द्विना, नेमान दक्षिण और अंगारा, यनिसी तथा मध्य एशिया एव ट्रांसकाकेशिया की [illegible] की शृंखलाएं खड़ी की जा रही हैं।

अभी हाल तक अगारा के तट पर स्थित ब्रात्स्क पनबिजलीघर (४१ लाख किलोवाट) ससार का सबसे बडा बिजलीघर समझा जाता था। लेकिन अब इसे ६० लाख किलोवाट वाले क्रास्नोयास्क पनबिजलीघर न पीछे छोड दिया ह। यह बिजलीघर यनिसी के तट पर स्थित है।

पचवर्षीय योजना की अवधि के दौरान बडे बडे पनबिजलीघरो के निर्माण-काय को इस प्रकार जारी रखना नियोजित है कि सिंचाइ पानी की सप्लाई नौ परिवहन तथा मछली उद्योग की समस्याओ का समाधान साथ साथ हो सके। तोक्तोगुल, रीगा, चारवागाई, कानेव तथा अन्य पनबिजलीघरो का काम भी पूरा हो जाएगा। अगारा पर उस्त इलिम बिजलीघर ट्रासकाकेशिया म इगुरी बिजलीघर, मध्य एशिया म नूरेक बिजलीघर तथा सुदूर पूव म जया बिजलीघर की पहली यूनिटें भी चालू कर दी जाएगी।

एक ही बिजली आपूर्ति शृ खला के अतगत शक्तिशाली बिजलीघरो का निर्माण अत्यन्त विश्वसनीय बिजली आपूर्ति को सुनिश्चित करता ह।

यूराल के पश्चिम तथा इस क्षेत्र के साथ साथ देश के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रो म यह सरचना अत्यन्त विकसित रूप धारण कर चुकी है। यहा अनक शक्तिशाली बिजली प्रणालिया हैं—केन्द्रीय भाग, मध्य वोल्गा, यूराल उत्तर पश्चिमी भाग दक्षिण उत्तरी काकेशस, ट्रासकाकेशिया तथा उत्तरी कजाखस्तान—जिन्ह एक ही उच्च वोल्टेज शृ खला म जोड दिया गया है। बारेन्त्स सागर स ईरान और तुर्की की सीमाओ तक तथा यूराल से सोवियत सघ की पश्चिमी सीमाओ तक बिजली सप्लाइ की एक विराट प्रणाली स्थापित कर दी गई है।

सोवियत सघ के यूरोपीय भाग म एकीकृत बिजली शृ खला म लगभग ६०० ताप बिजलीघर तथा १२ करोड ८० लाख किलोवाट से अधिक की क्षमता वाले पनबिजलीघर शामिल हैं।

साइबेरिया तथा मध्य एशिया मे भी एकीकृत बिजली शृ खलाए है। सुदूर पूव म भी एसी शृ खला स्थापित करने पर काम चल रहा है। नवी पचवर्षीय योजना अवधि म पूरे सोवियत सघ म एकीकृत बिजली शृ खला स्थापित करन के सम्बध मे काम जारी रहगा।

लोहा और इस्पात उद्योग सोवियत सघ म ससार क कुल इस्पात उत्पादन का पाचवा हिस्सा पदा होता है। यह सघ जमनी, ब्रिटन, फास तथा इटली के मिले जुले कुल उत्पादन स अधिक है। सोवियत सघ ससार का सबसे बडा इस्पात उत्पादक बन गया है। १९७२ म सोवियत सघ म १२ करोड ६० लाख टन इस्पात पदा किया गया (अमरीका म १२ करोड ३० लाख टन का उत्पादन हुआ)।

दोनबास तथा दनीपर क्षेत्रो मे स्थित धातुकम उद्यम पहले रूस का एकमात्र धातुकम केन्द्र था जो किसी हद तक बडा था। रूस का लगभग सारा ढलवा लोहा यहा ही गलाया जाता था और देश के इस्पात का लगभग दो तिहाई यही तयार होता

था। रूस म १८वी शताब्दी मे यूराल मे जिस कोयला एव धातुकम क्षेत्र का उद्भव हुआ वह तकनीकी दृष्टि स बहुत पिछडा हुआ था। और यद्यपि इसका कच्चा माल उत्कृष्ट क्वालिटी का था, फिर भी यह दक्षिण के लोहा और इस्पात उद्योग का मुकाबला नही कर सकता था।

आज यूराल के लोहा एव इस्पात उद्योग म चार बडे, आधुनिक सयत्र शामिल ह—मेग्नितागोर्स्क, चेल्याबिन्स्क, निजनी तागिल तथा आस्क म।

हाल के वर्षों मे साइबेरिया और कजाखस्तान मे लोहा और इस्पात उद्योग का तेज गति स विकास हुआ। कारागादा शहर मे एक भीमकाय सयत्र बनाया गया है जहा धातु उत्पादन की पूरी प्रक्रिया होती है। यहा सभी मुख्य माल तैयार होता है लोहा, इस्पात, बेल्लित माल। यह सयत्र उत्कृष्ट ढग की नई रोल्लिग मिला से लस है। नोवो कुजनेत्स्क स्थित पश्चिम साइबेरियाई लोहा और इस्पात कारखाना भी चालू हो गया है।

देश के उत्तर पश्चिमी हिस्से चेप्रोवेत्स म लेनिनग्राद के निकट तथा दक्षिण म जार्जिया (रुस्तावी) म कई अन्य नए बडे कारखाने है जहा धातु उत्पादन की पूरी प्रक्रिया होती है।

देश के लगभग सभी भागा म मशीन निमाण के काम म इतना विकास हुआ है कि स्थानीय स्तर पर इस्पात प्रद्रवण सयत्रा का निर्माण आवश्यक हो गया है। लीपाजा (लातविया), लेनिनग्राद, गोर्की नोवासिबिस्क, बेकोवाद (उजबेकिस्तान), अमूर पर कोम्सोमोल्स्क (सुदूर पूव) तथा अन्य स्थानो पर इस प्रकार के सयत्र तैयार किये जा चुके है।

सोवियत सघ के यूरोपीय हिस्से मे इस्पात उत्पादन के काम मे बहुत विस्तार हो चुका है। यह हिस्सा सोवियत सघ का प्रमुख मशीन निमाण क्षेत्र है। मास्को, इलेक्ट्रास्ताल तुला लिपेत्स्क तथा अन्य शहरा मे भारी मात्रा म इस्पात उत्पादन होता है। लिपेत्स्क और तुला मे लोहा पदा किया जाता है। कुस्क चुम्बकीय अपवाद (के एम ए) नामक विपुल कच्चा लोहा भण्डारो के अन्वेषण के फलस्वरूप निकट भविष्य म देश के इस केन्द्रीय भाग मे उत्पादन म काफी वद्धि हो जाएगी। ६३ प्रतिशत के धातु अ श वाले कच्चे माल के विपुल भण्डारो के ३० अरब टन होने का अनुमान है। २५ से ४० प्रतिशत के धातु अ श वाले कच्चे माल (क्वातजाइत) के करोडो टन के भण्डार पडे है। इनमे से कुछ भण्डार सतह के निकट है और इसलिए खुले मुह वाला खनन सभव है। चालू पचवर्षीय योजना काल मे इस क्षेत्र मे कच्चे लोहे के वार्षिक निष्कषण मे ४ करोड टन की वद्धि की आशा है।

युद्ध के बाद स अब तक मिले नए कच्चे लोहे के विशाल भण्डार देश के अन्य धातुकम क्षेत्रो की आवश्यकताए पूरी करने मे समथ है।

१६७२ म सारे सोवियत सघ म २० करोड ८० लाख टन कच्चा लोहा गया।

सोवियत सघ म ३०० से अधिक धातुकम सयत्र है । इनम शामिल हैं १ करोड ४५ लाख टन की वार्षिक इस्पात उत्पादन क्षमता वाले मेग्नितोगोस्क कारखाने, क्रिवोई रोग सयत्र (१ करोड ८० लाख टन) कदानोव कारखाना (७१ लाख टन) निझनी तागिल सयत्र (६४ लाख टन) चेरेपोवेत्स कारखाना (६३ लाख टन) तथा चेल्या बिन्स्क कारखाना (६२ लाख टन)। य कारखाने ससार के सबसे बडे कारखाना मे आते हैं। फरवरी १९७३ मे एक ३ २०० घनमीटर की धमन भट्टी नोवोलिपत्स्क धातुकम सयत्र मे चालू की गई। ५,००० घनमीटर की ससार की सबसे बडी धमन भट्टी क्रिवोई रोग म निर्माणाधीन है ।

इस्पात की क्वालिटी म वृद्धि, मिश्रित इस्पात के उत्पादन म वद्धि तथा वेल्लित माल के प्रकार म वद्धि आदि के क्षेत्रा म सोवियत इस्पात निर्माताओ ने बहुत प्रगति की है। १९७५ तक इस्पात उत्पादन के १४ करोड ६४ लाख टन हो जाने की आशा है। इसम से ११ करोड ६० लाख टन वेल्लित माल के रूप म होगा। इस समय उच्च क्षमता वाली यूनिटा के निर्माण तथा आधुनिकतम प्रविधि के इस्तमाल पर जार दिया जा रहा है ।

अलौह धातु सोवियत सघ म अय धातुआ के खनिज माल का भी काफी उत्पादन होता है जसे अलौह धातुआ का, विरल एव बहुमूल्य (सोना, चादी प्लेटिनम) धातुआ का। इनमे से अधिकाश (बाक्साइट, ताबा सीसा जस्ता, निकल टगस्टन, पारा आदि) के भण्डारा की दष्टि से सोवियत सघ दूसरे सभी देशा से बहुत आग है। इस कारण सोवियत सघ विविध धातुआ सम्बन्धी देश की बढती हुई आवश्यकताए पूरी करने की क्षमता रखने वाला एक व्यापक अलौह धातु उद्योग निर्मित करने म सफल रहा है।

अलुमिनियम उत्पादन, जिसका पुराने रूस म नामोनिशान तक न था, अभी हाल तक यूराल (स्वेदलोव्स्क क्षेत्र) तथा लेनिनग्राद क्षेत्र (तिखविन) मे पाए जाने वाले बाक्साइट पर आधारित था। कजाखस्तान म हाल ही म पाए गए बडे बडे बाक्साइट भण्डार इस समय पा लोदार स्थित कारखाने को माल की आपूर्ति कर रहे है।

सोवियत इजीनियरा ने नेफेलाइन से अलुमिनियम पदा करने का एक अति सस्ता तरीका ढूढ निकाला है। इससे अलुमिनियम उद्योग के लिए कच्चे माल का मजबूत आधार तयार हो गया है क्योकि देश मे इस प्रकार के कच्चे माल के विशाल भण्डार मौजूद ह जो पूर्वी साइबेरिया, कोला प्रायद्वीप, ट्रासकाकेशिया तथा अय क्षेत्रा म स्थित हैं। कोला की नेफेलाइन तो इस समय भी इस्तेमाल की जा रही है। मुमान्स्क क्षेत्र तथा कारेलिया म इसके कारखाने है। इकुत्स्क के निकट एक अलुमिनियम कारखाना इस समय चल रहा है। क्रास्नोयास्क तथा ब्रात्स्क सयत्रो का निर्माण काय पूरा होने वाला है। यह ऐसे क्षेत्र म स्थित है जिसके निकट देश के सबसे बडे नफेलाइन भण्डार हैं तथा शक्ति के सस्ते साधन उपलब्ध है जसे अगारा और येनिसी पर स्थित बडे बडे पनबिजलीघर तथा सतह के निकटस्थ मौजूद विशाल कोयला भण्डार।

अलौह धातुओं का उत्पादन तथा खनन मुख्यत देश के पूर्वी हिस्से में संकेन्द्रित है विशेषकर कजाखस्तान में जहा तावा, सीसा, जस्ता तथा अनेक विरल धातुओं का बडे पमाने पर उत्पादन होता है।

यूराल का महत्व कजाखस्तान जितना ही है जहा तावा, अलुमिनियम, निकल, जस्ता साना प्लेटिनम तथा अन्य धातुओं के उत्पादन का काफी विकास हो चुका है। साइवेरिया सुदूर पूर्व कारेलिया तथा कोला प्रायद्वीप मे भी अलौह धातु उद्योग के बडे बडे केन्द्र है (तावा निकल अलुमिनियम और विरल धातुओं के), काकेशस मे तावा, अलुमिनियम, जस्ता सीसा के, तथा उक्राइन मे अलुमिनियम, मग्नशियम, जस्ता आदि के।

योजना के अनुसार १९७५ तक अलौह धातुओं के उत्पादन म १९७० की तुलना म ५० प्रतिशत की वद्धि होगी (अलुमिनियम के उत्पादन म ६० प्रतिशत तथा ताबे के उत्पादन म ४० प्रतिशत)।

इजीनियरी उद्योग सोवियत इजीनियरी उद्योग आज जितना माल एक दिन मे पदा करता है वह १९१३ म हुए रूस के कुल उत्पादन स अधिक है। पिछल कई वर्षों से सोवियत सघ इजीनियरी उद्योग म अमरीका के बाद दूसरे नम्बर पर बराबर चल रहा है। टैक्टरा (कुल क्षमता) के उत्पादन डीजल और बिजली से चलने वाले रेल्वे इजिन तयार करने म सोवियत सघ अमरीका को पीछे छोड चुका है।

सोवियत इजीनियरी उद्योग की शक्ति का ठीक ठीक अनुमान जिन बातो से लगाया जा सकता है व हैं अतरिक्षयाना और अतरमहाद्वीपीय प्रक्षेपास्त्रो का निमाण आणविक टक्नालोजी, जट विमान, साइबरनैटिक यत्र बोरिंग मशीनें तथा अन्य कई चीजे।

सोवियत सघ धातु काटने के हर प्रकार के मशीन औजार तयार करता है जिनम अत्यत सूक्ष्म मशीन औजार स्वचालित नियत्रण मशीनें तथा स्वचालित लाइनें शामिल है। १९७२ म तयार किए गये मशीन औजारो की सख्या २ लाख १० हजार थी। यह सख्या १९७५ तक बढ कर २ लाख ३० हजार २ लाख ५० हजार तक पहुच जाएगा।

कायक्रम नियत्रित मशीनो के उत्पादन की विकास दर विशेष ऊची है। य उप करण अत्यत आधुनिक ढग के हाते है। १९७२ म इस प्रकार की ३०५० मशीनें तयार की गइ जबकि १९७० म यह सख्या केवल १६८७ थी। यह सख्या १९७१ म अमरीका म तदनुरूप सख्या मे अधिक है। इन मशीनो की विविधता मे वद्धि हुइ है। १९७० मे सोवियत सघ ने ३० विभिन्न प्रकार की कायक्रम नियत्रित मशीने तयार की थी। १९७२ म यह सख्या ६३ हो गई। १९७१ ७२ के दो वर्षों म १५ ००० स अधिक यत्रीकृत उत्पादन लाइन तथा ३,००० स्वचालित लाइन चालू की गयी।

पुराने केन्द्रो (मास्को तथा उसके आसपास के क्षेत्र और लेनिनग्राद) म तो मशीन निर्माण उद्योगो का विकास आगे बढता ही रहा है साथ ही साथ सभी सघ भी य उद्योग खडे हो गए है।

विजली और बिजली-तकनीकी इ जीनियरी सोवियत सघ के यूरोपीय भाग के केद्रीय क्षेत्रो मे, लेनिनग्राद स्वेदलाव्स्क गोर्की यरवान मे तथा उक्राइन व बाल्टिक जनतन्त्रो के अनेक नगरो के साथ-साथ देश के पूर्वी भागो म विकसित है।

१६७२ मे तैयार की गई टर्बाइनो की कुल क्षमता एक करोड ४६ लाख किलोवाट, टर्बाइन जेनरेटरो की एक करोड ३० लाख किलोवाट तथा ए सी मोटरो की चार करोड किलोवाट थी।

परिवहन इ जीनियरी उद्योग अब तक ट्रक-लाइनो के विद्युतचालित रेल्वे इजिनो का उत्पादन प्रतिवर्ष ३५० से अधिक हो गया है तथा डीजल रेल्वे इजिनो के सेक्शनो का उत्पादन प्रतिवर्ष १ ५०० हो गया है (जो ब्रिटेन म सात गुना जापान से ४ ५ गुना, जमन सघ गणराज्य से ३ ५ गुना अधिक है)। यात्री डिब्बो, माल ढोने वाली गाडियो, ट्राली-बसो, ट्राम कारो और भूमिगत गाडियो का निर्माण पर्याप्त सख्या म हुआ है।

परिवहन-इजीनियरी उद्योग के प्रतिष्ठान केन्द्रीय प्रदेशो म उक्राइन लेनिनग्राद यूराल, बाल्टिक जनतन्त्रो ट्रासकाकेशिया व बहुत स अन्य प्रदेशो मे स्थित हैं।

समुद्री जहाज निर्माण उद्योग का बहुत फैलाव हुआ है। आगामी कुछ वर्षों के दौरान सोवियत बेडे को नय एव ससार भर म प्रचलित तथा विशेष प्रकार के समुद्री जहाज उपलब्ध होंगे जो जहाजो के यत्र व प्रणालियो के स्वचालित नियत्रण से युक्त होंगे।

गत वर्षों मे हाइड्रोफाइलो वाले तेज रफ्तार स चलने वाले यात्री जहाजो का तथा मछली पकडने के लिए विशाल तिरती फैक्टरियो का सफल निर्माण हुआ है। पाच वर्षों म तलवाही जहाजी बेडे को अपने प्रथम १ ५० ००० टन के समुद्री जहाज उपलब्ध होगे। १ ००,००० टन की क्षमता वाले और एक ही साथ तरल व ठोस माल ढोने वाले समुद्री जहाज भी बनाये जायेंगे।

मोटर गाडी उद्योग सोवियत सघ की पहली मोटर गाडिया (छोटे ट्रक) १६२४ म मास्को के ए एम ओ सयत्र (अब लिखाचोव सयत्र) म तयार की गई थी। १६७२ म सोवियत सघ म विभिन्न कामो के लिए १३ ८६,००० मोटर गाडियो का निर्माण हुआ। इनम से कम सख्या स कुछ ही कम सख्या लारियो की थी जिनका बहुत स देशो म निर्यात किया जा रहा है। सोवियत यात्री-कारो की कुछ किस्म विदेश मे भी लोकप्रिय हैं। आजकल सोवियत मोटर गाडी उद्योग के विकास म भारी तब्दीली हो रही है। पचवर्षीय योजना म १६७५ तक २० लाख स कुछ अधिक मोटर गाडियो के उत्पादन की योजना है जिनम लगभग १२ लाख ५० हजार यात्री-कारें शामिल होगी। इस कार्यक्रम के अनुसार तोमल्यिाती शहर म वोल्गा आटो कारखाने का तीसरा भाग १६७२ म चालू किया गया था। यह कारखाना अपनी निर्दिष्ट क्षमता—
६ ६० ००० कारो का निर्माण—पर पहुच गया है। मास्को सयत्र म
का उत्पादन दुगुना करके २ ०० ००० प्रतिवर्ष किया जा रहा है।
इसे इस सयत्र २,२० ००० कारो क प्रतिवर्ष उत्पादन की अपनी

। पाज वर्षों म यात्री-कारा व कुल उत्पादन म २५० २८० प्रतिशत की वृद्धि
ज यगा।

नातार स्वायत्त जनतंत्र म नाबरझनिय चेल्नी म एक बडा सयत्र निर्माणाधीन है
जो / ८०,००० ट्रक बनाने हेतु तयार किया गया है।

कृषि इ जीनियरी उद्योग सोवियत कृषि म यनक प्रकार की मशीनें प्रयोग में
लायी जाती है दसना प्रकार के ट्रैक्टर और कम्बाइन, आलू व बीज बोने वाली मशीन,
फसल काटने वाली मशीनें चुकन्दर व आलू खोदन वाली, कपास चुनने वाली व
चाय की पत्तियां तोडने वाली मशीन पशु पालन फार्मों के लिए यांत्रिक साज-सामान
दूध दुहने की मशीन आदि, जिनके बिना आधुनिक कृषि के सम्बन्ध म सोचा भी नहीं
जा सकता।

कृषि सम्बन्धी मशीनों का निर्माण करने वाले इजीनियरी प्रतिष्ठान तमाम
संघ जनतंत्रों म स्थापित हैं। विशेष प्रकार की कृषि सम्बन्धी मशीनों का निर्माण करने
वाले प्रतिष्ठान वसे प्रदेशों व अधिकाधिक निकटस्थ स्थानों म स्थित हैं जहां इन मशीनों
की आवश्यकता है।

अब सोवियत मशीन निर्माण उद्योग म ७०० से अधिक भिन्न भिन्न प्रकार की
कृषि सम्बन्धी मशीनें तयार की जाती है तथा यह संख्या भी अगले कुछ वर्षों म ८००
६४० तक बढ जायगी। इस संख्या म नए प्रकार की ४०० मशीनें शामिल हैं। इसस
सभी प्रमुख कृषि सम्बन्धी प्रक्रियाओं के यंत्रीकरण को काफी हद तक बढाना सम्भव हो
सकेगा।

सोवियत सघ म ट्रैक्टर उद्योग एक विकसित उद्योग है जो प्राविधिक प्रगति
के साथ पूरी तरह कदम मिला कर आगे बढ रहा है। सोवियत प्रतिष्ठानों म सभी प्रकार
के ट्रैक्टरों—३०० हार्स पावर के औद्योगिक डी ई टी २५० से लेकर बागों व फलो
द्यानों म काम करने के लिए तयार किये गये ७ हार्स पावर के रिआनी ट्रैक्टर तक—
का निर्माण किया जाता है।

सोवियत ट्रैक्टर उद्योग १५ कि० मी० प्रति घटे की रफ्तार से काम करने म
सक्षम ट्रैक्टरों का उत्पादन करता है। इनम ऐसे वृहद ट्रैक्टर शामिल है जसे ३००
हार्स पावर का के ७०१ ट्रैक्टर तथा १५० हार्स पावर का पहिएदार टी १५० ट्रैक्टर।
१९७३ म एक नये प्रकार का बहु-उद्देश्यीय ८० हार्सपावर का ट्रैक्टर, नयी अनाज हार्वे
स्टिंग कम्बाइना—'नीवा', कोलोस व 'सिबिर्याक'—तथा कृषि सम्बन्धी अन्य
मशीनों का निर्माण हुआ।

१९७२ म सोवियत संघ म ४,७८,००० ट्रैक्टरों तथा १,३०,००० हार्वेस्टिंग
कम्बाइनों का निर्माण हुआ। आशा की जाती है कि १९७५ तक य आकडे क्रमश
५,७४,००० तथा १,२८,००० हो जायेंगे।

रासायनिक उद्योग रासायनिक पदार्थों के उत्पादन म सोवियत संघ का अम-
रीका के बाद दुनिया म दूसरा स्थान है।

प्लास्टिक के सामान व रासायनिक रेशा अल्पकाल में प्रमुख रूप से पट्रोलियम गसो, कोयले, लकडी व दाह्य शेल की प्रोसेसिंग के आधार पर देश ने ऐसे रासायनिक प्रतिष्ठानो के अनेक समुच्चयो का निर्माण किया है जिनमे प्लास्टिक के सामान, रासायनिक रेशे, सश्लेषित रबड, रगो, अपमार्जको और ऐसे अन्य प्रकार के पदार्थों का उत्पादन होता है और जिनका उत्पादन-काय मे तथा घरेलू काम म तजी से उपयोग किया जा रहा है।

रासायनिक रेशे के उत्पादन म युद्ध-पूव काल से ७० गुना वद्धि हुई है और १९७२ मे इसका कुल उत्पादन ७ ४६ ००० टन हुआ था, प्लास्टिक के सामानो व कृत्रिम राल का उत्पादन २०,३५ ००० टन से अधिक हुआ है। १९७० की अपेक्षा १९७५ तक रासायनिक रेशे की पैदावार ७० प्रतिशत से अधिक, प्लास्टिक व कृत्रिम राल का उत्पादन सौ प्रतिशत तथा घरेलू रासायनिक चीजो का उत्पादन ६० प्रतिशत अधिक हो जायगा।

आज का रासायनिक उद्योग अपने विकास के पैमाने तथा अपने तकनीकी साज-सामान की दृष्टि से उत्कृष्ट है। १९७२ म चालू किय गय बडे बडे प्रतिष्ठानो के पास चार साढे चार लाख टन वार्षिक अमोनिया का उत्पादन करने वाली यूनिटें हैं। इन यूनिटो में से एक यूनिट की उत्पादन क्षमता लगभग उतनी ही है जितनी १९४८ म तमाम देश म अमोनिया की फक्टरिया की थी।

सश्लेषित रबड सश्लेषित रबड सोवियत सघ म बहुत पहले, इस शती के चौथे दशक म तयार कर लिया गया था। अब ६० प्रतिशत से अधिक सश्लेषित रबड प्राकृतिक गस से पदा किया जाता है। सश्लेषित रबड की पदावार के लिए बश्कीर स्वायत्त जनतत्र वोल्गा प्रदेशो, काकेशस, कजाखस्तान व साइबेरिया म विशाल केन्द्रो का निर्माण किया गया है।

हाल के वर्षो के दौरान आइसोप्रीन रबड की विशाल पदावार हुई है जो गुणात्मक दृष्टि से प्राकृतिक रबड स बहुत ही मिलता जुलता है और कुछ अशो म तो उसस भी बहतर है। यह मोटरकार उद्योग के विकास सम्बन्धी विशाल कायक्रम की पूर्ति क लिए विशेष महत्वपूर्ण है। रबड की पदावार १९७५ तक ७० प्रतिशत और बढ जायगी तथा कारो के टायरो की पदावार १९७२ के ३ करोड ८७ लाख से बढ कर १९७५ म पाच करोड हो जायेगी। टायरो की सबस बडी फक्टरिया मास्को, लेनिनग्राद, यारोस्लाव्ल वोरोनेझ, दनीप्रोपेत्रोव्स्क ओम्स्क व क्रास्नायास्क मे हैं।

खनिज उवरक कृषि का गहन विकास खनिज उवरक के उत्पादन की तीव्र माग करता है। रासायनिक उद्योग की इस शाखा की विकास-दर को निम्न आकडे स्पष्ट करत हैं १९१३ म एक लाख टन, १९४० मे ३२ लाख टन तथा १९७२ मे (पारपरिक यूनिटो मे) ६ करोड ६१ लाख टन। १९७५ म इसका उत्पादन ९ करोड टन हो जायगा जिसका ८० प्रतिशत भाग अत्यत सान्द्रित व मिश्रित उवरको का होगा।

लकडी उद्योग सोवियत सघ लकडी का एक प्रमुख निर्यातक है। लकडी की कटाई व उसके काम से सम्बन्धित सारी आर्थिक शाखाए (लकडी का कुल भण्डार लगभग ८० अरब घन मीटर है जो विश्व की कुल मिकदार का पाचवा भाग है) पहले देश के कम घने जगल वाले यूरोपीय भाग मे ही केन्द्रित थे। अब इन्हे भरपूर लकडी वाले क्षेत्रो की ओर स्थानान्तरित किया जा रहा है जो मुख्यत यूराल के पूर्व मे स्थित है। चीरी हुई लकडी की पैदावार मे और लकडी की कटाई मे सोवियत सघ को दुनिया मे बहुत अधिक अन्तर से पहला स्थान प्राप्त है। १९७२ मे २६ करोड ८० लाख घन मीटर निजारती लकडी का निर्यात किया गया।

सीमेट व तयार कक्रीट सोवियत सघ ने सीमट के उत्पादन और तयार कक्रीट के ढाचो के उत्पादन मे दुनिया मे पहला स्थान प्राप्त कर लिया है। १९७२ मे सीमट का उत्पादन कुल मिला कर १० करोड ४३ लाख टन हो गया था और १९७५ तक यह बढ कर १२ २ १२ ७ करोड टन हो जायगा।

सीमट उद्योग म एक नयी स्वचालित प्रणाली लागू की गई है जिसकी विदेशो म कही भी कोई मिसाल नही है। न केवल पृथक पृथक प्रक्रियाए स्वचालित है बल्कि उत्पादन म शामिल प्रत्येक प्रक्रिया—कच्चे माल की तयारी से लेकर तयार सीमट की लदाई तक—स्वचालित है। वस्तुत समूचे प्रतिष्ठान का ही अपने-आप नियत्रण होता है।

हलका उद्योग उपभोक्ता चीजो (कपडे जूते, टेलीविजन व वायरलैस सैट तथा खान की चीजें आदि) का उत्पादन करने वाले औद्योगिक प्रतिष्ठान देश के कुल औद्योगिक उत्पादन का चौथे हिस्से से अधिक पदा करते है।

उपभोक्ता माल के उत्पादन मे वृद्धि को प्राथमिकता दी जा रही है। १९७५ तक ही १९७० के उत्पादन के मुकाबले ५० प्रतिशत बढोतरी हो जायेगी। यह १९६० के स्तर से तीन गना व १९४० के स्तर से लगभग दस गुना अधिक है।

कपडा उद्योग सोवियत सघ ऊनी व लिनन के कपडो के उत्पादन म दूसरे देशो से बहुत आगे है। १९७२ म यहा ६८ करोड १० लाख वर्ग मीटर ऊनी कपडा व ७७ करोड ८० लाख वर्ग मीटर लिनन का उत्पादन हुआ। सूती कपडे का उत्पादन ६ अरब ४१ करोड ६० लाख वर्ग मीटर हुआ जो १९४० के आकडो से दुगुना था। रेशमी कपडे का उत्पादन (जो १ अरब २७ करोड वर्ग मीटर है) युद्ध-पूर्व के स्तर से २० गुना अधिक हो गया है।

आजकल सभी प्रमुख आर्थिक प्रदेशो मे कपडा उद्योग के प्रतिष्ठान मौजूद हैं लेकिन मध्यवर्ती प्रदेश अभी भी कपडे के प्रधान क्षेत्र हैं (मास्को इवानोवो, तुला व ओरेखोवा-जुयेवा)। सोवियत सघ के प्रमुख कपास उगाने वाले क्षेत्र—उजबेकिस्तान—म कपडा उद्योग का बहुत अधिक विकास हुआ है। इस क्षेत्र म क्रान्ति से पहले इस का नामो निशान न था। सूती कपडे के उत्पादन म उजबेक जनतत्र का सोवियत ... स्थान हासिल है और इसने उत्तर-पश्चिमी प्रदेशो और बाल्टिक क्षेत्रो जैसे

कपडे का उत्पादन करने वाले पुराने क्षेत्रो को पीछे छोड दिया है। उक्राइन, वाल्गा क्षेत्र, काकेशस और वेलोरूस मे कपडे के उत्पादन का पर्याप्त विकास हुआ है। आजकल सोवियत कपडा उद्योग के ठिकानो मे महत्वपूण परिवतन हो रहे हैं। उदाहरणाथ, आजकल नये प्रदेशो, विशेषतया पूर्वी प्रदशो मे कपडा उद्योग कम विकसित होन की वजह से नय प्रतिष्ठानो का निमाण प्राय पूरे तौर पर देश के दक्षिणी व पूर्वी भागो मे स्थानान्तरित कर दिया गया है।

सोवियत सघ म बुन हुए कपडो व पहनने के कपडो के उद्योग का प्राय पुनर्निर्माण हो चुका है। १९७५ मे बुन हुए कपडो की पैदावार १९७० के आकडा से ५० प्रतिशत अधिक हो जायेगी तथा कपडो का उत्पादन लगभग २४ प्रतिशत वढ जायगा। १९७५ म विभिन्न प्रकार के ११ अरब वग मीटर से अधिक कपडा के उत्पादन की योजना बनाई गई है।

जूते बनाने के उद्योग ने १९७२ म चमडे के जूतो के ६४ करोड ५० लाख जोडे बनाए। एसी योजना बनाई गई है कि १९७५ के अन्त तक पैदावार ८३ करोड जोडे जूत हा जायगी।

जूत बनाने के प्रमुख प्रतिष्ठान लेनिनग्राद मास्को, रोस्ताव आन दोन, किशिनेव, किरोव, किएव, मिंस्क त्बिलिसी, स्वेदलोव्स्क व सारापुल (उदमुत स्वायत्त जन तन्त्र) म है। जूता उद्योग सोवियत चमडे के उत्पादन पर आधारित है। देश म बढिया किस्म का नकली चमडा तयार करने वाला बडे पमाने का उद्योग भी मौजूद है।

इसी फर सोवियत सघ का अपन फर की मिकदार, मूल्य और विभिन्नता की वजह से विश्व म दीघकाल से पहला स्थान प्राप्त है। इस फर की चीजो की बडे पमाने पर पदावार हुई है जिनकी विश्व मण्डी मे बहुत माग है। सोवियत सघ के फर का सबसे बडा प्रतिष्ठान कजान मे है। सोवियत फर की अन्तर्राष्ट्रीय नीलामी लेनिनग्राद मे वप म दा बार हाती है।

युद्धोत्तर वर्षों मे कृत्रिम फर के कपडा का उत्पादन शुरू किया गया है जो अस्त्राखान, ग्राइटेल, सील, ओट्टर, रीछ, जगली बिल्ली और अन्य पशुओ के फर स मिलता जुलता है।

दनिक उपयोग की चीजें दनिक उपयोग की चीजो की माग बढती जा रही है और हर समय बढती रहती है।

१९७२ म = ८९,००० मोटर साइकिलो व मोटर-स्कूटरो का उत्पादन हुआ था। वाइसिकिलो हल्की मोटर साइकिलो व मोटर-बाइसिकिलो का वार्षिक उत्पादन ४९ लाख स वढ गया है।

युद्धोत्तर वर्षों मे सोवियत सघ दीवाल घडिया व घडियो (४ करोड ४० लाख प्रतिवष) और कमरा (बीस लाख) का दुनिया के सबसे बडे उत्पादक देशो म स एक बन गया है। इनम से अधिकाश की विश्व मण्डी मे बहुत माग है।

१९७ म रेडियो सेटों व रिकार्ड प्लेयरों का ८८ लाख से अधिक व ६० लाख टलीविजन सेटों का उत्पादन हुआ था।

युद्धोत्तर वर्षों म धुलाई की मशीनों (३० लाख प्रतिवर्ष म अधिक) और रेफ्रीजिरेटरों (५० लाख) का बड़े पैमाने पर उत्पादन सगठित किया गया है। १९७६ तक लगभग ७० लाख रेफ्रीजिरेटरों का सालाना उत्पादन होने लगा।

क्रान्ति-पूर्व रूस म और सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षों के दौरान दैनिक उपयोग की चीजों का अल्प उत्पादन लगभग पूरी तरह से पुराने औद्योगिक क्षेत्रों म (मध्यवर्ती प्रदेशों लेनिनग्राद तथा बाल्टिक क्षेत्र म) सकेद्रित था। अब यह देश के तमाम भागों म विकसित हो चुका है।

खाद्य उद्योग सोवियत सघ का खाद्य उद्योग उत्पादन के सकेद्रण व स्वचालन के उच्च स्तर पर पहुच गया है तथा इसकी विशेषता उत्पादित की जाने वाली वस्तुओं की व्यापक विभिन्नता है।

इसका चीनी उद्योग, जो चुकन्दर पर आधारित है सदा ही अर्थतत्र की अपेक्षाकृत विकसित शाखा रहा है। सोवियत सघ का चीनी उद्योग विश्व म सबसे अधिक उपजाऊ बन गया है और इसकी पैदावार कुल मिला कर ९० लाख टन दानेदार चीनी हो गई है (जो सारी की सारी घरेलू कच्चे माल से बनती है)। इसका उत्पादन अमरीका के उत्पादन से दुगुना है।

चीनी उद्योग के प्रतिष्ठानों के ठिकानों म भी काफी तब्दीलियां हुई हैं। ये ठिकाने चीनी का उत्पादन करने वाले पुराने प्रदेशों की सीमाओं से बाहर फैल गये हैं। अतीत म उक्राइन कुल उत्पादन का ८० प्रतिशत से अधिक चीनी उत्पादित करता था जबकि आज यहां उत्पादन के जोरदार सवधन के बावजूद ६० प्रतिशत से कुछ ही अधिक उत्पादन होता है। चीनी उद्योग के कारखाने मोल्दाविया म व उक्राइन के पडोसी इलाके वाले रूसी सघ के मध्यवर्ती प्रदेशों मे वोल्गा मे व यूराल से इस ओर के क्षेत्रों म स्थापित किये गये हैं। कुबान क्षेत्र चीनी का एक प्रमुख केन्द्र है। चीनी के कारखाने दक्षिणी कजाखस्तान किर्गीजिया, अल्ताई क्षेत्र और सुदूर पूर्व म भी स्थापित किये गए हैं।

सोवियत सघ पशुओं के तेल (१० लाख टन) और दूध (८ करोड ३० लाख टन) का विश्व का सबसे बडा उत्पादक है। दुग्ध का प्रति व्यक्ति उत्पादन लगभग ३५० किलोग्राम वार्षिक है।

सूरजमुखी का तेल अधिकतर सोवियत सघ के यूरोपीय भाग के दक्षिण म व काली मिट्टी वाले मध्यवर्ती प्रदेशों म पैदा किया जाता है, अलसी का तेल पश्चिमी व उत्तर-पश्चिमी प्रदेशों म, बिनौले का तेल मध्य एशिया म व सरसों का तेल वोल्गा क्षेत्र म पैदा होता है। वनस्पति घी का कुल वार्षिक उत्पादन २८ लाख टन है।

आटा पीसने के प्रतिष्ठान व अनाज के उत्पादक अनाज पैदा करने वाले क्षेत्रों म बडे केन्द्रों म स्थित हैं। आज सारे नगरों व आबादी वाले क्षेत्रों म डबल

रोटी व आटे की अन्य चीजें मशीकृत उकरियो म बनाई जाती है, जिसकी वजह से उत्पादों की ऊंची क्वालिटी सुनिश्चित होती है। मकरोनी उद्योग अथतत्र का एक प्रमुख भाग बन गया है। मिठाइयो का उत्पादन तेज गति से विकसित हो रहा है।

शराब का औद्योगिक उत्पादन लगभग पूरी तरह सोवियत सत्ता के वर्षों मे ही विकसित हुआ है। इसका उत्पादन १९४० के १९ करोड ७० लाख लिटर से बढ कर १ अरब ८२ करोड लिटर हो गया है। सोवियत सघ मे कोई ६०० प्रकार की शराबें बनाई जाती हैं। शराब पैदा करने वाले प्रमुख क्षेत्र मोल्दाविया, क्रीमिया, ट्रासकाकेशिया व मध्य एशिया है। बीयर समूचे देश म बडे पैमाने पर तैयार की जाती है।

चाय का उत्पादन, जो सोवियत सत्ता के वर्षों मे विकसित हुआ है, तेज गति स बढ रहा है। १९४० से लेकर उत्पादन ५ गुना स भी अधिक हो गया है और अब यह १,०९,००० टन है, जो विश्व के उत्पादन का लगभग १० प्रतिशत है। चाय के मुख्य बागान काकेशिया व कृष्ण सागर के तटीय क्षेत्र मे हैं।

डिब्बा बद खाद्य का उत्पादन १९४० के बाद दस गुना से अधिक हो गया है और १२ अरब डिब्बे वार्षिक स अधिक होता है। खाद्य को डिब्बा मे बद करने के कारखाने देश के सभी भागो मे स्थापित किय गये हैं। खेरसन (दक्षिणी उक्राइन) व कुबान क्षेत्र के क्रिम्स्काया गाव के कारखाने विश्व के सबसे बडे कारखानो म से है। ये दोनो अधिकतर डिब्बा-बद फल व सब्जियां तैयार करते हैं।

मास का उत्पादन १ करोड ३६ लाख टन से अधिक होता है। मास्को लेनिनग्राद, कजान, सारातोव, एगेल्स, सेमीपालातिन्स्क, फ्रुजे और बहुत सारे अन्य शहरो म मांस पैक करने की विशाल फक्टरिया हैं।

मत्स्य ग्रहण गत कुछ वर्षों म सोवियत सघ का मछली पकडने वाला बेडा विश्व के सबसे बडे व तकनीकी पक्ष से सबसे श्रेष्ठ ढग से लैस बेडो म से एक बन गया है। इसमे विशाल आधुनिक ट्रालर, सेनर व रेफ्रिजिरेटर और फक्टरीनुमा समुद्री जहाज सम्मिलित है। इससे यह सम्भव हो सका कि तटगामी अल्प मत्स्य ग्रहण से खुले समुद्र म बडे पैमाने पर मत्स्य ग्रहण के केन्द्रो की ओर पलटा जा सके। मत्स्य और ह्वेल मछलियां पकडने वाला सोवियत बेडा विश्व के सारे महासागरो म देखा जा सकता है।

मछलियां, समुद्री जीवो व ह्वेलो का वार्षिक उत्पादन १९४० से लेकर पाच गुना स अधिक बढ गया है तथा ८० लाख टन हो गया है। इसके साथ साथ सोवियत सघ पेरू और जापान के बाद विश्व म तीसरे स्थान पर आ गया है। डिब्बे-बद मछलियां अधिकतर वोल्गा के निचले इलाके, उत्तरी काकेशिया, बाल्टिक जनतत्रो व सुदूर पूर्व मे तैयार की जाती हैं। डिब्बे-बद केकडा का उत्पादन सुदूर पूर्व मे केन्द्रित है। १९७५ तक मत्स्य-ग्रहण बढ कर १ करोड ३० लाख टन हो जाने की आशा है।

खाद्य उद्योग की सारी शाखाओं का पर्याप्त सवर्धन नियोजित किया गया है। १९७५ तक इसकी पैदावार १९७० के मुकाबले ३५ प्रतिशत बढ जायेगी।

कृषि

यद्यपि सोवियत सघ का क्षेत्रफल विशाल है, यह सारा ही कृषि के योग्य नहीं है। इसके तिहाई भाग म जगल है। विशाल क्षेत्र टुड्रा के रूप म है—वृक्षहीन मैदान, पहाडी क्षेत्र दलदल व रगिस्तान। अत देश के सारे क्षेत्रफल का चौथाई भाग से भी कम—५४ करोड ६० लाख हक्टर क्षेत्रफल ही—कृषि उत्पादन के लिए उपयोग म लाया जा सकता है।

सोवियत सघ मे जलवायु की स्थिति म अत्यन्त वभिन्न्य है और कृषि की स्थितिया भी इसी प्रकार की है।

बाल्टिक प्रदश, बेलोरूस व रूसी सघ के मध्य मे किसाना के लिए सबसे बडी कठिनाई मिट्टी की बहुत अधिक नमी है। इसका सामना करने के लिए पानी की निकासी का काम बडे पमाने पर किया जा रहा है।

और इसके विपरीत उक्राइन, वोल्गा क्षेत्रा व कजाखस्तान म—जो देश के अनाज के प्रमुख उत्पादक हैं—नमी की कमी है। तीन चार वर्षो म एक बार या इससे भी अधिक बार विशाल क्षेत्रा म अकाल पड जाता है, जो कई बार तो अल्ताई से कर्पेथियन तक फला होता है और कृषि का नुकसान पहुचाता है।

सूखापीडित जमीन को पानी देन के लिए विशाल सिचाई परियोजनाए तयार की जा रही है। लेकिन कृषि विकास के सर्वागीण कायक्रम के अ ग के रूप में इस समस्या के हल के लिए समय व पूजी की विशाल लागत और भौतिक व तकनीकी ससाधना की जरूरत है।

नवी पचवर्षीय योजना कृषि विकास का निर्धारित करन वाल उपादाना के समग्र समुच्चय को ध्यान म रख रही है—अधिक मशीनीकरण, रसायनीकरण, पूजीगत निर्माण का प्रसार, बडे पमान की भूमि-सुधार परियोजनाओ की पूर्ति व उत्पादन सगठन की सुसगतता। इससे नवी पचवर्षीय अवधि म कृषि उत्पादन की समस्याओ का हल करने म सहायक और प्रकृति की शक्तिया पर इसकी निर्भरता कम करने म सहायक कृषि का भौतिक व तकनीकी आधार कायम करन की ओर आगे बढना सभव होगा।

जमीन म पानी का निकाला जाना व जमीन की सिचाई, मिट्टी म चूना मिलाया जाना व सिचाई-परियोजना तैयार करना—अर्थात जमीन की बेहतरी के सारे बडे पमान के काम म पूजी राज्य लगाता है। राज्य ही आवश्यक साधन, पदार्थ, मशीनें व विशेषज्ञ उपलब्ध कराता है। अलग अलग कृषि प्रतिष्ठान भी अपनी जमीन का सुधार करते हैं लेकिन इस काम का प्रमुख भाग राज्य करता है। उदाहरण के लिए १९७१-७५ म भू-सुधार के कार्यो पर, जिसम अनजुती जमीन का बडे पैमाने पर आबाद किया जाना भी शामिल है, राज्य का व्यय २६ अरब ६० करोड रूबल होगा।

आज रूस म १ करोड १० लाख हक्टर पानी निकास की हुई जमीन है और ?० लाख हक्टर सिंचित जमीन है।

चालू पचवर्षीय योजना काल मे २० लाख हेक्टर और जमीन से पानी निकाला जायेगा और ५० लाख हेक्टर और जमीन सिंचित की जाएगी। इस काम का व्यय राज्य वहन करेगा।

कृषि-उत्पादन का सगठन सोवियत सघ मे भूमि राष्ट्रीय सम्पत्ति है, राज्य की जायदाद है। यह न तो बची जा सकती है और न खरीदी जा सकती है। खेती वाली भूमि का अधिकाश भाग सामूहिक फार्मो (कोल्खोजा) व राज्य फार्मो (राजकीय कृषि प्रतिष्ठार) द्वारा इस्तमाल किया जाता है। सामूहिक फार्मो के पास बोने के लिए ११ कराड हेक्टर भूमि है जो देश के कुल बुआई क्षेत्र २२ कराड ३० लाख हेक्टर का लगभग आधा है।

भूमि का एक भाग राज्य के भिन्न भिन्न प्रकार के प्रयोगात्मक फार्मो मुर्गी-पालन फार्मो व भाडा के फार्मो द्वारा, शक्षणिक व अनुसधान सस्थाओ द्वारा उपयोग म लाया जाता है।

इसके अलावा, सामूहिक फाम के किसानो और राज्य फार्मा क मुलाजिमो को सामूहिक व राज्य फार्मो की भूमि से (लगभग आधा हक्टर) भूमि की छोटी छोटी जोतें घरेलू काम के लिए दी जाती है। इस प्रकार की घरेलू जोतो का सब्जियो के बागो, फलोद्यानो या अगूर की बल उगाने के लिए उपयोग किया जाता है। इस प्रकार की जोतो का रकबा ७६ लाख हेक्टर (कुल का ३ ५ प्रतिशत) है।

क्रान्ति-पूव रूस म २ कराड किसान फार्मो में स लगभग दो तिहाई फाम छोटी छोटी जोता के रूप मे थे, जो कर्जो व लगाना के बोझ से लदे थे, जिन्ह बैंका व बडे भूमिपतियों को दने पडते थे।

भूमि सम्बधी आज्ञप्ति के द्वारा, जो १९१७ की अक्तूबर क्रान्ति के दूसरे दिन पारित हुई थी, सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण हो गया और भूमि सावजनिक सम्पत्ति बन गई। बडे-बडे खेत काम करने वाल किसानो को सौंप दिए गए। उन्ह १५ कराड हक्टर से अधिक भूमि उन खेतो के अलावा नि शुल्क मिली, जो उनके पास क्रान्ति से पहल मौजूद थी। सारे कर्जे, जो उन्ह बैको व बडे भूमिपतियो को देने थे रद्द कर दिय गए और सारे लगान खतम कर दिये गए। इस प्रकार समाजवादी क्रान्ति ने निधन किसाना को बहुत फायदा पहुचाया क्योकि इसन उन्ह सदियो से पडी हुई गुलामा से मुक्त कर दिया।

गावों का सामूहिकीकरण सोवियत सत्ता के प्रारम्भिक वर्षो मे ही विभिन्न प्रकार के कृषि उत्पादन व विक्री सबधी सहकारी सस्थाए उभर कर सामने आन लगी और इनम निधन व "मध्यम" किसान स्वेच्छापूवक शामिल होने लगे। ज्यो ज्यो किसाना को सयुक्त खेती से होने वाले लाभो मे प्रति विश्वास होता गया, त्यो-त्यो गावो के सामूहिकीकरण को बढावा मिला और शती के चौथे दशक के पूर्वाध म यह काय लगभग पूरा हो गया।

कृषि क सामूहिकीकरण को देश के द्रुत उद्योगीकरण न, ट्रैक्टर निर्माण व कृषि सम्बन्धी इन्जीनियरी क विकास न तेज कर दिया जिसके बिना बड पैमाने का आधुनिक कृषि उत्पादन असम्भव होता।

सामूहिक फाम फार्मों म काम करने वालो की स्वच्छिक कृषि सहकारिताएं हैं। राज्य सामूहिक फार्मों को मुफ्त व स्थायी प्रयोग के लिए भूमि मजूर करता है और उन्हें आधुनिक उपकरण, रसायन तथा आवश्यकता पडने पर बीजो के लिए ऋण व अग्रिम कर्जे देता है। इसके अलावा राज्य सामूहिक फार्मों की पदावार का प्रमुख थोक खरीदार है जो उनके लिए स्थायी मडी की गारटी करता है।

सामूहिक फार्मों की जायदाद—फार्मों की इमारतें व मशीनें, पशु और पदावार—सभी सदस्य-किसानो की मिल्कियत होती है। वे अपन श्रम के फलो के एक मात्र स्वामी होत है। सामूहिक फार्मों का उच्च प्रशासनिक निकाय है सभी सदस्यों की आम सभा जो प्रबधक बोड व अध्यक्ष का चुनाव करती है। आम सभा सामूहिक फाम की विकास योजनाओ और बोड की वार्षिक रिपोर्टों की पुष्टि करती है तथा फाम के जीवन व कायकलाप के सम्बन्ध मे समस्त प्रमुख निणय लेती है। अपन तमाम कामो मे अध्यक्ष व बाड के सदस्य आम सभा के प्रति उत्तरदायी है।

सामूहिक फार्मों के सदस्यो को अपने काम के गुण और परिमाण के अनुसार पारिश्रमिक दिया जाता है। गत कुछ वर्षो म सामूहिक फार्मों ने गारटीशुदा मासिक अदायगी अपना ली है।

आज का सामूहिक फाम एक बडा यत्रीकृत आर्थिक यूनिट है। औसतन इनम लगभग ६ ००० हेक्टर भूमि होती है, जिसमे ३,००० हेक्टर कृषि योग्य भूमि लगभग ४ ००० पशु (गाए भेडे, सूअर) व ६० स अधिक ट्रैक्टर (१५ हासपावर की शक्ति वाल) होत है।

१९७२ मे देश म ३२,२८६ सामूहिक फाम थे।

सामूहिक फाम देश की कृषि की कुल तिजारती पदावार का लगभग ५० प्रतिशत मुहैया करते हैं।

वे (क्षेत्रीय रूप से भिन्न) स्थायी मूल्यो पर तथा डिलीवरी की स्थायी योजना के अनुसार राज्य को अपन पदाथ बेच कर अपनी आय का अधिकाश भाग कमात हैं। इसस कृषि की पदावार के लिए सुस्थिर आर्थिक प्रोत्साहन सुनिश्चित होता है।

फाल्तू पदावार शहरी मण्डी म या स्वतत्र रूप से या ग्राम्य उपभोक्ता सहकारिता "त्सेन्तरोसायुज (सोवियत सघ की उपभोक्ता सोसाइटियो का केन्द्रीय सघ) के द्वारा बेची जा सकती है।

राज्य फाम राज्य के स्वामित्व के कृषि प्रतिष्ठान हैं। राज्य फाम की निगरानी सम्बधित राजकीय निकाय द्वारा नियुक्त निदेशक करता है। राज्य फाम के मुलाजिम एक ट्रेड यूनियन म सयुक्त होत हैं, जो प्रत्यक समाजवादी प्रतिष्ठान की तरह ही के प्रबध म पर्याप्त भूमिका अदा करती है। वे निश्चित मजूरी प्राप्त करत हैं।

/

लेकिन इसके साथ साथ, अन्य कृषि-कर्मियों की तरह उनके पास स्वयं अपने उपयोग के लिए जमीन का एक प्लाट होता है।

देश में १५,५०२ राज्य फार्म हैं। ये बड़े, उच्च कोटि के यंत्रीकृत प्रतिष्ठान होते हैं जिनके पास प्रभावशाली कृषि उत्पादन के लिए एक सशक्त आर्थिक आधार होता है। औसत राज्य फार्म के पास २१,००० हेक्टर से अधिक भूमि होती है जिसमें ६,००० हेक्टर से अधिक कृषि योग्य भूमि होती है, ७,००० से अधिक पशु (गाएं भेड़ें व सूअर) तथा १२० ट्रैक्टर (१५ हॉर्स पावर की शक्ति वाले) होते हैं। अधिकतर राज्य फार्म विशेषीकृत हैं।

राज्य फार्मों में देश के तिजारती अनाज व सब्जियों का लगभग आधा भाग, कच्ची कपास का पांचवां भाग और पशुओं से उपलब्ध होने वाली चीजों का ४० प्रतिशत से अधिक भाग उत्पादित होता है। इनकी तमाम तिजारती पैदावार को राज्य खरीदता है।

निजी खेत सामूहिक फार्मों के किसानों व राज्य फार्मों के मुलाजिमों के घरेलू खेत आज भी सब्जियां, दूध तथा खासकर अण्डों की कुल पैदावार की एक बड़ी मात्रा देते हैं।

घरेलू खेती की पैदावार में से अधिकतर तो स्वयं मालिक ही प्रयोग कर लेते हैं, शेष पैदावार या तो खुली मण्डी में बेच दी जाती है या उपभोक्ता सहकारी संगठन "त्सेन्त्रोसोयूज" के द्वारा बेच दी जाती है।

१९७३ के प्रारम्भ में किसानों की निजी सम्पत्ति में लगभग १ करोड़ ५० लाख गाएं, २ करोड़ ३३ लाख सूअर, ३ करोड़ २० लाख भेड़ें और बकरियां तथा करोड़ों की संख्या में मुर्गे मुर्गियां थे।

कृषि प्रबन्ध सोवियत संघ का कृषि मंत्रालय कृषि की निर्देशन लाइन निर्धारित करता है।

संघ जनतंत्रों के कृषि सम्बन्धी अपने मंत्रालय तथा प्रादेशिक व जिला विभाग हैं।

सोवियत संघ का कृषि मंत्रालय सारे देश की कृषि के विकास की आधारभूत योजना व आर्थिक समस्याओं से निपटता है। यह कृषि-उत्पादों के उत्पादन की योजनाओं को समन्वित करता है कृषि विज्ञान के विकास को तथा कृषि-उत्पादन के श्रेष्ठ साधनों के साधारणीकरण व प्रसार को बढ़ावा देता है, और यह ध्यान रखता है कि कृषि को आधुनिक उपकरण, रासायनिक उर्वरक, रासायनिक व जैवीय कीटनाशक दवाइयां मिलें, तथा अन्य सम्बन्धित मामलों का भी ध्यान रखता है।

स्थानीय प्रादेशिक और विशेषत जिले के कृषि विभागों की ओर से कृषि उत्पादन का प्रबन्ध करने के सम्बन्ध में तुरन्त सहायता दी जाती है व विज्ञानसम्मत सिफारिशें की जाती हैं। ये विभाग सामूहिक व राज्य फार्मों से सीधे तौर पर सम्बन्धित होते हैं

कृषि और विज्ञान सोवियत संघ में सैकड़ों कृषि अनुसंधान संस्थान, उच्चतर व माध्यमिक विशेषीकृत स्कूल और विभिन्न प्रयोगात्मक केंद्र मौजूद हैं। १९७२ में सौ से अधिक उच्चतर कृषि स्कूलों में ७०,००० से अधिक विशेषज्ञों का प्रशिक्षण पूरा हुआ था तथा माध्यमिक विशेषीकृत स्कूलों में १,६५,००० विद्यार्थियों ने अध्ययन पूरा किया। कृषि में संलग्न विशेषज्ञों की कुल संख्या ८,५०,००० से अधिक है। सामूहिक फार्मों के अध्यक्षों में से ८५ प्रतिशत ने तथा तमाम राज्य फार्मों के प्रायः सभी मैनेजरों ने विशेषीकृत शिक्षा प्राप्त की है।

३५ ००० से अधिक वैज्ञानिक कर्मी कृषि और पशु रोगों के इलाज सम्बन्धी अनुसंधान संस्थानों व कालेजों में काम करते हैं। उनमें से लगभग १६,००० के पास विज्ञान के उम्मीदवार की डिग्री है तथा १,६०० से अधिक कृषि के आचार्य या पशु चिकित्सा विज्ञान के आचार्य हैं।

तकनीकी उपकरण ट्रैक्टरों की कुल संख्या २० लाख से अधिक हो गई है, इनमें से प्रत्येक की क्षमता गत १५ वर्षों में ३६ हार्स पावर से बढ़ कर ६० हार्स पावर हो गई है। यह औसत क्षमता अन्य देशों में प्रयोग की जाने वाली क्षमता से बहुत अधिक है। ट्रैक्टरों की कुल क्षमता १२ करोड़ ५० लाख हार्स पावर से अधिक हो गई है तथा (ट्रैक्टरों समेत) सारी कृषि मशीनों की कुल क्षमता ३५ करोड़ हार्स पावर हो गई है।

१३ लाख से अधिक मोटर गाड़ियां, ६ ५०,००० अनाज कम्बाइन हार्वेस्टर व लाखों अन्य कम्बाइनें जो मक्का, आलू, चुकन्दर, पटसन कपास की फसलें प्राप्त करने तथा अन्य कामों में प्रयुक्त की जाती हैं, सोवियत कृषि की सेवा में काम कर रही हैं।

सोवियत इंजीनियरों व डिजाइन बनाने वालों ने चाय की पत्तियां चुनने वाली एक कारगर मशीन का निर्माण किया है। इससे बहुत अधिक श्रम के काम का यंत्रीकरण सम्भव हो गया है।

खेती के कार्य में मशीनीकरण का स्तर बहुत ऊंचा है। हल चलाना, अनाज की फसलों कपास व चुकन्दर के बीज बोना तथा अनाज व चारे की फसलों का काटा जाना पूरी तरह से यंत्रीकृत हो गया है, अनाज के छिलके अलग करने के काम का, पकी मक्का काटने व छीलने के काम का, लुनाई करने तथा पत्तियां में आलू कपास, चुकन्दर व सब्जियां बोने का यंत्रीकरण पूरा होने वाला है। आलू खोदने, चुकन्दर निकालने व चारे वाली घास का ढेर लगाने के काम का यंत्रीकरण मोटे तौर पर ७० ८५ प्रतिशत तक हो चुका है।

सरकार ने कृषि का यंत्रीकरण तेज करने के लिए गम्भीर कदम उठाये हैं। उदाहरणार्थ सरकार १९७१ ७५ के दौरान कृषि के लिए १७ ०० ००० ट्रैक्टर व ११,०० ००० मोटर-गाड़ियां देगी। ये आंकड़े इससे पहले की पंचवर्षीय अवधि के आंकड़ों के मुकाबले क्रमशः २ ३३,००० और ३,८३ ००० अधिक हैं।

कृषि की मशीनो की कुल अश्वशक्ति ५० प्रतिशत बढ जायेगी, अथवा १६ करोड १० लाख हो जायेगी।

कृषि म बिजली की खपत अब १९४० के स्तर के मुकाबले ७० गुना बढ गयी है। लेकिन कृषि उत्पादन आज भी, जहा तक विद्युतीकरण का सम्बन्ध है अन्य आर्थिक शाखाओ स काफी पीछे है। अब तक राज्य फाम व सामूहिक फाम मुख्य तौर पर घरलू कार्यों के लिए बिजली का प्रयोग करत है। इसलिए बिजली की मशीनो व उपकरणो के लिए नई प्रणालियो का विकास किया जा रहा है जो कृषि उत्पादन के क्षेत्र म समय की अधिक माग करने वाला काम किया करेंगी। १९७५ मे कृषि म बिजली की कुल खपत १९७० की तुलना म दुगुनी हो जायेगी।

यन्त्रीकरण के कारण कृषि म श्रम उत्पादकता सोवियत शासन मे पाच गुना अधिक हो गई है। कृषि म श्रम उत्पादकता बढाने की समस्या सोवियत अथतन्त्र की सबस अहम समस्याओ म से एक समझी जाती है।

कृषि का तकनीकी स्तर उचा करके, जमीन सुधार के दायरे का विस्तार करके तथा खनिज उवरक के उपयोग का प्रसार करके कृषि उत्पादन को और अधिक गहन बना कर १९७५ तक श्रम उत्पादकता ३७ ४० प्रतिशत अधिक हो जायेगी।

इन योजनाओ को पूरा करने के लिए कृषि म १९७१ ७५ म १ खरब २६ अरब रूबल लगाय जायेंगे जितने पिछले दस वर्षों मे लगाये गय थे। इसके अलावा २६ अरब रूबल से अधिक राशि अथतन्त्र की उन शाखाओ म लगायी जायगी जो कृषि की भौतिक व तकनीकी आपूर्ति से सबधित है।

समस्त कृषि उत्पादो की औसत वार्षिक पदावार १९७१ ७५ की अवधि क दौरान २० २२ प्रतिशत अधिक की जायेगी ।

फसलों की खेती अनाज की पदावार सोवियत सघ म कृषि पदावार की रीढ है। गेहू मुख्य फसल है और यह ६ करोड ५० लाख हेक्टर से अधिक भूमि म बोये जाने वाले सारे अनाज का लगभग आधा भाग है तथा अनाज की कुल फसल का आधे स अधिक है। १९७२ म, जो असाधारण तौर पर प्रतिकूल मौसम का वष था, अनाज की फसल १६ करोड ८० लाख टन हुई थी। यह १९७१ म हुई अनाज की फसल म १ करोड ३० लाख टन कम थी । फिर भी यह फसल इससे पहले की पचवर्षीय अवधि की औसत वार्षिक फसल से कुछ अधिक ही रही।

१९७५ में सोवियत सघ की अनाज की फसल बढ कर २० करोड टन होन की आशा है।

वसत ऋतु का गहू का क्षेत्र, जो स्तेपी क्षेत्र के मध्यवर्ती व पूर्वी प्रदेशो म आम तौर पर होता है, गहू वाले क्षेत्र का कोई तीन चौथाई है। वसन्त ऋतु के गहू से बढिया किस्म का अनाज मिलता है और इससे बना बाने आटे म प्रोटीन की उच्च मात्रा होती है तथा यह चीज बनाने के लिए बहुत अच्छा होता है। फिर भी यह शरत्कालीन गहू के समान अधिक फसल नही दता है। इसीलिए कम ठण्डे व पर्याप्त नमी वाले

प्रदेशों में शरदकालीन गेहूं का आधिक्य होता है। सारा जंगली स्तपी क्षेत्र तथा स्तपी क्षेत्र का पश्चिमी भाग इन्हीं प्रदेशों में पड़ते हैं।

सोवियत सत्ता के वर्षों के दौरान गेहूं की फसल का क्षेत्र दुगुने से अधिक हो गया है और राई की फसल—एक कम मूल्यवान अनाज जो क्रांति-पूर्व रूस में गेहूं जितने क्षेत्र में होता था—से अधिक हो गया है।

जई ७० लाख हेक्टर के क्षेत्र में बोई जाती है। यह अनाज की तमाम फसलों के क्षेत्र का ५ प्रतिशत से कुछ अधिक है। इसकी औसत वार्षिक पैदावार १ करोड़ ४५ लाख टन है।

जौ कोई २ करोड़ हेक्टर जमीन में होता है। इसकी पैदावार ३ करोड़ ४५ लाख टन होती है।

मक्का गरमी चाहने वाला पौधा है। इसलिए मक्का के पौधा का लगाना दक्षिणी उक्राइन, मोल्दाविया और उत्तरी काकेशिया तक ही सीमित है।

१९७१ में मक्का की कुल पैदावार ८६ लाख टन थी, जो १९४० से लगभग दुगुनी थी। आशा है कि १९७५ में इसकी पैदावार ७ करोड़ टन हो जायगी।

चावल अपेक्षाकृत कम क्षेत्र केवल ३,५० ००० हेक्टर, में ही होता है। लेकिन सिंचाई-नाय के विकास से हाल के वर्षों में चावल की फसल दुगुनी हो गई है तथा उन क्षेत्रों में भी जहां यह फसल पारम्परिक है (मध्य एशिया, कजाखस्तान) और देश के यूरोपीय भाग में, विशेषत उत्तरी काकेशिया में, दोन क्षेत्र व दक्षिणी उक्राइन में इसका पर्याप्त प्रसार होता है। चावल की पैदावार १९७२ में १९ लाख टन से अधिक हुई थी और १९७५ तक यह २० लाख टन हो जायगी जिससे देश की आवश्यकता पूरे तौर पर तुष्ट होगी।

सब्जियां व आलू सोवियत अवधि में इन फसलों का क्षेत्र दुगुने से अधिक हो गया है और अब एक करोड़ हेक्टर से भी अधिक है। सब्जियां सारे देश में अत्यंत उत्तर से अत्यंत दक्षिण तक, उगाई जाती हैं। आलू उगाने के मुख्य क्षेत्र वन व वन स्तेपी क्षेत्र हैं जहां उनके लिए श्रेष्ठ जलवायु उपलब्ध है। सोवियत संघ में आलू की पैदावार विश्व में सबसे अधिक होती है। लेकिन १९७२ में इसकी आम पैदावार ७ करोड़ ७८ लाख टन से लगभग २० प्रतिशत कम हुई थी। उसी वर्ष सब्जियों की पैदावार १ करोड़ ९० लाख टन हुई थी।

यहां लगभग ३० प्रकार की किराना फसलें होती हैं जिनमें से अधिकतर सोवियत राज्य के दौरान प्रयोग में लायी जाने लगी हैं। इन फसलों का क्षेत्र है कुल १ करोड़ ४५ लाख हेक्टर तथा अनेक किराना फसलों की पैदावार में सोवियत संघ को विश्व में प्रमुख स्थान प्राप्त है।

कपास की पैदावार—७० लाख टन—में सोवियत संघ दुनिया में प्रथम स्थान पर पहुंच गया है। सोवियत संघ में कपास की पैदावार सबसे अधिक होती है। यह पैदावार औसतन २.८६ टन प्रति हेक्टर है। कपास की फसलें मध्य एशिया, दक्षिणी

कजाखस्तान और अजरबजान के सिंचित क्षेत्रो म ही सकेंद्रित हैं। कपास के सपूर्ण क्षेत्र फल का लगभग दो तिहाई उजबकिस्तान म है और यह जनतत्र कपास की पैदावार का ७० प्रतिशत प्रदान करता है।

रूसी फ्लक्स को विश्व मण्डी म दढ आधार प्राप्त है। फ्लक्स कुछ-कुछ चचल फसल है और अधिकतर इसे देखभाल की आवश्यकता होती है। इसकी काश्त नमी वाले क्षेत्रो तक, जहा साधारण जलवायु है, विशेष रूप स उत्तर-पश्चिमी प्रदेश क दक्षिणी भाग मे, मध्य प्रदशो मे (मास्को क उत्तर व पश्चिम म) बेलोरूस म तथा बाल्टिक क्षेत्र म ही सीमित है। फ्लक्स के रेशे की वार्षिक फसल ४ ६०,००० टन से अधिक होती है। यह विश्व की प दावार का लगभग दो तिहाई हिस्सा है।

सोवियत सघ म तिलहन की फसलों मे किराना फसलो के उपयोग म आने वाला अधिकतर क्षेत्र (६० लाख हेक्टर से अधिक) आ जाता है। इन फसलो की अनेक किस्म ह सूरजमुखी सोयाबीन दक्षिणी पत्रकम (कुट्रयाश), रेंडी सरसो, मूगफली, तिल, तारामीरा और टगट्टी, आदि।

वनस्पति तेलो मे से, जो खान के काम म आत है सूरजमुखी का तल सोवियत जनता द्वारा सबसे अधिक पसद किया जाता है। सोवियत काल म इस फसल मे प्रयोग होने वाला क्षेत्र पाच गुना बढ कर ५० लाख हक्टर हो गया है। इसके प्रमुख बागान स्तेपी क्षेत्र विशेषत दक्षिणी उक्राइन और उत्तरी काकेशिया म है।

सोवियत सघ मे पौधे तैयार करने वाले विशेषज्ञो ने सूरजमुखी की बहुत पदा-वार देन वाली किस्मे तैयार की है। इनके बीजो के तल का तत्व ५० प्रतिशत स बढ गया है जबकि आम बीजो म यह २३-२५ प्रतिशत ही पाया जाता है। १९७२ मे सूरज मुखी की फसल ५० लाख टन से अधिक हुइ थी। यह दुनिया की पदावार का दो तिहाई स भी अधिक है।

सोवियत सघ चीनी का विश्व म निश्चित रूप से सबसे बडा उत्पादक है। चुकन्दर की फसल म लगभग ३५ लाख हेक्टर—युद्ध पूव के स्तर स तीन गुना—भूमि इस्तेमाल होने लगी है। १९७२ म चुकन्दर की पदावार ७ करोड ५७ लाख टन से अधिक हुई थी।

तम्बाकू के विशाल खेत सोवियत सघ के दक्षिणी भागो म फल हुए हैं। उच्च स्तर क सोवियत तम्बाकू न ससार की मण्डी म बहुत प्रसिद्धि प्राप्त की है। इस प्रकार क तम्बाकू की खेती क्रीमिया, मोल्दाविया, दक्षिणी उक्राइन और काकेशिया म होती है।

सोवियत कृषि ने चाय पदा करने की कला म भी महारत हासिल कर ली है। काकेशिया के कृष्ण सागर क तटवर्ती क्षेत्रो म तथा लेंकोरान प्रदश (कास्पियन सागर के दक्षिण पश्चिमी तट) म चाय के बागान ७४ ४०० हेक्टर क्षेत्र म फल हैं (१९१३ म यह क्षेत्र १ ००० हेक्टर और १९४० म ५५ ३०० हेक्टर था)। इन क्षेत्रो म उत्कृष्ट चाय की पत्ती की ऊची पदावार होती है—लगभग २,४०,००० टन वार्षिक। इसका

श्रेय न केवल किसानो को है, बल्कि सोवियत सघ की फसलो की बढिया किस्म तयार करन वाले माहिरो को भी है जिन्होने बढिया ढग की चाय की नयी किस्मे विकसित की हैं। ये किस्मे चीन, भारत व श्रीलका, जहा चाय पैदा करने वाले पुराने प्रदेशो मे जल वायु की अनुकूल स्थितिया हैं से अधिक विषम जलवायु की स्थितियो के लिए उपयुक्त है। सोवियत सघ म तयार चाय न विश्व बाजार मे सफलता प्राप्त की है।

सोवियत काल म ऐसी उपोष्णीय खेती जैसे खट्टे फलों की फसल से लेकर (सतरे व नीबू) चीनी वार्निश के वृक्ष—टग टी फल जयपत्र, अजीर, खजूर, सफेदे व जैतून फल उपजाने की ओर गभीर ध्यान दिया जाने लगा। उपोष्णीय क्षेत्रो की फसलो का पैदा किया जाना वस्तुत बहुत ही सीमित है क्योकि यह खेती मौजूदा जलवायु की स्थितियो पर निर्भर करती है।

फलो की खेती हाल म खेती की इस शाखा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है। २० वर्षो म छोटे फलो की खेती मे उपयोग होने वाला क्षेत्र लगभग तिगुना हो गया है और अब यह लगभग ४० लाख हेक्टर है, जबकि अगूर के बागो का क्षेत्र तिगुना बढा है लेकिन उसका कुल क्षेत्र २० लाख हेक्टर ही है।

मध्य एशिया, कजाखस्तान व क्रीमिया मे सिंचित क्षेत्रो म पर्याप्त वद्धि की योजना मे यहा बागवानी व अगूर पैदा किये जाने के लिए एक और अधिक सशक्त आधार स्थापित किया जा सकेगा।

पशुपालन १९७३ के प्रारम्भ मे देश मे लम्बे सीगो वाले १० करोड ४० लाख पशु थे (जिनम ४ करोड १७ लाख गाये थी) और ६ करोड ६५ लाख सूअर, १४ करोड भेडे व ४५ लाख बकरिया थे।

तिजारती पशुधन की सोवियत काल मे पर्याप्त वद्धि हुई है। १९७५ तक मास का उत्पादन लगभग १ करोड ६० लाख टन और दूध का उत्पादन बढ कर १० करोड टन हो जायेगा। कृषि की इस शाखा का तीव्र विकास उत्पादन के अधिक विशेषीकरण व सकेन्द्रण मे अभिन्न रूप से सम्बद्ध है। चालू पचवर्षीय योजना काल मे, सामूहिक फाम प्रतिष्ठानो के अलावा औद्योगिक किस्म के १ १७० बडे राज्य प्रतिष्ठान सूअर के गोश्त गोमास और दूध की पैदावार के लिए निर्मित किये जायेंगे।

पशुपालन की मुख्य शाखा है बडे सीगो वाले पशुओ का प्रजनन पालन। पशु पालन की यह शाखा रूसी सघ, उक्राइन, बेलोरूस बाल्टिक क्षेत्र और कजाखस्तान मे देश के अन्य भागो की तुलना मे बहुत तेजी से विकसित हो रही है।

दूध देने वाले पशु देश के यूरोपीय भाग मे गैर काली मिट्टी वाले क्षेत्र के समृद्ध चरागाहो मे पाले जाते हैं। खोल्मोगोमकाया यारोस्लाव्स्काया और कोस्त्रोम्स्काया नस्ले असाधारण तौर पर बहुत दूध देती हैं। डेरी फाम का काम उक्राइन, मोल्दाविया व उत्तरी काकेशिया म बडे पैमाने पर किया जाता है।

उक्राइन काकेशिया वाल्गा क्षेत्र कजाखस्तान और किर्गीजीया के कुछ भागो म मास वाले पशुओ के पालन म विशेषज्ञता हासिल की जाती है किन्तु इन नस्लो की [illegible] अब तक सोवियत सघ मे बहुत अधिक नही हो पायी है।

सामूहिक व राज्य फार्मों मे बढिया नस्ल के पशु कुल सख्या का ९० प्रतिशत है। एक गाय के दूध की औसत वार्षिक मिकदार २,३०० कि० ग्रा० से अधिक है, जो युद्ध-पूव के आकडों से दुगुना है।

रूसी सघ म पाले जान वाले सूअरो का लगभग आधा हिस्सा पदा होता है और उक्राइन मे तीसरा भाग। बलोरूस व बाल्टिक जनतत्रो म सूअर कुल पशुआ का लगभग ४० प्रतिशत है।

बढिया नस्ल के सूअरा का अनुपात कुल सख्या के ९५ प्रतिशत के समीप आता जा रहा है। सोवियत वज्ञानिको ने अनक किस्मा के बढिया नस्ल के सूअर पदा किय हे। सुखाये हुए सुअर मास के लिए सूअरो का मोटा तगडा बनाया जाना बडे पमाने पर लागू किया जा रहा है—यह एसी प्रक्रिया है जिसम बाल्टिक जनतत्रो को लम्बे अर्से से विशेष सफलता प्राप्त है।

कजाखस्तान भेड-पालन का सबसे बडा क्षेत्र है, जहा देश की भेडा की कुल सख्या का चौथा हिस्सा है। इसके बाद मध्य एशियाई जनतत्र वोल्गा क्षेत्र और उत्तरी काकेशिया का स्थान है।

घटिया नस्ल की रुक्ष ऊन वाली गर उत्पादक भेडे पहले इन सारे क्षेत्रो म अधिक सख्या म थी। आज इनका स्थान अधिकतर सकर नस्लो की भेडो न ले लिया है, जो स्थानीय परिस्थितिया के अनुकूल है और बढिया व आधा बढिया ऊन दती हैं। बढिया और महीन किस्म के ऊन वाली भेडें साइबेरिया म पाली जाती है। मध्य एशिया के रगिस्तानो मे अधिकतर उजबकिस्तान व तुर्कमेनिया म पाली जा रही आस्त्राखान भेडा के झुण्ड तजी स बढ रह है। उ ह अब हाल म मोल्दाविया म भी सफलतापूवक जलवायु का आदी बनाया जा रहा है। उनकी अति श्रेष्ठ क्वालिटी के कारण आस्त्राखान की भेडा की खालो की सोवियत सघ मे व विश्व मण्डी म बहुत माग है।

उक्राइन व उत्तरी काकेशिया मे पाली जा रही स्ताव्रोपोल भेडा न बढिया व कम बढिया ऊन देन मे रिकाड कायम किया है। देश म ऊन का प्रति भेड से औसत वार्षिक ३ ३ कि०ग्रा० मिलता है जबकि स्ताव्रोपोल नस्ल की प्रति भेड से वार्षिक ४५ कि० ग्रा० तक उत्तम किस्म का ऊन मिलता है, जो सात-आठ व्यक्तियो के सूट बनाने के लिए पर्याप्त है।

भेडो की नस्लो के विकास ने व उनकी सख्या म वद्धि ने ऊन की वार्षिक पदावार १९४० की पदावार से १५० प्रतिशत बढा कर ४ १९ ००० टन करने मे समथ बनाया है। ऊन की पदावार की दष्टि स सोवियत सघ केवल आस्ट्रेलिया के मुकाबले ही दूसरे नम्बर पर है और अर्जेंटीना के ऊन से लगभग दुगुनी मात्रा मे व अमरीका के ऊन से लगभग २ ५ गुनी मात्रा मे ऊन पदा करता है।

मुर्गीपालन का काम देश भर मे होता है किन्तु उक्राइन मे (जहा उनकी सख्या कुल सख्या का चौथे हिस्से से अधिक है), बेलोरूस, मोल्दाविया, उत्तरी काकेशिया बाल्टिक व मध्यवर्ती प्रदेशो म यह काम विशेष रूप से होता है।

मुर्गियो की सख्या मुर्गे मुर्गियो की कुल सख्या का ८० प्रतिशत से अधिक है। दूसरे स्थान पर बत्तखें आती हैं। तुर्की व गिनी मुर्गिया भी पाली जाती हैं, लेकिन उतने बडे स्तर पर नही जितना पश्चिमी यूरोप मे, क्योंकि यहा जलवायु उनके लिए बहुत कठिन है।

देश म विभिन्न प्रकार के हजारो बडे बडे यत्नीकृत मुर्गीखान हैं। सामूहिक फार्मो मे मुर्गीखाने के विभाग हैं, राज्य के मुर्गीखाने हैं व राजकीय उपनगरीय मुर्गीखाने भी है। बाद वाले मुर्गीखाने उपभोक्ताओ को प्रशीतित मुर्गिया व ताजा चूजे और ताजा अण्डे देत है जो अण्डे दन के अगले दिन ही बच दिये जात है। ऐस फार्मो म से ५०० सबसे बडे फार्म मास्को के समीप ब्रात्सेवो व तोमिलिनो म हैं।

मुर्गे मुर्गियो की कुल सख्या ६५ करोड से अधिक है। १९७५ तक अण्डो की पदावार ५२ अरब तक पहुच जायेगी।

सोवियत कृषि युद्ध के फलस्वरूप हुई भारी क्षति से तेजी से सभल गई। लेकिन बाद के वर्षो म कृषि के विकास की दर अथतत्र की अन्य शाखाओ के विकास की दर से कम हो गई थी। १९६५ के बाद सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी व सोवियत सरकार की ओर से तयार व लागू किये गये सामाजिक आर्थिक व सगठनात्मक कदमो ने कृषि क विकास मे बाधक कारणो को खत्म कर दिया है। इन पगो से तीव्र प्रगति सम्भव हुई।

परिवहन

सोवियत सघ के क्षेत्रफल की विशालता, इसकी समग्र अथव्यवस्था का तीव्र विकास व विशेष रूप से इसके दूरवर्ती इलाको का विकास—य परिवहन से यथेष्ट व सदा बढती माग करते है।

रेलें कुल माल की ढुलाई का लगभग दो तिहाई भाग ढोती है। देश की रेलो की लम्बाई सोवियत काल मे लगभग दुगुनी हो गई और कुल मिला कर १,३६,००० किलोमीटर है। यह विश्व की रेलो के ताने-बाने की कुल लम्बाई का १० प्रतिशत से कुछ अधिक है। इसके अलावा सोवियत सघ की रेलो की ढुलाई दुनिया की रेलो की कुल ढुलाई के आधे से कुछ ही कम है। दूसरे शब्दो मे, सोवियत रेलें बाकी दुनिया की रेलो से औसतन लगभग पाच गुना अधिक जोरदार तरीके से और परिणामस्वरूप पाच गुना कारगरता से काम करती है।

नयी रेलवे का अच्छा खासा हिस्सा साइबेरिया कजाखस्तान व मध्य एशिया के नये विकसित इलाको मे तयार किया जा रहा है, जहा सचार के विश्वसनीय साधन अतीत मे थे ही नही। सोवियत सघ के यूरोपीय भाग की रेलो का तानाबाना भी विस्तारित किया जा रहा है।

तीव्र आर्थिक विकास ने मुख्य लाइनो पर माल का आवागमन बढा दिया है। इसके लिए रेलवे परिवहन का आमूल तकनीकी पुनर्निर्माण हुआ है।

लगभग १,२०,००० किलोमीटर रेल लाइनो पर डीजल इंजिन व बिजली के इंजिन चलाये जाते हैं।

विद्युतचालित रेलवे लाइनो की लम्बाई हर वर्ष १,५०० २,००० किलोमीटर बढ जाती है और अब यह ३८ ००० किलोमीटर से अधिक है जो दुनिया म विद्युत-चालित रेलवे के एक तिहाई से अधिक है।

रेलें मुसाफिरो के बहुत बडे भाग को ढोती है। य हर साल ३२ करोड ४० लाख से अधिक यात्रियो को ले जाती ह (इनमे उपनगरीय रल्वे के मुसाफिर शामिल नही है)।

१९७५ के अन्त तक रेलव से माल की ढुलाई मे १९७० के मुकाबले २२ प्रतिशत की बढोतरी हो जायगी।

समुद्री बेडा सम्पूण परिवहन का लगभग छठा भाग है, जो १९४० के स्तर से २७ गुना अधिक है और माल की कुल ढुलाई म इसका हिस्सा तिगुना बढ गय, ह। इसका कारण सोवियत सघ के विदेश व्यापार सम्ब धो का असीम विकास है।

समुद्री बडा व्यापार के प्रसार के साथ साथ बढता जा रहा है। १९६० म सोवियत समुद्री वेडे को टन भार के हिसाब से दुनिया म ग्यारहवा स्थान हासिल था और अब इसका छठा स्थान है। यह मछली पकडने वाले जहाजो समेत जहाजो की सख्या की दष्टि से दूसरे स्थान पर है। सोवियत बेडे की क्षमता १ करोड ६० लाख रजिस्टड टन से अधिक ह तथा इसका वार्षिक विकास सालाना दस लाख टन से अधिक है। सोवियत व्यापारिक बड म लगभग १ ६०० समुद्री जहाज शामिल है। उनम से लगभग ८० प्रतिशत पिछले दशक म ही बनाये गये हैं। १९७५ के अन्त तक व्यापारिक बडे स माल की ढुलाई १९७० के मुकाबले ४० प्रतिशत अधिक हो जायेगी। समुद्री बडा प्रतिवर्ष ३ करोड ८५ लाख यात्री ले जाता है।

१९८१ के अन्त म सोवियत सघ के समुद्री बडे की स्थिति पर स्वचालित नियत्रण के लिए विद्युत कम्प्यूटिंग केन्द्र ने मास्को मे काम करना शुरू कर दिया था। यह केन्द्र समुद्री वेडे के विशेषज्ञो को जहाजो के ठिकाने, उनके माल और मार्गों के सम्बन्ध म तुरन्त सूचना दता है। यह केन्द्र सोवियत सघ के समुद्री परिवहन की नियत्रण प्रणाली का आधार है, जिसे पूरी तरह स्वचालित बनाया जा रहा है।

नदी परिवहन सोवियत सघ की तमाम प्रमुख नदिया समतल इलाके से ही गुजरती हैं, किन्तु दश के यूरोपीय भाग म वष भर म चार से छ मास तक तथा उत्तरी साइबेरिया व सुदूर पूव म ८ ९ मास तक जमी रहती है। इसलिए नदी परिवहन से माल की कुल ढुलाई का अपेक्षाकृत कम भाग ढोया जाता है।

सोवियत सत्ता के वर्षो म १५,००० किलोमीटर मनुष्य निर्मित जलमाग चालू किये गये और देश के प्रमुख जलमार्ग—वोल्गा—का पुनर्निर्माण किया गया है। वोल्गा पर निर्मित जलप्रणालियां कालिनिन से लेकर नदी के मुहाने तक एक विशेष गहराई सुनिश्चित करती है। श्वेत समुद्र बाल्टिक समुद्र, वोल्गा-बाल्टिक समुद्र और वोल्गा-दोन

जहाजी नहरो ने उत्तरी व दक्षिणी समुद्रो को जोड दिया तथा मास्को नहर ने बडे समुद्री जहाजो को वोल्गा से मास्को पहुचा दिया । योजना बनाई गयी है कि आगामी कुछ वर्षो म नदी बडे की भूमिका बढायी जाये, प्रथमत मिश्रित परिवहन मे। बडे को एसे नय जहाज दिए जा रहे है जो नदियो व समुद्रों दोनो मे चलने मे समर्थ हैं। यह साइबेरिया के सुदूर इलाको के साथ परिवहन सम्बन्ध विकसित करने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

नदी म सतरण करने वाले जहाज हर साल लगभग १४ करोड ५० लाख यात्री ढोते हैं।

मोटर परिवहन का माल ढोने मे थोडा ही भाग है। यह कुल ढुलाई का केवल लगभग ८ प्रतिशत ढोता है, लेकिन आगामी कुछ वर्षो मे मोटरो के बेडा को और काफी मजबूत बनाया जायगा।

मोटर परिवहन यात्रिया के आवागमन मे बडी भूमिका अदा करता है। इस कार्य म बस रेलो के बाद दूसरे नम्बर पर है। ये यात्रियो के तिहाई भाग से कुछ अधिक को ढोती हैं जबकि रेलें ५० प्रतिशत यात्रिया को ले जाती हैं। खासकर उपनगरीय क्षेत्रो म यात्रिया के आवागमन की सुविधाए बहुत विकसित है। इसी प्रकार, हाल के वर्षों म दूर व फासले तय करने वाली सुखदायक बसो म भी यात्रियो के आवागमन की सुविधाओ का विस्तार किया गया है।

१९७१ ७५ के दौरान १ १०,००० किलोमीटर से अधिक लम्बी पक्की सडकें बनाई जानी हैं। इस समय के दौरान सामान्य उद्देश्यीय मोटर परिवहन से माल की ढुलाई ६० प्रतिशत अधिक हो जाएगी और बसो द्वारा यात्रिया के आने जाने मे लगभग दुगुनी वृद्धि हो जायगी।

वायु परिवहन देश की प्रथम वायु सेवा १९२३ म शुरू की गई थी। तबसे वायु मार्गों की लम्बाई ८ ००,००० किलोमीटर से अधिक हो गई है, जिसम २,२५,००० किलोमीटर अन्तर्राष्ट्रीय मार्ग हैं। विश्व के ६५ देश वायु मार्गों द्वारा सोवियत सघ से जुडे हुए हैं। दुनिया की सबसे बडी वायु-सेवा कम्पनी एयरोफ्लोत स १९७२ म ८ करोड २० लाख व्यक्तियो न यात्रा की। १९७५ तक एयरोफ्लोत मे यात्रियो की सख्या ११ करोड ५० लाख हो जायेगी।

वायु यात्रा सोवियत जनता के लिए शहरो क निवासियो के लिए भी और गावो के निवासियो के लिए भी, आम बात है। उत्तर के कम विकसित क्षेत्रो म व पहाडी इलाको म हैलीकाप्टर बडे पैमाने पर काम म लाय जाते हैं।

सोवियत सघ के नागरिक उड्डयन म सोवियत निर्मित विभिन्न प्रकार के वायु यानो व हैलीकाप्टरो का बेडा है, जिनम से प्रत्येक विमान ६ से २२० यात्री तक ले जाने की क्षमता रखता है।

सोवियत उड्डयन विश्व म पहला था जिसने एक यात्री जेट विमान टीयू १०४ का उडान म प्रयोग प्रारम्भ किया। इसके पास दुनिया के सबसे बडे हैलीकाप्टर मी-१२

और विशालकाय एएन २२ ढुलाई विमान मौजूद है, जो ८० टन का भार लेकर उड सक्ते हैं। टीयू १४४ सुपरसोनिक वायुयान का जो प्रति घटा २ ५०० किलो मीटर की रफ्तार बढा कर उड सकता है तथा १४० यात्री ले जा सकता है, उत्पादन किया जा रहा है।

सोवियत निर्मित वायुयानो व हैलीकाप्टरो का बहुत से देशो को निर्यात किया जाता है।

वैदेशिक और आर्थिक सम्बन्ध

सोवियत सघ सौ देशो के साथ व्यापार करता है और समस्त विदेश व्यापारिक कारोबार मे इसका विश्व म सातवा स्थान है।

सोवियत नियात का ८५ प्रतिशत भाग औद्योगिक चीजो का है और १५ प्रतिशत हैं कृषि उत्पाद। मशीने व उपकरण, धातुए, धातुओ से बनी चीजें तार और कच्चा खनिज सोवियत निर्यात का लगभग आधा हिस्सा है। सोवियत सघ मशीनो व उपकरणो का) कुल आयात का ३४ प्रतिशत), खाद्य व उपभोक्ता पदाथ का (४० प्रतिशत), रासायनिक उत्पादो, रबड, उवरक और धातुओ (२० प्रतिशत), तथा कपडा उद्योग के लिए कच्चे माल (५ प्रतिशत) आदि का आयात करता है। १९७१ ७५ की अवधि क दौरान सोवियत व्यापारिक क्रय विक्रय मे ३३ ३५ प्रतिशत की वृद्धि की आशा है।

	१९४६	१९६५	१९७०	१९७२
विदश व्यापारिक क्रय विक्रय (अरब रूबल मे)	१ ३	१४ ६	२२ १	२६
निर्यात	० ६	७ ४	११ ५	१२ ७
आयात	० ७	७ २	१० ६	१३ ३

समाजवादी देश—प्रमुख साझेदार सोवियत व्यापारिक क्रय विक्रय म समाजवादी देशो का हिस्सा (१९७२ मे १६ अरब ८० करोड रूबल) लगभग दो तिहाई है।

सोवियत सघ और बिरादराना समाजवादी देश एक-दूसरे को अपने राष्ट्रीय अथतत्र को विकसित करने म हर प्रकार से सहायता प्रदान करते है। जनवरी १९४९ म स्थापित पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के बुलगारिया, क्यूबा (जून १९७२ म सम्मिलित), चेकोस्लोवाकिया, जमन जनवादी जनतत्र, हगेरी, मगोलिया, पोलण्ड, रूमानिया और सोवियत समाजवादी जनतत्र सघ सदस्य है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो के बीच आर्थिक, वज्ञानिक व तकनीकी सहयोग समाजवादी अतर्राष्ट्रीयतावाद, राज्य की प्रभुसत्ता, स्वतत्रता और राष्ट्रीय हितो के प्रति सम्मान, पूण समानता और सदभावना, पारस्परिक लाभ और साथियो जसी सहायता के सिद्धातो पर आधारित है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के द्वार हर उस देश के लिए खुले हुए हैं जो इस सगठन के उद्देश्यो व सिद्धातो को स्वीकार करने का इच्छुक और इसके घोषणापत्र का पालन करने के लिए तयार हो। व देश जो इस परिषद के सदस्य नही है, इसकी एजेंसिया के काम म भाग ले सकते है (और कुछ देश भाग ले भी रहे है)।

सोवियत सघ इस परिषद के सदस्य देशो की इधन व कच्चे माल की आवश्यकताओ का ७० प्रतिशत से अधिक को तथा वियतनाम जनवादी जनतत्र व कोरिया लोक जनवादी जनतत्र की ऐसी आवश्यकताओ की बहुत हद तक पूर्ति करता है। दूसरी तरफ सोवियत सघ बिरादराना देशो से औद्योगिक उपकरण, समुद्री जहाज और कृषि उत्पादो का आयात करता है। उनके अर्थतत्रो के विकास के लिए बिरादराना देशो को दिये जाने वाले सोवियत ऋण अब १३ अरब रूबल से अधिक हो गये हैं। समाजवादी देशो ने केवल १९६६ ७० मे ही सोवियत सहायता से ३०० से अधिक औद्योगिक व कृषि प्रतिष्ठानो का निर्माण किया या उन्हे उपकरणो से पुन सज्जित किया।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो के औद्योगिक उत्पादन म १९५० की तुलना मे १९७२ म ७०० प्रतिशत से अधिक की वद्धि हुई जबकि विकसित पूजीवादी देशो म इसी अवधि मे इस उत्पादन मे २०० प्रतिशत की वद्धि हुई।

आर्थिक विकास की उच्च दर से युक्त पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद का समुदाय अब विश्व के सर्वाधिक गतिशीलता से विकसित होने वाले औद्योगिक प्रदेशो मे है। १९६६ ७० के दौरान इसके औद्योगिक उत्पादन म ४९ प्रतिशत की वद्धि हुई। इस समुदाय मे विश्व की केवल १० प्रतिशत जनसख्या शामिल है लेकिन यह विश्व के औद्योगिक उत्पादन का लगभग एक तिहाई भाग पदा करता है और विश्व की राष्ट्रीय आय म इस समुदाय का हिस्सा चौथाई से अधिक है।

१९७२ मे इस परिषद के देशो की राष्ट्रीय आय म ५ १ प्रतिशत की वृद्धि और औद्योगिक उत्पादन म ७ ५ प्रतिशत की वद्धि हुई। साझा बाजार के देशो के औद्योगिक उत्पादन मे ४ ३ प्रतिशत की वृद्धि हुई। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो ने राष्ट्रीय जोवन-स्तरो को ऊपर उठाने म बहुत प्रगति की है।

सोवियत सघ नवी पचवर्षीय अवधि मे समाजवादी देशो के साथ आर्थिक वज्ञानिक व तकनीकी सहयोग को विकसित करना जारी रखे हुए है। उदाहरणार्थ, इस परिषद के देशो को सोवियत तल की आपूर्ति १९६६ ७० म १३ करोड ८० लाख टन से बढ कर १९७१ ७५ म २४ करोड ३० लाख टन हो जायेगी प्राकृतिक गस की आपूर्ति ८ अरब घन मीटर से बढ कर ३३ अरब घन मीटर हो जायेगी, बिजली की आपूर्ति १४ अरब किलोवाट घटे से बढ कर ४२ अरब किलोवाट घटे हो जायगी, तथा कच्चे लोहे की

(खनिज के रूप म) आपूर्ति ७ करोड २० लाख टन से बढ कर ६ करोड ४० लाख टन हो जायगी।

इसके साथ साथ सोवियत सघ पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के अन्य देशो से रसायन उद्योग के लिए एक अरब ३० करोड रूबल के मूल्य के एक सयत्र लग भग ३ अरब रूबल के मूल्य के रलवे व जल परिवहन के उपकरण तथा ८ अरब ५० करोड रूबल से अधिक मूल्य के उपभोक्ता माल का आयात करेगा।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो के साथ सोवियत व्यापार का क्रय विक्रय १६७१ ७५ मे ७७ अरब रूबल तक बढ जायेगा, जो गत पचवर्षीय अवधि से ५० प्रतिशत अधिक है, तथा इसकी विकास-दर मोटे तौर पर ३० प्रतिशत से अधिक होगी।

समाजवादी एकीकरण—समाजवादी देशो के बीच सहयोग का प्रसार और पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के दायरे के अतगत समाजवादी आर्थिक एकीकरण का विकास समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण के आम प्रयासो की सफलता के लिए अत्यन्त महत्वपूण है।

राजनीतिक व आर्थिक एकता सुदृढ करन मे और समाजवादी देशो के सवतो मुखी सहयोग को बढावा देने म जुलाई १६७१ म पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के २५वें अधिवेशन म पारित समाजवादी एकीकरण को और अधिक गहरा व विकासशील बनाने सम्बधी व्यापक कायक्रम अत्यधिक महत्वपूण है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो द्वारा सामूहिक रूप से तयार किया गया यह कायक्रम १५ २० वर्षों की अवधि के लिए है और इसमे अतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन के आधार पर आर्थिक व सगठनात्मक कदमो के व्यापक समुच्चय का शन शन कार्यान्वित किया जाना निरूपित है। आर्थिक कायकलाप व उत्पादन की तमाम शाखाओ को अपन दायरे म लेकर यह कायक्रम भौतिक उत्पादन के सारे चरणो के दौरान बिरादराना देशो की कोशिशो का तालमेल बिठाने पर विशेष जोर देता है। इस कायक्रम मे भावी अनुमान तैयार करने मे सहयोग योजना मे तालमल बिठाना व सयुक्त वज्ञानिक व इजीनियरी सबधी अनुसधान सगठित करना, पदावार मे व उत्पादो की बिक्री मे सहयोग व विशेषीकरण शामिल है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद का २६वा अधिवेशन मास्को म जुलाई १६७२ म हुआ था। इसमे भौतिक उत्पादन, विज्ञान व प्रविधि, विदश व्यापार और मुद्रा वित्तीय क्षेत्र मे व कानूनी पक्षो मे सहयोग के सगठनात्मक रूपो व तरीको के सुधार पर विशेष तौर पर जोर दिया गया था।

दीघकालिक व पचवर्षीय आर्थिक विकास योजनाओ का तालमेल, जिसमे अथतत्र की अलग अलग शाखाओ के विकास की योजनाए सामूहिक तौर पर तयार करना शामिल है अतर्राष्ट्रीय समाजवादी श्रम विभाजन की प्रमुख पद्धति रहेगी। साझेदार देश कच्चे माल, बिजली व ईंधन के ससाधनो, औद्योगिक समुच्चयो का

निमाण करने और दक्ष व नियमित उत्पादन सम्बन्धा को बढाने मे अपने प्रयासो को
मर्मा वत रखेगे । मौजूदा अन्तर्राष्टीय आर्थिक सगठनो मे सुधार लाने व नय अन्तराष्ट्रीय
आर्थिक सगठन स्थापित करने का काम तथा प्रमुख समस्याओ को हल करने म वनानिक
व तकनीकी क्षमताओ को एकजुट करने का काम जारी रहेगा ।

सर्वांगीण कायत्रम को कार्यान्वित करने का मुख्य पक्ष है योजना एजेंसियो का
सुव्यवस्थित सहयोग । आज सयुक्त नियोजन की एक नियमित व्यवस्था ढाली जा रही है।
अथतत्र विनान व प्रविधि के सर्वाधिक महत्वपूण क्षेत्रो मे भावी विकास की सम्भावनाए
निर्धारित करने का काम महत्वपूण होता जा रहा है । १६७६ ८० की अवधि के लिए
योजनाओ का राष्टीय पचवर्षीय योजनाओ की अतिम स्वीकृति से पहले ही तालमेल
बिठाया जायेगा । इससे हर देश के लिए यह सभव हो सकेगा कि उसने ताल्मेल की
प्रत्रिया मे जो सारी जिम्मेदारीया ली हैं उन पर वह समय पर विचार कर सके।
यह भी योजना बनाई गई है कि १६६० तक की दीघकालिक योजना की मुख्य
परियोजनाओ मे भी ताल्मेल बिठाया जाये ।

सदस्य-देशो के बीच उत्पादन मे विशेषीकरण व सहयोग सर्वांगीण कायक्रम का
एक प्रमुख मुद्दा है। चालू दीघकालिक करारो व सधियो म अथतत्र उत्पादन, व्यापार,
वैज्ञानिक, प्राविधिक, मौद्रिक कानूनी व अय प्रश्नो का सम्पूण दायरा शामिल है।

हाल मे हस्ताक्षरित आम करार के अनुसार पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद
के सदस्य देश ५ ००,००० टन वार्षिक लुगदी तयार करने की क्षमता वाली एक बडी
लुगदी फैक्टरी के निर्माण मे सयुक्त रूप से भाग लेंगे। यह परियोजना सोवियत भूमि
पर उस्त इलिम के समीप तैयार की जायेगी। इस सयत्र का उत्पादन इस करार पर
हस्ताक्षर करने वाले सभी देशो की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए पयाप्त होगा।
करार तयार करने के दौरान हासिल अनुभव ने यह दिखा दिया है कि इस प्रकार के
सहयोग की महान सम्भावनाए हैं।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के यूरोपीय सदस्य राज्यो की विद्युत
शक्ति की आवश्यकता पूरी करने के लिए बुल्गारिया, जमन जनवादी जनतत्र हगरी व
चेकोस्लोवाकिया मे बडे-बडे आणविक बिजलीघरो का निर्माण हो रहा है। सोवियत
सघ इस काय मे आवश्यक तकनीकी सहायता दे रहा है। १९७२ के अत म चेकोस्लो
वाकिया का पहला आणविक बिजलीघर चालू हो गया था। पारस्परिक आर्थिक सहा
यता परिषद के सदस्य राज्यो ने सिद्धातत पारमाणविक बिजली इजीनियरी के लिए
प्राविधिक आधार के निर्माण मे अपने प्रयासो को समवित करना स्वीकार कर लिया
है। बिजली इजीनियरो के सामने एक आवश्यक काय है ७५० के वी के सम्प्रेषण
सम्बधी एक तानेबाने का जो सोवियत सघ के यूरोपीय भाग तथा पारस्परिक आर्थिक
सहायता परिषद के सदस्य-देशो की विद्युत ग्रिड की कुशलता बढा देगा, बहुपक्षीय
आधार पर निर्माण करना।

कुछ चीजो के उत्पादन का सयुक्त नियोजन शुरू करने का पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देशो का निणय, जमे कायक्रम नियत्रित मशीन औजारो का सयुक्त नियोजन शुरू करने का निणय अत्यत महत्वपूण है । ट्रक व ट्रैक्टर, कृषि सबधी मशीनें, नदी व समुद्र म सतरण करने वाले जहाजो आदि का निर्माण करने वाल सयत्र के उत्पादन म विशेषीकरण व सहयोग सम्बधी बहुपक्षीय करारा पर हस्ताक्षर हो चुके हैं। अनेक द्विपक्षीय करारा पर भी हस्ताक्षर हुए है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देशा न बीस से अधिक अत र्राष्ट्रीय सगठन बनाय है जसे इटरमेटल, इटरखेम, इटरआटोमइस्ट्रुमेट व एग्रो माक । अनेक देश इटरस्पुतनिक सस्था के काय म भाग लेत हैं।

अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग बक और अतर्राष्ट्रीय पूजी विनियोग बैंक एकी करण की प्रक्रिया म बडी भूमिका अदा करते हैं। १९६४ से, जबकि अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग बैंक का गठन हुआ था, पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के पारस्परिक वित्तीय कार्यो का परिमाण लगभग दुगुना हो गया है। १९७२ मे इस प्रकार के कार्यो का परिमाण ४३ अरब हस्तातरणीय रूबलो से अधिक हो गया।

अपने अस्तित्व के दो वर्षो मे (१९७१ ७२) अतर्राष्ट्रीय पूजी विनियोग बैंक न पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के सदस्य देशो म २६ परियोजनाओ के निर्माण व पुन सज्जीकरण मे कुल लगभग २८ करोड हस्तातरणीय रूबलो का ऋण जारी किया था। इन परियोजनाओ मे शामिल है चेकोस्लोवाक ताता वक्स और हगेरियाई इकारुस सयत्र जिनका आधुनिकीकरण हो चुका है तथा बुल्गारिया, हगरी, जमन जनवादी जनतत्र, पोलैंड, रूमानिया और चेकोस्लोवाकिया स्थित सयत्र जिनका निमाण हो चुका है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशो के बीच १९७२ म वज्ञानिक व प्राविधिक सहयोग मे सभी क्षेत्रो के वे उद्योग शामिल थे जो प्राविधिक प्रगति व उत्पादन की कुशलता निर्धारित करते है।

हाल के वर्षो मे तालमेल बिठाने वाले लगभग ३० केन्द्रो का गठन हुआ है जो सदस्य राज्या के राष्ट्रीय अनुसधान सस्थाना के कार्यों का एकीकरण करते हैं। इसके अलावा दो वज्ञानिक-उत्पादन समुच्चयो की भी स्थापना की गई है।

पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद की वज्ञानिक व तकनीकी सहयोग समिति तथा परिषद के स्थायी आयोग बहुत लाभदायक काम कर रहे हैं। आज इस परिषद के निकाय सौ से अधिक वज्ञानिक, तकनीकी व आर्थिक दीघकालिक योजनाओ पर काम कर रह हैं। द्विपक्षीय वज्ञानिक व प्राविधिक सहयोग का भी प्रसार हो रहा रहा है।

विश्व समाजवाद के विकास मे आर्थिक एकीकरण एक वस्तुपरक एतिहासिक प्रक्रिया है। सर्वांगीण कायक्रम पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के देशा मे समाज

वादी एकीकरण के लक्ष्यो व प्रमुख दिशाओ के सम्बन्ध मे उनके विचारो की एकरूपता प्रतिबिम्बित करता है । सहयोग के अधिक प्रसार और उसमे सुधार से बिरादराना समाजवादी देशो को अपने आर्थिक विकास को तेज करने मे सहायता मिलेगी ताकि यह विकास एकरूपता के साथ उच्च स्तर पर पहुच जाये और राष्ट्रीय जीवन स्तर ऊपर उठे। इससे उनकी एकता भी मजबूत होगी और विश्व समाजवादी व्यवस्था सुदृढ होगी।

विकासशील देशो के साथ आर्थिक सहयोग इस शती के तीसरे व चौथे दशक मे तरुण सोवियत राज्य ने उन कुछ राज्यो को सहायता देना शुरू कर दिया था, जिन्होने औपनिवेशिक जुए को उतार फेंका था। उस समय सोवियत सघ ने तुर्की, ईरान व अफगानिस्तान से करार सम्पन्न किये थे। सोवियत सघ ने इन देशो को कपडा मिल, कपास से बीज अलग करने के कारखानो व एलीवेटरो के निर्माण मे सहायता दी, यद्यपि उस समय इसके अपने ससाधन बहुत ही सीमित थे।

आज सोवियत सघ ने एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमरीका के ४८ विकासशील देशो के साथ आर्थिक व तकनीकी सहयोग सबधी करार सम्पन्न किए है। गत दस वर्षों मे इन देशो को सोवियत आर्थिक व तकनीकी सहायता मे छ गुनी से अधिक वृद्धि हुई है और आशा की जाती है कि यह सहायता और इसका दायरा बढता जायेगा।

१९७१ ७५ के लिए सोवियत सघ की पचवर्षीय आर्थिक विकास योजना के लिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस के निर्देशो में कहा गया है "एशियाई, अफ्रीकी व लटिन अमरीकी विकासशील देशो के साथ स्थायी बाह्य आर्थिक, वैज्ञानिक व प्राविधिक सम्बन्धो का विकास पारस्परिक लाभ की शर्तों पर तथा उनकी आर्थिक स्वतत्रता को सुदृढ बनाने के हित मे जारी रहेगा।'

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस मे अपनी रिपोर्ट मे सोवियत सघ की मत्रिपरिषद के अध्यक्ष अलेक्सेई कोसिगिन ने कहा कि समानता व पारस्परिक हितो के प्रति सम्मान के सिद्धान्तो पर आधारित विकासशील देशों के साथ सोवियत सघ का सहयोग श्रम के स्थायी विभाजन का स्वरूप ग्रहण कर रहा है जो अतर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धो के क्षेत्र मे साम्राज्यवादी शोषण की प्रणाली के विपरीत है।

१९७२ मे समस्त सोवियत विदेश व्यापारिक कारोबार मे विकासशील देशो का हिस्सा १३ प्रतिशत हो गया था जिसका मूल्य ३ अरब ३० करोड रूबल था। सोवियत सघ के सबसे बडे व्यापारिक साझेदार थे मिस्र अरब गणराज्य (८१ करोड ४० लाख रूबल) भारत (४७ करोड दस लाख रूबल) ईरान (२३ करोड रूबल), इराक (१५ करोड २० लाख रूबल) तुर्की (१६ करोड ८० लाख रूबल) अल्जीरिया (११ करोड ५० लाख रूबल) और सीरिया (११ करोड ३० लाख रूबल)। सोवियत सघ अफगानिस्तान, मलयेशिया, मोरक्को गिनी, घाना, लीबिया, नाइजीरिया, ब्राजील, पेरू और एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमरीका के बहुत से अन्य विकासशील देशो से

व्यापार वढा रहा है। सोवियत सघ ने गणप्रजातत्री वगलादेश के साथ भी आर्थिक सहयोग के सम्बन्ध स्थापित कर लिये है।

सोवियत सहायता से विकासशील देशा मे ८०० से अधिक औद्योगिक प्रतिष्ठान, शैक्षणिक व चिकित्सा सस्थान तथा कृषि सम्बन्धी यूनिटो का निर्माण हो चुका है या वे निर्माणाधीन है। इसम से ४०० तो चालू हो चुके हैं।

विकासशील देशा का सोवियत आर्थिक व तकनीकी सहायता का लक्ष्य है उन देशा की वस्तुत स्वतत्र अर्थतत्रो, मुख्य रूप स उनके राज्य क्षेत्र के निर्माण तथा दृढी करण मे सहायता देना जिससे उनकी अत्यावश्यक समस्याओ के समाधान के लिए राष्ट्र-व्यापी पमाने पर ससाधना को इकट्ठा करना सम्भव हो सके।

इसीलिए सोवियत सहायता का ७० प्रतिशत से अधिक भाग उद्योग म जाता है। सोवियत सहायता से बिजलीघर, लौह व अलौह धातु मिल, इजीनियरी धातुकर्म और रासायनिक फक्टिरिया, तेलशोधक कारखाने और भारी उद्योग के अन्य प्रतिष्ठान भारत, मिस्र अरब गणराज्य, अल्जीरिया, ईरान, तुर्की पाकिस्तान और अन्य देशो म बनाये जा रहे हैं, जिनके पास इनके लिए समुचित आर्थिक आधार मौजूद है।

सोवियत सघ विकासशील देशो को अनुकूल शर्तों पर ऋण मजूर करता है। इन देशो को कुल सोवियत ऋण ५ अरब रूबल से अधिक दिया जा चुका है। सोवियत सहायता से निर्मित प्रतिष्ठान उस देश की सम्पत्ति होते है जहा उनका निर्माण होता है। सोवियत सघ का उनके मुनाफो मे कोई हिस्सा नही होता। इन देशो की ओर से ऋण की अदायगी सोवियत सघ को अपने पारम्परिक निर्यात की चीजें जसे, कच्ची अलौह धातुओ के सस्कृत पदाथ, तेल, लम्बे रेशे वाली कपास, प्राकृतिक रबड ऊन कच्ची खालें, पटसन, तेल के बीज, चावल चाय काफी, कोको की फलिया, गम क्षेत्रीय फल और अन्यान्य प्रकार की तयार चीज भेज कर की जाती है। इस प्रकार का सहयोग विकासशील देशा को एक स्वतत्र राष्ट्रीय अर्थतत्र का भी विकास करने म सहायता देता है और उन्ह एक स्थायी मण्डी प्रदान करता है।

सोवियत सहायता स निर्मित प्रतिष्ठान विकासशील देशा के आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। ये प्रतिष्ठान एक देश के एक विशेष पदार्थ का उत्पादन महत्वपूर्ण अ श मे और कुछ स्थितिया मे तो अधिकतर अ श मे करेंगे या कर रहे है। उदाहरणार्थ, सोवियत सहायता से निर्मित भिलाई लौह व इस्पात कारखाना भारत के लौह व इस्पात उद्योग के सावजनिक क्षेत्र का एक प्रमुख प्रतिष्ठान बन गया है। इसमे देश म कुल उत्पादित इस्पात का ३० प्रतिशत उत्पादित होता है। शीघ्र ही इसकी क्षमता ३२ लाख टन प्रतिवर्ष हो जायगी, और बाद मे ७० लाख टन हो जायेगी।

भारत स्थित बरौनी व कोयली म सोवियत सहायता से निर्मित तेलशोधक कारखाने देश के कुल तेल उत्पादन का एक तिहाई भाग पदा करते हैं।

कुल मिला कर सोवियत सघ न भारत मे २४ बडे औद्योगिक प्रतिष्ठानो के निर्माण म सहायता दी है तथा इस क्षेत्र मे आगे भी और अधिक काम करना बाकी है। १६७३

म कारखाने म इस्पात कारखाने का पहला हिस्सा चालू किया गया। इसके उत्पादन में ठण्डे वलित इस्पात के चदरे शामिल हैं जिनकी भारत म बहुत माग है। इस सयत्र के पूरा होने पर एक करोड टन इस्पात का उत्पादन होगा।

मिस्र म २१ लाख किलोवाट की क्षमता वाला अस्वान पनबिजलीघर सोवियत सहायता से निर्मित हुआ। अब सोवियत सघ मिस्र अरब गणराज्य को हलवान लौह व इस्पात कारखाने (१५ लाख टन प्रतिवर्ष क्षमता) के विस्तार म, एक अलुमीनियम फैक्टरी एव फासफोरस फैक्टरी और अन्य परियोजनाओ के निर्माण म सहायता प्रदान कर रहा है। कुल मिला कर सोवियत सघ ने मिस्र अरब गणराज्य म ३० से अधिक बडे बडे औद्योगिक प्रतिष्ठानो के निर्माण म सहायता दी है जो देश के अर्थतत्र के विकास म महान योगदान कर रहे हैं।

गावो म बिजली लाने म सोवियत मिस्री सहयोग का मिस्र की जनता के लिए बहुत महत्व है। १९७२ के अन्त तक ६ सौ गावो म बिजली पहुच जायगी। इस योजना मे मिस्र के ४ १०० गावो म बिजली प्रदान करने की व्यवस्था है।

सोवियत सहायता से इराक म राष्ट्रीय उद्योग की नयी शाखाओ का उदभव हुआ है। उदाहरणार्थ सोवियत सहायता स एक राष्ट्रीय इजीनियरी उद्योग की आधार शिला रखी गई और इसके साथ साथ एक विद्युत-तकनीकी सयत्र व एक कृषि मशीन सयत्र का निर्माण हुआ।

१९७२ के वसन्त मे सोवियत सघ ने इराक को उत्तरी रूमेला तेल क्षेत्र के विकास म सहायता की जिसका वार्षिक उत्पादन ८० लाख टन है और इस तेल क्षेत्र को फाओ बदरगाह से जोडने के लिए पाइपलाइन के निर्माण मे सहायता प्रदान की। ये दो परियोजनाए इराक मे एक राष्ट्रीय तेल निष्कर्षण उद्योग के निर्माण मे प्रथम योगदानो कोप्रतिबिम्बित करती है। नये तेल क्षेत्र का उत्पादन १ करोड ८० लाख टन तक पहुचाने की योजना है।

अब सोवियत सगठन १५ लाख टन की क्षमता वाले एक तेलशोधक कारखाने की, जो मोसूल म बनना है तथा बगदाद से बसरा तक की ६०० किलोमीटर लम्बी पाइपलाइन की डिजाइन तैयार कर रहे हैं। कुल मिला कर सोवियत सघ ने इराक को लगभग ७० बडे प्रतिष्ठानो के निर्माण मे सहायता प्रदान की है।

ईरान लगभग ३० वर्षो तक एक इस्पात मिल बनाने के लिए व्यर्थ ही पश्चिमी सहायता पाने की कोशिश करता रहा। अब सोवियत सहायता से इसने १२ लाख टन वार्षिक क्षमता वाली एक इस्पात मिल का इस्फहान मे निर्माण शुरु कर दिया है। इस सयत्र के पहले हिस्से ने १९७३ के प्रारम्भ मे उत्पादन आरम्भ किया।

सोवियत सघ अल्जीरिया को अनेक महत्वपूर्ण परियोजनाओ के निर्माण म सहायता दे रहा है। ये हैं इस्पात मिल, एक ताप बिजलीघर और खनिकर्म तथा कच्ची धातु के शोधन के प्रतिष्ठान। सोवियत सघ शैक्षणिक संस्थानो की स्थापना मे भी सहायता प्रदान कर रहा है।

सीरिया में फुरात पनबिजली समुच्चय का निर्माण जारी है। इस पनबिजलीघर का उत्पादन वर्तमान समय में सीरिया के तमाम बिजलीघरों से अधिक होगा। इस समुच्चय का सिंचाई वाला भाग लगभग ६ ०० ००० हेक्टर जमीन में पानी देगा—जो देश की तमाम सिंचित भूमि के लगभग बराबर होगा। बिजलीघर का पहला भाग १६७३ की समाप्ति के पहले ही चालू हो गया।

सोवियत संघ ने अफगानिस्तान को विभिन्न प्रकार के प्रतिष्ठानों के निर्माण में सहायता दी है। आजकल अफगानिस्तान के पहले रासायनिक प्रतिष्ठान—एक नाइट्रोजन उर्वरक संयंत्र—के निर्माण का कार्य मजार ए शरीफ में पूरा होने वाला है।

सोवियत संघ अन्य परियोजनाओं के अलावा एक लौह व इस्पात कारखाने के निर्माण में तुर्की की सहायता कर रहा है। यह कारखाना मध्य पूर्व में अपने ढंग का एक सबसे बड़ा संयंत्र होगा। इस संयंत्र के पूर्ण रूप से निर्मित हो जाने पर तुर्की का इस्पात उत्पादन दुगुना हो जायगा। यद्यपि तुर्की में बाक्साइट के समृद्ध भण्डार हैं पर इसे विवश होकर अलुमीनियम का आयात करना पड़ता है। १६७३ में अलुमीनियम आक्साइड का उत्पादन प्रारम्भ हुआ, और बाद में तुर्की के प्रथम अलुमीनियम कारखाने में अलुमीनियम और बलित अलुमीनियम का उत्पादन होगा। यह कारखाना सोवियत सहायता से निर्मित हो रहा है।

किसी परियोजना का आर्थिक महत्व सदा इसके आकार के अनुसार नहीं होता। भारत में भिलाई मिल या मिस्र में अस्वान समुच्चय जैसे विशालकाय कारखानों के साथ साथ सोवियत संघ विकासशील देशों को छोटे लेकिन आर्थिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों के निर्माण में भी सहायता प्रदान कर रहा है।

उदाहरणार्थ, सोवियत संघ ने श्रीलंका गणराज्य का ३ ६०,००० टायर का प्रतिवर्ष उत्पादन करने वाले संयंत्र के निर्माण में सहायता प्रदान की और इस प्रकार देश की आवश्यकताओं की पूर्ति हुई। विश्व के चौथे सबसे बड़े प्राकृतिक रबड़ के उत्पादक इस गणराज्य को इस संयंत्र के निर्माण से पहले रबड़ की चीजें खरीदने के लिए विदेशी मुद्रा की पर्याप्त राशि खर्च करनी पड़ती थी।

सोवियत संघ ने गिनी, सूडान, सोमालिया और अन्य विकासशील देशों को चीजों को डिब्बों में बंद करने वाली फैक्टरियों, डेयरी संयंत्रों तथा बुनाई व कताई मिलों के निर्माण में सहायता दी। इस प्रकार, कृषि उत्पादों की स्थानीय प्रोसेसिंग, जनसंख्या को अतिरिक्त रोजगार मिलना और खाद्य व उपभोक्ता मालों का आयात कम करना संभव हुआ है।

अतीत में बहुत से देशों को अपने प्राकृतिक संसाधनों के फैलाव का ज्ञान तक नहीं था। फलतः पश्चिमी विशेषज्ञ बहुत वर्षों तक यह दावा करते रहे कि भारत में कोई भी महत्वपूर्ण तेल भण्डार नहीं है, और इस प्रकार वे इस देश को तेल व तेल से बने पदार्थों के आयात के लिए बाध्य करते रहे। लेकिन सोवियत भूगर्भशास्त्रियों ने भारत में २६ तेलभण्डारों की खोज की। आजकल ये सोवियत विशेषज्ञ लगभग २० देशों

म दूसरा अन्वेषण कर रहे हैं। उन्होंने अफगानिस्तान व पाकिस्तान म गैस का, इराक म गधक व फोस्फोराइट का, अल्जीरिया मे पारा, बराइट और अलोह धातुओ का मिस्र अरब गणराज्य व सीरिया म तेल का तथा माली म सीमेंट के कच्चे माल का पता लगाया है।

१९५५ और १९७२ के बीच क वर्षो म ८० ००० स अधिक सोवियत विशेषज्ञो ने सोवियत सघ व इन देशो के बीच सम्पन्न हुए सधियो व करारो क अनुसार विकासशील देशो म काम किया। उन्होंने अपने ज्ञान व अनुभव की साझेदारी करते हुए स्थानीय विशेषज्ञो के साथ घनिष्ठतापूर्वक मिल कर काम किया। हाल के वर्षो म सोवियत विशेषज्ञो न विकासशील देशो के निर्माण स्थलो पर ही २,५०,००० हुनरमद कर्मियो व तकनीशियनो को प्रशिक्षित किया है। कई हजार लोगो ने सोवियत सघ म उत्पादन सबधी प्रशिक्षण प्राप्त किया है। बहुत से देशो के हजारो विशेषज्ञो न सोवियत उच्चतर शिक्षा सस्थानो म इजीनियर डाक्टर, कृषिशास्त्री आदि की शिक्षा प्राप्त की।

सोवियत सघ विकासशील देशो को १२० स अधिक शैक्षणिक सस्थानो की स्थापना म सहायता देता आया है जिनम से ८० आजकल चालू हैं। इनम अफगानिस्तान स्थित पोलीतकनीकी सस्थान, कम्बोडिया स्थित उच्चतर प्राविधिक सस्थान, गिनी स्थित पोलीतकनीकी सस्थान, अल्जीरिया स्थित तेल व गैस सस्थान तथा मिस्र अरब गणराज्य, इराक, ईरान व यमन स्थित शैक्षणिक केन्द्र शामिल हैं।

सोवियत सघ विकासशील देशो की आर्थिक स्वतत्रता स्थापित करन म अपनी सहायता जारी रखेगा।

आर्थिक दृष्टि से विकसित देशो से व्यापार हाल के वर्षो म औद्योगिक दृष्टि से विकसित पूजीवादी देशो के साथ सोवियत व्यापार व आर्थिक सम्बन्धो मे प्रमुख परिवर्तन हुए है। विशेषत यूरोप मे अन्तर्राष्ट्रीय तनाव में कमी ने पश्चिमी यूरोप के देशो के साथ सोवियत सघ के व्यापारिक व आर्थिक सम्बन्धो के विकास मे बहुत योगदान किया है। गत आठ वर्षो मे इन देशो के साथ व्यापारिक कारोबार दुगुना हो गया है। यूरोपीय पूजीवादी देशो के साथ सोवियत सघ के वर्तमान व्यापार सम्बन्धो की अति लाक्षणिक विशेषता है उनके बीच हो रहे दीर्घकालिक स्वरूप के व्यापार सम्बन्धी करार। उदाहरणार्थ, सोवियत सघ ने फिनलैण्ड, फ्रास और आस्ट्रिया के साथ दस वर्षीय अवधि के लिए आर्थिक, प्राविधिक और औद्योगिक सहयोग के करार सम्पन्न किय हैं।

सोवियत सघ के पश्चिम यूरोपीय व्यापारिक साझेदारो म आज जर्मन सघ गणराज्य का पहला स्थान है। १९७२ म दोनो देशो के बीच ८२ करोड ८० लाख रूबल का व्यापारिक क्रय विक्रय हुआ। यह समाजवादी देशो व जर्मन सघ गणराज्य के बीच सुधरे हुए राजनीतिक सम्बन्धो का प्रतिबिम्ब है। सोवियत फ्रास सहयोग का भी ठीक ढग से विकास हो रहा है। १९६५ ७२ की अवधि मे दोनो देशो के बीच व्यापार म १७० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

फिनलैण्ड सोवियत संघ का अभी भी प्रमुख व्यापारिक साझेदार है। इस देश के साथ १६७२ में ६० करोड़ २० लाख रूबल का व्यापारिक कारोबार हुआ जिसकी वजह से सोवियत संघ के पश्चिमी यूरोपीय व्यापारिक साझेदारों में फिनलैण्ड को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ।

सोवियत संघ और ब्रिटेन के बीच ३५ करोड़ ८० लाख रूबल का व्यापार हुआ, इटली से ४६ करोड़ ६० लाख रूबल का, हालैण्ड में २२ करोड़ २० लाख रूबल का, स्वीडन से १८ करोड़ ६० लाख रूबल का और आस्ट्रिया से १६ करोड़ ४० लाख रूबल का व्यापार हुआ।

आर्थिक, वैज्ञानिक व तकनीकी सहयोग के संयुक्त सोवियत इटली आयोग के फरवरी १६७३ के अन्त में हुए नियमित अधिवेशन ने आगामी दस वर्षों के लिए आर्थिक, प्राविधिक व औद्योगिक सहयोग के विकास के लिए एक करार सम्पन्न करने हेतु निकट भविष्य में बातचीत करने के निर्णय का अनुमोदन किया।

प्राकृतिक गैस की आपूर्ति के सम्बन्ध में सोवियत संघ व अनेक पश्चिमी यूरोपीय देशों के बीच हुए करारों का भी बहुत महत्व है। १६७३ ७४ में ५ ००० कि मी लम्बी ट्रांसयूरोपीय पाइपलाइन के द्वारा आस्ट्रिया इटली जर्मन संघ गणराज्य और फ्रांस को सोवियत गैस दी जायगी। फिनलैण्ड की ओर एक पाइपलाइन निर्माणाधीन है। १६७५ के प्रारम्भ में इस पाइपलाइन से दी जाने वाली प्राकृतिक गैस से फिनलैण्ड की ईंधन और मूल्यवान रासायनिक कच्चे माल की आवश्यकताएं पूरी होने लगेंगी।

पूंजीवादी देशों से सोवियत संघ के विदेश व्यापारिक कारोबार में जापान का अग्रणी स्थान है। १६७२ में ८० करोड़ रूबल से अधिक मूल्य का व्यापार हुआ और इसके बढ़ने की आशा है। सोवियत संघ ने जापान के साथ एक करार सम्पन्न किया है जिसके अनुसार जापान सुदूर पूर्व में काष्ठ संसाधनों के विकास में उपयोग में लाये जाने वाले उपकरणों की आपूर्ति करेगा। इसके बदले में जापान सोवियत संघ से इमारती लकड़ी और अन्य चीजें लेगा। रैंगल खाड़ी में एक समुद्री बन्दरगाह के निर्माण के लिए भी सोवियत जापानी करार पर हस्ताक्षर हो चुके हैं।

बहुत वर्षों बाद १६७२ में सोवियत-अमरीकी व्यापारिक कारोबार में वृद्धि होने लगी और वह बढ़ कर ५४ करोड़ ८० लाख रूबल की राशि तक पहुंच गया जो कम महत्वपूर्ण नहीं है। दोनों देशों की आर्थिक शक्ति व संसाधनों को ध्यान में रखते हुए कोई कारण नहीं है कि इस राशि में यथेष्ट वृद्धि नहीं हो।

मई १६७२ की सोवियत अमरीकी शिखर वार्ता में स्वीकृत दस्तावेजों ने दोनों देशों के बीच आर्थिक सम्बन्धों के विकास में आमूल सुधार की सम्भावनाएं पैदा की हैं और इससे पारस्परिक लाभ व समानता के सिद्धान्तों पर सोवियत संघ और अमरीका के बीच स्थायी दीर्घकालिक सम्बन्धों के निर्माण के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय कानूनी आधार पैदा हुआ है।

अक्तूबर १९७२ म वाशिंगटन म अनेक करारा पर हस्ताक्षर हुए जिन्होंने सोवियत अमरीकी आर्थिक सम्बन्धा को एक ठोस व्यापारिक आधार प्रदान किया। आशा की जाती है कि अनुकूल परिस्थितिया होने पर सोवियत अमरीकी व्यापार की राशि आगामी कुछ वर्षों म तिगुनी हो जा सकती है।

१९७१ ७५ के दौरान सोवियत विदेश व्यापार की राशि म ३३ ३५ प्रतिशत की वृद्धि की आशा है। इसके अलावा सोवियत निर्यात के ढाचे म और अधिक सकारात्मक परिवतन होगे। इसमे तयार माल के अनुपात म भी वृद्धि होगी। यह बात सबस पहले मशीनो व औजारा म सम्बन्धित है जो आज भी कुल सोवियत निर्यात का २४ प्रतिशत है। मशीन औजार ढलाई व दाब उपकरण, लौह व इस्पात उद्योग एव रसायन उद्योग के सयन्त्र कारें, वायुयान व जहाज जिन पर 'सोवियत सघ म निर्मित' अकित होता है दुनिया म अधिकाधिक प्रशसा प्राप्त कर रह हैं। नवीं पचवर्षीय अवधि क अन्दर इन मालो के निर्यात की वृद्धि दर सोवियत सघ के कुल निर्यात की वृद्धि-दर से अधिक हो जायगी। इसके साथ साथ आयाता का मूल्य अदा करन के लिए सोवियत सघ अध तयार चीजा व कच्चे माला का निर्यात जारी रखेगा।

वस्तुत सोवियत उद्योग मशीनो व उपकरण की राष्ट्रीय अथतन्त्र की तमाम आवश्यकताए पूरी करने म समथ है। लेकिन सोवियत नीति अन्तर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन स उद्भूत लाभो का बढावा देने की है। अत सोवियत सघ कुछ प्रकार के उपकरणा, मशीन औजार व लाइसेंसो का आयात करना जारी रखेगा क्योंकि यह आर्थिक दृष्टि स अधिक वाछनीय है। ये आयात २४वी पार्टी काग्रेस द्वारा तय किये गय प्रमुख आर्थिक कार्यों के कार्यान्वयन म—सोवियत जनता के जीवन-स्तरा को और ऊपर उठाने म—सहायता करगे। इसी कारण सोवियत सघ तयार उपभोक्ता माल तथा उन्हे तैयार करने के लिए कच्चे माला का भी आयात करता है। १९७२ म सोवियत आयात म इन मालो का अनुपात ४० प्रतिशत से अधिक था। आशा है कि आगामी वर्षों म भी आयात का स्तर ऐसा ही रहेगा।

सोवियत सघ बद व्यापारिक गुटा या एसोसियशना का विरोध करता है तथा हर प्रकार के भेदभाव से मुक्त बहुपक्षीय आर्थिक सम्बन्धो के विकास का समथन करता है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य

जनता के स्वास्थ्य की देखभाल करना सोवियत राज्य के प्राथमिक कार्यों व कर्तव्यों म से एक है।

सोवियत सावजनिक स्वास्थ्य प्रणाली स्वास्थ्य रक्षा के सम्बन्ध मे नागरिका के अधिकार सोवियत सघ के सविधान मे और दिसम्बर १९६९ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत द्वारा पारित सावजनिक स्वास्थ्य सम्बन्धी सोवियत सघ के तथा सघ जनतत्रा के कानून के बुनियादी नियमा म दज ह।

इन बुनियादी नियमा म कहा गया है कि "सावजनिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध मे सोवियत सघ और सघ जनतत्रा का कानून सावजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र म सामाजिक सम्बन्धा का नियमबद्ध करता है ताकि नागरिका की शारीरिक व बौद्धिक शक्तियो का सुसगत विकास हा सके, उनके स्वास्थ्य की रक्षा हो सके और यह निश्चित हो सके कि उनकी काम करने की क्षमता एक ऊचे स्तर पर कायम रह और उनका जीवन दीर्घ हो व सक्रिय रहे तथा बीमारिया राकी जा सक और बीमारिया होने की दर म कमी हो और असमर्थता की सख्या व मृत्यु की दर मे कमी हो, तथा नागरिका के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक तत्वो व परिस्थितिया को खत्म किया जा सके।'

बुनियादी नियम सावजनिक स्वास्थ्य की सोवियत प्रणाली के सारे पक्षो का सार पेश करत ह और उन्ह कानूनी अभिव्यक्ति देते है। ये कानून लोगा को काम करने और जीवन यापन की ज्यादा से ज्यादा अच्छी परिस्थितिया प्रदान करन के लिए सामाजिक, आर्थिक, चिकित्सा सबधी, राज्य व सावजनिक साधना का एक समुच्चय हैं।

सोवियत सावजनिक स्वास्थ्य प्रणाली के बुनियादी सिद्धान्त स्वास्थ्य सेवाआ का राज्य आधार पर सगठन, सबके लिए नि शुल्क चिकित्सा सहायता, केन्द्रबद्ध निर्देशन, नियोजन व लागत, चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियो का व्यवहार मे अधिकाधिक प्रयोग, राग रोकने पर जार और स्वास्थ्य रक्षा के काय मे सरकार और सामूहिक सगठना व सभी लोगो की सक्रिय शिरकत।

सावजनिक स्वास्थ्य की सावियत प्रणाली समग्र समाज की और प्रत्येक नागरिक की आवश्यकताए पूरी करती है और यह इस प्रकार सगठित है जिसम इसम अधिक सुधार सरलता से हो सकता है। इसलिए यह आश्चय की बात नही है कि मुख्य रूप स सावियत सघ द्वारा पारित सिद्धान्ता के अनुरूप सावजनिक स्वास्थ्य सगठन के सिद्धान्ता की विश्व स्वास्थ्य सगठन न उन देशो से सिफारिश की है जो राजकीय सावजनिक स्वास्थ्य प्रणाली का गठन कर रहे हैं।

सावियत सघ म प्राइवेट अस्पताल या क्लिनिक नही हैं। स्वास्थ्य रक्षा या पुन स्वास्थ्य-लाभ करने या स्वास्थ्य मजबूत बनान के लिए स्थापित तमाम सस्थाए राज्य के

१ म चरना है १९७३ म सावजनिक स्वास्थ्य पर राज्य ने कुल मिला कर १० अरब ७० करोड़ रूबल म अधिक राशि आवन्टित की थी। इसके अलावा, विभिन्न प्रतिष्ठान व सगठन अपन कमचारियो के लिए चिकित्सा व मनोरजन की सुविधाओ पर धन लगाते हैं।

सोवियत सघ म राज्य प्रतिवप औसतन २०० रूबल से अधिक ४ व्यक्तियो के परिवार की स्वास्थ्य सेवाओ पर खच करता है।

मुफ्त व समुचित चिकित्सा सहायता सभी सोवियत नागरिको को एक जसी मिलती है चाहे वह जुकाम स सबधित हो या प्रमुख विशेषज्ञो द्वारा सम्पादित अत्यत जटिल शल्यक्रिया हो और कीमती व सूक्ष्म उपकरणो से होने वाला इलाज हो। मुफ्त चिकित्सा सहायता चिकित्सको व रोगियो के बीच स्वतत्र सम्बध स्थापित करती है जो पारस्परिक विश्वास सम्मान व सच्ची मानवीयता पर आधारित है।

सामान्य चिकित्सा सेवा प्रत्येक व्यक्ति आवश्यक चिकित्सा सहायता सबसे पहले अपने स्थानीय क्लिनिक म ही हासिल कर सकता है। सोवियत सघ म विभिन्न प्रकार के कुल मिला कर ३६,६०० से अधिक क्लिनिक हैं। १९७५ तक अन्य बडे ४०० क्लिनिक खोले जाने हैं।

अधिकतर क्लिनिक अस्पतालो से सम्बद्ध होते हैं और आम तौर पर वहा प्रमुख चिकित्सा विशेषज्ञताओ के विभाग होते हैं, जसे चिकित्सा विज्ञान, शल्य-चिकित्सा, स्त्रीरोग विज्ञान तत्रिका विज्ञान कान, नाक और गले के अवरोध, आख की बीमारिया आमाशय विकार आदि के विभाग तथा निदान व उपचार के लिए भी विभिन्न कमरे व प्रयोगशालाए होती हैं। वे जनसख्या की रोग निरोधक पडताल भी करते हैं जिससे कि रोगो का प्रारम्भिक चरणों म ही पता चल जाये। प्रत्येक क्लिनिक का एक विशेष क्षेत्र होता है जो प्रखण्डो मे विभक्त होता है। प्रखडीय चिकित्सक क्लिनिक म रोगी को देखता है और उनके घर भी जाता है। आवश्यकता पडने पर वह रोगियो को अन्य विशेषज्ञो के पास भेजता है और उन्हे परीक्षण के लिए या इलाज के लिए अस्पताल भेजता है। (रोगी स्वय भी विशेषज्ञो स परामश ले सकते हैं)। रोग रोकने के उद्देश्य से प्रखण्डीय चिकित्सक अपने रोगियो की जीवन यापन व काम करने की स्थितियो का अध्ययन करता है।

क्लिनिको के कमचारी दो पालियो म काम करते है और चिकित्सक बारी बारी से सुबह और शाम को काम करते हैं। चिकित्सक प्रतिदिन छह घण्टे काम करते हैं।

दाखिल रोगियो का इलाज विशेषीकृत इलाज के लिए यहा २७,००,००० स अधिक अस्पताली बिस्तर हैं। १९४० मे अस्पताली बिस्तरो की सख्या प्रति दस हजार की आबादी पर ४० थी जबकि आज यह ११२ है जो अत्यधिक विकसित देशो की बनिस्बत, जिनम अमरीका शामिल है बहुत अधिक है।

१९७५ के अन्त तक सोवियत अस्पतालो म बिस्तरो की सख्या ३० लाख हो जायगी अथवा १०,००० की आबादी पर ११७ बिस्तर होगे।

हाल के वर्षो मे सोवियत सघ मे शहरो म एक हजार या इससे अधिक बिस्तरा वाले बडे आम अस्पतालो का निर्माण करने तथा गावो म ३०० ४०० बिस्तरो वाले अस्पताल तयार करने की प्रवृत्ति रही है। इससे विशेषीकृत चिकित्सा सहायता के सगठन म सुधार लाने म सहायता मिलेगी और रोग निरोध व उपचार म और बेहतर परिणाम उपलब्ध करने मे सहायता मिलेगी।

प्राथमिक उपचार फौरी सहायता सेवा और विशेष प्राथमिक उपचार सेवा दिन रात काम करती है। कुछ ही दिनो पहले तक प्राथमिक उपचार केन्द्र सामान्यत स्वतत्र रूप से काम करते थे। लेकिन यह पाया गया कि व बस अस्पताला के सहयोग म अधिक बेहतर काम करते हैं जहा योग्यतापूर्ण प्राथमिक उपचार किया जा सकता हो और जहा आपातकालीन शल्य चिकित्सा व चिकित्सा विज्ञान आदि मे पर्याप्त अनुभव सचित किया गया हो। इससे प्राथमिक उपचार केन्द्र म काम करने वालो को अपनी योग्यता मे निरन्तर सुधार लाने में सहायता मिलती है और प्राथमिक उपचार व योग्यतापूर्ण अस्पताली चिकित्सा का अन्तर दूर होता है।

प्रादेशिक केन्द्रो के पास वायु एम्बुलैंस केन्द्र है जिनके पास सुदूर इलाका म रहने वाले लोगो को आपातकालीन सहायता प्रदान करने के लिए हवाई जहाज व हैलिकाप्टर हैं। प्रत्येक वर्ष ये एम्बुलस-यान लगभग १,००,००० उडाने भरते है।

औरतो व बच्चो के लिए चिकित्सा सहायता इस देश म औरतो के परामर्श केन्द्रो व बच्चा के क्लिनिको की सख्या २१,००० स अधिक है। औरता के परामर्श केन्द्रा के कर्मचारी पूर्वप्रसव और प्रसवोत्तर देखभाल तथा स्त्रीरोग विज्ञान की समस्याओ से सम्बन्धित है। वे अपन रोगिया के काम करने की स्थितिया पर भी नजर रखत है।

देश के मातृत्व गृहो व ग्राम्य अस्पतालो मे लगभग २,२३,००० बिस्तर है जो शिशु जन्म की आवश्यकताओ का पूरा ध्यान रखते है।

बच्चा म रोग रोकन सबधी जाच पडताल और उपचार के लिए विशेष क्लिनिक, अस्पताल और सेनेटोरिया जिम्मेदार है। बच्चा को दीर्घकालिक उपचार के लिए बच्चो के अस्पताला के विशेषीकृत विभागा म रखा जाता है। अब सोवियत सघ म बच्चा के लिए ४,६०,००० से अधिक अस्पताली बिस्तर हैं। नवजात शिशु की मृत्यु दर १९१३ के आकडो की बनिस्बत अब ९० प्रतिशत कम हो गयी है।

औद्योगिक प्रतिष्ठानो मे चिकित्सा सहायता फक्टरिया व सयत्रो मे चिकित्सा विभाग या चिकित्सा केन्द्र है। इनके कर्मचारी उत्पादन म सफाई की हालता पर नजर रखत है कर्मियो के काम करने व जीवन-यापन की हालतो का अध्ययन करत हैं, यह पता लगाते हैं कि किस सनेटोरियम म इलाज विशेष आहार या अतिरिक्त विश्राम की आवश्यकता है। फक्टरियो म अधिक बडे चिकित्सा विभाग कर्मियो व उनके परिवारो दोनो का उपचार करत हैं और स्वास्थ्य सवाए प्रदान करत हैं। इस चिकित्सा विभाग मे प्राय एक नियमित क्लिनिक व अस्पताल होने के अलावा फक्टरी के अहात म या आसपास स्थित चौबीस घण्टे खुले रहने वाले सनेटोरियम भी शामिल रहत है। यहा कर्मी

को आवश्यक उपचार तथा निर्धारित आहार मिलता है और अगले कार्य दिवस से पूर्व पूरा आराम दिया जाता है।

आवश्यकता पड़ने पर मयद के चिकित्सक कर्मचारियों के घर भी जाते हैं। प्रत्येक २,००० कर्मियों के लिए एक फक्टरी ग्रात पर एक चिकित्सक होता है तथा रासायनिक, खनन व तलशोधन उद्योगों में प्रति १,००० कर्मियों पर एक चिकित्सक होता है। ग्याता डाक्टर के काम में रोग रोकने के काम पर जोर दिया जाता है।

रोग निरोध और सार्वजनिक स्वास्थ्य सोवियत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली रोग निरोध के सिद्धान्त पर आधारित है। क्लिनिकों के बाद विशेषीकृत डिस्पेंसरियां सोवियत सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली की अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी हैं। इनमें तपेदिक, अर्बुद विज्ञान, मनोतान्त्रिकीय विज्ञान चर्मरोग व यौनरोग विज्ञान संबंधी तथा अन्य विशेषीकृत डिस्पेंसरियां शामिल हैं।

विशेषीकृत डिस्पेंसरी सेवाएं जो सामान्य चिकित्सा संस्थानों द्वारा भी प्रदान की जाती हैं लाखों स्वस्थ लोगों की देखभाल करती हैं जिनमें सभी बच्चे और छात्र, गर्भवती औरतें और प्रतिकूल परिस्थितियों वाले प्रतिष्ठानों तथा खान पान व अन्य सेवाओं में काम करने वाले लोग शामिल हैं। इसके अलावा, जनसंख्या के अधिकतर भाग की सुव्यवस्थित निरोधक जांच पड़ताल की जाती है जैसे वर्ष में एक बार अनिवार्यत फ्लुओरोस्कोपिक जांच की जाती है। इससे प्रारम्भ में ही तपेदिक या फेफड़ों में रसोली की तरह की चीजों तथा ऐसी ही अन्य मामूली अनियमितताओं को पकड़ना सम्भव होता है जो बीमारी पैदा कर सकती हैं। सभी स्त्रियों को नियमित रूप से एक स्त्री रोग विशेषज्ञ के पास क्षेत्रीय क्लिनिकों में जांच के लिए आने को कहा जाता है जिससे प्रारम्भिक चरण में ही अर्बुद संबंधी और अन्य बीमारियों का पता चल सके। इससे उपचार अधिक प्रभावशाली हो जाता है।

उच्चरक्तचाप धमनीय रोग और गुर्दे के पुराने रोगों से पीड़ित रोगी भी दर्ज किये जाते हैं और उनकी नियमित अनिवार्य जांच होती है। -

सफाई महामारी विज्ञान संबंधी सेवा प्रत्येक प्रशासनिक जिले में एक सफाई महामारी विज्ञान संबंधी चिकित्सा केन्द्र होता है जिसे व्यापक अधिकार प्राप्त हैं। ऐसे केन्द्रों का मुख्य उत्तरदायित्व पर्यावरण की सुरक्षा करना है।

सफाई-स्वास्थ्य विज्ञान सेवा के मुख्य कार्य हैं नगर योजना में औद्योगिक व्यापारिक व बच्चों के प्रतिष्ठान स्थापित करने में घरों व कार्यस्थलों पर स्वास्थ्य की हालत की देखभाल में शहरों में शोरगुल कम करने के लिए अभियान चलाने में सहायता करना। सफाई सम्बन्धी कठोर कानून तथा उपयुक्त स्वास्थ्य अधिकारियों द्वारा कर्तव्यनिष्ठ नियंत्रण से पर्यावरण व प्रदूषण की समस्या का सामना करना सोवियत संघ के बड़े नगरों में भी उतना विकट नहीं है जितना कि पश्चिम के कुछ देशों में है।

महामारी विज्ञान का कार्य है छूत के प्रसार को रोकना। किसी जीवाणु विशेष वाइरसों द्वारा छूत को रोकने के लिए गहन व सिलसिलेवार ढंग से काम चलाया

रहता है। एक रोग के सम्भाव्य प्रजनन-स्थानो पर कडी नजर रखने के साथ साथ महामारी-वैज्ञानिक विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम चला रहे है जिसमे लोगो को विशेष प्रकार के रोग निरोधक टीके लगाना भी शामिल है।

चिकित्सा प्रशिक्षण विश्व की जनसंख्या की दृष्टि से सोवियत सघ म चिकित्सा कर्मियो की संख्या सबसे अधिक है। १९७२ म सब विशेषज्ञताओ म इस देश म ७,२०,००० से अधिक चिकित्सक थे अर्थात प्रति १० ००० व्यक्तियो पर २६ चिकित्सक थे। विश्व के कुल चिकित्सको का एक चौथाई भाग सोवियत सघ म है जो यूरोप के कुल चिकित्सको की संख्या का लगभग आधा है।

सोवियत सघ म उच्चतर चिकित्सा स्कूलो की संख्या ६० से अधिक है। उच्चतर चिकित्सा शिक्षा म सामान्य प्रशिक्षण पाच वर्ष और प्रमुख शाखाओ म दक्षता प्राप्त करने म एक वर्ष लगता है। ये शाखाए है शल्य चिकित्सा चिकित्सा विज्ञान, प्रसूति विज्ञान व स्त्रीरोग विज्ञान और बाल चिकित्सा। अनुभवी विशेषज्ञो के निर्देशन मे स्नातक डाक्टर लोग और विशेषज्ञता हासिल करते है। इस वर्ष म अन्तरग डाक्टरो को पूर्ण डाक्टर का वेतन मिलता है।

१९७१ ७५ म लगभग २,१२,००० चिकित्सको व १८,००० से अधिक औषध निर्माण वैज्ञानिकों का प्रशिक्षण दिया जायगा जिससे १९७५ के अन्त तक प्रति १० ००० व्यक्तियो पर चिकित्सको की कुल संख्या ३३ हो जायगी। माध्यमिक चिकित्सा स्कूलो से प्रतिवर्ष १,००,००० स अधिक विशेषज्ञ निकलते है तथा अब कुल विशेषज्ञो की संख्या २२ ००,००० से अधिक हो गयी है।

यहा नवीकर प्रशिक्षण सबधी १३ कालेज और मेडिकल कालेजो मे नवीकर प्रशिक्षण के १७ विभाग है, जहा चिकित्सक व औषध निर्माण वैज्ञानिक अपना ज्ञान वद्ध न कर सकते हैं। समय समय पर प्रादेशिक क्लिनिको व बडे बडे अस्पतालो म जाकर एक चिकित्सक भी विशेषज्ञता प्राप्त कर सकता है और अपनी योग्यता बढा सकता है। प्रत्येक वर्ष लगभग ७०,००० चिकित्सक नवीकर पाठ्यक्रम म शरीक होते हैं।

चिकित्सा अध्ययन सोवियत सघ म चिकित्सा विज्ञान की ओर बहुत ध्यान दिया जाता है। चिकित्सा विज्ञान की विभिन्न समस्याओ का ३८५ प्रमुख शोध प्रतिष्ठानो म, जिनम ७७८ अनुसधान इन्स्टीच्यूट और प्राय सभी मेडिकल कालेज शामिल है समाधान किया जाता है। पिछले पाच वर्षो ही म गस्ट्राएन्टोलोजी, पुल्मोनेरी रोगो फ्लू और अवयव व टीशू प्रतिरोपित करने की समस्याओ को सुलझाने के लिए बडे बडे अनुसधान संस्थान स्थापित किये गये है। इनके साथ साथ चिकित्सा आनुवंशिक संस्थान, औषध सम्पाक नियत्रण संस्थान व अनेक प्रयोगशालाओ की भी स्थापना की गयी है। सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी की साइबेरियाई शाखा भी स्थापित की गई है।

सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी म चिकित्सा की प्रमुख सद्धान्तिक समस्याओ का हल निकाला जाता है। इस अकादमी मे देश के २६६ प्रमुख चिकित्सक, अकादमीशियन व अकादमी के सवादी सदस्य शामिल हैं। सोवियत सघ का सार्वजनिक

म्यार य मत्रालय व सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी न केवल मुख्य वैज्ञानिक समस्याओं पर काम करते हैं और विभिन्न चिकित्सा सस्थानों के अनुसधान म तालमेल बिठाते हैं बल्कि उपचार के नये उपायों व तरीकों के परीक्षण और चिकित्सा म वैज्ञानिक खोज लागू करने के लिए भी उत्तरदायी हैं।

नई पचवर्षीय अवधि म जीवविज्ञान व औषध के क्षेत्र म बडे पमाने पर अनुसधान काय किया जायगा जिसका प्रमुख लक्ष्य होगा सबसे पहल कार्डियोवस्क्यूलर वाल्स और प्रदूषण सबधी रोगों की रोकथाम व इलाज करना, श्रम का स्वास्थ्य विज्ञान व शरीर विज्ञान गेरोन्टोलाजी बाल चिकित्सा चिकित्सा आनुवशिकी, इम्यूनालाजी अवयव व टिशू प्रतिरोपण कृत्रिम अवयव प्रतिरोपण और शरीर विज्ञान सबधी नये मुद्दों पर ध्यान देना।

सोवियत सघ म कार्डियोलाजी व कैंसर के केन्द्र आगामी कुछ वर्षों म स्थापित किये जाएंगे जो इन क्षेत्रों म अनुसधान काय म तीव्रता लाएंगे।

औषधियों की सुनिश्चित क्वालिटी सोवियत सघ म घटिया किस्म की या हानिकारक औषधियों की बिक्री असम्भव है।

बहुत से विशेषीकृत सस्थान नयी दवाइयां और एंटीबायोटिक दवाइयां विकसित कर रहे हैं। हर नई दवाई की जाच-पडताल सोवियत सावजनिक स्वास्थ्य मत्रालय के नवीन औषधि व चिकित्सा उपकरण विकास विभाग तथा प्रमुख वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों से युक्त सोवियत औषधविज्ञान समिति करते हैं। फिर उस सम्पाक को परीक्षण हेतु अनेक उच्च और मुख्य क्लिनिकल सस्थाओं म भेजा जाता है। इस क्रिया म सफलता के बाद ही किसी औषधि का सोवियत सघ की राज्य फार्माकोपोइया म शामिल किया जाता है और व्यापक व्यावहारिक प्रयोग के लिए इसकी सिफारिश की जाती है। तयार किये जा रहे सम्पाकों पर एक विशेष नियत्रण सस्थान तथा औषध गुण नियत्रण सबधी राज्य निरीक्षणालय का नियत्रण रहता है। विदेशों मे तयार सम्पाकों की भी इसी प्रकार परीक्षा की जाती है।

सोवियत सघ म औषधि का औसत मूल्य ३० ४० कोपक स अधिक नहीं है तथा तमाम औषध सम्पाकों का १० प्रतिशत राज्य द्वारा मुफ्त सप्लाई किया जाता है। अन्तरग रोगियों, तपेदिक, मधुमेह, कैंसर, गठिया ग्रस्त, खून व अन्य बीमारियों स ग्रस्त व्यक्तियों को तथा एक वर्ष से कम आयु वाले बच्चों को और युद्ध म अपग व्यक्तियों को औषधियां मुफ्त दी जाती हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क सोवियत सघ न १० से अधिक देशों के साथ सावजनिक स्वास्थ्य और चिकित्सा विज्ञान म सहयोग के विकास के सम्बन्ध म करारों पर हस्ताक्षर किये हैं। सोवियत सघ विश्व स्वास्थ्य सगठन के कायक्रम म महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, विशेषत सोवियत सघ द्वारा प्रचालित चेचक उन्मूलन विश्वव्यापी आन्दोलन म। उदाहरणार्थ, १९६१ ७२ की अवधि म सोवियत सघ न भारत को मुफ्त १ अरब

चेचक के टीके भेजे। सोवियत सघ से भेजे गये पोलियो के टीको ने बहुत से देशो मे हजारो बच्चो की इस रोग से रक्षा की है।

विश्व स्वास्थ्य सगठन द्वारा सचालित समिनार, सम्मेलन और पाठ्यक्रम प्रत्येक वर्ष सोवियत सघ मे आयोजित होते हैं। विश्व स्वास्थ्य सगठन के सात अन्तर्राष्ट्रीय सूचना केन्द्र विश्व स्वास्थ्य सगठन के पाच प्रादेशिक सूचना केन्द्र व विश्व स्वास्थ्य सगठन की १३ सूचना सहयोग प्रयोगशालाए सोवियत अनुसंधान व शैक्षणिक संस्थानो के आधार पर सोवियत सघ मे स्थापित किये गये है। विश्व स्वास्थ्य सगठन की अनेक वैज्ञानिक परियोजनाए भी सोवियत सघ मे कार्यान्वित हो रही है।

सोवियत सघ बहुत से देशो को सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओ के विकास मे सहायता प्रदान करता है। सोवियत सहायता से बर्मा, गिनी, कम्बोडिया, इण्डोनेशिया, ईरान, नेपाल, सोमालिया व अन्य देशो मे अस्पतालो का निर्माण हुआ है। नवीनतम परियोजनाए है यमन अरब गणराज्य और केन्या के अस्पताल और कांगो लोक गणराज्य मे प्रसूति सदन। गिनी स्थित कोनाक्री के पोलीतक्नीकी सस्थान मे सोवियत सहायता से एक चिकित्सा विभाग खोला गया है जिसमे सोवियत प्रशिक्षक चिकित्सक काम करते है। लुसाका जाम्बिया, मे भी एक चिकित्सा विभाग खोला गया है और बहुत से देशो को राष्ट्रीय चिकित्सा कर्मियो के प्रशिक्षण के लिए केन्द्रो के निर्माण मे सहायता दी गयी है। सौ से अधिक देशो के २,००० से अधिक विदेशी विद्यार्थी सोवियत मेडिकल कालेजो मे पढते है।

सोवियत चिकित्सक बीस से अधिक देशो मे काम कर रहे है। सामान्य चिकित्सा कार्य के साथ साथ वे महामारियो का मुकाबला करने मे, राष्ट्रीय चिकित्सा कर्मियो को प्रशिक्षण देने मे और आधुनिक सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाए सगठित करने मे भी सहायता देते हैं।

सामाजिक सुरक्षा

सोवियत सघ का सविधान वद्धावस्था मे व बीमारी की या काम करन मे असमथ हो जाने की स्थिति मे सोवियत नागरिकों को भरण पापण का अधिकार देता है।

सोवियत सघ म राजकीय मामाजिक सुरक्षा की एक बहुत ही प्रभावशाली और सर्वांगीण प्रणाली मौजूद है जिसे निरतर सर्वांगपूण बनाया जा रहा ह। पेंशना व भत्तो म बार बार वद्धि करना वद्ध व अपग व्यक्तिया व उनके परिवारो को अधिकाधिक लाभ देना देश की आर्थिक प्रगति व राष्ट्रीय आय म वृद्धि का परिणाम हे।

पिछले पाच वर्षा (१६६६ ७०) म मेहनतकश लोगा के विशाल भाग के सामाजिक भरण पोषण व बीमे म पर्याप्त सुधार हुआ है।

सामाजिक भरण पोषण व बीमे पर राज्य का आवटन १६६५ म १४ अरब ४० करोड रूबल से बढ कर १६७० म २२ अरब १० करोड रूबल हो गया। इसम पेंशन सबधी आवटन म १० अरब ६० करोड रूबल से १६ अरब रूबल से अधिक की वद्धि शामिल है।

इसके साथ साथ खाद्य व उपभोक्ता पदार्थों की कीमतें और भाडा व किराया स्थायी रह हैं और कम भी हो रह है।

सोवियत जनता के जीवन स्तरा को ऊचा उठान के लिए एक व्यापक कायक्रम तथा राज्य पेंशन और सामाजिक बीमे की प्रणाली मे सुधार करन के लिए अनक उपाय सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस द्वारा निरूपित किय गय।

इसके अनुमार बच्चा वाले परिवारो को अधिक भौतिक सहायता दी जायगी, काम करन वाली माताओ के लाभा म वृद्धि की जायेगी, उन परिवारा के लिए जिनकी प्रति व्यक्ति आय ५० रूबल म अधिक नही है, बच्चा के भत्तो की शुरुआत की जायगी, बीमार बच्चा की दखभाल के लिए सवेतन छुट्टिया के दिना म वद्धि की जायगी, तमाम काम करन वाली औरता की नौकरी की अवधि का ध्यान रखे बिना प्रसूति की छुट्टिया पूरे वेतन सहित दी जायगी। अब तक यह नौकरी की अवधि पर आधारित था और कम-से कम दो तिहाई वेतन दिया जाता था।

१६७१ के मध्य म फक्टरी व दफ्तरा के कर्मिया की वद्धावस्था की पेंशन म कम स-कम ५० प्रतिशत की वद्धि की गई थी। इमी बीच सामूहिक फार्मों म काम करन वाल किसाना की पेंशन म ६६ प्रतिशत की वद्धि हुई और वे भी उसी पेंशन याजना के अतगत आ गये जो फक्टरी व दफ्तर के कर्मिया पर लागू है।

१६७२ म १६७४ की अवधि के बीच अपगा के लिय पेशन म वद्धि की जायगी जो औसतन ३३ प्रतिशत बढेगी और उन परिवारा के लिए पेंशना म, जिनका कमाने वाला जीवित नही रहा है औसतन २० प्रतिशत की वद्धि की जायगी।

१९७३ म राज्य न सामाजिक बीमे व भरण पोषण के लिय २७ अरब ४० करोड रूबल आवटित किया था। इस राशि म से २१ अरब ४० करोड रूबल पेंशन पर खर्च हुए थे।

उन पेंशन पाने वालो के लिए जो काम कर सकते है या काम करना चाहते है और अधिक अनुकूल परिस्थितिया पदा करन की योजना है, अपगो व वद्ध व्यक्तियो के लिए अधिक मकान बनाने और अपगो को आवागमन के साधन और कृत्रिम अग व आर्थोपेडिक साधन बेहतर तरीके से देने की योजना है।

सोवियत समाज अपन वद्ध व असमर्थ नागरिको की भौतिक व सास्कृतिक आवश्यकताए हर सम्भव तरीके म पूरी करने का प्रयास कर रहा है।

सोवियत सामाजिक भरण पोषण के बुनियादी सिद्धान्त सक्षेप म इस प्रकार प्रस्थापित किये जा सकते है

सामाजिक सुरक्षा प्रणाली सारे सोवियत नागरिको पर लागू होती है,

सामाजिक सुरक्षा म धन पूरी तरह राज्य और सहकारी कोषो म से लगाया जाता है,

वृद्धावस्था म, काम करने म असमर्थ होने की स्थिति म और तमाम अन्य हालतो म जिनका जिक्र बीमे की प्रणाली म किया गया है भरण पोषण किया जाता है,

उन परिवारो का सामाजिक भरण पोषण जिनके लिए रोटी कमाने वाला नही रह गया हो,

अपगता की सारी स्थितियो म व वद्धावस्था म भरण-पोषण का ऊचा स्तर जिसमे भौतिक व अन्य प्रकार की सहायता और भिन्न भिन्न प्रकार की सुविधाओ का विवेकपूर्ण समन्वय किया जाता है,

तमाम नागरिको के लिए सुनिश्चित मुफ्त व योग्यतापूर्ण चिकित्सा सहायता पर आधारित एक व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणाली,

ट्रेड यूनियनो के नियत्रण मे और आम जनता की शिरकत से जनतात्रिक तरीके से सचालित एक सामाजिक भरण पोषण व बीमा प्रणाली।

आजकल सोवियत सघ म ४ करोड २० लाख से अधिक व्यक्ति पेंशन पाते है जिनका भरण पोषण राज्य या सामूहिक फाम करते है।

मजदूर, दफ्तरो म काम करने वाले सामूहिक फार्मो के किसान—काम करने वाले सभी व्यक्ति सामाजिक सुरक्षा कोष मे कोई चन्दा नही देते।

सोवियत सघ म सामाजिक सुरक्षा सर्वांगपूर्ण है तथा इसमे वद्धावस्था म अस्थायी या स्थायी असमर्थता की स्थिति म, घर मे रोटी कमाने वाले की क्षति म, गर्भावस्था व शिशु जन्म म भौतिक सहायता की व्यवस्था है, बडे परिवारो की सहायता निर्धारित आहार के साथ सहायता, सेनेटोरियमो व स्वास्थ्य केन्द्रो म उपचार की और व्यावसायिक प्रशिक्षण की और उन असमर्थ व्यक्तियो के, जो काम करना चाहते हो, पुनर्प्रशिक्षण की व्यवस्था है।

पशन कर मुके हैं।

वृद्धावस्था पेंशन योजना पुरुषो को वृद्धावस्था की पशन ६० वष की आयु म— ५ वष काम करने के बाद —मिलती है तथा महिलाओ को ५५ वष की आयु म—२० वष काम करने के बाद। काम प्राप्त करना कोई समस्या नही है क्योकि बेरोज गारी को सोवियत सघ म सफाया कर दिया गया है। काम करने की अवधि म फौजी सेवा का काल उच्चतर व विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलो (कुछ स्थितियो मे, जस, सनिक सेवा के बाद नियुक्ति), व्यावसायिक प्रशिक्षण स्कूलो, विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमो और अय प्रकार के कायकलाप मे व्यतीत समय सम्मिलित होता है।

सोवियत राज्य माताओ के प्रति विशेष चिन्ता प्रदर्शित करता है। वे स्त्रिया, जो पाच या अधिक बच्चो को जम देती हैं और आठ वष की आयु तक पालन पोषण करती है १५ वष काम करने के बाद ५० वष की आयु म पेंशन की अधिकारिणी हो जाती हैं।

अनेक प्रकार के लोगो को विशेष पशन की सुविधाए, जसे, ज्यादा पेंशन, कम आयु म (४५ ५५ वष) पेंशन या सवाकाल की कम अवधि म (१५-२० वष) पेंशन पाने का अधिकार है। यह व्यवस्था खनन व रासायनिक कर्मियो, धातुकर्मियो और लकडी के उद्योगो के बहुत से कर्मियो, परिवहन, निर्माण, और राष्ट्रीय अथतत्र की अय शाखाओ म काम करने वाले कर्मियो पर लागू होती है। वृद्धावस्था की पेंशन ५० या ७५ प्रतिशत और कुछहालतो म एक व्यक्ति की औसत मासिक कमाई का १०० प्रतिशत होती है। उजरत जितनी ही कम होती है, पेंशन का हिसाब लगाने मे प्रयुक्त प्रतिशत उतना ही अधिक होता है।

पेंशन देने की क्रिया-पद्धति मेहनतकश लोगो के प्रतिनिधियो की जिला व शहर सोवियतो की कायकारिणी समितियो की ओर से स्थापित किये गये पशन आयोग उजरत और वेतन प्राप्त करने वालो की पेंशन निर्धारित करते हैं। इन आयोगो म राज कीय निकायो व ट्रेड यनियनो के प्रतिनिधि होते है।

पेंशन के लिए प्राथनापत्र काम के स्थान पर प्रबन्ध विभाग को दिये जाते हैं। प्रबन्ध विभाग ट्रेड यूनियन सगठन के साथ मिल कर जरूरी दस्तावेजे तयार करता और उन्हे अपनी सिफारिश के साथ उस जिले के सामाजिक सुरक्षा विभाग को भेज देता है, जहा प्रार्थी रहता है ताकि स्थानीय पेंशन आयोग मामले की छानबीन कर सके।

अपगो की देखभाल सोवियत सघ मे अपग होने की पेंशन आयु का ध्यान रखे बिना मजूर की जाती है। यदि अपगता व्यावसायिक चोट या बीमारी के कारण अथवा राज्य या सावजनिक फज या अपना नागरिक कतव्य निभाते समय हुई हो, तो पेंशन मुलाजमत की अवधि का ध्यान रखे बिना मजूर की जाती है। अयथा सेवा की एक निश्चित चाहे छोटी ही सही अवधि पशन की योग्यता के लिए आवश्यक है।

असमयता की मात्रा के आधार पर अपगो को तीन वर्गों म विभक्त किया गया है जिन्हे उन चिकित्सा श्रम विशेषज्ञ आयोगो ने निश्चित किया है जिनम सुयोग्य

चिकित्सक और ट्रेड यूनियनों व सामाजिक सुरक्षा एजेंसियों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं।

व्यावसायिक चोट या बीमारी का शिकार होने वाले व्यक्ति साधारण से अधिक पेंशन के अधिकारी होते हैं। इसके अलावा इसके लिए यदि संस्था या प्रतिष्ठान जिम्मेदार होते हैं तो कानून के अनुसार वे मुआवजा देने के जिम्मेदार होते हैं जिसमें अपंगता की पेंशन के साथ-साथ चोट के कारण उजरत की रकम के बराबर रकम क्षति पूर्ति में आवश्यक है।

राज्य युद्ध-जन्य अपंगों का विशेष ध्यान रखता है। वे पांच वर्ष पूर्व पेंशन के अधिकारी मान गये हैं—पुरुष ५५ वर्ष की और महिलाएं ५० वर्ष की आयु में।

अस्थायी असमर्थता की स्थिति में युद्ध जन्य अपंग व्यक्ति जो काम करते हैं, अपनी उजरत का १०० प्रतिशत तक लाभ उठाने के अधिकारी हैं चाहे उनका कार्यकाल कुछ भी क्यों न रहा हो। युद्ध जन्य अपंग व्यक्तियों का कार्यदिवस भी कम घटों का हो सकता है।

चिकित्सा-श्रम विशेषज्ञ आयोग की सिफारिश पर युद्ध में अपंग हुए व्यक्ति को हाथों से नियंत्रित की जाने वाली कार, मोटरचालित और पहिया वाली कुर्सी या पहिया वाली साधारण कुर्सी मुफ्त दी जाती है। युद्ध में अपंग व्यक्तियों को गैराज के रूप में प्रयोग करने वाले स्थानों का किराया नहीं लगता। राज्य प्रत्येक वर्ष अपंग व्यक्तियों के लिए हाथों से नियंत्रित होने वाली १८,००० से अधिक कार मुफ्त देता है।

प्रथम व द्वितीय समूह के सभी अपंग और ततीय समूह के कुछ अपंग सब प्रकार के शहरी परिवहन (टैक्सियां छोडकर) में मुफ्त तथा रेल, मोटरों, जल व वायु परिवहन पर आधा भाड़ा देकर यात्रा कर सकते हैं।

उन्हें बेहतर मकानों के लिए प्राथमिकतापूर्ण अधिकार दिये जाने के अलावा युद्ध जन्य अपंग व्यक्ति और युद्ध में शहीद हुए लोगों के परिवारों को अपने मकानों के निर्माण में प्राथमिकतापूर्ण सहायता दी जाती है। राज्य उन्हें इस कार्य के लिए १,००० रूबल तक ब्याज मुक्त ऋण देता है। यह दस वर्ष की अवधि में लौटाया जा सकता है जो ऋण प्राप्त करने के पश्चात तीसरे वर्ष से आरम्भ होता है। वे अपने मकानों की बुनियादी मरम्मत के लिए भी ब्याज मुक्त ऋण ले सकते हैं।

गावों में रहने वाले प्रथम और द्वितीय श्रेणी के युद्ध जन्य अपंगों और उनके परिवारों को अपनी घरेलू जोतों पर कृषि कर की पूरी या आंशिक छूट दी जाती है।

युद्ध जन्य अपंग व्यक्तियों को सेनेटोरियमों में रिहाइश प्राप्त करते समय प्राथमिकता दी जाती है और प्रथम व द्वितीय समूह के ऐसे व्यक्तियों को सेनेटोरियम जाने का और वापसी का पूरा भाड़ा दिया जाता है। सेनेटोरियमों में कम से कम १० प्रतिशत स्थान युद्ध-जन्य अपंग व्यक्तियों के लिए सुरक्षित होते हैं और उन्हें सारे आवश्यक

रनिम अग आर्थोपीडिक जूते व काम मे प्रयुक्त अनेक प्रकार के यंत्र मुफ्त दिये जाते है।

१६७२ म अपग व्यक्तियो की पेंशन मे औसतन ३३ प्रतिशत की वृद्धि की जायगी। और उन परिवारो की पेंशन, जिनके कमाने वाले शहीद हो गये है, २० प्रतिशत बढाई जायेगी।

सामूहिक फार्मो के किसानो के लिए सामाजिक सुरक्षा व सामाजिक बीमा १६६४ म सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने भारी सामाजिक महत्व का एक कानून पास किया—सामूहिक फार्मो के किसानो के लिए पेंशन व अनुदान सम्बन्धी कानून।

इसका यह अर्थ नहीं कि उस समय तक सामूहिक फार्मों के किसानो को कोई पेंशन और अनुदान नही मिलते थे। लेकिन पेंशन व अनुदान की राशि सामूहिक फार्मों म अलग-अलग होती थी। इसका निर्णय हर सामूहिक फार्म की ओर से इस आधार पर किया जाता था कि वह क्या दे सकता है। राज्य की ओर से पेंशन केवल युद्ध म अपग हुए किसानो को और कृषि विशेषज्ञो को ही दी जाती थी। राज्य की ओर से अनुदान बडे परिवारो की माताओ व अविवाहित माताओ को भी दिये जाते थे।

राष्ट्रीय अर्थतत्र के काम विकास व कृषि के और विकास के लिए उठाये गये कदमो को ही यह श्रेय है जो गत वर्षों म कम्युनिस्ट पार्टी व सरकार ने उठाये थे, कि सामूहिक फार्मों मे पैदावार बहुत अच्छी हुई और वे अपने सदस्यो के लिए बहुत कुछ करने म समर्थ हुए। इसके फलस्वरूप नवम्बर १६६६ म आयोजित सामूहिक फार्मों के किसानो की तीसरी अखिल-सघीय काग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार १६७० म किसानो के लिए सामाजिक बीमे की एकीकृत प्रणाली स्थापित करना सभव हुआ।

सामूहिक फार्मो के किसानो को उसी प्रकार की पेंशन मिलती है जो फक्टरी व आफिस म काम करने वालो को। पेंशन की आयु भी पुरुषो के लिए ६० वर्ष और महिलाओ के लिए ५५ वर्ष ही है। बडे परिवारो वाली माताए ५० वर्ष की आयु मे पेंशन ले सकती है। सामूहिक फार्मो के १ करोड २० लाख किसान अब किसी न किसी प्रकार की पेंशन ले रहे है।

सामूहिक फार्मो के किसानो को वही लाभ उपलब्ध है जो फक्टरी और दफ्तर के कर्मियो को मिलते है बीमारी के कारण अस्थायी असमर्थता गर्भवती होने पर, शिशु जन्म पर, सेनेटोरियमो और स्वास्थ्य-केन्द्रो म उपचार आदि की सुविधाए। सामूहिक फार्म अपने सेनेटोरियम विश्रामगृह और बोर्डिंग हाउस बनाते है। अधिकाधिक सामूहिक फार्म अत्यन्त लोकप्रिय स्वास्थ्य स्थलो पर स्वास्थ्य केन्द्रो का निर्माण करने के लिए अपने प्रयास इकट्ठे कर रहे है। जब व्यस्तता की अवधि खत्म होती है तो सामूहिक फार्मों म काम करने वाले दसियो हजार किसान सामूहिक फार्मों के खर्चे पर क्रीमिया के कृष्ण सागर के तट व काकेशिया तथा बाल्टिक सागर तटवर्ती स्वास्थ्य स्थलो पर जाते हैं।

फक्टरी व दफ्तर म काम करने वालो की तरह सामूहिक फार्मो के किसान सामाजिक सुरक्षा व सामाजिक बीमा म धन का योगदान नही करते। सामूहिक फार्म के

किसानों का केन्द्रबद्ध अखिल संघीय सामाजिक सुरक्षा व सामाजिक बीमा कोष फार्मों की आमदनी तथा राज्य के आवंटन से कटौती करके स्थापित किया जाता है।

अशक्त अपंग व्यक्तियों के लिए रोजगार सोवियत संघ में उन अपंग व्यक्तियों को जो काम करने के इच्छुक हों सामाजिक रूप से लाभदायक काम में लगाने और इसके लिए स्थितियां सृजित करने का प्रश्न राज्य का एक प्रमुख कार्य समझा जाता है। सामाजिक सुरक्षा एजेंसियां और ट्रेड यूनियन इस सिद्धान्त से अग्रसर होती हैं कि इससे अपंग लोगों को स्वास्थ्य लाभ में और काम करने की योग्यता बहाल करने में सहायता मिलती है।

काम करने में असमर्थ लोगों को काम पर लगाये जाने के प्रश्न से सम्बन्धित राजकीय एजेंसियां शरीर-क्रियाविदों, मनोचिकित्सकों, समाजशास्त्रियों, सर्जनों, थेराप्यूटिस्टों और अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों के सहयोग से काम करती हैं। इस क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त सात अनुसंधान संस्थान हैं। अपंग व्यक्तियों के लिए अनेक प्रकार के कृत्रिम अंग विकसित किये गये हैं और बड़ी कारीगरी के साथ सहायक वस्तुएं बनाई जाती हैं जो उन्हें भिन्न भिन्न प्रकार के प्रतिष्ठानों में काम करने में समर्थ बनाती हैं।

काम करने में असमर्थ व्यक्तियों के प्रशिक्षण व पुनप्रशिक्षण के लिए बहुत कुछ किया जा रहा है। विशेषीकृत बोर्डिंग स्कूलों का विशाल तानाबाना मौजूद है जहां राज्य के व्यय पर उनका भरण पोषण होता है। उदाहरणार्थ रूसी संघ में ९००० से अधिक काम करने में असमर्थ व्यक्ति ११ विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलों, ४२ व्यावसायिक प्रशिक्षण स्कूलों में पढ़ते हैं, जहां ४० व्यवसायों का काम सिखाया जाता है।

प्रथम और द्वितीय श्रेणी के अपंग व्यक्तियों के लिए जो काम करने के इच्छुक हैं और जिन्हें चिकित्सा श्रम विशेषज्ञ आयोगों ने ऐसा करने की इजाजत दे दी हो, विशेषीकृत प्रतिष्ठान व खाते संगठित किये जा रहे हैं। इस प्रकार के प्रतिष्ठानों में काम करने वाले अपंग लोगों को अनेक सुविधाएं प्राप्त होती हैं, जैसे, काम के कम घंटे, काम के कोटे में अन्तर, कार्य दिवस के दौरान बहुत बार छुट्टी और सवेतन अधिक अवकाश। जिनको चलने में कठिनाई होती है, ऐसे बहुत से लोग घर पर ही काम करते हैं। उनके प्रतिष्ठान कच्चा माल सप्लाई करते हैं और तैयार माल वापिस ले जाते हैं। व्यवहार ने यह स्पष्ट कर दिया है कि चिकित्सा और उपचार सहित सुव्यवस्थित काम से स्वास्थ्य लाभ में सहायता मिलती है।

पेंशनयाफ्ता लोग व रोजगार संविधान में यह लिखा है कि काम करने में समर्थ प्रत्येक सोवियत नागरिक का, उसकी आयु चाहे कुछ भी हो, काम करने का अधिकार है।

इसके अलावा यदि एक व्यक्ति रिटायर होने की उम्र पर पहुंच जाता है और वह काम करने में स्वस्थ व काम करने का इच्छुक है तो कोई व्यक्ति ऐतराज नहीं करता। यह तो सारे समाज के लिए अच्छा होगा यदि प्रत्येक अधिक आयु वाला व्यक्ति अपने समृद्ध अनुभव को युवा लोगों तक पहुंचाये।

बहरो की देखभाल बहरे बच्चो के लिए किंडरगार्टेन व बोर्डिंग स्कूल और विशेषीकृत माध्यमिक स्कूल हैं जहा बहरे, राज्य के व्यय पर, विभिन्न व्यवसाय जिनम अत्यत जटिल व्यवसाय भी शामिल ह, सीखते है।

सोवियत सघ म सारे स्वस्थ बहरे उद्योग की उन सारी शाखाओ म जिनम उनकी शारीरिक अपगता काम करने की इजाजत देती है, उत्पादक श्रम मे लगे हुए हैं। अपनी उजरता व वेतन के अलावा सभी बहरे पेंशन भी पाते ह।

बहरे व्यक्ति सोसाइटियो म ऐक्यबद्ध हैं जो उन्ही सिद्धान्तो पर सगठित हैं जिन पर नत्रहीनो की सोसाइटिया सगठित हैं। इन सोसाइटियो के अपने ही उत्पादन प्रशिक्षण मस्थान और विश्रामगह ह। राज्य ने यह प्रबन्ध किया है कि बहरे अपने आपको समाज के पूरे सदस्य महसूस करें और अपनी समथता विकसित करे। बहरो के बीच पेशेवर व शौकिया कलाकार और शिल्पी मौजूद हैं। बहुत से बहरे स्वरकारिता, रगमच कला व खेलकूद के बहुत ही शौकीन है।

मास्को मे बहरा व गूगा का केन्द्रीय थियेटर स्टूडियो और प्रहसन थियेटर है जिसने विदेशा म सफल दौरे किये हैं। बहरे खिलाडी बहरा के अन्तर्राष्ट्रीय खेलो म जो चार वर्ष म एक बार आयोजित होते हैं भाग लेते ह। पिछले खेलो म जो १९६९ म बेलग्राद म हुए ३३ देशो के १,१०० खिलाडियो ने १३ खेलो म भाग लिये। सोवियत खिलाडियो ने ९९ पदक जीते जिनम ४० स्वर्ण पदक थे।

कृत्रिम अग "सजीव हाथ" सोवियत वैज्ञानिको व इजीनियरो की एक प्रमुख उपलब्धि है। इस बनावटी अग म बायोकरेंट से नियन्त्रित अगुलिया किसी भी स्थिति म और यथेष्ठ शक्ति के साथ सचालित होती है। इससे हाथ रहित लोग अपनी देखभाल कर सकते है और साधारण काय कर सकते है। 'सजीव हाथ' विकसित करने वाले दल को जिसके नेता प्रो० वदीम पापोव थे १९७० म राज्य पुरस्कार दिया गया। ब्रिटेन कनाडा व अन्य देशो ने यह यन्त्र बनाने के लिए लाइसेंस खरीदे हैं।

कृत्रिम अगो की लेनिनग्राद सस्था ने एक कृत्रिम हाथ विकसित किया है जो सम्पर्क नियन्त्रित बिजली स परिचालित होता है। उन बच्चो के लिए जिन्हे कृत्रिम अगो की आवश्यकता होती है, बहुत कुछ किया जाता है। कटे हुए हाथो व पैरो के स्थान पर लगाये जाने के लिए कितनी ही सहायक वस्तुओ की डिजाइन तैयार की गयी है।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र म सहयोग के विभिन्न पक्ष हैं। सोवियत सघ ने चेकोस्लोवाकिया बुल्गारिया रूमानिया, हगरी और जर्मन जनवादी जनतन्त्र के साथ सामाजिक सुरक्षा सबधी महत्वपूर्ण द्विपक्षीय समझौते सम्पन्न किये है। इन समझौतो के तहत इन देशो के नागरिक जो स्थायी रूप म सोवियत सघ म रहते है सोवियत सामाजिक सुरक्षा के लाभो के अधिकारी हैं और इसी प्रकार उन देशो म रहने वाले सोवियत नागरिको को भी वस ही लाभ मिलते हैं।

सामाजिक सुरक्षा एजेंसियो के बीच सहयोग का एक स्थायी पक्ष है उन समस्याओ के सम्बन्ध मे सयुक्त विचार-विमर्श करना जो चिकित्सा श्रम विशेषज्ञ आयोगो द्वारा अपग व्यक्तियो की जाच मे, अपग व्यक्तियो की असमर्थता की मात्रा की छानबीन से और अपग व्यक्तियो के लिए रोजगार से सबधित है ।

सोवियत कृत्रिम अग उद्योग के प्रतिष्ठानो म समाजवादी देशो के प्रशिक्षणार्थी आते हैं । कुछ देशो (हगरी क्यूबा युगोस्लाविया, इरान आदि) के आग्रह पर सोवियत विशेषज्ञो ने उन्हे असमर्थ व्यक्तियो की काय क्षमता बहाल करने म, राष्ट्रीय केन्द्र सगठित करने मे और कृत्रिम अग बनाने के औद्योगिक प्रतिष्ठानो का निर्माण करने मे तकनीकी सहायता दी है ।

रूसी सघ का सामाजिक सुरक्षा मत्रालय अतर्राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा एसोसिएशन का सदस्य है जिसम ६५ देशो के २२५ सस्थान शामिल है ।

भवन निर्माण

हर वष करीब ३० लाख सोवियत परिवारों को आवास की सुविधाए पहले से अधिक अच्छी हा जाती है। पिछले ४७ वर्षों म मकान के किराये मे कोई परिवतन नहीं हुआ है।

नये सोवियत जनतत्र को जारकालीन रूस से एक भयकर समस्या भेंट के रूप म मिली थी। शहरी क्षेत्रा मे ८० प्रतिशत से अधिक घर लकडियो के बने एक या दो मजिल के थे। उनमे मे शायद ही कोई घर ऐसा था जिसे गम रखने की कोई केन्द्रीय व्यवस्था हो। बडे शहरो के केन्द्रीय जिलो (इलाको) म भी दस प्रतिशत से अधिक ऐसे घर नहा थे जिनम नल के पानी की व्यवस्था हा। मोरियो की व्यवस्था तीन प्रतिशत से कम घरो म और बिजली केवल पाच प्रतिशत घरो मे थी।

श्रमजीवी लोग तो ऐसी गदगी म रहने थे जिसकी कल्पना नही की जा सकती। पलटा की तो बात दूर पूरे परिवार मिल कर भी कमरा नही ले पाते थे, बल्कि कमरा मे कुछ भाग या कुछ चारपाइया ही किराए पर लेकर किसी तरह जीवन बसर करते थे। १९१७ म मास्को की आधी आबादी ऐसी ही परिस्थितियो मे रहती थी। मजदूर के परिवार का १५ से २२ प्रतिशत बजट केवल मकान का किराया खा जाता था। गावा म गरीबा का और भी अधिक बुरा हाल था, वे टूटे फूटे झोपडा म रहते थे जहा मामूली सुविधाओं का भी अभाव था।

अक्तूबर क्राति के बाद शुरु के दिनो मे ही सोवियत सरकार न शहरी आबादी की आवास स्थिति सुधारने के लिए महत्वपूण निणय किये। ८ नवम्बर १९१७ को उसने "गरीबो की हालत सुधारने के लिए धनिको के पलटो का अधिग्रहण" करने के बारे म आज्ञप्ति जारी की। इस आज्ञप्ति के बाद और भी आज्ञप्तिया जारी की गइ जिनके द्वारा किराया वद्धि पर रोक लगा दी गई और शहरो मे भूसम्पत्ति पर व्यक्तिगत स्वामित्व समाप्त कर दिया गया।

जिस कानून के द्वारा आवास गहो का राष्ट्रीयकरण करके उन्ह शहर के अधिकारियो के हाथो मे दे दिया गया, उसी कानून के अनुसार अनगिनत मजदूर परिवारो को गदी बस्तियो और तहखानो से निकाल कर अच्छे पलटो म नये सिरे से बसाया गया।

जो भी हो, इससे आवास की कमी की समस्या दूर नही हुई, क्योकि अच्छे किस्म के घर बहुत थोडे थे। सोवियत सरकार न मौका मिलते ही इस समस्या को हल करने का सवप्रथम प्रयास किया। पहले शुरु मे पुराने टूटे फूटे मकानो को गिरा कर उनकी जगह आधुनिक भवन बनाए गए। जल और गम गस्लाई तथा मल निस्सरण प्रणालियों के निमाण का काय शुरु हुआ।

क्रांति के पूर्व की स्थिति की तुलना म १९४० तक शहरी मकानो की राशि म १५० प्रतिशत की वृद्धि हुई थी। लाखो लोग नये घरा म रहने लगे। पर समाजवादी उद्योगीकरण के साथ-साथ शहरा म लोगा की अभूतपूर्व सख्या म आगमन हुआ।

द्वितीय विश्व युद्ध न देश की अथव्यवस्था को भारी क्षति तो पहुचाई ही, आवास की समस्या को भी अधिक विकट बना दिया। बबर नाजी आक्रामको न १,७१० नगरा और शहरी ढग की बस्तिया तथा ७०,००० गावो को पूण या आशिक रूप से नष्ट कर दिया। युद्ध न ढाई करोड लोगा को बेघर कर दिया।

इन सब कारणा से आवास की समस्या का समाधान पिछड गया। यद्यपि निर्माण काय बहुत बडे पैमाने पर हुआ था, फिर भी इस समस्या को हल करने के रास्ते म कठिनाइया भी बहुत बढ गई।

आवास की समस्या किस प्रकार हल की जा रही है सोवियत सघ मे आवास की समस्या के समाधान का सामाजिक आधार इस प्रकार है जमीन तथा बडी आवासीय भूसम्पत्ति पर व्यक्तिगत स्वामित्व का न होना, अधिकतर शहरी आवास पर सरकारी या सहकारी स्वामित्व का होना, पूरी राष्ट्रीय अथव्यवस्था के विकास के एक अग के रूप म ही आवास निर्माण की राजकीय योजना का बनना, सरकार द्वारा बनाये फ्लैटा का कम किराए पर सदा के लिए दिया जाना (बडे और छोटे फ्लैटो का वितरण परिवारो के आकार के अनुसार होता है और इस प्रकार सरकार आवास की सुविधाओ म समानता लाने का प्रयास करती है), शहर के मकानो की देख रेख और मरम्मत सरकार करती है, आवास निमाण के साथ साथ अय आवश्यक सेवाआ तथा सास्कृतिक सुविधाआ का भी ख्याल रखा जाता है।

लोगो के कल्याण उनकी आवास स्थिति तथा मनोरजन का ख्याल रखना सोवियत राज्य की आवास नीति का आधार है। गृह निर्माण के पमाने के मामले मे सोवियत सघ का विश्व म प्रथम स्थान है और उसकी जनसख्या तथा फ्लैटा की सख्या का जो अनुपात है उस दष्टि से भी वह ससार के सबसे आगे के देशा म आता है।

इस समय सोवियत सघ मे हर शहरी नागरिक को औसतन ११ २ वग मीटर से अधिक आवास क्षेत्र मिलता है। सरकार गह निर्माण पर बहुत भारी रकम खच करती है जो बराबर बढती जा रही है। १९७१ ७५ के बीच कुल ७,३५० करोड रूबल गह निर्माण पर खच होगा जो इसके पूव के पाच वर्षों म इस मद म हुए खच से २२ प्रतिशत अधिक है। इस काल म करीब १ करोड ४० लाख फ्लैट बनाए जाएगे जिनके फर्शों का कुल क्षेत्रफल ५८ करोड वग मीटर होगा, जो १९५० म सोवियत सघ के कुल आवास-स्थान से अधिक है। इससे और भी छ करोड लोगो का पहले की अपेक्षा अधिक अच्छा आवास मिलेगा।

गह-निर्माण के काम को और अधिक बढाने के साथ साथ, वतमान पचवर्षीय योजना में फ्लैटा के ढाचे, बनावट एव सजावट म तथा मकानो की वास्तुकला और

उनकी बनावट म काफी सुधार लाने की आशा की जाती है । आवासो का बराबर अधिक बढिया बनना और उनमे अधिक से अधिक सुविधाओं का होना, सोवियत जनता की बढती हुई आवश्यकताओ तथा सोवियत राज्य की आर्थिक एव तकनीकी सभावनाओ के अनुरूप ही है ।

फ्लटों का वितरण नागरिक जिस क्षेत्र मे रहते हैं या जहा काम करते हैं, वहा अपने आवास की आवश्यकताओ की सूचना लिखा देते है । आवश्यकता की तीव्रता ही मुख्य मानदण्ड है । युद्ध मे अपग हुए लोगो, युद्ध म मृत सनिको के परिवारो, विकलाग मजदूरो तथा कुछ अन्य प्रकार के लोगो, जसे एसे लोगो को जो पुराने घरो म रहते हैं, कुछ विशेष सुविधाए प्राप्त ह ।

मेहनतकश जनता के प्रतिनिधियो की सोवियतो के मकानो के फ्लटो का वितरण इन सोवियतो की कायकारिणी समितिया करती है । इसम जन प्रतिनिधि तथा सावजनिक सस्थाओ के प्रतिनिधि भाग लेते ह । कारखानो और सस्थाओ द्वारा बनाए गए कमरो का वितरण उनके व्यवस्थापक तथा सम्बन्धित ट्रेड यूनियनें करती हैं पर स्थानीय सोवियत की कायकारिणी समिति की स्वीकृति इसके लिए आवश्यक ह ।

प्राथमिकता का निणय सोवियतो के आवास आयोगो या कारखानो और सस्थाओ की ट्रेड यूनियन समितियो के आवास एव कल्याण आयोगो द्वारा किया जाता है । इस काम म सावजनिक आयोगो (जिनम स्वयमेवक होते हे) का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है । वे आवेदको की आवास स्थिति का निरीक्षण करते हैं और आवास आयोगो को अपनी सिफारिश देते हैं ।

किराया सोवियत सघ म किराया दुनिया म सब देशो से कम और सबसे अधिक स्थायी है । सुविधा व्ययो को सम्मिलित करके भी मकान का किराया आम तौर पर परिवार के बजट का चार से पाच प्रतिशत से अधिक नही होता ।

गृह प्रवेश शुल्क नही देना पडता । परिवार म सबसे अधिक वेतन पाने वाले की आय के अनुसार किराया निश्चित किया जाता है । रसोईघर, बाथ रूम आदि का हिसाब किराया निश्चित करने म नही किया जाता, रहने लायक स्थान का ही किराया लिया जाता ह । निर्माण खर्च पूरा करने की तो बात दूर किराये म रख रखाव का खर्च भी पूरा नहीं होता । जनता को इससे २०० करोड रूबल की वार्षिक बचत होती है ।

राज्य मकानो की मरम्मत और रख रखाव भी करता है तथा उस फ्लटो का आधुनिकीकरण और पुनर्निमाण भी करता ह जो अच्छे मकानो के अग तो हैं पर जो वतमान आवश्यकताओ के अनुकूल नही बने हैं । इस पर कम-से-कम ४०० करोड रूबल प्रतिवर्ष खर्च होता है । जिन मकानो का आधुनिकीकरण नही किया जा सकता उन्हें तोड़कर गिरा दिया जाता है । उनके बाशिदो को आधुनिक फ्लैट दिए जाते ह ।

सहकारी आवास निर्माण बड पमाने पर आवास निर्माण होने पर भी आवास का काफी काम अभी बाकी पड़ा है । अत कारखानो, सगठनो तथा सोवियतो की काय कारिणी समितियो म, शहरी और ग्रामीण दोनो क्षेत्रो म, उन लोगो की सहकारी समि

तिया बनाई जाती है जो अपने पैसों से फ्लैट बनाना चाहते है। सहकारी समिति का हर सदस्य अपने फ्लैट पर खर्च का ४० प्रतिशत भाग अग्रिम जमा करता है। बाकी रकम सरकार ॰ ५ प्रतिशत सूद पर ऋण के रूप में देती है जिसे दस से पन्द्रह वर्षों में अदा करना होता है। दूरस्थ क्षेत्रों में प्रारंभिक अदायगी २० प्रतिशत है और सरकार की ओर से ऋण २० वर्ष के लिए दिया जाता है।

गृह-निर्माण सहकारी समिति के आवेदन प्राप्त होने के एक महीने के अन्दर स्थानीय अधिकारियो द्वारा उसे मकान के लिए जमीन (नि शुल्क) मिल जानी चाहिए और जहा तक संभव हो यह जमीन सहकारी समिति के सदस्यों के कार्य स्थल के निकट होनी चाहिए। यदि सहकारी समिति के विकास क्षेत्र में कोई मकान है तो उसको गिराना, उसके लिए मुआवजा देना, उस मकान के लोगों को फिर से बसाना, उस क्षेत्र को विकसित करना सारी आवश्यक इंजीनियरी सुविधाओं का निर्माण करना तथा उसके बाद की सेवाओं और मनोरंजन के साधनों की व्यवस्था करना सरकार का काम है।

सहकारी गृह निर्माण का कार्य सरकारी संगठन ठेके पर मानक परियोजनाओं के अनुसार करते हैं। इसमें वे अपने ग्राहकों (सहकारी समितियों) की इच्छाओं का ख्याल रखते है और मूल्यों तथा समय के बारे में वे सरकारी गृह निर्माण की मर्यादाओं का पालन करते हैं।

देश में हो रहे पूरे गृह निर्माण कार्य का छ से सात प्रतिशत गृह निर्माण कार्य सहकारी समितियों द्वारा होता है।

व्यक्तिगत गृह निर्माण प्रत्येक नागरिक अपने लिए एक या दो मंजिला मकान बना सकता है। पर साधारणत कमरों की संख्या पांच से अधिक नहीं होनी चाहिए। ऐसे मकानों के लिए जमीन का प्लाट सरकार स्थायी रूप से बिना कोई शुल्क लिये देती है। उनके आकार के बारे में स्थानीय अधिकारी स्थापित परम्पराओं के आधार पर निर्णय लेते है।

शहर के निवासी भी ग्रामीण क्षेत्रों में अपने लिए कुटिया बना सकते है।

व्यक्तिगत गृह निर्माण देश में सम्पूर्ण गृह-निर्माण का लगभग एक तिहाई भाग है। छोटे शहरों तथा गावों में यह अधिक प्रचलित है।

जिन नागरिकों को प्लाट मिल चुके है तथा जिनकी गृह निर्माण परियोजना नियमानुकूल है उन्हें सरकारी बैंक से ७०० रूबल तक दो प्रतिशत सूद पर सात साल के लिए ऋण लेने का अधिकार है। शिक्षकों और डाक्टरों को अधिक आसान शर्तों पर ऋण मिलते है। शिक्षक को १,००० रूबल तक सरकारी बैंक से ऋण मिलता है। शहरों तथा शहरी ढंग की बस्तियों में रहने वाले डाक्टरों को शिक्षकों की तरह ही विशेष सुविधाएं मिलती हैं, गावों में रहने वाले डाक्टरों को १,२०० रूबल तक ऋण पाने का अधिकार है जिसकी अदायगी उन्हें दस वर्षों में करनी पड़ती है।

युद्ध के कारण जो अशक्त हो गए या अपने काम के सिलसिले में जिनका अंग भंग हुआ है ऐसे लोगों को १,००० रूबल तक ऋण मिलता है जिसे उन्हें ऋण मिलने के तीसरे वर्ष से शुरू करके दस वर्षों में वापस करना पड़ता है।

व्यक्तिगत गृह निर्माण करने वालों की ट्रेड यूनियनें काफी मदद करती हैं। वे जमीन का प्लाट पाने और ऋण पाने में उनकी मदद करती हैं, वे उन्हें प्रबंध का समर्थन भी दिलाती हैं तथा सामूहिक करारों में उपयुक्त धाराएं जुड़वाती हैं।

ऐसे मामलों में जहां जमीन के प्लाट तथा उन पर बने व्यक्तिगत मकान सरकारी या सार्वजनिक हित में ले लिये जाते हैं, तोड़े जाने वाले मकानों के मालिकों को या तो मुआवजा दिया जाता है या उनके इच्छानुसार सभी सुविधाओं से सम्पन्न सरकारी फ्लैट दिये जाते हैं। दोनों ही स्थिति में गिराए गए अपने मकानों की चीजों का वे उपयोग कर सकते हैं। वे अपने घरों तथा अन्य मकानों को किसी दूसरी जगह भी ले जा सकते हैं और वहां उनका पुनर्निर्माण उसी संगठन के खर्च से होगा जिस संगठन को वे प्लाट दिये गये हों।

सोवियत नगर योजना की प्रवृत्तियां सोवियत नगर योजना का बुनियादी सिद्धान्त लोगों के काम और छुट्टी के लिए यथासंभव सर्वोत्तम परिस्थितियों का निर्माण करना है। चूंकि भूमि सार्वजनिक सम्पत्ति है तथा पूरे देश के स्तर पर गृह निर्माण कार्य नियोजित ढंग से होता है, अतः आधुनिक नगर योजना की कठिन समस्या का भी समाधान संभव हो पाता है। अधिकतर खाली जमीन पर ही गृह निर्माण कार्य होता है, घरों के समूहों का रिहाइशी जिला या उप जिला बनता है जिनकी सेवाओं और सुविधाओं की अपनी अलग अलग व्यवस्था होती है।

आज वस्तुतः प्रत्येक सोवियत शहर के पास अपने विकास और सुधार की २० से २५ वर्षों के लिए अलग सामान्य योजना है। फिर भी नगर नियोजकों को इससे भी आगे तक देखना पड़ता है। उन्हें भविष्य में आने वाली प्रवृत्तियों का भी अनुमान लगाना पड़ता है और इस प्रकार अपनी योजना बनानी पड़ती है कि काफी लम्बे समय तक शहरों का विकास सर्वोत्तम परिस्थितियों में होता रहे।

सरकारी समितियों द्वारा स्वीकृत किये जाने के पूर्व सामान्य योजनाओं के मसौदों पर सोवियत संघ के वास्तुकारों की यूनियन और अखबारों द्वारा विचार किया जाता है तथा विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के आयोगों द्वारा उनका परीक्षण होता है। जिस सामान्य योजना को स्वीकृत किया जाता है वही नगर नियोजकों के लिए योजना तथा निर्माण सम्बन्धी ठोस प्रश्नों के बारे में निर्णय करने में निर्देश का काम करती है।

विवाह और परिवार

परिवार, जो नागरिकों के सामाजिक और व्यक्तिगत हितों का मिलान वाली एक इकाई है, सोवियत समाजवादी समाज के लिए विशेष महत्व का विषय है।

लोगों के बीच निजी स्वामित्व के सम्बन्ध को खत्म करके समाजवाद ने सुविधा-नुकूल विवाह के सामाजिक आर्थिक आधारों का उन्मूलन कर दिया।

सोवियत विवाह कानून में किसी धार्मिक या जातिगत बन्धनों या मर्यादाओं के लिए कोई स्थान नहीं है। यदि कोई किर्गीज लड़का किसी रूसी लड़की से शादी करता है तो इससे किसी को कोई आश्चर्य नहीं होता। किसी के सम्बन्धियों में रूसी, यहूदी, उक्राइनी, तातार या देश में बसने वाली सौ से अधिक जातियों में कोई भी क्यों न हो, इसमें किसी को कोई आश्चर्य नहीं होता।

बच्चे मां या बाप किसी की जाति अपना सकते हैं। इसका निर्णय मां बाप ही करते हैं।

सोवियत संघ की सर्वोच्च सोवियत ने २७ जून १९६८ को विवाह और परि-वार के विषय में एक नया कानून पास किया जो पूरे सोवियत संघ तथा उसके संघटक जनतन्त्रों में लागू है। इस कानून में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि "सोवियत परिवार का कल्याण, जिसमें नागरिकों के सामाजिक और व्यक्तिगत हित बहुत ही अच्छी तरह घुले मिले होते हैं सोवियत राज्य के लिए बड़े ही महत्व का विषय है।"

सोवियत संघ में लड़कों के लिए विवाह की अल्पतम आयु १८ वर्ष है। अधिक-तर जनतन्त्रों में तरुणियों के लिए भी यही आयु रखी गयी है। बहुत ही खास मामलों में अठारह वर्ष से पहले भी शादी की रजिस्ट्री हो सकती है पर इसके लिए मां बाप की सहमति तथा स्थानीय अधिकारियों की अनुमति आवश्यक है। उक्राइन, मोल्दाविया तथा कुछ अन्य जनतन्त्रों में स्थानीय कानून के अनुसार लड़की १६ वर्ष में भी शादी कर सकती है।

शादी की रजिस्ट्री रजिस्ट्रार के दफ्तर में या विवाह प्रासादों में होती है। वर और कन्या एक विशेष पुस्तक में अपने हस्ताक्षर करते हैं, सोवियत का कोई सदस्य या रजिस्ट्रार उनके हस्ताक्षरों की पुष्टि करता है, उसके बाद उन्हें विवाह के प्रमाण-पत्र दे दिये जाते हैं।

वैसे तो सोवियत संघ में बसने वाली विभिन्न जातियों के विवाह सम्बन्धी अलग-अलग रिवाज हैं, पर वर और कन्या के घरों पर उत्सव होते ही हैं।

सोवियत संघ में प्रतिवर्ष २५ लाख शादियां होती हैं अर्थात हर १,००० की जनसंख्या पर दस शादियां।

१९७० की जनगणना के अनुसार सोवियत संघ में १० करोड ७२ लाख शादी शुदा लोग हैं (१९५९ में शादी शुदा लोगों की संख्या ८ करोड ६५ लाख थी)।

माता पिता के कर्तव्य बच्चे जब तक बालिग नहीं हो जाते तब तक उनका पालन पोषण करने, उनके स्वास्थ्य की देख रेख करने तथा समाज के लिए उन्हें उपयोगी बनाने की जिम्मेदारी मां-बाप की है।

इन सब कामों में उन्हें राज्य का पूरा समर्थन प्राप्त होता है। उदाहरण के लिए राज्य बड़े परिवारों तथा अकेली माताओं को आर्थिक सहायता देता है ताकि वे अपने बच्चों को स्कूल भेज सकें। आवश्यक होने पर बच्चों को सरकारी नर्सरियों तथा किंडरगार्टेनों में भर्ती कर लिया जाता है। राज्य बच्चों के अस्पतालों, खेलकूद स्कूलों, स्टेडियमों, नाटकघरों और सिनेमाघरों की संख्या बराबर बढ़ाता रहता है।

बच्चों का पालन पोषण करना मां बाप दोनों की जिम्मेदारी है। तलाक की स्थिति में, पति पत्नी में से जिसके पास बच्चे हैं उसके इच्छानुसार दूसरे के पास यदि एक बच्चा है तो अपनी आय का २५ प्रतिशत, यदि दो हैं तो अपनी आय का तिहाई भाग और यदि दो से अधिक हैं तो आधी आय देनी होती है। यदि संभरण खर्च देने वाले व्यक्ति की दूसरी शादी हो जाती है तो अदालत की आज्ञा से अब तक दी जा रही रकम घटायी जा सकती है।

बच्चों का कर्तव्य अधिकतर सोवियत परिवारों में बच्चों और उनके माता पिता के बीच मुकदमेबाजी कभी नहीं होती। फिर जब कभी भी ऐसा होता है तो वहां कानून की पूछ होती है। बूढ़े माता पिता का भरण पोषण करना बच्चों का कर्तव्य है—मां की ५५ वर्ष की आयु के बाद और पिता की ६० के बाद, या यदि वे अशक्त हो गए हों तो फिर वहां आयु का प्रश्न नहीं उठता। माता पिता के भरण पोषण का भार अदालत अपनी आज्ञा द्वारा बच्चों पर देती है और बच्चों के वेतन के अनुसार मां बाप के संभरण व्यय की रकम निश्चित की जाती है।

तलाक की प्रक्रिया दम्पति में से कोई एक जब अदालत में तलाक के लिए अर्जी देता है तो अदालत के लिए इसके कारणों का पता लगाना तथा दोनों में समझौता कराने का प्रयास करना आवश्यक है। यदि समझौता प्रयास विफल हो जाता है और अदालत इस नतीजे पर पहुंचती है कि अब उनका दाम्पत्य जीवन संभव नहीं है तब वह तलाक की अनुमति देती है।

यदि मां-बाप दोनों इस बात से सहमत हों तथा उनके कोई नाबालिग बच्चे न हों तो रजिस्ट्रार के दफ्तर से भी तलाक लिया जा सकता है और उसमें मुकदमेबाजी की आवश्यकता नहीं।

पर यदि पत्नी गर्भवती है या उसे एक साल से कम उम्र का बच्चा है तो फिर तलाक की अनुमति नहीं मिलती।

तलाक के बाद बच्चा मां के साथ रहेगा या बाप के साथ, इस बात का निर्णय करने में अदालत केवल बच्चे के हित का ख्याल रखती है। कानून की दृष्टि में मां-बाप

दोना के अधिकार बराबर ह । झगडे की स्थिति म बच्चे के लिए मा के सरक्षण को आवश्यकता को अधिक महत्व दिया जाता है और मा के पक्ष म ही निणय की अधिक सभावना रहती है । अलग-अलग हर मामले म अदालत सारी परिस्थितिया पर पूरी तरह विचार करती है । वह बच्चो के प्रति मा बाप के दृष्टिकोण तथा मा-बाप के प्रति बच्चा के दृष्टिकोण पर भी पूरी तरह विचार करती है । किसी भी परिस्थिति म तलाक के बाद बच्चे को दखने का मा-बाप का अधिकार सुरक्षित रहता ह ।

तलाक के बाद सम्पत्ति का बटवारा सद्धान्तिक रूप म विवाहित जीवन म अर्जित सम्पत्ति पर मा-बाप दोना ही का बराबर अधिकार होता ह । पत्नी क अधिकार पर इस बात का कोई असर नही पडता कि उसन काम किया ? कि नही । भले ही वह घरेलू मामला तथा बच्चा की दखरख म ही पूरी तरह क्या न लगी रही हो, इससे उसके हिस्से का महत्व कम नही होता ।

सयुक्त सम्पत्ति म घर, ग्रामीण आवास मोटरगाडी, गहस्थी के सामान, कीमती वस्तुए आदि आती हैं, पर पति या पत्नी की व्यक्तिगत वस्तुए तथा एसी सम्पत्ति जो उनके पास शादी के पहले स थी या जो उन्ह विरासत या भट म मिली है सयुक्त सम्पत्ति म नही आती ।

कुछ मामला म पति-पत्नी के बराबर हिस्से के सिद्धान्त स हट कर भी अदालत निणय करती है । सामायत बच्चे जिसके साथ रहत है, उसी का पल्डा भारी होता ह ।

एसे मामला म, जहा एक पक्ष सामाजिक दृष्टि से कोई लाभदायक काम नही करता रहा हो या परिवार के हित के खिलाफ सम्पत्ति को बर्बाद करता रहा हो, सम्पत्ति का अधिकतर भाग दूसर पक्ष को मिल सकता है ।

दोना ही पक्षो की आर्थिक सुदढता तथा भविष्य म विश्वास—य जो सोवियत जीवन की प्रमुख बात ह, इनके कारण ववाहिक झगडो को व्यक्ति, परिवार तथा समाज के हित म तय करने म मदद मिलती है ।

उत्तराधिकार का प्रश्न जहा कोई उत्तराधिकारी नही होता वहा सम्पत्ति राज्य की घोषित हो जाती है । पर एसा शायद ही कभी होता है । साधारणत व्यक्तिगत सम्पत्ति का कोई न कोई उत्तराधिकारी हो ही जाता है । अय बहुत से देशा की भाति सोवियत सघ म कोई उत्तराधिकार कर नही है ।

कानून की दृष्टि मे उत्तराधिकारिया की पहली श्रेणी तथा समान अधिकार प्राप्त व्यक्तिया मे आते ह बच्चे (गोद लिय तथा पिता की मृत्यु क बाद पदा हुए भी) पति-पत्नी म से जो जीवित है तथा माता पिता या जिन्हान गोद लिया है । दूसरी श्रेणी म (यदि पहली श्रेणी वाले उत्तराधिकारी नही है या उन्होने अपना उत्तराधिकार अस्वीकृत कर दिया है) आते है मृत व्यक्ति के भाई और बहन और उनके दादा दादी या नाना नानी । कानून की दृष्टि स ऐसे व्यक्ति भी उत्तराधिकारी की श्रेणी मे आते है जो अशक्त ह तथा मृत व्यक्ति पर उसकी मृत्यु के पूव कम से-कम एक वष तक आर्थिक

दृष्टि से आश्रित रहे है। उत्तराधिकार पाने वाले अन्य व्यक्तियों की बराबरी में ही इन्हे भी उसका हिस्सा मिलता है।

पोते पोतियों (या नाती नतिनियो) तथा उनके बच्चों को कानून के द्वारा उत्तराधिकार का मौका तभी मिलता है जब उनके माता पिता में से कोई भी, जिसे उत्तराधिकार का अधिकार है जीवित नही है। वे मृत व्यक्ति के हिस्से के बराबर हिस्सा पाते हैं।

कानून की दृष्टि में जो उत्तराधिकारी है उसे बराबर हिस्सा मिलता है। पर यह तभी होता है जब कोई वसीयतनामा नही हो। सोवियत संघ के नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी पूरी सम्पत्ति या सम्पत्ति का एक हिस्सा किसी को भी वसीयत कर दे सकता है, चाहे वह कानूनी दृष्टि से उसके उत्तराधिकारियों की श्रेणी में आता हो या नहीं। वह उनमें से सभी को उत्तराधिकार में वंचित कर सकता है या उदाहरण के रूप में, वह किसी को अपना घर देने का या किसी को अपनी कार आदि देने का भी निर्णय कर सकता है। पर कानून एसे उत्तराधिकारियों के अधिकार की रक्षा करता है जो अशक्त है या जो अभी बालिग नही हुए हैं। वसीयतनामा के बावजूद उन्हे उत्तराधिकार का लाभ मिलता है और साधारण स्थिति में उत्तराधिकार का उन्हें जो हिस्सा मिलना चाहिए था उसका कम से कम दो तिहाई हिस्सा उन्हें इस स्थिति में भी मिलता है। सम्पत्ति की वसीयत राज्य या किसी सार्वजनिक संस्था के नाम भी की जा सकती है। कलाकृतियों, पुस्तकालयों तथा बहुमूल्य सांस्कृतिक संपदाओं के मालिक अक्सर ऐसा करते हैं।

विदेशी व्यक्तियों के सम्पत्ति अधिकार की सुरक्षा मास्को स्थित वकीलों के कालेज के अध्यक्षमंडल की एक संस्था है जिसे इन्युर्कोलेजिया कहते है। इस गैर सरकारी पेशेवर संस्था का मुख्य काम है ऐसे मामलों में उचित कारवाई करना जहां या तो सोवियत नागरिकों को विदेश में उत्तराधिकार के रूप में सम्पत्ति मिली हो या विदेशी व्यक्तियों को सोवियत संघ में उत्तराधिकार का धन मिला हो। यह विदेशी व्यापारिक, औद्योगिक तथा समुद्री स्वार्थों की ओर से सोवियत संगठनों से बातचीत भी करती है। इन्युरकोलेजिया ऐसे मामलों को भी देखता है जिनमें या तो किसी विदेशी द्वारा सोवियत नागरिक से संभरण व्यय की माग की गई हो या किसी सोवियत नागरिक द्वारा किसी विदेशी से संभरण व्यय का दावा किया गया हो।

यह संस्था विश्व के अनेक देशों के वकीलों से व्यापक सम्पर्क बनाये रखती है। आदान प्रदान के आधार पर इसके ऐसे स्थायी संवाददाता हैं जो सोवियत नागरिकों और संगठनों के सामान्य कानूनी दावों पर नजर रखते हैं।

इन्युर्कोलेजिया के वकील भी अन्य वकीलों की तरह अपने मुअक्किलों से फीस लेते है। इन्युर्कोलेजिया प्रतिवर्ष हजारों मामले लेता है, जिनमें अधिकतर उत्तराधिकार के ही मामले होते है।

यदि कोई सोवियत नागरिक किसी विदेशी व्यक्ति के नाम अपनी सम्पत्ति की वसीयत करता है, तो सोवियत सघ का विदेश व्यापार बैंक विदेशी मुद्रा में उस व्यक्ति को उतनी रकम भेज देता है। जिन देशों के साथ सोवियत सघ का उत्तराधिकार के सम्बन्ध में समझौता है, उन देशों के नागरिकों के लिए रकम भेजने में कोई कठिनाई नहीं होती। प्राय ऐसे सभी देशों के साथ इस प्रकार का समझौता है जिनके साथ सोवियत सघ का राजनयिक सम्बन्ध है।

विदेशी नागरिक सोवियत सघ में रहने वाले अपने सम्बन्धियों या अन्य व्यक्तियों के नाम अपनी सम्पत्ति की वसीयत कर सकते हैं। जिन व्यक्तियों के नाम सम्पत्ति छोड़ी गई है उनको विदेश से उसे प्राप्त करने में किसी प्रकार की बाधा नहीं पहुचायी जाती है। यदि वसीयत करने वाला व्यक्ति सोवियत सघ में रहने वाले अपने सम्बन्धी का ठीक पता नहीं जानता है तो इन्युरकोलेजिया उपयुक्त सूचना इस प्रकार समाचारपत्र में प्रकाशित कर देता है

> "मृत श्री न० की सम्पत्ति। इन्युरकोलेजिया को उनके पोता या अन्य सम्बन्धियों की जानकारी चाहिए।" इन्युरकोलेजिया का पता है १३ त्वेर्स्कोइ बुलेवाड, मास्को।

शिक्षा

सोवियत सघ क नागरिको का नि शुल्क शिक्षा पाने का अधिकार है। इसम उच्चतर शिक्षा भी शामिल है।

जारकालीन रूस म तीन चौथाइ जनसख्या निरक्षर थी। राष्ट्रीय बाह्यावला की जनसख्या तो करीब-करीब पूरी की पूरी निरक्षर थी। १८६७ की जनगणना के अनुसार ताजिका किर्गीजा, तुर्कमाना उजबका तथा यजाका म क्रमश ० ८, ० ६, ० ७ १ ६ और २ प्रतिशत व्यक्ति ही साक्षर थे। १२ करोड ८६ लाख की जनसख्या म केवल १४ लाख ही ऐसे थ जिन्ह प्राइमरी स्कूल म अधिक की शिक्षा मिली थी। शहरी क्षेत्रा म हजार म ६१ व्यक्ति एस थे जिन्ह प्राइमरी स्तर से ऊपर की शिक्षा मिली थी, ग्रामीण क्षेत्रा म हजार म केवल तीन व्यक्ति ही ऐसे थे। श्रमजीवी परिवारा क अधिकतर बच्चे माध्यमिक शिक्षा भी पूरी कर पाने की आशा नही करत थ। क्रांति के पूव के रूस म केवल २ लाख ६० हजार व्यक्ति एस थ जिन्ह उच्चतर या अपूर्ण उच्चतर या विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा मिली थी।

१६१७ की अक्तूबर समाजवादी क्रांति न पूरी श्रमजीवी जनसख्या क लिए सस्कृति और विद्या का द्वार खाल दिया।

निरक्षरता उन्मूलन के सम्बध म १६१६ म आनप्ति पारित किए जान के बाद शहरा और गावो, मिला और फक्टरिया मे विशेष क्लास खोल गए और करोडो की सख्या मे वयस्क लाग लिखना पढना सीखन लग। माध्यमिक स्कूलो तथा उच्चतर शिक्षा सस्थानो का पूरी तरह पुनगठन हुआ, शिक्षा नि शुल्क की गई और मातभाषा के माध्यम से पढाइ होने लगा। उस समय से राज्य बराबर मजदूरा और किसाना के बच्चा का इन्स्टीच्यूटा और विश्वविद्यालया म पढने के लिए आर्थिक सहायता दता आ रहा है।

धीर धीर सार देश म चार-वर्षीय सावत्रिक और अनिवाय शिक्षा लागू हा गई।

युवका को १६२० म सम्बोधित करत हुए लेनिन न कहा पढा पढा और पढा।

उन्हान कहा कि पिछली पीढिया का सास्कृतिक विरासत स सावधानीपूवक एसी सभी चीजा का चुन कर ले लिया जाय जो आवश्यक और लाभप्रद हा और उन्ही के आधार पर नयी समाजवादी सस्कृति का निमाण तथा जनता के बीच से नये बुद्धिजीविया का विकास किया जाय। सरकार तथा समाज स प्रात्साहित ज्ञानार्जन की जबरदस्त भूख सावियत जीवन की एक खास विशेषता हो गई।

सोवियत सत्ताकाल म सावियत सघ म जमी सास्कृतिक क्रांति हुई, इतिहास म उसकी कोई मिसाल नही है। समाजवाद न शिक्षा और सस्कृति को समाज के सभी

वर्गों और सभी लोगो के लिए सुलभ बना दिया जो पहले केवल धनी लोगो का विशेषाधिकार था।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था के और अधिक विकास और सुधार के लिए माग निर्देशन किया। काग्रेस के निणयो के अनुसार कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति तथा सोवियत सरकार ने सामान्य, व्यावसायिक, विशेषीकृत माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा को आगे बढाने के लिए ठोस कदम उठाने के सम्बन्ध मे निणय लिये हैं।

जुलाई १९७३ मे सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत ने शिक्षा के सम्बन्ध मे सोवियत सघ तथा सघीय जनतत्रो के कानूनो के मूल सिद्धान्तो का समथन किया जिनके आधार पर ही किंडरगार्टेनो से लेकर विश्वविद्यालय तक सारी सावजनिक शिक्षा का गठन हुआ है।

ये सिद्धान्त इस प्रकार हैं

—सभी नागरिको को, चाहे उनकी जाति राष्ट्रीयता, यौन धार्मिक दृष्टिकोण, सम्पत्ति की स्थिति तथा सामाजिक प्रतिष्ठा जो भी हो, शिक्षा का समान अवसर मिलेगा,

—सभी बच्चो और किशोरो किशोरियो को अनिवाय शिक्षा दी जायगी,

—सभी शैक्षणिक सस्थान सरकारी और सावजनिक होंगे,

—शिक्षा अपने इच्छानुसार भाषा के माध्यम से मिलेगी किसी को भी अपनी मातभाषा मे या सोवियत सघ मे बसने वाली किसी भी जाति की भाषा मे शिक्षा पाने का हक है,

—हर स्तर पर शिक्षा नि शुल्क होगी और उच्चतर शिक्षा भी,

—कुछ खास प्रकार के छात्रो का खच राज्य वहन करेगा छात्रो और शिक्षार्थियो को मासिक अनुदान तथा अन्य सुविधाए दी जायेंगी,

—सावजनिक शिक्षा की प्रणाली मे एकरूपता तथा शिक्षा के विभिन्न चरणो मे अविच्छिन्नता होगी, जिन उपादानो से शिक्षा मे नीचे के स्तरो से ऊपर के स्तरो तक सक्रमण सभव होता है,

—शिक्षा के साथ-साथ कम्युनिस्ट ढग मे पालन-पोषण बच्चो और किशोरो किशोरियो के शिक्षण मे स्कूल, परिवार तथा जनता का सम्मिलित प्रयास,

—नयी पौद की शिक्षा और पालन पोषण को जीवन तथा कम्युनिज्म के निर्माण काय से जोडना,

—विज्ञान, प्रविधि तथा सस्कृति के नवीनतम विकासो के आधार पर शिक्षा व वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा शैक्षणिक प्रक्रिया मे निरन्तर सुधार लाना,

—शिक्षा तथा पालन पोषण मे मानवीयता तथा उच्चतम नैतिकता बरतना,

—सह शिक्षा,

—धम निरपेक्ष शिक्षा जिसमे धार्मिक प्रभाव बिल्कुल न हो।

सोवियत सघ म स्कूल जान के पूव के काल म वच्चा की देख रेख म लेकर सामान्य प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, स्कूल क बाहर के क्रियाकलाप आदि, व्याव सायिक प्रशिक्षण विशेषीकृत माध्यमिक शिक्षा तथा उच्चतर शिक्षा तक सावजनिक शिक्षा की एक अत्य त सुगठित प्रणाली है।

स्कूल-पूव सस्थाए परिवारा को अपन बच्चा को स्कूल के लिए तैयार करन म मन्द देती ह। बच्चा की देख रेख का भार लेकर व माताओ को अपनी नौकरियो और पेशा की ओर ध्यान दन तथा सामाजिक कार्यो म सक्रियता स भाग लन का मौका देती हैं।

किडरगार्टेनो और नसरियो म करीब एक करोड बच्चे रहन हैं। इन सस्थाओ को चलान का तीन चौथाई खच सरकार वहन करती है।

सोवियत स्कूल तीन प्रकार के हैं प्राइमरी (पहले से तीसरे वष तक), आठ वर्षीय (पहले से आठवें वष तक) तथा माध्यमिक (पहले से दशवें वष तक)।

नयी पीढी के लिए आठ-वर्षीय सावत्रिक शिक्षा का प्रारभ १६६२ म किया गया। वतमान पचवर्षीय काल म सावत्रिक माध्यमिक शिक्षा का आरभ सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस के निणयो के अनुसार पूरा किया जायगा।

शाम को पढान वाले स्कूल तथा पत्राचार द्वारा सामान्य शिक्षा क स्कूल भी हैं जहा काम करने वाले युवक अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी कर सकते हैं। प्रतिवष करीब १० लाख युवक अ शकालिक छात्र के रूप म अपनी आठ-वर्षीय और दस वर्षीय स्कूली शिक्षा पूरी करते हैं।

छात्रो की पष्ठिभूमि बढाने, उनकी क्षमता को विकसित करन तथा उन्हें अपने धधे का चुनाव करने म मदद देने के लिए सामान्य शिक्षा के स्कूलो में वकल्पिक पढाई चलायी जाती है। अन्य स्कूलो और क्लासो म भी इन्ही उद्देश्यो से उन्नत (अध्ययन) कायक्रम के रूप म आशिक रूप से विशेष विषयो हस्तकौशल, कला और खेलकूद की शिक्षा दी जाती है।

एसे बच्चो और किशोरो को जिन्हे लम्बे अरसे तक डाक्टरी इलाज की जरूरत है शहर के पास जगलो म स्थित स्वास्थ्य निर्माण सामान्य शिक्षा स्कूलो म रखा जाता है।

जो बच्चे अस्पतालो या सिनेटोरियमो म दीघ काल तक रहते है या घरो म ही जो बीमार पडे हैं, उन्ह भी नियमित रूप से सबक दिये जात हैं।

शारीरिक या मानसिक दृष्टि से अपग बच्चे विशेष सामान्य शिक्षा स्कूलो या आवासीय स्कूलो म पढ्ते है जहा उनकी शिक्षा, उनके व्यावसायिक प्रशिक्षण तथा स्वास्थ्य पर ध्यान दिया जाता है।

१६७२ ७३ के शिक्षा वष म सोवियत सघ म १,८१ ००० स्कूल थे (जिनम ५ ७०० दस-वर्षीय स्कूल थ)। इनम शिक्षको की कुल सख्या २६,८६ ००० और छात्रो

पूण सामा य माध्यमिक स्कूलों के मानक पाठयक्रम

विषय	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१ मातभापा	१२	१०	१०	६	६	३	३	२	२/०	—
२ साहित्य	—	—	—	२	२	२	२	३	४	३
३ गणित	६	६	६	६	६	६	६	६	५	५
४ इतिहास	—	—	—	२	२	२	२	३	४	३
५ समाज विनान	—	—	—	—	—	—	—	—	—	२
६ प्राकृतिक इतिहास	—	२	२	२	—	—	—	—	—	—
७ भूगाल	—	—	—	—	२	३	२	२	२	—
८ जीव विज्ञान	—	—	—	—	२	२	२	२	०/२	२
९ भौतिक विज्ञान	—	—	—	—	—	२	२	३	४	५
१० खगोल विनान	—	—	—	—	—	—	—	—	—	१
११ मानचित्रण	—	—	—	—	—	१	१	१	—	—
१२ विदेशी भापा	—	—	—	—	४	३	३	२	२	२
१३ रसायनशास्त्र	—	—	—	—	—	—	२	२	३	३
१४ ललित कला	१	१	१	१	१	१	—	—	—	—
१५ गायन और सगीत	१	१	१	१	१	१	१	—	—	—
१६ शारीरिक व्यायाम	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
१७ श्रम प्रशिक्षण	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
कुल अनिवाय पाठ	२४	२४	२४	२४	३०	३०	३०	३०	३०	३०
वकल्पिक क्लास के घट	—	—	—	—	—	—	२	४	६	६
कुल जोड	२४	२४	२४	२४	३०	३०	३२	३४	३६	३६

की ४,९३,२४,००० थी (जिनम १,४०,७२ ००० एक मे तीन क्लास तक २ ६३,१९,००० चौथ स आठव क्लास तक तथा ८९,३३,००० नौवे और दसव क्लास में थ।)

१९७३ म करीब ५० लाख छात्रो ने आठ वर्षीय शिक्षा पूरी की तथा ३७ लाख छात्रो ने दस-वर्षीय शिक्षा कायक्रम समाप्त किया। जिन व्यक्तियो न आठ वर्षीय शिक्षा पूरी की, उनम स करीब ९० प्रतिशत इस समय या तो सामान्य माध्यमिक स्कूलो म या माध्यमिक शिक्षा देने वाले अ य सस्थाना म अपनी पढाई चला रहे हैं।

व्यावसायिक प्रशिक्षण १९४० तक मुख्यत युवा मजदूरा को सीधे कारखानों म या कारखाना के शिक्षार्थी स्कूलो मे प्रशिक्षण दिया जाता था। उसके बाद व्याव-

सायिक प्रशिक्षण स्कूलो की एक राजकीय व्यवस्था कायम की गई। अब यहा इस प्रकार के १,७०० से अधिक स्कूल है। व्यावसायिक प्रशिक्षण १ १०० विशेष विषयो म दिया जाता है।

१९६५ म तथा १९७० के बीच ७० लाख से ऊपर लोगो को व्यावसायिक प्रशिक्षण मिला। १९७१ म १९७५ के बीच ६० लाख अन्य लोग प्रशिक्षण स्कूलो म उत्तीर्ण होकर निकलेंगे। आज के इस वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के युग म, उत्पादन के पूर्णत यंत्रीकरण और स्वचालन के युग म मजदूर का मुख्य काम जटिल मशीनो का परिचालन नियंत्रण तथा उन्हे ठीक करना है, जिसके लिए ठोस तकनीकी ज्ञान तथा विज्ञान म ऊची कुशलता की आवश्यकता होती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण के क्षेत्र म सबसे महत्वपूर्ण काय ऐसे स्कूलो का जाल बिछाना है जो छात्र को एक धधा देने के अलावा उसे पूरी माध्यमिक शिक्षा भी दे।

१९७३ म देश म करीब १ ३०० माध्यमिक व्यावसायिक स्कूल थे। १९७५ के अत तक इस प्रकार के स्कूलो म छात्रो की संख्या पूरे समय वाले व्यावसायिक स्कूलो की कुल छात्र संख्या का ४० प्रतिशत हो जायगी। नियमत व्यावसायिक स्कूलो मे उन्ही लडके लडकियो को प्रवेश मिलता है जिन्होने कम से कम सात वष तक की स्कूली शिक्षा पाई है। यहा भी पढाई नि शुल्क है। अधिकतर छात्रो को कपडे जूते, खाना और रहना भी मुफ्त दिया जाता है। बाकी को सरकारी अनुदान मिलते हैं। जितने लोग प्रशिक्षण पूरा कर लेते हैं उन्हे अपने ही धधे म काम दिया जाता है।

एक से तीन वष तक के पाठ्यक्रम वाले साधारण शहरी व्यावसायिक स्कूल हैं और ऐसे भी स्कूल है जिनमे तीन से चार वष के पाठ्यक्रम है और जो व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ साथ माध्यमिक शिक्षा भी देते है। व्यावसायिक स्कूलो मे मजदूरो को विभिन्न उद्योगो, निर्माण परिवहन व्यापार और सामाजिक सेवा के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। ग्रामीण स्कूलो म एक या दो वर्षों म ट्रैक्टर और कम्बाइन ड्राइवरो खेती की मशीनो तथा बिजली के कारखानो आदि के आपरेटरो को प्रशिक्षित कर दिया जाता है।

व्यावसायिक स्कूलो के पाठ्यक्रम मे सिद्धात और व्यवहार दोनो को स्थान दिया गया है। व्यावहारिक प्रशिक्षण मे स्कूल मे बीतने वाले कुल समय का ६० से ७० प्रतिशत जाता है। पहले छात्रो को स्कूल के खातो और फार्मो म बुनियादी हुनर सिखाया जाता है। बाद म कारखानो, सामूहिक और राज्य फार्मों म भी प्रशिक्षण दिया जाता है जहा काय की वास्तविक स्थितियो म व्यावहारिक कुशलता विकसित की जाती है।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम मे प्राविधिक विषय (इलेक्ट्रिकल इजीनियरी रेडियो इलेक्ट्रानिक्स प्राविधिक मिकेनिक्स, नक्शानवीसी आदि) तथा सामान्य विषय (गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि) शामिल है।

मानक पाठ्यक्रम

उन जुडाई मजदूरों के व्यावसायिक स्कूलों के लिए जो इस्पात तथा प्रबलित कन्क्रीट निर्माण के क्षेत्र म काम करग
(इसम सामान्य माध्यमिक शिक्षा के विषय भी शामिल है)

विषय	तीन साला कोस घटो की सख्या
१ व्यावसायिक चक्र	
१ उत्पादन प्रशिक्षण	२,२२४
२ विशेष प्रविधि	३३४
३ वस्तुओ का अध्ययन	७३
४ मिकनिकल ड्राइंग	११२
५ इलेक्ट्रिकल इजीनियरी तथा बुनियादी औद्योगिक इलेक्ट्रानिक्स	१२६
६ शारीरिक प्रशिक्षण	२१२
कुल जोड	३,०८१
२ सामान्य चक्र	
१ मातभाषा	६०
२ साहित्य	२१२
३ गणित	४३०
४ इतिहास	२०२
५ सामाजिक विज्ञान	६०
६ भूगोल	७८
७ जीव विज्ञान	२६६
८ भौतिक विज्ञान	२०२
९ खगोल विज्ञान	१७
१० रसायनशास्त्र	१७८
११ विदशी भाषा	१९२
कुल जोड	१ ९३०
परामश	१००
परीक्षाए	५४
कुल जोड	५ १६५
सौंदयबोधी शिक्षा (वैकल्पिक)	६०
कुल जोड	५,२२५

१९७३ म देश के व्यावसायिक स्कूलो ने १८ लाख युवा कुशलताप्राप्त मजदूरो का प्रशिक्षित किया। कारखाना, दफ्तरो और फार्मों म व्यक्तिगत रूप से, दलो मे तथा शिक्षार्थियो के स्कूल क रूप म करीब २ करोड मजदूरो को नये व्यावसायिक कौशल प्राप्त करने का अवसर दिया गया।

विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलों म वसे लोगो का प्रवेश दिया जाता है जिन्होंने आठ या दस वर्ष की स्कूली शिक्षा पूरी कर ली है। इन स्कूलो म विभिन्न प्रकार के ५०० स अधिक विशेष विषय हैं।

विशेषीकृत माध्यमिक स्कूल मुख्यत दो प्रकार के होते हैं। एक प्रकार के तकनीकी स्कूल उद्योग निर्माण परिवहन और संचार संबधो के लिए विशेषज्ञो तथा कृषि कार्यकर्ताओ अर्थशास्त्रियो आदि को प्रशिक्षित करते हैं। दूसरे प्रकार के प्रशिक्षण केन्द्रो म शिक्षको मेडिकल कर्मचारियो संगीतज्ञो, कलाकारो, थियेटर कर्मचारियो, नाविको आदि का प्रशिक्षण होता है।

विशेषीकृत माध्यमिक स्कूल मिस्तरियो, प्रविधिज्ञो, धातुकर्मियो, बिजली कर्मियो रेडियो विशेषज्ञो खान विशेषज्ञो आदि को प्रशिक्षित करते हैं। कृषि पेशो म पशुधन विशेषज्ञ कृषि वनानिक तथा कनिष्ठ मिस्तरी भी आते हैं। निर्माण उद्योग को तकनीशियन जुडाई मजदूर, नियोजक तथा सर्वेक्षक आदि मिलते हैं। व्यापारिक विशेषज्ञताओ मे माल विशेषज्ञ मुनीम आदि आते हैं। अध्यापन, संगीत एव कला स्कूल प्राथमिक स्कूलो के लिए शिक्षक सामान्य स्कूलो के लिए संगीत, गायन तथा ड्राइंग शिक्षक तथा किंडरगार्टेनो के लिए कर्मचारी तैयार करते हैं। मेडिकल स्कूल सहायक डाक्टरो भेषजज्ञो दांत के मिस्त्रियो नर्सों आदि को प्रशिक्षित करते हैं।

विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलो मे सामान्य माध्यमिक शिक्षा के अलावा छात्र अपने विशेष विषयो का सद्धान्तिक तथा व्यावहारिक ज्ञान अर्जित करते हैं। अन्तिम वर्षों मे अधिकतर व्यावहारिक काम ही होता है। आखिर मे छात्र को या तो एक थीसिस तयार करनी पडती है या राजकीय परीक्षा पास करनी होती है। जिन लोगो ने आठ वर्षीय स्कूल की शिक्षा पूरी की है, उनको तीन से चार वर्ष का कोर्स करना पडता है और जिन लोगो ने माध्यमिक स्कूल की शिक्षा पूरी कर ली है, उन्हे दो से तीन वर्ष (अधिकतर २ ५ वर्ष) का कोर्स करना पडता है। जो लोग शाम की पाली मे पढते हैं, पत्राचार कोर्स कर रहे है उनको साधारणत एक वर्ष अधिक लगाना पडता है। विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलो मे प्राप्त डिप्लोमा के आधार पर छात्र उच्चतर शिक्षा संस्थानो म प्रवेश के लिए आवेदन कर सकते हैं।

१९७३ मे ४ २७० विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलो म कुल छात्रो की संख्या ४५ लाख थी, जिनमे २७ लाख दिन वाले विभागो म थे, ५ लाख ७० हजार संध्याकालीन कोर्सों मे तथा ११ लाख ८० हजार पत्राचार कोर्सों म थे। १९७३ मे विशेषीकृत माध्यमिक स्कूलो ने ११ लाख लोगो को प्रशिक्षित किया।

उच्चतर शिक्षा विश्वविद्यालयों और पोलितक्नीकी तथा विशेषीकृत सस्थानो म दी जाती है जहा से विज्ञान, प्रविधि एव सस्कृति के विभिन्न विभागो के लिए व्यापक ज्ञान स युक्त उच्च योग्यता प्राप्त विशेषज्ञ आते है।

१९७३ म उच्चतर शिक्षा की ८२५ सस्थाए सोवियत सघ म चल रही थी (इनमे ६८ विश्वविद्यालय भी है)। इनकी कुल छात्र सख्या ४६ ३०,००० थी जिनमे २३,६०,००० दिन के लेक्चरो म जाते थे, ६ ४०,००० शाम वाले कोस करत थे तथा १६,००,००० पत्राचार द्वारा अध्ययन करते थे। १९७३ म सोवियत सघ की राष्ट्रीय अथव्यवस्था को ७,००,००० से अधिक उच्चतर शिक्षा प्राप्त नय विशेषज्ञ मिले।

सोवियत सघ मे उच्चतर शिक्षा सस्थाए भूविज्ञान, खनिकम बिजली इजीनियरी, धातुकम, मिकनिकल और इलेक्ट्रिकल इजीनियरी, रेडियो इलेक्ट्रानिक्स, वन विद्या, रसायनशास्त्र और रासायनिक प्रविधि निर्माण एव वस्तुकला, भूमि सर्वेक्षण, हाइड्रो मेटरिओलोजी, कृषि (जिसम कृषि विज्ञान, पशु विज्ञान पशुपालन भी शामिल हैं) परिवहन, अथशास्त्र, विधि चिकित्सा एव शारीरिक व्यायाम दशन, इतिहास, भाषा विज्ञान, पत्रकारिता, शिक्षा शास्त्र, पुस्तकालय काय तथा ग्रथसूची, रगमच, सगीत तथा ललित कला आदि ४०० स ऊपर विषयो म विशेष अध्ययन कराती ह।

शिक्षण व्यापक वज्ञानिक आधारो पर सवस्थित है। सिद्धान्तो पर लेक्चरो के साथ साथ हर विषय म व्यावहारिक क्लास भी होत हैं। नियमत शुरू क वर्षों म सामान्य विज्ञान और (इजीनियरी सस्थानो म) इजीनियरी पढाई जाती है। पहल दो या तीन वर्षों तक सभी सम्बधित विषयो और सकायो के लिए समान पाठ्यक्रम होत हैं। विशेषज्ञता साधारणत तीसरे या चौथे वष से शुरू होती है। पाठ्य विषयो मे अनिवाय सामान्य वज्ञानिक और इजीनियरी विषय तथा छात्र के मनचाह विशेष विषय होत हैं। सामाजिक राजनीतिक तथा सौंदयशास्त्रीय विषयो के साथ-साथ शारीरिक प्रशिक्षण पर बहुत ध्यान दिया जाता ह। राजनीतिक अथशास्त्र, दशन तथा विदशी भाषाए सभी उच्चतर शिक्षा सस्थाओ म पढाई जाती हैं। शारीरिक प्रशिक्षण तथा सस्कृति की भी शिक्षा दी जाती है। छात्रो को अनुसधान काय म लाने के लिए काफी प्रयास किया जाता है। इस समय करीब १० लाख छात्र विश्वविद्यालय के विभागो, छात्र वज्ञानिक समितियो डिजाइन आफिसो आदि मे वज्ञानिक खोज म लग हैं। व्यावहारिक काय अति आधुनिक ढग की प्रयोगशालाओ म किय जाते हैं। पाठ्यक्रम के अन्त म डिप्लोमा प्राप्त करन के लिए छात्र को एक ऐसी थीसिस पश करनी पडती है जो उसके स्वतत्र शोधकाय का परिणाम हो। अथवा स्नातक बनन के लिए राजकीय परीक्षाए पास करनी पडती है। यह पाठ्यक्रम चार से छह वष का हो सकता है। सभी स्नातको को अपने क्षेत्र म ही काम मिल जाता है और इसम उनकी इच्छा और रुचि का भी ख्याल किया जाता है। इन सभी को रहने के लिए मकान मिलत हैं।

समाजवादी समाज की यह अपनी जिम्मेदारी है कि सावजनिक शिक्षा उच्चतम स्तरो क अनुरूप हो। अच्छे विद्यार्थियो को, जो पढने के साथ साथ काम भी करते हैं

सोवियत राज्य काफी सुविधाए देता है। उनको २० ४० दिनो स लेकर चार महीना
तक की वेतन सहित अतिरिक्त छुट्टी मिलती है, पाठशाला जाने आने म परिवहन के
किराये म ८० प्रतिशत की छूट मिलती है तथा और भी सुविधाए मिलती ह।

उच्चतर शिक्षा के सोवियत सस्थानो म छात्रो की सख्या फ्रास, सघ जमनी,
ब्रिटेन तथा इटली के ऐसे कुल छात्रो की सम्मिलित सख्या का साढे तीन गुना है, यद्यपि
इन देशो की सम्मिलित जनसख्या सोवियत सघ की जनसख्या के करीब करीब बराबर
ही है। सोवियत सघ म प्रतिवर्ष २ ८५ ००० स अधिक इजीनियर तयार होत ह,
जबकि अमरीका म केवल ५८ हजार। सोवियत सघ मे इस समय २६ लाख डिप्लोमा
प्राप्त इजीनियर हैं जबकि अमरीका म केवल ६ लाख ६० हजार।

सभी प्रकार की शिक्षा सस्थाओ मे प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। पाठ्य पुस्तकें,
कार्यक्रम तथा तरीको म बराबर सुधार हो रहे हैं। सोवियत शिक्षा प्रणाली को सब
जगह मान्यता दी जाती है। उच्चतर शिक्षा के सकडो सोवियत सस्थानो तथा विशेषीकृत
माध्यमिक स्कूलो म १२० देशो के करीब ३६ ००० विदेशी छात्र भी पढ रह ह।

विज्ञान और प्राविधिक प्रगति

सोवियत विज्ञान, जो एक उत्पादक शक्ति बन गया है, सोवियत संघ की प्राविधिक प्रगति और आर्थिक विकास तथा जनता के जीवन स्तर को अधिकाधिक प्रभावित कर रहा है।

समाजवादी क्रांति ने शिक्षा, संस्कृति और विज्ञान को जनता की सेवा में अर्पित कर दिया। अक्तूबर क्रांति के कुछ ही दिनों बाद लेनिन ने लिखा "पुराने दिनों में मानव प्रतिभा और मानव मस्तिष्क का उपयोग कुछ ही लोगों को प्रविधि और संस्कृति का लाभ देने तथा अन्य लोगों को मामूली आवश्यकताओं शिक्षा और विकास से वंचित करने के लिए किया जाता था। अब से विज्ञान के सभी चमत्कार तथा संस्कृति की उपलब्धियां सारे राष्ट्र की सम्पत्ति होंगी ।"

क्रांति के बाद के कठिन वर्षों में भी, जब नवजात जनतंत्र को हर प्रकार की बचत की आवश्यकता थी, राज्य ने मौलिक तथा व्यावहारिक अनुसंधानों के विकास के लिए, जिनमें अनुसंधान संस्थानों का बड़े पैमाने पर संगठन तथा कुशल वैज्ञानिक कर्मिदल का प्रशिक्षण भी शामिल था, शक्तियों और साधनों की कोई कमी नहीं होने दी।

१९१८ में ही पेत्रोग्राद में (जो अब लेनिनग्राद है) एक दृष्टि संस्थान तथा एक भौतिकी प्राविधिक संस्थान का, मास्को में केन्द्रीय वायु, द्रवगतिकी, भौतिकी और रासायनिक संस्थानों का तथा निजनी नोवगोरोद में (जो अब गोर्की है) रेडियो प्रयोगशाला का निर्माण हुआ। बाद के दो वर्षों के अन्दर व्यावहारिक रसायन विज्ञान तथा उर्वरक और रसायन, आटो इन्जीनियरी, ताप टेक्नोलाजी भौतिक विज्ञान और गणित बिजली इंजीनियरी तथा अध्ययन के अन्य क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए संस्थानों की स्थापना हुई।

दिसम्बर १९२२ में सोवियत संघ के गठन के बाद जातियों के बारे में लेनिन-वादी नीति का बराबर क्रियान्वयन किए जाने के फलस्वरूप सोवियत संघ की जातियों और उप जातियों के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की नई संभावनाओं का उदय हुआ। जनगणों के बीच आर्थिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के सुदृढ़ होने से सोवियत जनगण के बीच मित्रता का प्रभाव देश की आर्थिक और वैज्ञानिक प्रगति को भी सुदृढ़ बनाने के रूप में पड़ा। जो क्षेत्र जार के जमाने में अत्यन्त पिछड़े थे और जहां

जनता के पास अपनी लिपि तक नही थी उन क्षेत्रो मे भी नए सांस्कृतिक और वैज्ञानिक केन्द्र खुल गये।

सोवियत विज्ञान अकादमी की खोज यात्राओ ने संघीय जनतंत्रो, स्वायत्त जनतंत्रो तथा रूसी संघ के कुछ भागो मे विज्ञान की उन्नति मे बड़ी भूमिका निभायी। वहा अनुसंधान केन्द्रो का गठन हुआ जो सोवियत विज्ञान अकादमी की शाखाओ के गठन के आधार बने। इन शाखाओ मे केन्द्रीय और जनतंत्रीय उच्चतर शिक्षा संस्थानो मे प्रशिक्षित कर्मचारियो को काफी बड़ी संख्या मे काम मिला।

इस प्रकार की वैज्ञानिक शाखाओ के विकास तथा निरन्तर बढ़ती हुई संख्या मे राष्ट्रीय वैज्ञानिक कर्मचारियो के प्रशिक्षण से राष्ट्रीय जनतंत्रो मे विज्ञान अकादमियो की स्थापना के लिए आवश्यक स्थितियो का निर्माण हुआ। इन अकादमियो के काम से इन जनतंत्रो मे उत्पादक शक्तियो तथा विज्ञान और संस्कृति के विकास मे बड़ी आसानी हुई है।

आज जनतंत्रो की अकादमियो के पास काफी बड़ी संख्या मे अपने कुशल अनुसंधान कार्यकर्ता है जो खुद स्वतंत्र ढंग से अपनी वैज्ञानिक खोज करते है। उक्राइन की विज्ञान अकादमी के पिण्डकी भौतिकी (फिजिक्स आफ सौलिड्स), पदार्थों के अध्ययन, वेल्डिंग प्रक्रियाओ के मूल तत्वो और विशेष इलक्ट्रोमेटालर्जी पर काम विश्वविख्यात है। इसी प्रकार आर्मीनियाई विज्ञान अकादमी द्वारा खगोल भौतिकी पर जो काम हो रहा है, प्राकृतिक मिश्रण के रसायन पर उजबेक विज्ञान अकादमी द्वारा जो काम हो रहे है, लातवियाई विज्ञान अकादमी द्वारा सूक्ष्म जैविक संश्लेषण पर जो काम हो रहे है तथा गणित और मिकैनिक्स मे जार्जियाई विज्ञान अकादमी द्वारा जो काम हो रहे है, वे भी विश्वविदित है। कजाख अकादमी द्वारा भूवैज्ञानिक अनुसंधान तथा खनिज संसाधनो के बारे मे जो अनुसंधान हो रहे हैं वे देश के लिए बड़े ही महत्व के हैं। वैसे ही अजरबैजान विज्ञान अकादमी द्वारा पेट्रो रसायन तथा तेल निकालने के तरीको के बारे मे होने वाले काम भी महत्वपूर्ण है। मध्य एशियाई जनतंत्रो के वैज्ञानिको ने कपास उत्पादन तथा अनुर्वर भूमि के विकास की संयुक्त समस्याओ के बारे मे काफी अनुसंधान काम किया है। कुछ अकादमियो ने गणित भौतिक विज्ञान, रसायनशास्त्र, जीव विज्ञान तथा साइबरनेटिक्स मे ख्याति अर्जित की है। अनेक जनतंत्रो के पास अपने अलग पारमाणविक रिऐक्टर एक्सेलेरेटर टेलिस्कोप आदि हैं। जनतंत्रीय अकादमियो ने खनिज संसाधनो की खोज तथा उनके उपयोग के तरीको जातियो के इतिहास और सांस्कृतिक विकास के अध्ययन तथा, मोटे तौर पर, सोवियत संघ की सामान्य संस्कृति मे बहुत बड़ा योगदान किया है। सोवियत संघ की सामान्य संस्कृति उन सभी जातियो की सांस्कृतिक उपलब्धियो पर आधारित है जिनसे सोवियत संघ बना है।

युद्धोत्तर वर्षों मे सोवियत विज्ञान के सामने व्यापक संभावनाए खुली। नए वैज्ञानिक केन्द्रो की स्थापना हुई अनुसंधानकर्ताओ को नये उपकरण मिले

तया हजारो की स ख्या मे नयी मशीनो और हथियारो का विकास हुआ और उत्पादन के काय मे उनका प्रयोग भी किया जाने लगा।

१९५७ मे सोवियत स घ की विज्ञान अकादमी की साइबेरियाई शाखा का गठन सोवियत विज्ञान के विकास की एक महत्वपूण घटना था। नोवोसिबिर्स्क के पास इस बडे वज्ञानिक केन्द्र के गठन से साइबेरिया के अनेक नगरो मे वज्ञानिक अनुस धान के विकास को प्रोत्साहन मिला। साइबेरियाई शाखा के अ तगत सस्थानो को स द्धा तिक और व्यावहारिक गणित, द्रवगति विज्ञान आणविक भौतिक विज्ञान, जविक एव अजविक रसायन विज्ञान भूविज्ञान तथा पुरातत्व विज्ञान जसे विषयो म बुनियादी अनुस धान म महान सफलताए मिली है। साइबेरिया म उत्पादक शक्तियो के विकास को हर तरह से प्रोत्साहन दिया जा रहा है। सोवियत स घ की विज्ञान अकादमी की साइबेरियाई शाखा देश क सबसे बडे के द्रो मे है।

१९६९ म सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी के अ तगत यूराल तथा सुदूर पूव म वज्ञानिक केन्द्रो की तथा उत्तर काकेशिया मे उच्चतर शिक्षा सस्थान केन्द्र की स्थापना हुई।

इधर हाल के वर्षों मे अनेक विशेषीकृत वज्ञानिक केन्द्रो का भी गठन हुआ है। इनम मास्को के निकट का नोगिन्स्क वज्ञानिक केन्द्र है जो पिण्डो (ठोस पदार्थो) के रसायन विज्ञान और भौतिकी के विषय मे विशेषज्ञता प्राप्त करता है, पाख्रा का भौतिक विज्ञान केन्द्र, पुश्चिनो का जविक केन्द्र तथा लेनिनग्राद के पास आणविक भौतिक विज्ञान सस्थान शामिल है। उक्राइन की विज्ञान अकादमी के अ तगत दोनत्स्क का वज्ञानिक केन्द्र है जो धातुकम तथा खनन सम्ब धी (प्राकृतिक तथा प्राविधिक पक्षो का) अनुसधान करता है। अखिल सघीय केन्द्रीय कृषि विज्ञान अकादमी तथा सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी के अन्तगत नये वैज्ञानिक केन्द्रो की स्थापना हुई है। देश के विभिन्न भागो मे आणविक भौतिक विज्ञान, खगोल भौतिकी, खगोल विज्ञान तथा रेडियो खगोल विज्ञान के क्षेत्रो मे अनुसधान के लिए अधिष्ठापन स्थापित किय जा रहे है।

मौलिक अनुसधान के विकास तथा सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी एव जनतंत्रीय अकादमियो के विकास के साथ-साथ व्यावहारिक अनुसधान सस्थाए भी स्थापित की जा रही है जिनका मुख्य काम वज्ञानिक आविष्कारो को व्यवहार मे लाना तथा उद्योग की नयी शाखाओ का विकास करना है। इस बात पर जोर देना उचित ही होगा कि सोवियत सघ म वज्ञानिक अनुसधान का विकास सम्पूण राष्ट्रीय अथव्यवस्था की प्रगति के साथ घनिष्ठता स जुडा हुआ है।

हाल के वर्षों म कुछ उद्योगो म वज्ञानिक उत्पादन समुच्चयो की स्थापना से विज्ञान और उत्पादन के बीच नय सम्बध स्थापित हुए हैं। इन समुच्चयो म बडे-बडे कारखान, अनुसधान सस्थान, डिजाइन ब्यूरो तथा प्रयोगात्मक प्रतिष्ठान शामिल रहते हैं। एकीकरणो के द्वारा महत्वपूण वज्ञानिक और प्राविधिक समस्याए स्वतत्रतापूवक हल

की जा सकती है और नयी मशीनरी और प्रविधि के निर्माण तथा उत्पादन म उनके प्रच लन क बीच की दर कम की जा सकती है और इस प्रकार वैज्ञानिक अनुसधान की कुश लता को बढ़ाया जा सकता है।

समाजवाद तथा नियोजित समाजवादी अर्थव्यवस्था म वस्तुगत तौर पर उत्पा दक शक्तियो क विकास के लिए विज्ञान और प्रविधि की उपलब्धियो को पूणत और पूरे कारगर रूप से प्रयोग म लाने के लिए पूर्वापेक्षाए मौजूद रहती हैं। सोवियत अर्थ व्यवस्था के नियोजित स्वरूप के कारण सम्पूण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था म प्राविधिक प्रगति के लिए एक ही नीति चलाना उद्योग की सबसे महत्त्वपूर्ण शाखाओ म आर्थिक, वित्तीय तथा श्रम ससाधनो को सकेन्द्रित करना तथा अन्य देशो के सचित अनुभव के आधार पर प्राविधिक प्रगति के लिए सबसे प्रभावकारी रास्ते चुनना सभव है।

केवल समाजवाद मे ही वैज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति को समाज के सभी सदस्यो की सेवा म नियुक्त किया जाता है जिससे यह सामाजिक और आर्थिक प्रगति की एक जोरदार प्रेरक शक्ति तथा जीवन स्तर को बराबर ऊचा उठाने का एक भौतिक साधन बन जाती है।

विज्ञान का सगठन सोवियत सघ विश्व का पहला देश है जिसने राजकीय आधार पर अपने विज्ञान का सगठन किया है। इस प्रणाली की श्रेष्ठता व्यवहार म साबित हो गई है। सोवियत सघ म वैज्ञानिक सगठन की राजकीय व्यवस्था मे सामूहिक तथा व्यक्तिगत रूप स वैज्ञानिको की व्यापक पहल का लाभ उठाया जाता है। इससे राष्ट्रीय महत्व के कार्यों तथा प्रत्येक जातीय सघ जनतत्र के आर्थिक और सास्कृतिक विकास की समस्याओ को हल करने म सभी वैज्ञानिको का सक्रिय सहयोग उपलब्ध होता है।

आज सोवियत सघ मे लगभग ५,३०० अनुसधान सस्थान है, जिनम दस लाख से ऊपर वैज्ञानिक कार्यकर्ता, अर्थात विश्व के पूरे वैज्ञानिक कार्यकर्ताओ का एक-चौथाई भाग काम करते है। वैज्ञानिक तकनीकी तथा अन्य सेवाओ सहित कुल मिला कर ३० लाख से अधिक लोग वैज्ञानिक काय म लगे है।

१९७३ म सरकार ने अनुसधान क लिए १५ अरब ५० करोड रूबल निर्धारित किया, जो ब्रिटेन, फ्रांस तथा जर्मन सघ गणराज्य की अनुसधान के लिए आवटित सम्मिलित धनराशि से अधिक था।

अर्थव्यवस्था की खास खास शाखाओ म अनुसधान काय मत्रालयो और विभागो के नियत्रण म होता है। काफी बडी सख्या म प्रायोगिक अनुसधान सस्थानो का प्रशासन इन्ही मत्रालयो और विभागो द्वारा होता है। इन सस्थानो का मुख्य काम वैज्ञानिक आविष्कारो और नवप्रवतनो के व्यावहारिक प्रयोगो की सभावनाओ का अध्ययन करना तथा तेजी से उन्हे उत्पादन मे लगाना है।

पूरे देशव्यापी स्तर पर विज्ञान और प्रविधि मे अनुसधान का निर्देशन और विज्ञान एव प्रविधि की राज्य समिति द्वारा होता है। यही समिति राष्ट्रीय स्तर

पर विज्ञान और प्रविधि के विकास की मुख्य दिशाए निश्चित करती है तथा अनुसधान काय और सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी, मत्रालयो एव विभागो के अन्तगत अनुसधान सस्थानो द्वारा चलायी जा रही विकास परियोजनाओ का मूल्याकन करती है। इस समिति से जुडी हुई वैज्ञानिक परिषद है जिनमे से प्रत्येक का काम मौलिक सघटित एव खास वज्ञानिक प्राविधिक समस्याओ का समाधान करना तथा सभी अनुसधान एव प्रयोगात्मक अभिकल्प काय का समन्वय करना है।

प्राकृतिक एव सामाजिक विज्ञानो की समस्याओ मे अनुसधान के विषय म सामान्य वज्ञानिक निर्देश सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी द्वारा दिया जाता है। विज्ञान अकादमी मे पूरे सोवियत सघ के सभी क्षेत्रो के प्रमुख वैज्ञानिक शामिल हैं।

सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की स्थापना १७२५ मे सेंट पीटसबग (वतमान लेनिनग्राद) मे हुई और १९३४ मे मास्को म उसका स्थानान्तरण हुआ। इसके ६७५ सदस्य (अकादमीशियन) और सवादी सदस्य ह तथा ७० विदेशी सदस्य हैं। मौलिक अनुसधान का विकास, प्राविधिक प्रगति की उपलब्धि के लिए मूलत नवीन सभाव ओ की खोज तथा वज्ञानिक उपलब्धियो का सर्वांगपूण व्यवहार इसके मुख्य उद्देश्य है।

सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी की सभी प्रशासनिक समितियो का गठन चुनाव के द्वारा होता है। सदस्यो तथा सवादी सदस्यो की साधारण सभा उसका सर्वोच्च सगठन है। साधारण सभाओ के बीच के दिनो मे अकादमी के अध्यक्षमडल को उसके अधिकार प्राप्त है। साधारण सभा मे सोवियत विज्ञान के विकास की मौलिक समस्याओ पर विचार होता है, सगठनात्मक प्रश्नो के बारे म निणय लिए जाते हैं तथा सदस्यो, सवादी सदस्यो एव विदेशी सदस्यो का चुनाव होता है। अकादमी के अध्यक्ष है मस्तिस्लाव केल्दिश। अकादमी के विभागो और अनुसधान सस्थाओ के क्रियाकलाप का निर्देशन अध्यक्षमडल के चार विभागो द्वारा होता है।

भौतिक-तकनीकी तथा गणित विज्ञान खण्ड—विभाग—गणित, सामान्य भौतिक विज्ञान तथा खगोल विज्ञान, आणविक भौतिक विज्ञान, बिजली इजीनियरी की भौतिक तकनीकी समस्याए, मिकनिक्स तथा नियत्रण प्रक्रियाए।

रासायनिक प्राविधिक तथा जविक विज्ञान खण्ड—विभाग सामान्य एव तकनीकी रसायन विज्ञान, भौतिक रसायन विज्ञान एव अकाबनिक पदार्थो की प्रविधि, जीव रसायन जीव भौतिकी तथा शारीरिक दृष्टि से सक्रिय मिश्रण का रसायन शरीर विज्ञान, सामान्य जीव विज्ञान।

भूविज्ञान खण्ड—विभाग भूविज्ञान भूभौतिकी तथा भूरसायन विज्ञान, समुद्रविज्ञान, वायुमडल की भौतिकी तथा भूगोल।

समाज विज्ञान खण्ड—विभाग इतिहास, दशन और विधि, अथशास्त्र, साहित्य और भाषा।

विना अकादमी के अतगत उसकी साइबेरियाई शाखा, यूराल तथा सुदूर पूर्वी वनानिक केन्द्र अनेक स्वायत्त जनतत्रा प्रदेशो और क्षेत्रा की सम्बद्ध शाखाए तथा विशेषीकृत वज्ञानिक केन्द्र (रसायन, भौतिकी जीव विज्ञान) आते हैं।

अकादमी द्वारा लिए गए अनुसधान काय ०३४ सस्थान वेधशालाए तथा अय वज्ञानिक सस्थान करत हैं जिनम ३ ००० डाक्टर तथा १५ ००० विज्ञान के आचार्यों सहित कुल ३७ ००० से अधिक कमचारा लग हैं। वज्ञानिक पुस्तकालया की सख्या १८० के करीब है। जसे जसे नय विनानो का विकास होता जाता है, वसे-वैसे अकादमी का भी विस्तार होता है। अकादमी के अतगत सस्थानो म वज्ञानिक कमचारियो के प्रशिक्षण के लिए स्नातकात्तर विभाग हैं। अध्यक्षमडल, उसके खण्डा तथा अकादमी के विभागा के अतगत २० म अधिक वनानिक परिषदें—वनानिक परामश समितिया—काम करती हैं। परिषद अपन-अपने क्षेत्रा के बारे म सुझाव दती है तथा इन क्षेत्रा म अनुसधान का समवय करता है।

अकादमी अपना विनान साहित्य 'नौका" (विज्ञान) प्रकाशन गृह से प्रकाशित करती है। यह सोवियत सघ के सबसे बडे प्रकाशन सस्थानो मे एक है। अध्यक्षमण्डल विभिन्न विभाग तथा अकादमी के सस्थान विशेषीकृत वनानिक पत्रिकाए प्रकाशित करते है।

प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञानो मे विशिष्ट काय के लिए अकादमी का सर्वोच्च पुरस्कार लोमानासोव पदक प्रतिवष एक सोवियत तथा एक विदेशी वनानिक को दिया जाता है। अकादमी वज्ञानिक उपलब्धियो का प्रचार करने तथा वज्ञानिक ज्ञान का प्रसार करने पर पूरा ध्यान देती है।

सघ जनतत्रा की अकादमिया सोवियत विज्ञान म प्रमुख भूमिका निभाती हैं। य विकसित वैज्ञानिक सगठन है जहा बुनियादी सैद्धान्तिक अनुसधान के साथ-साथ विभिन्न जातीय अथतत्रा की आवश्यकताओ के अनुकूल वज्ञानिक उपलब्धिया का व्यावहारिक प्रयोग भी होता है। प्रत्येक अकादमी के अपन मुख्य अनुसधान विषय हैं जिनका निर्धारण उस जनतत्र की उत्पादक शक्तियो के स्वरूप से तथा उसके वज्ञानिक स्कूलो के अनुसार होता है।

जनतत्रीय अकादमिया के कार्यों का समवय सोवियत विनान अकादमी के अध्यक्षमण्डल के अतगत एक समवय परिषद द्वारा किया जाता है।

सोवियत सघ म शाखा अकादमिया भी हैं जिनका उद्देश्य ज्ञान के खास-खास क्षेत्रा म अनुसधान काय करना है। सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी अखिल सघीय कृषि विज्ञान अकादमी सोवियत सघ की शक्षणिक विज्ञान अकादमी तथा सोवियत कला अकादमी एसी ही अकादमिया हैं।

अनुसधान की मूल दिशाए कम्युनिस्ट निर्माण की वतमान अवस्था म विज्ञान को अधिकाधिक जटिल समस्याओ का सामना करना पडता है और इसकी भूमिका महत्वपूर्ण हो रही है। जनतत्रा के बीच आर्थिक, वनानिक और सास्कृ

आदान प्रदान तथा श्रम विभाजन का महत्व भी बढ रहा है। अत सोवियत विज्ञान की सामान्य प्रगति को अधिक तीव्र करने के लिए सभी सोवियत जनतत्रो के सजनात्मक प्रयासो तथा आर्थिक ससाधनो का समन्वय किया जाना इसकी एक महत्वपूण शत है।

पिछले कुछ दशको मे सोवियत विज्ञान ने अनुसधान की अनेक मौलिक दिशाओ म नेतत्व किया है तथा आणविक शक्ति और अ तरिक्ष की खोज जसी इस "शताब्दी की समस्याओ" को हल किया है।

वतमान पचवर्षीय योजना काल (१९७१ ७५) म सोवियत विज्ञान के सामने महत्वपूण काय है। वज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के लिए सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने जो कायक्रम स्वीकृत किया ह उसम प्राकृतिक विज्ञान की विभिन प्रकार की समस्याओ पर मौलिक अनुसधान सामाजिक उत्पादन के तीव्रीकरण तथा उत्पादन की कुशलता बढाने से सबद्ध अति महत्वपूण व्यावहारिक समस्याओ के विशदीकरण तथा विज्ञान और प्रविधि की आधुनिक उपलब्धियो के बडे पमाने पर व्याव हारिक प्रयोग का आह्वान किया गया है।

हाल क वर्षों मे अति उन्नत कम्प्यूटरो के आ जाने से मानवीय कायकलाप के हर क्षेत्र म गणित का महत्व बहुत बढ गया है। गणित की पद्धतियो का प्रयोग अब व्यापक रूप स प्राकृतिक विज्ञानो की तरह ही सामाजिक विज्ञानो म भी हो रहा है। परिकलन की शलियो से वज्ञानिक अनुसधान तथा व्यावहारिक कार्यों म बडी सहायता मिली है है और अब सामाजिक, आर्थिक तथा उत्पादन के क्षेत्रो म उनका अधिकाधिक समावेश किया जा रहा है।

आज सोवियत सघ म शुद्ध गणित के विभिन्न क्षेत्रो म अनुसधान काय अनेक जनतत्रो तथा केन्द्रीय अनुसधान सस्थानो म हो रहा है और सोवियत गणितज्ञो ने विश्व विज्ञान मे बहुमूल्य योगदान किया है। सोवियत सघ मे सद्धान्तिक गणित के उच्च स्तर के कारण ही हाल के वर्षों म परिकलक गणित के रीति विज्ञान म द्रुत विकास सम्भव हुआ है। विज्ञान और प्रविधि की कुछ महत्वपूण समस्याओ के समाधान म जिनमे पारमाण-विक भौतिक विज्ञान तथा अ तरिक्षीय खोज की समस्याए भी शामिल है, परिकलक गणित ने जबरदस्त योगदान किया है और यह विज्ञान और प्रविधि के अनक क्षेत्रो म महान योगदान कर रहा है।

आधुनिक भौतिक विज्ञान के सभी क्षेत्रो म महत्वपूण अनुसधान काय हो रहे हैं। सोवियत भौतिक वज्ञानिको न अनेक महत्वपूण आविष्कार किए ह जैसे, किसी माध्यम म प्रकाश की गति स अधिक तेज चलते हुए इलक्ट्रोन का विकिरण, क्रिस्टल मे प्रकाश का विसरण, द्रव हीलियम की अतितरलता, अनुचुम्बकीय अनुनाद की परिघटना, क्वाण्टम इलक्ट्रानिक्स के सिद्धात, स्वत स्फूत नाभिकीय विखडन तथा सिक्रोट्रोन विकिरण का सिद्धान। उच्च-सवाहकता, अतितरलता तथा अतिसवाहकता के सिद्धान्तो के विकास परापरमाणविक तत्वो के अध्ययन, प्लाज्मा के सिद्धात तथा अन्य अनेक क्षेत्रो मे भी महान सफलताए मिली है।

करते हुए सोवियत भौतिक वैज्ञानिक महत्वपूर्ण व्यावहारिक समस्याओ पर पूरा ध्यान दे रहे है, जसे आधुनिक अध-सवाहक तकनीक, लेसर का बडे पमाने पर व्यवहार तथा क्वाण्टम इलेक्ट्रोनिक उपकरण, धातुओ तथा अय वस्तुओ का और अधिक विकास, सचार सम्बन्धो का सुधार, कम्प्यूटर के लिए नये अवयवो का विकास तथा अतिसवाहकता की परिघटना का व्यावहारिक प्रयोग।

सभी वैज्ञानिक अकादमियो, उच्चतर शिक्षा प्रतिष्ठाना तथा औद्योगिक प्रतिष्ठाना के क्रियाकलाप मे रसायन विज्ञान के क्षेत्र मे अनुसधान को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

रसायन विज्ञान के सद्धान्तिक आधार के विकास म सोवियत वज्ञानिका न बडा योगदान किया है, जसे उदाहरण के लिए रासायनिक सरचना के सिद्धान्त, रासायनिक बलगतिकी, रासायनिक प्रतिक्रियाओ की प्रक्रिया। सोवियत सघ पहला देश है जहा बडे पमाने पर कृत्रिम रबड उद्योग की स्थापना हुई है। समिश्र मिश्रणो के रसायन हाइड्रोकार्बन के रसायन, पेट्रो रसायन, विद्युत रसायन सतही परिघटनाओ का अध्ययन तथा अय अनक क्षेत्रो मे सोवियत उपलब्धियो से देश के रासायनिक उद्योग के विकास के लिए सद्धान्तिक आधार तयार हुआ है।

सोवियत रसायन विज्ञान का भी नय ढग स विकास हो रहा है। विषम-कार्बनिक मिश्रणो के रसायन विज्ञान के क्षेत्र म बहुत काय हुआ है। फ्लूराइन, फास्फोरस सिलिकोन तथा धातु के बन कार्बनिक मिश्रण अतिप्रभावकारी सकुलन रसक तथा उत्प्रेरको, कीटनाशक तथा अय दवाइयो, उष्मावरोधक तथा अय वस्तुओ के विकास के आधार का काम करते है। सूक्ष्म कार्बनिक सश्लेषण तथा प्राकृतिक मिश्रणो के रसायन विज्ञान क क्षेत्र म और भी अनुसधान हो रह है, जो अधिकाधिक मात्रा मे जव रासायनिक अनुसधाना के साथ मिलते जा रह हैं।

धातुकर्म की नयी प्रक्रियाओ के विकास म सरचनात्मक सामग्रियो सबस पहले, धातुगत मालो के उत्पादन और प्रोसेसिंग के तरीको म तथा धातुओ को मजबूत बनाने के तरीको म भारी सफलता मिली है। उच्च शक्ति सम्पन्न काच-तन्तु प्रबलित प्लास्टिक, विभिन्न सयोजन सामग्रियो तथा अनेक सरक्षण लेपो का निर्माण हुआ है।

जविक ससाधनो के अध्ययन तथा कृषि की अत्यावश्यक समस्याओ के समाधान के बारे म काफी काम हो रहे है। आनुवशिकी, वनस्पति विज्ञान तथा प्राणि विज्ञान के क्षेत्र म तीव्र अनुसधान काय हो रहे हैं। कृषि रसायन और मत्तिका विज्ञान के तथा देश के विभिन्न क्षेत्रो की वनस्पतियो और जीव जन्तुओ के अध्ययन के महत्वपूर्ण परिणाम निकले हैं। यह काय सभी केन्द्रीय जनतत्रो मे हो रहा है। नयी कृषि फसलो के विकास म सोवियत चयनकर्ताओ की सफलता सारे विश्व मे प्रशसा का विषय रही है। कृषि उत्पादन मे तीव्रता लाना सोवियत आर्थिक नीति का एक प्रमुख लक्ष्य है और जीवविज्ञान एव रसायन के उन पक्षो के बारे मे, जो कृषि विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं अनुसधान काय पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

उच्चतर तात्रिक क्रियाओ के शरीर विनान तथा उदभिज तत्रिका तत्व के क्षेत्र मे महान प्रगति हुई है । जीव रसायन के क्षेत्र मे भी सोवियत वनानिको ने महत्वपूण योगदान किया है ।

आज जीव विनान के क्षेत्र मे भौतिक तथा रसायन विनान के तरीको के प्रवश से एक प्रकार की क्राति हो गई है । जीव विनान म नये ढग के अनुस धान से कृषि तथा चिकित्सा विज्ञान के विकास पर गहरा प्रभाव पडा है । सूक्ष्म जवकीय प्रक्रियाओ का महत्व उद्योग मे बढता जा रहा है । अणुजीव विनान जीव कार्बनिक रसायन विनान, आधुनिक आनुवशिकी तथा जीव भौतिकी जसे उदीयमान विनानो के विकास के लिए बहुत प्रयास किए गए हैं ।

प्राकृतिक स साधनो के अध्ययन और व्यवहार मे सभी स घ जनतत्रो के वनानिको की सफलताओ का सोवियत स घ की आर्थिक प्रगति के लिए अत्यधिक महत्व है । वतमान समय म सोवियत स घ खनिज पदार्थो तथा कच्चे माल म आत्मनिभर है । किन्तु वनानिक पूर्वानुमानो के आधार पर अभी भी नये नये आविष्कार हो रहे है । तल और गस के विशाल भण्डारो के नये आविष्कारो का प्रभाव सोवियत स घ के आर्थिक विकास की पूरी गति पर पड रहा है । फिर भी इस महान प्राकृतिक सम्पत्ति के बावजूद नये स साधनो का आविष्कार करने तथा जिन खनिज स साधनो का आविष्कार हो चुका है उनका पूण तथा अति युक्तिसगत उपयोग करने की समस्या अधिक स गीन होती जा रही है । इस सम्ब ध मे पृथ्वी की अधिक गहरी परतो का अध्ययन करना, जल की व्यवस्था को अधिक कुशलता से चलाना तथा समुद्र के स साधनो का उपयोग करना आवश्यक है । विश्व की तेज प्राविधिक प्रगति तथा उत्पादन की बढती हुई मात्रा के साथ प्रकृति के स रक्षण की समस्याए अधिकाधिक जरूरी होती जा रही है ।

सारे भूविनानो मे जसे भौमिकी भूभौतिकी भूरसायन मौसम विनान समुद्र विनान तथा भूगोल मे भौतिक रासायनिक तथा गणित के तरीको के प्रवेश के कारण महान परिवतन हो रहे है क्योकि अब अधिक साफ तौर पर यह जाना जा सकता है कि पृथ्वी के अन्दर कौन सी प्रक्रियाए चल रही है । मानवीय कार्यो के प्रभाव मे प्रकृति मे होने वाले स भावित परिवतनो के बारे म वनानिक अनुमानो का महत्व बढ रहा है । आज केवल पृथ्वी के खनिज स साधनो की खोज निकालना तथा प्रकृति मे चल रही प्रक्रियाओ का अध्ययन करना ही जरूरी नही है बल्कि उन पर नियत्रण करने की भी आवश्यकता है । आज विनान की सेवा मे सूक्ष्मग्राही भौतिक तथा रासायनिक यत्रो से लेकर अनुस धान जहाज क्योमिटेप तथा पृथ्वी के कृत्रिम उपग्रह जसे अति पचीदा उपकरण स लग्न हैं ।

अन्तरिक्ष अन्वेषण म सोवियत उपलब्धियो का भी विनान और प्रविधि के विकास पर बहुत प्रभाव पडा है ।

४ अक्तूबर १९५७ को सोवियत स घ द्वारा पृथ्वी के प्रथम उपग्रह के छोडे से अन्तरिक्ष युग का प्रारम्भ हुआ । अन्तरिक्ष अन्वेषण से विनान और प्रविधि क

अनेक क्षेत्रों मे तेजी से विकास हुआ है तथा इसके फलस्वरूप नये उद्योगो की सष्टि हुई है। सभी जनतत्रो के व्यावहारिक तथा शुद्ध दोनो प्रकार के अनुसधानो के अनेक स स्थानो न इस काय म भाग लिया है। अ तरिक्ष अ वेषण के क्षेत्र म अनुस धान राष्ट्रीय महत्व का काय हो गया है।

प्रथम अन्तरिक्ष अभियान क १६ वर्षों के अ दर सोवियत सघ का अ तरिक्ष अ वेषण मे महत्वपूण सफलताए मिली जिनमे १२ अप्रल १९६१ को यूरी गागारिन की प्रथम अन्तरिक्ष उडान सबस महत्वपूण थी। इस उडान से भविष्य मे कक्षीय तथा अन्तर-ग्रहीय उडानो का पथ प्रशस्त हो गया।

सोवियत अन्तरिक्ष अनुसधान तीन प्रमुख दिशाओ म विकसित हो रहा है पथ्वी के समीप अ तरिक्ष की खोज, च द्रमा तथा चा द्रान्तरिक्ष का अध्ययन तथा सौर मण्डल के ग्रहो का अध्ययन।

सोवियत विज्ञान ने च द्रमा, शुक्र तथा मगल ग्रहो के अध्ययन मे अनेक सफलताए प्राप्त की है। सोवियत उपग्रहो तथा स्वचालित खोजीयानो न पथ्वी के निकट के अतरिक्ष, अतर ग्रहीय अ तरिक्ष तथा सूय पृथ्वी सम्ब धो के बार म विशाल प्रयोगात्मक आकडे प्राप्त किए हैं। इनक फलस्वरूप पृथ्वी के निकट अ तरिक्ष तथा पृथ्वी के वायुमडल की प्रक्रियाओ पर सौर क्रियाओ के प्रभाव के स्वरूप के बार म वतमान मा यताओ म क्रातिकारी परिवतन हो सकत है।

१२ अप्रल १९६१ के बाद से २४ सोवियत अन्तरिक्षयात्रिया न पृथ्वी की परिक्रमा की है और अब तक ६०० से अधिक विभि न प्रकार के सोवियत यान अ तरिक्ष मे छोडे गए हैं।

१९७२ मे एक सोवियत मापाक (मौडयूल) शुक्र के सूय से प्रकाशित भाग पर धीरे से उतरा। इस ग्रह पर उतरन की यह पहली घटना थी। वहा पहुचन के ५० मिनट बाद तक मापाक उस ग्रह (शुक्र) के वायुमडल और दीप्ति तथा उसक तल पर चट्टानो के स्वरूप के बारे म आकडे पृथ्वी पर भेजता रहा।

मगल ग्रह की खोज क बारे मे कायक्रम दो कृत्रिम उपग्रह मार्स–२ और मार्स–३ की खोजो की सहायता से चलाए गए है। इन खोजो से वहा के तल के तापमान वायु मडल और चुम्बकीय क्षेत्र, मगल के आयन मडल तथा उसके प्रतिवेशी अ तरिक्ष के बारे म सूचनाए आई। अवराहन मापाक के पहली बार धीरे से मगल तल पर उतरने के फल-स्वरूप उस ग्रह के प्रत्यक्ष अध्ययन का रास्ता खुल गया है।

स्वचालित खोजीयानो के जरिये च द्रमा के अध्ययन मे महान सफलताए मिली हैं। लूना–२० च द्रमा की चट्टान के नमून ऐसे क्षेत्र से ले आया जहा पहुचना कठिन है। जनवरी १९७३ म स्वप्रेरित वाहन लूनोखोद–२ *शाति सागर* के क्षेत्र म च द्र तल पर पहुचा। इसने अनुसधान का एक लम्बा कायक्रम पूरा किया है।

अप्रल १९७३ म सात्यूत--११, जो परिक्रमा करा वाला एक वज्ञानिक स्टशन है अतरिक्ष म छोडा गया। **कौसमौस मेटेयोर तथा मोलनिया** उपग्रहा का प्रयोग पृथ्वी तथा पृथ्वी के निकटस्थ अ तरिक्ष के अध्ययन, मौसम विनान सबधी कार्यो और सचारा प्राकृतिक ससाधनो क अध्ययन तथा भौगोलिक अनुसधान क लिए किया जा रहा है।

अतर-कोसमौस श्र खला म एसे अनेक **स्पुतनिक** छोडे गए हैं जिनके उपकरण समाजवादी देशा द्वारा सयुक्त रूप स लिए गए हु। तकनीकी अनुसधान के लिए निर्मित एक फ्रंच उपग्रह को एक सावियत राकेट ने परिक्रमा पथ म पहुचा दिया।

शातिपूण कार्यो के लिए अ तरिक्ष की खाज और उपयोग म सहयोग के बार म जो सावियत अमरीकी करार हुआ है उसके फलस्वरूप १९७५ म **सोयुज** तथा **अपोलो** अ तरिक्ष यान द्वारा सयुक्त उडान भरने तथा अ तरिक्ष म उनके एक स्थान पर जुड जान के बारे म निणय लिया गया है।

हाल के वर्षा म नक्षत्रो और आकाशगगा तथा समग्र विश्व के अध्ययन के बारे म बहुत प्रगति हुई है। इसका श्रेय भौतिक विनान की उपलब्धियो, विशेषकर नये रेडियो तरग बडा म विश्व सम्बन्धी सूचना एकत्र करने के लिए विकिरण के प्रयोग का है। अतरिक्ष उपग्रहा के जरिए एसी सूचनाए ल्पुतर तरग बैंडा पर भी प्राप्त की जा सकती है जिनका पहले प्रयोग नही होता था। सावियत वैज्ञानिका न ब्रह्माण्ड विज्ञान की समस्याओ क अध्ययन नक्षत्रो और नक्षत्र मडला की तथा आकाशगगाओ के मूल उपादानो की सृष्टि प्रक्रियाओ और सृष्टिशास्त्र क विकास मे भी योगदान किया है। सोवियत सघ के पास विलक्षण रेडियो दूरबीन है और उनके अलावा वह स्पुतनिका मे स्थापित प्रकाशिक खगालीय यत्रो का भी उपयाग करता है। सोवियत सघ म शीघ्र ही विश्व के सबसे बडे प्रकाशिक दूरबीन का स्थापन पूरा होगा। इन सबसे इस क्षेत्र म महत्वपूण आविष्कारो तथा विश्व सम्बन्धी अपना नान बढाने के हम अवसर मिलेंगे।

कम्युनिज्म के आर्थिक और तकनीकी आधार के निमाण तथा देश के सास्कृतिक विकास म सामाजिक विज्ञान भी विराट योगदान कर रहे है। हाल म सावियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस तथा बाद म केन्द्रीय समिति की पूण बठको म जो निणय लिए गए हैं उनमे समाज विनाना के स्तर को और अधिक उठान और कम्युनिज्म के निमाण मे उनकी भूमिका को बढाने तथा सामाजिक और प्राकृतिक विनानो के बीच सम्बन्धा को सुदृढ करने के महत्व पर जोर दिया गया है।

सोवियत सघ म बसने वाली जातियो के इतिहास सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी के इतिहास तथा विश्व इतिहास के अध्ययन म सोवियत इतिहासकारो ने अनेक सफलताए पायी है। सोवियत सघ की विभिन्न जातियो के विकास पथ के सामान्य सिद्धान्तो तथा विशिष्ट लक्षणो को स्पष्ट करने, उनकी यशस्वी क्रातिकारी परपराओ, लडाइयो म सफलताओ तथा समाजवाद और कम्युनिज्म क निर्माण म मजदूरो के ...सिक कार्यो के प्रचार पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इस प्रकार क काय सोवियत

सघ के जनगण के बीच एकता और मित्रता को मजबूत करते है तथा लोगा को सोवियत दशभक्ति और सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना म शिक्षा देते है। सोवियत पुरातत्वना ने रोचक और बहुमूल्य खोजें की है। उनके कार्यो से सोवियत सघ की बहु-जातीय सस्कृति म प्रत्येक जाति के योगदान पर प्रकाश पडता है। सोवियत भाषाविदा ने उन लोगा के लिए वणमालाए बनायी है जिनके पास क्राति के पूव कोई लिपि नही थी, और अनेक प्रकार के व्याकरणा और शब्दकोशा का सकलन किया है। साहित्य के क्षेत्र म विद्वाना ने साहित्य के इतिहास और सिद्धा त पर बहुत काय किया है और देश क जातीय साहित्या की पारस्परिक समृद्धि म बडा योगदान किया है।

हाल के वर्षो मे नियोजन तथा आर्थिक प्रब ध के नय तरीका के विकास पर, आजकल क्रियान्वित हो रहे आर्थिक सुधार की नीव डालन पर तथा देश की उत्पादक शक्तिया के अध्ययन पर आर्थिक अनुसधान का अधिकाधिक प्रभाव पडा है।

सोवियत विशेषज्ञ समकालीन विश्व विकास की प्रक्रियाओ—अ तर्राष्ट्रीय सम्बधो से सम्ब धित समस्याओ, विश्व समाजवादी व्यवस्था के विकास का शासित करन वाली बुनियादी विशेषताओ पर, खासकर समाजवादी आर्थिक एकीकरण की समस्याओ तथा पू जीवादी दुनिया म चल रही प्रक्रियाओ के विश्लेषण पर विशेष ध्यान द रहे है।

आधुनिक प्राकृतिक विज्ञान की दार्शनिक समस्याओ और सामाजिक विकास की द्वद्वात्मक पद्धति तथा समाजवादी समाज के राजनीतिक ढाचे से सम्ब धित समस्याओ और समाजवादी जनवाद के आगे के विकास का अध्ययन किया जा रहा है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस न समाज विज्ञान के काय कर्ताओ पर उन्नत समाजवादी समाज की बुनियादी समस्याओ की विस्तारपूवक सैद्धातिक विवेचना करने तथा कम्युनिस्ट समाज म उसके क्रमिक सक्रमण के उपायो का वज्ञानिक रूप से प्रमाणित करन की जिम्मेदारी दी। अथशास्त्र, समाज के सामाजिक-राजनीतिक विकास तथा विदेश नीति के क्षेत्रा मे अभी भी बहुत काय किया जाना है।

१९७१-७५ के पचवर्षीय योजनाकाल मे वज्ञानिक अनुसधान तथा वज्ञानिक सस्थाओ के आर्थिक और तकनीकी आधार को मजबूत करन के लिए सरकारी आवटन गत पचवर्षीय योजनाकाल की अपेक्षा ६० प्रतिशत अधिक है। विज्ञान और प्रविधि के नये क्षेत्रा के लिए विशेष रूप से अधिक वज्ञानिक कायकर्ताओ को प्रशिक्षित किया जायगा।

इन सब बाता से सिद्ध होता है कि सोवियत समाज के जीवन म विज्ञान की कितनी महत्वपूण भूमिका है। भविष्य मे यह भूमिका और भी बढेगी क्योकि कम्युनिस्ट पार्टी की यह मान्यता है कि कम्युनिज्म के आर्थिक और तकनीकी आधार के निर्माण म वज्ञानिक और प्राविधिक प्रगति का अत्यत महत्व है।

सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वी काग्रेस ने सोवियत जनता के सामने एतिहासिक महत्व का कायक्रम रखा है—और वह है वैज्ञानिक एव प्राविधिक

क्रान्ति की उपलब्धियों का समाजवाद के लाभों के साथ समन्वय करना तथा समाजवाद में सन्निहित विज्ञान और उत्पादन के सम्बन्धों के रूपों का विकास करना।

सोवियत विज्ञान का स्पष्ट उद्देश्य है जनता के लाभ के लिए सोवियत संघ की आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति को आगे बढ़ाना।

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग अनुसंधान के बढ़ते हुए कार्यक्षेत्र से ही अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक सहयोग की आवश्यकता उत्प्रेरित होती है, विशेषकर उच्च चापों की भौतिकी, खगोल भौतिकी तथा खगोल विज्ञान जैसे क्षेत्रों में। समुद्र विज्ञान, वायुमंडलीय प्रक्रियाओं, पृथ्वी के आंतरिक ढांचे तथा पर्यावरण की सुरक्षा जैसी विश्वव्यापी समस्याओं का अनेक देशों के वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयासों द्वारा ही सफलतापूर्वक हल किया जा सकता है। सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सहयोग आवश्यक है।

सोवियत संघ की विज्ञान अकादमी ७० से अधिक देशों के वैज्ञानिक संगठनों के साथ व्यापक सम्बन्ध कायम रखती है। इन सम्बन्धों के भिन्न भिन्न रूप हैं और यात्राओं का आदान-प्रदान, द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय अनुसंधान संयुक्त अभियानों का संगठन आदि उन्हीं में आते हैं। १९७२ में ५० देशों के वैज्ञानिकों के प्रतिनिधिमंडलों ने सोवियत संघ की यात्रा की।

विज्ञान के क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का सबसे ज्वलन्त प्रमाण समाजवादी देशों के उदाहरण से मिलता है। समाजवादी देशों के बीच सहयोग बहुपक्षीय आधार पर—पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद के ढांचे के अंतर्गत—तथा द्विपक्षीय आधार पर भी विकसित हो रहा है। इसमें विज्ञान तथा प्रविधि की करीब-करीब सभी शाखाएं आ जाती हैं और इसका विस्तार मौलिक तथा व्यावहारिक वैज्ञानिक समस्याओं से सम्बन्धित संयुक्त अंतरिक्ष प्रयोग करने से लेकर विज्ञान की विशेष शाखाओं का विकास, पर्यावरण की सुरक्षा के काम में संयुक्त सहयोग, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवाओं आदि की सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करने तक है। पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद द्वारा हाल ही में पारित सर्वांगपूर्ण कार्यक्रम समाजवादी समुदाय के देशों के आर्थिक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी सहयोग के विकास की दिशा में एक नया कदम है।

फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, इटली, फिनलैंड, आस्ट्रिया, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क तथा कुछ अन्य पश्चिम यूरोपीय देशों के साथ सोवियत संघ का वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग बहुत ही संतोषजनक ढंग से विकास कर रहा है। भारत, कनाडा तथा जापान जैसे देशों के साथ सहयोग में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। सोवियत संघ और अमरीका के बीच वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहयोग के अच्छे आसार हैं। विज्ञान और प्रविधि, स्वास्थ्य सेवा, पर्यावरण की सुरक्षा और अंतरिक्ष की खोज में सहयोग करने के बारे में मई १९७२ में सोवियत और अमरीकी नेताओं के बीच जो करार सम्पन्न हुए वे सोवियत संघ और अमरीका के बीच सम्बन्धों में एक नयी युगान्तकारी घटना हैं।

सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी, जिसमे सम्बद्ध सोवियत जातीय वैज्ञानिक संस्थाए भी शामिल है, १४३ अन्तर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी वैज्ञानिक सगठनो की सदस्य है। सोवियत वैज्ञानिक अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक कार्यक्रमो, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय भूभौतिकी वर्ष तथा दक्षिण ध्रुव प्रदेश, विश्व महासागरो, सूर्य तथा बाह्य अन्तरिक्ष के सयुक्त अध्ययन मे सक्रिय भाग लेते हैं।

समन्वित अन्तराष्ट्रीय कार्यक्रमो से तथा प्रमुख वैज्ञानिक समस्याओ के सयुक्त अध्ययन से मनुष्य के लाभ के लिए विश्व विज्ञान और प्रविधि के अधिक तेज विकास की सभावना उत्पन्न होती है।

खेलकूद आन्दोलन

शारीरिक व्यायाम और खेलकूद मानव व्यक्तित्व के सम्यक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

खेलकूद और समाज अपने नागरिकों के शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक रखने के प्रश्न पर समाजवादी समाज बहुत ध्यान देता है। सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में इस बात की घोषणा की गई है कि शैशवावस्था से लेकर शरीर और मन के सम्यक विकास के साथ युवा पीढ़ी को शारीरिक दृष्टि से मजबूत बनाना पार्टी का एक महत्वपूर्ण काम है।

सोवियत शारीरिक व्यायाम आन्दोलन वैज्ञानिक दृष्टि से विकसित शारीरिक प्रशिक्षण प्रणाली पर आधारित है और इसका लाभ हर कोटि के लोगों को मिलता है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की २४वीं कांग्रेस ने १९७१ ७५ की विकास योजना के बारे में जो निर्देश दिए हैं उनमें सर्वसाधारण के लिए शारीरिक व्यायाम तथा खेलकूद में भाग लेने की स्थितियों में सुधार के पग बताये गये हैं। यह नए खेलकूद प्रतिष्ठापन के निर्माण के लिए व्यापक कार्यक्रम चलाने तथा वर्तमान सुविधाओं का अधिक पूर्णता से उपयोग करने, व्यापक पैमाने पर पर्यटन के विकास के लिए कदम उठाने तथा पर्यटन सुविधाओं को और अधिक सुधारने के माध्यम से ही हासिल किया जा सकता है।

शारीरिक व्यायाम और खेलकूद के विकास के लिए हर वर्ष पहले से अधिक धन सुरक्षित रखे जाते हैं। यह धन सरकारी बजट और स्थानीय निकायों के बजटों में खेलकूद के लिए निर्धारित धनराशि से तथा कारखानों एवं सामूहिक और राज्य फार्मों द्वारा खेलकूद प्रतिष्ठापनों के निर्माण, खेलकूद उपकरणों के क्रय, प्रशिक्षकों के वेतन तथा प्रतिद्वन्द्विताओं का संगठन करने के लिए उदारतापूर्वक दी गयी रकम से आता है। शारीरिक व्यायाम आन्दोलन को सोवियत ट्रेड यूनियनों का ठोस समर्थन मिलता है।

सोवियत संघ में शारीरिक व्यायाम आन्दोलन के विकास सम्बन्धी कार्यों का निर्देशन सोवियत संघ की मंत्रिपरिषद के अंतर्गत शारीरिक व्यायाम एवं खेलकूद समिति द्वारा किया जाता है। सोवियत समाज में कोई व्यक्ति या संगठन निजी तौर पर मुनाफे के लिए खेलकूद का उपयोग नहीं करता है, सोवियत संघ के खिलाड़ियों को खेलकूद प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए पैसे नहीं दिए जाते हैं। हर खिलाड़ी का अपना पेशा या धंधा है जिससे उसकी जीविका चलती है। सोवियत संघ में खेलकूद कोई पेशा नहीं बल्कि शौक या प्रिय शगल है क्योंकि सोवियत संघ में कोई पेशावर खेलकूद नहीं है।

खेलकूद की साज सज्जा तथा सुविधाए खिलाडियो को मुफ्त दी जाती हैं। प्रशिक्षण भी नि शुल्क है। प्रशिक्षण काल म तथा खेलकूद प्रतियोगिता के दिनो मे खिला डियो को अपना नियमित वेतन मिलता रहता है। देश के अन्दर और बाहर प्रतियोगिताओ म भाग लेने के लिए जाने आने का खर्च भी उन्ह दिया जाता है। टिकट की बिक्री स जो लाभ होता है उसका उपयोग स्टेडियम के निर्माण, खेलकूद उपकरणो की खरीद आदि के लिए किया जाता है।

सोवियत शासन के वर्षों म सोवियत सघ म शारीरिक प्रशिक्षण की जिस प्रणाली का विकास हुआ है, उसम सभी नागरिको के शारीरिक विकास के लिए सरकार की चिन्ता और अव्यवसायी खेलकूद आदोलन समन्वित हैं।

शारीरिक प्रशिक्षण किंडरगार्टेनो, सामान्य स्कूलो, कालेजो, सस्थानो, विश्वविद्यालयो, व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रो तथा सैनिक सेवाओ म अनिवार्य है।

अव्यवसायी खेलकूद आदोलन के अ तगत वे सभी लोग आते हे जो खेलकूद समितियो म शामिल होते हैं तथा अपने काय स्थलो या अध्ययन स्थानो मे विभिन्न खेलकूदो मे भाग लेते हैं—कारखानो, निर्माण स्थलो, सामूहिक तथा राज्य फार्मों अनुसधान प्रतिष्ठानो, सरकारी सगठनो, तथा उच्चतर तथा माध्यमिक स्कूलो आदि की शारीरिक व्यायाम सोसाइटियो या खेलकूद क्लबो म।

सोवियत सघ मे २,१२,००० ऐसे खेलकूद दल या क्लब है जो खेलकूद समितियो की प्रारभिक इकाइया हैं। छात्र शारीरिक व्यायाम दल तथा खेलकूद क्लब अखिल-सघीय खेलकूद समिति 'ब्यूरेवेस्तनिक' के अन्तगत आते है, रूसी सघ के औद्योगिक सस्थानो मे काम करने वाले खिलाडी मुख्यत "त्रुद" सोसाइटी के सदस्य है, सरकारी कमचारी वैज्ञानिक कायकर्ता तथा सास्कृतिक क्षेत्र के जो कायकर्ता खेलकूद मे भाग लेना चाहते हैं वे "स्पार्ताक" समिति के सदस्य बनते है, "लोकोमोटिव" समिति उन खिलाडियो को एकत्र करती है जो रलवे कमचारी हैं। इस प्रकार सोवियत सघ म अव्यवसायी खेलकूद आदोलन औद्योगिक क्षेत्रीय सिद्धात पर आधारित है। सोवियत सघ मे ३६ खेलकूद सोसाइटिया हैं जो साढे चार करोड स अधिक खेलकूदप्रेमियो को एक सूत्र म आबद्ध करती है।

खेलकूद की चोटियों का आरोहण आज सोवियत सघ मे ५६ खेलकूद चल रहे हैं निश्चय ही सबसे लोकप्रिय ओलम्पिक खेलकूद है। उदाहरण के लिए, करीब ७० लाख लोग ट्रैक एण्ड फिल्ड खेल म भाग लेते है, ६० लाख से अधिक लोग वालीबाल खेलते है, ४५ लाख फुटबाल के खिलाडी है तथा अन्य ४६ लाख लोग स्कीईंग करते हैं। अधिकाश ओलम्पिक खेलकूदो म सोवियत खिलाडी अग्रणियो मे होते हैं। अनेक बार उन्होंने ओलम्पिक खेलो म दस दस चोटी के पुरस्कार तथा विश्व एव यूरोपीय चैम्पियनशिप जीते हैं।

ग्रीष्म एव शीतकालीन ओलम्पिको के कायक्रमो मे शामिल खेलकूदो के अतिरिक्त भी अनेक खेलकूद हैं जिनका सोवियत सघ मे सफलतापूवक विकास हो रहा है

इनमे कलाबाजी कलिस्थेनिक्स, पर्वतारोहण, सम्बो कुश्ती, टेनिस टेबुल टेनिस, महिला बास्केटबाल तथा साइकिल चलाना, बैंडी, शतरंज तथा ड्राफ्ट्स हैं।

तकनीकी खेलकूद प्रतियोगिताए, जिनमे कार दौड मोटरसाइकिल दौड स्कूबा डाईविंग, स्लाईडिंग, पाराशूट जम्पिंग, मोटरबोट दौड आदि शामिल हैं, सोवियत सघ मे अधिकाधिक लोकप्रिय हो रही है।

सोवियत सघ मे अनेक जातीय खेलकूद हैं। जार्जियाई खिलाडी "चिदाओबा" पसन्द करते है जो एक प्रकार की कुश्ती है। फिर 'लेलो' है जो फुटबाल से मिलता जुलता है और रगबी तथा अनेक अश्वारोहण खेल हैं। राष्ट्रीय ढग की कुश्ती तथा अश्वारोही खेल कजाखस्तान किर्गीजिया तथा आर्मीनिया मे बहुत विकसित हैं। माकून लोग पाश फेंकने की प्रतियोगिता चलाते है, बुर्यात बडे तीरदाज होते है तथा नेनतसी लोगों को बारहसिंगा दौड पसन्द है। "लप्ता" जो अनेक बातो मे बेसबाल की तरह है, रूसी सघ मे काफी लोकप्रिय है।

कोई ४० वर्ष पूर्व सोवियत सघ मे "श्रम और प्रतिरक्षा के लिए तयार" नामक राष्ट्रीय शारीरिक व्यायाम कार्यक्रम तयार किया गया। सोवियत शारीरिक व्यायाम और खलकूद के विकास मे यह एक महत्वपूर्ण घटना थी। देश के शारीरिक व्यायाम आन्दोलन की प्रगति के अनुकूल इसमे हाल ही मे परिवर्तन किया गया है। इसे अधिक व्यापक सभी उम्र के लोगो के उपयुक्त तथा खिलाडियो के लिए अधिक उपयुक्त बनाया गया है।

अधिकतर खेलो मे खासकर ओलम्पिक खेलो मे विशेष उपाधिया शुरू की गई हैं। ऊपर से शुरू करते हुए ये पदविया इस प्रकार हैं सोवियत सघ खेलकूद आचार्य—अन्तर्राष्ट्रीय कलास, सोवियत सघ खलकूद आचार्य, और वयस्को के लिए खेलकूद श्रेणी—सोवियत सघ खेलकूद के उम्मीदवार, खिलाडी—प्रथम श्रेणी, खिलाडी—दूसरी श्रेणी, खिलाडी—तीसरी श्रेणी, और अवरो के लिए खिलाडी—प्रथम जूनियर श्रेणी, खिलाडी—दूसरी जूनियर श्रेणी और खिलाडी—तीसरी जूनियर श्रेणी।

सोवियत खिलाडी जो आरम्भिक उपाधिया जीतते है, उनमे से विश्व एव यूरोपीय चम्पीयनो को सोवियत खेलकूद के श्लाघ्य आचार्य की सम्मानीय उपाधि दी जाती है। सोवियत सघ मे आज २ ००० से अधिक खेलकूद के श्लाघ्य आचार्य है।

शिक्षको और पी टी टीचरो का प्रशिक्षण २१ राजकीय शारीरिक व्यायाम सस्थानो शिक्षक प्रशिक्षण सस्थानो के ७७ पी० टी० विभागो, २५ शारीरिक व्यायाम स्कूलो तथा शिक्षको के १० स्कूलो मे होता है।

खेलकूद के बारे मे अनुसधान कार्य अनगिनत तकनीकी और चिकित्सा सस्थानो, सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी, सोवियत सघ की चिकित्सा विज्ञान अकादमी तथा जनतत्रीय अकादमियो मे होता है।

सोवियत सघ मे प्रथम श्रेणी के अनेक खेलकूद प्रतिष्ठान हैं मास्को का केन्द्रीय लेनिन स्टेडियम जिसमे १,०१,००० लोगो के लिए जगह है, लेनिनग्राद का किरोव

स्टेडियम (१,००,००० जगह), किएव का केन्द्रीय स्टेडियम जहा १,००,००० जगह हैं, मास्को का डायनमो स्टेडियम जिसमे ६० ००० लोगो के बैठने की जगह है आदि-आदि। ताशकन्द म पाख्तावोर स्टेडियम भी उसी आकार का है तथा और भी एस अनेक हैं। खेलकूद के इनडोर अखाडे लेनिनग्राद किएव मिन्स्क येरेवान गोर्की, रीगा यरवान, दोनत्स्क तथा अन्य अनेक शहरो म बनाए गए हैं। १९७२ के अन्त म मेदेओ का उच्च-पर्वतीय स्केटिंग रिंक पुनर्निमाण के बाद खोल दिया गया। इसम १०,५०० वग मी० नकली बर्फ है। इसके पुनरोद्घाटन के बाद स वहा अनेक विश्व कीर्तिमान कायम हुए है। सब मिला कर सोवियत सघ म ३ ००० स्टेडियम ३,७८,००० खेलकूद के मैदान, ४०,००० व्यायामशालाए तथा ५,००० पयटक एव स्वास्थ्य निर्माण शिविर है। गर्मी म एक दिन के अन्दर देश म उपलब्ध खेलकूद की क्षमताए दो करोड खिलाडियो के लिए पर्याप्त है।

सोवियत सघ के जनगण के स्पार्ताकियाद सोवियत सघ के खेलकूद के जीवन की प्रमुख घटनाए होत ह। सामान्यत इनके कायक्रमो मे २० स अधिक तरह के खेलकूद होत हैं। इनम व्यापक बहुपक्षीय टूर्नामेट होते हैं जिनके फाइनल्स, प्रतिद्वद्विताओ की व्यापकता और स्तर की दृष्टि से ओलम्पिक खेलो की बराबरी करत है। स्पार्ताकियाद चार वर्षो म एक बार होते हैं। पिछला स्पार्ताकियाद १९७१ म हुआ।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध आज सोवियत खिलाडी ८७ देशो के खिलाडियो से नियमित रूप स सम्बन्ध बनाए रखते है। १९७२ म उन्होने खेलकूद के १,८८१ कार्य-क्रमो म भाग लिया। १९५३ मे सोवियत सघ मे आये विदेशी खिलाडियो की सख्या तथा विदेशो मे प्रतिद्वद्विताओ म भाग लेने वाले सोवियत खिलाडियो की सख्या २,७७७ थी। १९६३ म यह सख्या बढ कर ६ ००० हुई और १९७२ म ३०,००० से अधिक।

सोवियत खिलाडियो का ५९ अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद सघो, एसोसियेशनो तथा यूनियनो म प्रतिनिधित्व है।

१९६६ मे लेकर १९७३ के बीच के काल म १०० से अधिक सोवियत खेलकूद शिक्षको ने ३७ एशियाई, अफ्रीकी तथा लटिन अमरीकी देशो म प्रशिक्षण काय किया।

इन्ही दिनो घाना गायना, माली, ट्यूनीसिया, इथियोपिया, अफगानिस्तान, कम्बोडिया, इराक, मलेशिया तथा अन्य देशो के युवजनो ने सोवियत सघ के शारीरिक व्यायाम सस्थानो के प्रशिक्षण कायक्रमो मे भाग लिया। इन देशो के ५० से अधिक लोगो ने कोचिंग स्कूल की पढाई पूरी की तथा ३४ विशेषज्ञो ने इस क्षेत्र से सम्बन्धित शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किये।

१९७२ का २०वा ओलम्पिक खेल १२२ देशो के करीब १०,००० एथलीटो ने म्युनिख म हुए ओलम्पिक खेलो म भाग लिया था।

इसमे सोवियत दल ने ५० स्वर्ण २७ रजत तथा २२ कास्य पदक जीते। युद्धोत्तर अवधि म हुए सभी ओलम्पिको मे से इसम प्राप्त ५० स्वर्ण पदक सर्वोत्तम सफलता है।

सोवियत एथलीटो ने दस प्रतिद्वन्द्विताए जीती वास्केटवाल, फ्री स्टाइल तथा ग्रीको रोमन कुश्ती, साइकिलग वाटरपोलो, वालीवाल (महिलाए), जिम्नस्टिक्स, कायाक और केनो दौड, आधुनिक पेटायलोन तथा शाप शूटिंग मे।

उन्होने अमरीकी टीम को (जिसने ३३ स्वण, ३० रजत तथा ३० कास्य पदक जीते) १६ ओलम्पिक प्रतिद्वन्द्विताओ मे हरा दिया और सभी टीमो मे प्रथम स्थान प्राप्त किया।

२१वा ओलम्पिक खेल माटियल मे १९७६ मे होगा।

१९८० मे होने वाले २२वें ओलम्पिक के सभावित स्थानो की सूची मे मास्को का भी नाम है।

१९७३ मे मास्को यूनिवर्सियाद छात्रो के अतराष्ट्रीय खेलकूद की राजधानी बना।

सशस्त्र सेनाए

अपने देश की रक्षा करना हर सोवियत नागरिक का देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य है।

सोवियत सेना सर्वप्रथम २३ फरवरी १९१८ को युद्ध के मैदान में आयी। उसी दिन मजदूरों और किसानों की नवगठित लाल सेना की नियमित टुकडियों तथा मजदूरों के लाल स्वयंसेवकों के दस्ता ने प्स्कोव के निकट कैसर की उस जर्मन सेना के खिलाफ अपनी पहली जीत हासिल की थी जिसने नवजात जनतंत्र पर हमला किया था।

गृह युद्ध तथा विदेशी आक्रमण (१९१८ २०) के दिनों में अपार कठिनाइयों के बावजूद सोवियत सेना अधिक सुसज्जित शत्रु का मुकाबला करते हुए सोवियत राज्य की रक्षा करने में सफल हुई और अपने लिए उसने चिरस्थायी यश अर्जित किया।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध (१९४१ ४५) के दौरान मास्को, स्तालिनग्राद कुर्स्क के युद्ध, नीपर नदी का लाचारीवश पार किया जाना और नीपर के पश्चिम उक्राइन में युद्ध का छिड़ना, लेनिनग्राद का युद्ध, बेलारूसी अभियान बाल्टिक जनतंत्रों की मुक्ति और बर्लिन का युद्ध लडाइयों के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गए है। सोवियत सेना ने नाजी दासता से अनेक राष्ट्रों को मुक्त किया।

सोवियत सेना का निर्माण कम्युनिस्ट पार्टी ने किया। लेनिन ने सोवियत सैनिक विज्ञान का शिलान्यास किया तथा लाल सेना के निर्माण तथा देश की सुरक्षा को बनाए रखने के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयासों का खुद निर्देशन किया।

सोवियत शांति कार्यक्रम विभिन्न सामाजिक व्यवस्थाओं वाले राज्यों के बीच शांतिपूर्ण सहजीवन के सिद्धांत पर आधारित है। यह लेनिनवादी सिद्धांत, जिसको सोवियत राज्य ने अपने जन्मकाल से ही अंगीकार किया है अंतर्राष्ट्रीय सम्बंधों में प्रगति के लिए एक वास्तविक शक्ति बन गया है।

समाजवादी राज्य केवल साम्राज्यवादी आक्रमण के खतरे के कारण ही सेना रखता है। सोवियत जनता के शांतिपूर्ण श्रम और देश की आजादी और स्वतंत्रता तथा कम्युनिज्म के महान उद्देश्य की रक्षा करना ही सोवियत सशस्त्र सेनाओं का कर्तव्य है।

सोवियत सशस्त्र सेनाओं का संगठन तत्वत नए ढंग का है, पूंजीवादी देशों की सेनाओं से यह मूलत भिन्न है। वे समाजवादी वस्तुत लोकप्रिय सरकार के हाथ के हथियार है, वे मजदूरों और किसानों के वर्ग मोर्चे, सोवियत संघ में बसने वाली सभी जातियों और उप जातियों की दोस्ती, सोवियत समाज की नैतिक और राजनीतिक एकता समाजवादी देशभक्ति तथा सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के प्रतीक हैं।

सोवियत सघ के सविधान के अनुसार सोवियत सशस्त्र सनाए सोवियत सघ की सर्वोच्च सोवियत के द्वारा शासित है जो युद्ध और शांति के प्रश्नों तथा राष्ट्रीय सुरक्षा के सगठन के बारे म कानून बनाती है, सशस्त्र सेनाओ के रख रखाव और उन्नति के लिए बजट मे आवटनो को स्वीकृति देती है। सशस्त्र सेनाए सोवियत सघ के रक्षा मत्रालय के सीधे नियत्रण मे हैं।

सोवियत सघ के रक्षा मत्री सोवियत स घ के मार्शल ए ए ग्रेचको है। चीफ आफ जेनरल स्टाफ सेना के जेनरल वी जी कुलीकोव हैं। १९७२ म कुल १ ७६० करोड रूबल अर्थात राजकीय बजट का १० ३ प्रतिशत रक्षा के लिए आवटित किया गया (१९७३ के लिए भी वही आवटन है पर चू कि राजकीय बजट बढ गया है अत रक्षा पर खर्च का अनुपात घट कर बजट का ९ ८ प्रतिशत हो गया है)।

सोवियत सशस्त्र सेनाए स्थायी सेना है जो युद्ध के लिए बराबर तयार रहती हैं। सेना के पाच विभाग हैं सामरिक राकेट सेना थल सेना, वायु प्रतिरक्षा सेना वायु सेना तथा नौसेना।

सामरिक राकेट सेना सोवियत युद्ध शक्ति का मुख्य आधार है। इसका उद्देश्य दुश्मन के आणविक हमले के साधनो उसके वहत लडाकू यूथा सनिक अडडा, गोला बारूद के कारखानो तथा सनिक प्रतिष्ठानो को नष्ट करना, आक्रमको की सरकार तथा सनिक एजेंसिया और पृष्ठ सोपानक के काय को अव्यवस्थित कर देना और परिवहन की सुविधाओ को तहस-नहस कर देना है। इसीलिए यह प्रथम श्रेणी के मीडियम रेंज और अतर महादेशीय क्षेप्यास्त्रा से सुसज्जित है।

थल सेना सख्या की दृष्टि से (स म) सेवा का सबसे मजबूत अग है जिसके पास तरह तरह के हथियार और सामान है।

थल सेना के पास मीडियम रेंज तथा सामरिक क्षेप्यास्त्र इकाइया वायु रक्षा इकाइया मोटर सज्जित तथा बख्तरबन्द इकाइया बहुउद्देशीय ताप इकाइया, विमान वाहित सेना है जिनकी युद्ध म इजीनियरी तथा सिगल इकाइया आदि मदद करती हैं।

वायु प्रतिरक्षा सेना जिसकी मुख्य जिम्मेदारी आक्रामक के हवाई हमले को विफल कर देना है, तरह तरह के विमानभेदी क्षेप्यास्त्रा तथा हर मौसम के लायक पराध्वन युद्धक और अवरोधक विमाना से सुसज्जित है। उसके पास इलक्ट्रोनिक सुविधाओ कम्प्यूटरा तथा अन्य उपकरणो से युक्त आधुनिक रादार स्टेशन भी है।

वायु सेना क पास सुपरसोनिक जेट हवाइ जहाज है, जो तोपा और क्षेप्यास्त्रा स लस तथा रडियो इलेक्टोनिक साधना से सज्जित हैं। य हर मौसमी हवाइ जहाज रात को भी उड सकते हैं, य बहुत नीचे और बहुत ऊचे उड सकत है और काफी लम्बी दूरी तय कर सकत हैं।

वायु सेना के पास लडाकू हवाई जहाज, लडाकू और बमवषक हवाइ जहाज, बमवषक हवाई जहाज, टोह लेने वाले हवाई जहाज तथा अनेक प्रकार के हेलीकाप्टर बडी परेशानी वाले काय करते है।

नौसेना पारमाणविक पनडुब्बिया तथा राकेट ढोने वाले जहाज विभिन्न प्रकारा और श्रेणिया के युद्धपोत नौसेना की प्रघात शक्ति है।

सोवियत सशस्त्र सेनाओ की ताकत उनके हथियार तथा, सबसे अधिक, उन हथियारो को चलाने वाले लोग है।

कम्युनिस्ट तथा तरुण कम्युनिस्ट लीग के सदस्य जो सनिक कमचारियो की पूरी सख्या के ८० प्रतिशत है, सनिक इकाइयो को एकत्रित और प्रेरित करने वाली शक्ति हैं।

अफसर लोग सेना की रीढ है। अफसरा में प्रशिक्षित इजीनियरा की सख्या बराबर बढ रही है सोवियत सघ म सनिक अकादमिया और उच्चतर स्कूला की एक प्रणाली का निर्माण हुआ है।

झण्डा और वारण्ट अफसर कमचारियो के प्रशिक्षण म अफसरा की मदद करते है।

अति कुशल और सक्षम साधारण सैनिको की पदोन्नति सरजेंट के रूप म होती है।

सोवियत सशस्त्र सेनाओ का गठन सार्वत्रिक सैनिक सवा कानून के आधार पर होता है। सभी पुरुष सोवियत नागरिको को, चाहे वे किसी भी नस्ल, जाति, धम, विश्वास, शिक्षा या सामाजिक स्तर के क्या न हो, यदि वे सनिक सेवा के लायक है तो उन्ह सनिक प्रशिक्षण मिलता है। सेना म सेवा की शत दो वप है, नौसेना म तीन वप।

सोवियत सनिको को शस्त्रा तथा युद्ध के उपकरणो के प्रयोग म गहरा प्रशिक्षण दिया जाता है, जिससे उनकी युद्ध-तत्परता बढ जाती है। उच्चतर तथा माध्यमिक शिक्षा पाए हुए सनिक कुल कमचारिया की सख्या के ४७ प्रतिशत ह, बाकी ५३ प्रतिशत ऐसे सनिक हैं जिनकी माध्यमिक शिक्षा पूरी नही हुई है। थल सेना और वायु सेना के आधे कमचारी तथा सामरिक राकेट सेना, वायु प्रतिरक्षा सेना एव नौसेना के ८० प्रतिशत कमचारी निपुणता प्राप्त श्रेणी के विशेषज्ञ है। थल सेना और नौसेना म करीब ४५ प्रतिशत अफसरा के पदो पर इजीनियर और तकनीशियन ह।

सेना की युद्ध तत्परता पर कमचारिया के नैतिक उपादान और मनोवैज्ञानिक प्रशिक्षण का बडा असर पडता है। राजनीतिक जागरूकता जनता के ध्येय के प्रति वफादारी कम्युनिज्म के प्रति वफादारी सोवियत सशस्त्र सेनाओ को अजेय बनाती है।

वारसा सधि १४ मई १९५५ को वारसा मे मित्रता सहयोग तथा परस्पर सहायता के बारे म हुई बहुपक्षीय सधि १४ जून १९५५ को लागू हुई। वारसा सधि तथा उसका सनिक गठन यूरोप मे स्थायित्व बनाए रखने का एक प्रमुख उपादान है। बुल्गारिया लोक जनतत्र, हगरी लोक जनतत्र, जमन जनवादी जनतत्र, पोलैंड लोक जनतत्र, रूमानिया समाजवादी जनतत्र, सोवियत समाजवादी जनतत्र

सघ तथा चेकोस्लोवाक समाजवादी जनतत्र इस सधि के घटक हैं । वारसा सधि सगठन समाजवादी देशो का अपनी सुरक्षा पर साम्राज्यवादी नाटो गुट के बढ़ते हुए खतर के खिलाफ प्रतिकारक कदम है । इसका लक्ष्य अपनी सुरक्षा को बचाना तथा यूराप म शाति कायम रखना है ।

वारसा सधि के सदस्य राज्यो ने सयुक्त सशस्त्र सेनाओ, एक सयुक्त कमान तथा सयुक्त सशस्त्र सेनाओ के मुख्यालय का गठन किया है ।

वारसा सधि सगठन का सर्वोच्च निकाय राजनीतिक सलाहकार समिति है ।

नाटो के विपरीत, वारसा सधि सगठन कोई सकीर्ण और अवरुद्ध सनिक गुट नही है । अय देश भी चाहे उनकी सामाजिक और राज्य व्यवस्था कसी भी क्या न हो, इस स धि के सदस्य होने को स्वतत्र ह । यह स धि सयुक्त राष्ट्र सघ के घोषणापत्र के सिद्धान्तो के अनुरूप है ।

सस्कृति

वचारिक दष्टि से एकयबद्ध और एक से उद्देश्यों से प्रेरित सावियत सघ क जनगण बहुत ही सक्षिप्त अवधि मे सच्चे अर्थों मे सास्कृतिक क्रांति को पूरा कर सके और एक एसी सस्कृति की रचना कर सके जो सारत समाजवादी और स्वरूप से जातीय है।

१९१७ की महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति के पहले रूस के सास्कृतिक जीवन की विशेषता थे वे तेज अर्न्तविरोध जो समाज के असमान विकास और समाज म मौजूद असमानता की उपज थे। व्यापक निरक्षरता और आबादी के बहुत बडे हिस्से की जहालत की पृष्ठभूमि मे कुछ ही लोगों की विशिष्ट उपलब्धिया प्रकट होती थी।

सोवियत सरकार के पहले कदम उन सभी बाधाओ को क्रांतिकारी ढग से तोडन की ओर निर्देशित थे जो जनगण और सस्कृति के बीच खडी थी। प्रेस और शिक्षा के प्रशासन का नियंत्रित करने वाले बुजुआ अभिजात तत्र के स्थानपर राज्य का प्रशासन कायम किया गया और थियेटरा, सग्रहालया, अभिलेखागारा और कला-सग्रहा का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

मार्क्स और एगेल्स के समाजवादी क्रांति के वचारिक तथा सास्कृतिक पहलुओ से सम्बन्धित विचारा को प्रतिपादित करते हुए लेनिन न एक नयी, समाजवादी सस्कृति के विकास के लिए मुख्य दिशाए उद्देश्य और विधिया परिभाषित की। उन्होन बताया कि सस्कृति के क्षेत्र म क्रांति समाजवाद और कम्युनिज्म के निर्माण का आवश्यक और अभिन्न अग है।

समाजवादी सास्कृतिक क्रांति शक्षिक कार्यो का सिर्फ मीजान ही नही है बल्कि इससे भी कुछ अधिक बडी चीज है। और यह मेहनतकश जनता को साहित्य की कालजयी कृतिया, कला की महान कृतिया और विज्ञान तथा प्रविधि की उपलब्धिया से परिचित कराने तक ही सीमित नही है हालाकि यह एक अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू है। समाजवादी सास्कृतिक क्रांति का मुख्य उद्देश्य समाज का समाजवादी और कम्युनिस्ट नतिकता के आधार पर पूर्ण पुनर्निमाण करना है। इसम अतीत के पूर्वाग्रहा का उन्मूलन, नय नतिक गुणो और सामाजिक आचरण के मानदण्डा का सवर्द्धन, राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था म और राज्य के प्रशासन म जनता की सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित बनाना और सामजस्यपूर्ण ढग स विकसित सजनात्मक बुद्धि वाले व्यक्तित्व का गठन करना सम्मिलित है। लेनिन ने साथ ही यह भी इगित किया कि सभी युगा और राष्ट्रो की सस्कृति और कला म जो कुछ अत्यधिक मूल्यवान है उसको अपनाये बिना और विकसित किये बिना समाजवादी सस्कृति को रूप दन की बात कल्पनातीत है।

सोवियत सघ मे समाजवाद के निर्माण का काय जसे जैसे आगे बढा वसे वसे नये समाज के जीवन म इन लेनिनवादी आदर्शो को अभि यक्ति मिलती गयी। सस्कृति को लोगा की पहु च के भीतर लाया गया और एक नये बुद्धिजीवी वग का आविभाव होना शुरू हुआ। देश म बहुजातीय समाजवादी सस्कृति का उदय हुआ। साहचय और सामूहिकवाद के सिद्धा तो और समाजवादी विचारधारा न सोवियत समाज म मजबूती स जडें पकडी। सोवियत मानव एक नये रूप मे, समाजवाद और कम्युनिज्म क उद्देश्य पूण तथा सुशिक्षित निमाता के रूप म उभरा।

जातीय सस्कृतियो न हालाकि वे अपन स्वरूप और परिपक्वता के स्तर की दष्टि से भिन्न थी सोवियत समाज की समान सस्कृति को उत्पन्न किया जिसका व अग थी और जिसके साथ व अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना म आबद्ध थी। इसके साथ ही उन्होंने अपने सर्वोत्तम राष्ट्रीय गुणो और परम्पराओ को सुरक्षित भी रखा। सोवियत सस्कृति की यह एकता क्रातिकारी मानवतावाद के आदर्शों सवहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के सिद्धातो और शाति मत्री तथा राष्ट्रो के बीच भ्रातत्व के पुनीत आदर्शों के इनके उत्कट समथन मे और राष्ट्रवाद और किसी भी प्रकार के अधराष्ट्रवाद की निंदा करने म प्रकट होती है।

सोवियत सघ के जनगण अपनी कला और साहित्य का विकास करने म समाजवादी यथाथवाद के सिद्धाता का पालन करत है जो इस बात की माग करता है कि घटनाओ को उनके ऐतिहासिक और क्रातिकारी विकास के सन्दभ मे ईमानदारी से चित्रित किया जाये। यह नय आदर्शों की व्यवहायता को सिद्ध करने के लिए और समकालीन जीवन मे मौजूद अन्तर्विरोधो की तीव्रता को व्यक्त करन के लिए और लाखो की नियतियो को प्रभावित करन वाली घटनाओ की भारी गुजाइश को इगित करने के लिए सामाजिक ऐतिहासिक प्रक्रियाओ का सार पाता है। समाजवादी यथाथवाद चीजो को वास्तविक और काल्पनिक चीजो के और नतिक व सौंदयबोधी चीजो के सश्लेषण के माध्यम मे उनके असली रूप म जसी कि वे है और जसा कि उन्ह होना चाहिए प्रस्तुत करता है।

साहित्य बहुजातीय सोवियत साहित्य लखको की कई पीढियो के रचनात्मक प्रयास की उपज है। लेखक मक्सिम गोर्की, जिनका उपन्यास मा समाजवादी यथाथवाद की पहली कृति माना जाता है साहित्य मे क्राति के प्रवतक थ। १९२० और १९३० के वर्षो म वी० वेरेसायेव, एस० सेर्गेयव त्सेन्स्की, वी० शिश्कोव एम० प्रिश्विन, एन० असयव ए० ग्रिन और अय लेखको न, जिन्होंने अपन साहित्यिक जीवन की शुरुआत क्राति म पहले की थी समाजवादी सस्कृति क निमाताओ की कतारो म शामिल हुए। साथ ही साहित्यिक क्षितिज पर नये चहरे प्रकट हुए। व प्राय वस लोग थे जिन्होंने क्राति की उपलब्धियो की प्रतिरक्षा करन के लिए सशस्त्र सघष म सक्रिय भाग लिया था। उनम एल० लेओनोव ए० फादयेव, डी० फुर्मानोव, एम० शोलोखोव, वी० विश्नेव्स्की, वी० इव्नेव और एन० निकोनोव जसे लखक शामिल थे। यह भी लेखको

की वह पीढ़ी थी जो अपने साथ नये नायक—क्रांति के उद्देश्य के लिए एक सक्रिय योद्धा—को लेकर आयी।

क्रांति के बाद के प्रारंभिक वर्षों में कविता का तीव्र विकास देखने में आया। उन दिनों के अत्यधिक विशिष्ट कवियों में से ये वी० मायाकोव्स्की जिनकी प्रभावशाली और ओजस्वी कविताओं का सोवियत साहित्य के आगे के विकास पर अच्छा खासा प्रभाव पड़ा, ए० ब्लोक, वी ब्रयुसाव और एस० येसेनिन।

चौथे दशक के वर्षों में विभिन्न जातीयताओं के लेखक प्रकट हुए जिनके नाम देश भर में प्रसिद्ध हुए। वे थे उक्राइनी लेखक पी० तीचिना एम० रील्स्की और वी० सोस्युरा बलोरुसी या० कुपाला और या० कोलास जार्जियाई टी० ताबिदजे और पी० याश्विली, आर्मीनियाई एस० जोर्यान और ए० इसाक्यान अजरबैजानी एस० वुगुन और आर० रजा, ताजिक एस० ऐनी, किर्गीज टी० सीदीक्बेकोव और तुर्कमानी बी० केर्बाबायव और कजाख एम० औजोव। रूसी भाषा सोवियत जनगण के बीच सम्पर्क स्थापित करने का माध्यम बनी।

चौथे और पांचवें दशक की सर्वोत्तम कृतियों में मिखाइल शोलोखोव का उपन्यास धीरे बहे दोन रे और अलेक्सेई तोल्स्तोय का उपन्यास आग से होकर गुजरता रास्ता, दोनों ही वीरगाथा प्रधान उपन्यास शामिल हैं। मार्क्सवादी स्थिति से लिखे गये ये उपन्यास जीवन मरण के संघर्ष में रत पुराने और नये विश्व का सच्चा और कौशलपूर्ण चित्र प्रस्तुत करते हैं। उन वर्षों के बहुत से सशक्त नाटक, उदाहरण के लिए वसेवोलोद विश्नेव्स्की का नाटक आशावादी त्रासदी आज तक थियेटर और सिनेमा दर्शकों को आकर्षित कर रहे हैं।

१९४१-४५ के महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान सोवियत लेखक सोवियत जनता की भांति ही समाजवादी मातृभूमि की प्रतिरक्षा के लिए लड़े। उन्होंने खंदकों में सेना के समाचारपत्रों के सम्पादकीय कार्यालयों में जंगी जहाजों पर—युद्ध के प्रत्येक थियेटर में काम किया। चार सौ से अधिक लेखकों ने मोर्चे पर अपनी जानें गंवायी। उन कठोर दिनों की साहित्यिक कृतियां अपनी उत्कट देशभक्ति और नागरिक कर्तव्य की उच्च भावना के लिए उल्लेखनीय है। ये गुण एम० शोलोखोव, ए० तोलस्तोय और बी० विन्नरकी के लेखों और कहानियों की विशेषता हैं। युद्धकालीन सर्वोत्तम काव्यात्मक रचनाओं में ए० त्वार्दोव्स्की की वसीली त्योर्किन है जिसमें युद्ध में सोवियत जनता के अमर कारनामों का गुणगान किया गया है, और एम० इसाकोव्स्की, के० सिमोनोव ए० सुर्कोव और आई० सेल्विन्स्की की कविताएं शामिल हैं।

हाल में लिखित और लेनिन पुरस्कार प्राप्त सर्वोत्तम कृतियों में से एस० स्मिर्नोव की ब्रेस्त गढ़ी (१९६५), एम० स्वेतलोव की हाल के वर्षों की कविताएं (१९६७, मरणोपरान्त), एन० तिखोनोव के सिक्स कालम्स (१९७०) एस० मिखाल्कोव का बालकों के लिए लिखित काव्य संग्रह (१९७०), जी० गुल्याम की कविताएं (मरणोपरान्त, १९७०) एम० शागिन्यान की वी० आई० लेनिन से सम्बन्धित पुस्तकें एक वंश का जन्म

(उल्यानोव परिवार), पहला अखिल रूस, इतिहास पर टिकट, लेनिन के चार पाठ (१६७२) आई० मेलेज की अभियानो मे शामिल लोग और सहित झझा का श्वास (१६७२), ए० वार्तो का ग्ल्को के लिए कविता सग्रह शीतकालीन जगल मे फूल (१६७२) का विशेष उल्लेख किया जाना चाहिए।

सोवियत सघ का राज्य पुरस्कार एम० केम्प के कविता सग्रह अनन्त क्षण (१६६७) वाई० स्मेल्याकोव की कविताओ रूस मे एक दिन (१६६७), आइ० अन्द्रोनिकोव की लेर्मोन्तोव, अनुस धान और खोजें (१६६७) च० आल्मातोव की अलविदा गुलसारी ! (१६६८), एस० जालीगिन की लवण की घाटी (१६६८) ए० मालीश्को के कविता सग्रह सडक (१६६६), एस० सार्तावोव के ग्रन्थत्रय बार्द्रिनो की कहानिया (१६७०), एन० दुबाव की एकाकीपन की व्यथा (१६७०), वी० कोम्पेल्निकोव की विशेष टुकडी और प्योत्र रयाबिकिन (१६७१) ए० त्वार्दोव्स्की का कविता सग्रह इन वर्षो की गतिमयता (१६७१) को प्रदान किया गया।

थियेटर सोवियत थियटर कला के विकास को के० स्तानिस्लाव्स्की और वी० नेमिरोविच दानचेको के जिन्होने सोवियत मच निर्देशन की बुनियाद रखी, सद्धान्तिक अध्ययन और व्यावहारिक गतिविधि से ई० वारताग़ोव के० मादजानिश्विली वी मयर्खोल्द और ए० ताइरोव जसे पुरानी पीढी के विशिष्ट मच निदशकों की गतिविधि और युवा प्रतिभासम्पन्न निमाताओं—ए० पोपोव यू० जावादस्की एन० अकीमोव, एन० सिमानोव और अन्य के काय से जिन्होन सोवियत नाटकीय कला म नय सिद्धात लागू किये बहुत अधिक बढावा मिला।

अक्तूबर क्रान्ति के बाद ३८ जातियो ने स्वय अपने जातीय थियेटर स्थापित किय। सोवियत थियेटर आज ४६ भाषाओ म नाटक मचस्थ करत है। प्रत्येक जातीय थियटर अपन जनगण के विशिष्ट चरित्र को, उनके ऐतिहासिक अनुभव और कलात्मक परम्पराओ को प्रतिबिम्बित करता है।

सोवियत सघ म ५५३ व्यावसायिक थियेटर हैं—४० ओपेरा और बले थियटर ३६४ नाट्य और सगीतात्मक प्रहसन थियटर और १८६ बाल थियेटर। थियटर दर्शको की वार्षिक सख्या ११ करोड ४० लाख से अधिक है।

यूरोप और अमरीका म जसी स्थिति है उसकी तुलना मे करीब करीब सभी सोवियत थियटर स्थावर है। उनकी अपनी इमारत, स्थायी मण्डली और ८ से ३० नाटको —क्लासिकी और समकालीन लेखको की कृतियो—का सग्रह होता है जिसकी पुन पूर्ति हर वष की जाती है। देश के दूरवर्ती जिलो की जरूरत को पूरा करन वाले सफरी थियेटरो की भी अपनी स्थायी मण्डलिया और व्यापक सग्रह है। सभी ओपेरा और बले थियेटरो, बाल थियटरो और रूसी भाषा के अतिरिक्त किसी भी अन्य भाषा म नाटक प्रस्तुत करन वाल ड्रामा थियटरो और साथ ही छोटे कस्बो और ग्रामीण बस्तियो के रूसी ड्रामा थियटरो को आवश्यकताओ और काय की परिस्थितियो के अनुसार आर्थिक सहायता मिलती है।

सोवियत थियेटर रूसी और विदेशी क्लासिकी कृतियो (शेक्सपीयर विशेष रूप से लोकप्रिय ह) क्लासिकल यूनानी त्रासदियो और आधुनिक विदेशी लेखका (बी ब्रेख्त इ हेमिगव, ए मिल्लर जे अनौल्ह, एफ डरेनमत तथा अय) के नाटका को मचस्थ करत हैं।

प्राचीन परम्पराआ वाले पुराने थियटरा (माली थियटर, मास्का स्थित कला थियटर, लेनिनग्राद स्थित पुश्किन थियटर, इत्यादि) के साथ साथ बहुत से नय थियेटर भी दखन म आत हैं जिनके अस्तित्व का श्रेय युवा अभिनताओ और मच निर्देशका की कमशक्ति को जाता है। नये थियटर स्वय अपनी खोजें प्रस्तुत करते है और दश्य कला को समृद्ध बनाते है तथा इस तरह चिर तरण बन रहन म इसकी मदद करत हैं।

सोवियत सघ के गठन की ५०वी जयन्ती का मनान के लिए नाटय और थियेटर कला का राष्ट्रव्यापी समारोह आयोजित किया गया था जो सितम्बर १९७१ से मई १९७३ तक चलता रहा।

बाल थियेटर पचास वप पहले सोवियत सघ एक स्थावर बाल थियटर खोलन वाला पहला दश था। आज देश म ४५ डामा थियटर और १०० म अधिक पुतली नाच घर है जा दश म बाली जान वाली भाषाआ मे से २७ भाषाओ म अपने प्रदशन प्रस्तुत करते है। बाल थियटरा क लिए विशेष रूप स आम तौर पर सर्वोत्तम लेखको द्वारा लिखे गये नाटका के अतिरिक्त व सोवियत क्लासिकी रूसी और विदेशी नाटक मचस्थ करते है। पुतली का तमाशा किशोर दशको म बहुत अधिक लोकप्रिय है।

आपेरा और आपरेटा इन थियेटरा के भण्डार म सोवियत और विदेशी आधुनिक सगीतकारा की रचनाए और साथ ही रूसी तथा विदशी शास्त्रीय सगीत शामिल ह।

सर्वोत्तम सावियत आपरा म प्रोकोफियव का 'युद्ध और शान्ति,'' शोस्ताकोविच का ''कातेरिना इज्माइलोवा'' ख्रेनिकोव का ''तूफान म'' और काबालेव्स्की का ''कालास ब्रूग्नोन', जिसे नय प्रस्तुतीकरण के लिए १९७२ का लेनिन पुरस्कार मिला है, शामिल है।

आपरेटा थियटरो के भण्डार म ज्यादातर उन सोवियत सगीतकारो की रचनाए शामिल ह जो लोक गीतो और नत्य सगीत स प्रेरणा पात है।

बले सोवियत बले रूसी नत्यकला और नत्यो तथा सोवियत सघ म बसन वाली जातिया के सगीत दोना की परम्पराआ पर आधारित है। बैले प्रदशन अपने विपय सम्बधी महत्व और सद्धान्तिक धारणा के लिए तथा साथ ही अपन गहरे मानवतावाद, पात्रा को जाने की अपनी दक्षता तथा कथानक के लालित्य के लिए विख्यात है।

अन्वेषण की भावना निर्भीकता और कलात्मक प्रवत्तिया की विविधता सोवियत बले के हमेशा म विशेष लक्षण रह है।

यथायवादी बले नाटक के (जिसके जन्मदाता त्चाइकोव्स्की थे) आविर्भाव की माग थी कि बले नतक केवल नत्य ही नही करें बल्कि नत्य के माध्यम से पात्र के विकास

की एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या उपलब्ध करें। इस आवश्यकता ने उस सोवियत बैले स्कूल के विशेष लक्षणों को निर्धारित किया जिसने प्रतिभाशाली नर्तकियों—उलानोवा, प्लिसेत्स्काया, लिएपा, वेस्समेर्तनोवा और अन्य—का एक पूरा समूह उत्पन्न किया।

सोवियत बैले थियेटरों के भण्डारों में त्चाइकोव्स्की के "हंस सरोवर", "सुप्त सुन्दरी" और "सरौता", अदान के "गिसेल्ले" और नृत्यकला की अन्य श्रेष्ठ कृतियों के लिए एक सम्मानित स्थान सुरक्षित है।

सोवियत संगीतकार और नृत्य निर्देशक अपने विषय कई स्रोतों से लेते हैं। उनमें साहित्यिक कृतियों पर आधारित बैले (प्रोकोफ़्येव का "रोमियो और जूलियट"), वीरतापूर्ण क्रान्तिकारी बैले (खाचातुर्यान का "स्पार्टाकस") हमारे समकालीनों को प्रस्तुत करने वाले बैले (प्लासोव का "ऐसल"), परी-कथा बैले (कारा कारायेव का "सात सुन्दरियां"), इत्यादि शामिल हैं।

संगीत रिम्स्की कोर्साकोव के शिष्य और सोवियत सिम्फनिक संगीत के जन्मदाता निकोलाई म्यास्कोव्स्की ने २७ सिम्फनियों की रचना की।

क्रान्ति के शीघ्र बाद पुरानी पीढ़ी के बहुत से संगीतकारों ने महत्वपूर्ण कृतियां सर्जित कीं। ग्लियर ने अपनी सिम्फनिक कविता "जापोरोझ्ये कोस्साक" १९२१ में संगीतबद्ध की, ग्लाजुनोव ने उसी वर्ष छठा तन्त्री चतुर्वाद्य रचा, गेदिके ने १९२२ में अपनी तीसरी सिम्फनी उत्पन्न की, आदि।

सिम्फनिक संगीत में सोवियत संगीतकार अतीत की मानवतावादी परम्पराओं को विकसित करते रहे हैं और साथ ही दार्शनिक विस्तार और गहराई के लिए और वास्तविकता की यथेष्ट व्याख्या के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। ये गुण प्रोकोफ़्येव, खाचातुर्यान और शास्ताकोविच की सिम्फनियों की विशिष्टता है।

प्रोकोफ़्येव की सात सिम्फनियों में से प्रत्येक सिम्फनी मोहक और आह्लादकारी "शास्त्रीय" से चिरस्थायी रूप से महाकाव्य बन गया पांचवी और छठी और अपनी प्रभावशाली गेयता से युक्त सातवीं सिम्फनी तक गहन मानवीय गुणों और संसार की अति उपकारी, अति सुन्दर भावनाओं से ओत प्रोत है।

शोस्ताकोविच की सिम्फनिक कृतियां पूरी तरह विविधतापूर्ण है। गहरी मनोवैज्ञानिक अन्तर्दृष्टि उनकी पांचवी सिम्फनी की जो इन्सानी व्यक्तित्व के विकास से सम्बन्धित है विशेषता है। क्रान्तिकारी उपलब्धियों की श्रेष्ठता क्रमगत ग्यारहवीं ("१९०५ का वर्ष") और बारहवीं ("१९१७ का वर्ष") सिम्फनियों के बिम्बविधान में प्रकट की गयी है। लेनिनग्राद के प्रतिरक्षकों को समर्पित कारुणिक रूप से वीरतापूर्ण सातवीं सिम्फनी ने दुनिया भर में गहरा प्रभाव डाला था। महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के कठोर दिनों में इसका वादन कई कन्सर्ट हालों में किया गया और रेडियो से इसका प्रसारण किया गया, यहां तक कि घेरे में लिये गये नगर में भी जिससे लोगों का मनोबल बढ़ा और विजय में उनका विश्वास सुदृढ़ हुआ।

भजन और कथा काव्य विशेष लोकप्रियता अर्जित कर चुके है। इस सगीत शली की अत्यधिक उत्कृष्ट रचनाए हैं प्रोकोफियेव की रचना "शान्ति की सुरक्षा करते हुए" (१९५०), यू शापोरिन की रचना "पतग कब तक चक्कर काटेगी" (१९६३) स्विरिदोव की कविता "सेर्गेई येसेनिन की स्मति मे" (१९५५) और 'कारुणिक भजन" (१९५६) तथा वी रुविन की रचना "आधी के गीत" (१९६१)।

अनेक घरेलू सगीत रचनाओ म से शोस्ताकोविच द्वारा बायलिन बाजे (सेलो) पर बजाए जान के लिए रचित सोनाटा, ११ चतुर्वाद्य और पचक का उल्लेख किया जाना चाहिए।

दुनायव्स्की, एम ब्लान्तेर, ए अलेक्सान्द्रोव, पोक्रास्स बन्धुओ, वी मोरोउसोव, ए नोविकोव, यू मिल्युतिन, टी ख्रेनिकोव, वी सोलोव्यव सेदोई ए पारव्मुतोवा, एन बोगोस्लोव्स्की, ए ओस्त्रोव्स्की, ई कोलमानोव्स्की, ए पत्नोव और अय सोवियत सगीतकारो के गीतो को व्यापक लोकप्रियता प्राप्त है।

कसट प्रदशन बहुत लोकप्रिय हैं और बडे पमान पर आयोजित किय जाते हैं। प्रस्तुतकता कलाकार दश की १२६ सगीतप्रेमी सासाइटियो और सगीतज्ञो के २०२ दलो के सदस्य है जिनम ४२ सिम्फनी आर्केस्ट्रा, ५५ नृत्य और गायन मडलिया और ३४ भजन मण्डलिया शामिल है। य मडलिया हर साल करीब ४ ००,००० कसट कायक्रम प्रस्तुत करती है जिन्हे देखने सुनने के लिए करीब १३ कराड लोग जाते है।

सिनेमा लेनिन ने १९१९ मे एक फरमान हस्ताक्षरित किया जो फोटोग्राफिक तथा सिनेमा उद्योग के राष्ट्रीयकरण से सम्बन्धित था। उद्देश्य था सिनेमा को राजनीतिक और सास्कृतिक शिक्षा के एक शक्तिशाली साधन मे बदलना, इसे समस्त मेहनतकश जनता की पहुच मे लाना। सोवियत सिनकला तथ्य सबधी सूचना को प्रस्तुत करने के अत्यधिक प्रभावशाली रूप के बतौर समाचार-दशन के साथ शुरू हुई।

तीसरे दशक के मध्य म सोवियत सिनेमा ने विश्व सिनेकला म एक प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया। विदेशी फिल्म आलोचक "जगी जहाज पोतम्किन' (१९२५) का आज तक "किसी भी दश की, चिरस्थायी सर्वोत्तम फिल्म" मानत है। इस और सोवियत सिनकला के प्रारम्भ मे निर्मित अय फिल्म क्लासिक्स (आइसटाइन की "अक्तूबर', पुदोव्किन की "मा" आदि) की सफलता का रहस्य यथाथवाद और क्रान्तिकारी कारुणिकता के उनके सम्मिश्रण मे, २०वी सदी की मुख्य विषयवस्तु—क्रान्ति—की उनकी गहन तथा सजीव कलात्मक व्याख्या मे निहित है।

सोवियत सिनकला शुरू से ही बहुजातीय कला के तौर पर विकसित हुई। सघटक जनतत्रो मे भी प्रतिभाशाली फिल्म निर्देशक प्रकट हुए दोवझेको उक्राइन म, शेंगेलाया और चियाउरेली जार्जिया म और बेक-नाजारोव आर्मीनिया म। दोवझेको न, जिन्होने काव्यात्मक फिल्म ("ज्वेनिगोरा", १९२७ 'शस्त्रागार' १९२९, "धरती", १९३०) की सम्भावनाओ को प्रदर्शित किया राष्ट्रीय विनोदशीलता की अतिसवेदनशील कहानी के साथ क्रान्तिकारी उल्लास और घोर यथाथवाद का समन्वय प्रस्तुत किया।

१६३० के वर्षों की सर्वोत्तम फिल्मों में एक वासिल्येव ब धुओं की "चापायेव" ने बडे प्रभावक ढग से गृह युद्ध म जनता की नेता और सगठनकर्ता के रूप म पार्टी की भूमिका पर प्रकाश डाला और क्रान्तिकारी नायक का सजीव, सही अर्थों मे लोकप्रिय चित्र प्रस्तुत किया। वीरगाथा सम्ब धी अपनी व्यापकता और ऐतिहासिक विषय वस्तु के निष्ठापूर्ण प्रस्तुतीकरण के लिए प्रसिद्ध अन्य ऐतिहासिक क्रान्तिकारी फिल्मो म से कुछ फिल्मे थी जी कोजित्सेव और एल त्राउबेग द्वारा निर्मित मक्सीम की तीन फिल्म इ० दजीगान की ' हम क्रानस्तादत के है , ए दोवझेंको की "श्चोर्स", आई खेइफित्स और ए जार्खी की 'बल्टिक डिप्टी ' और एस० युत्केविच की "बन्दूक वाला आदमी ।

मिखाइल रोम्म की लेनिन स सम्बन्धित फिल्मे—' लेनिन अक्तूबर मे ' और लेनिन १६१८ म ' (१६३७ १६३६)—विशेष महत्त्व की थी।

समाजवाद के अन्तगत नये मानव का व्यक्तित्व निर्माण एस गेरासिमोव की 'सात बहादुर ' (१६३६) और कोम्सोमाल्स्क ' (१६३८), ए जार्खी और आई खेइफित्स की "सरकार का सदस्य ' (१६४०) और एल लुकोव की "महान जीवन" (१६४०) फिल्मो का विषय था। उल्लेखनीय सुखान्त फिल्म थी जी अलेक्सान्द्रोव की 'तमीजदार साथी ' (१६३४), सरकस' (१६३६) और "वोल्गा वोल्गा" (१६३८) और आई० पीरियव की अमीर दुलहन (१६३८), 'ट्रैक्टर चालक" (१६३६) और 'सूअर चराने वाली लडकी और चरवाहा (१६४१)।

महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान सोवियत कमरामन हमेशा लडाई के मदान मे रहे क्योकि उन्होने निकट स इतिहास की नाटकीय घटनाओ को रिकार्ड करने की कोशिश की। इस काम म बहुतो की जानें गयी। मोर्चे से लिये गये इन शाटो का इस्ते माल करके फिल्म निर्देशको एल वार्लामोव और आई कोपालिन ने वत्त चित्र 'मास्को के निकट जमन फौजो की पराजय ' (१६४२) का निर्माण किया। फिल्म निर्देशक आर कार्मेन न, जिन्होने स्वय अपने कमरामन के तौर पर भी काम किया, ' लेनिनग्राद–सघष म ' (१६४२) और नाजी युद्ध-अपराधियो द्वारा किय गये घोर अपराधो का भण्डाफोड करने वाले नुरेम्बग मुकदमे से सम्बन्धित वत्त चित्र ' जनता का फसला" प्रस्तुत किया। आई पीरियव की ' पार्टी की क्षेत्रीय समिति का सचिव' (१६४२), एफ एर्म्लेर की 'वह अपनी मातभूमि की रक्षा करती है ' (१६४३) और एम दोन्स्काई की इन्द्रधनुष" (१६४४) नाजी हमलावरो के विरुद्ध सोवियत जनता के वीरतापूर्ण सघष को समर्पित फिल्म थी।

युद्धोत्तर वर्षों म सिनेकला के क्षेत्र म बहुत से प्रतिभासम्पन्न चलचित्रकारो का आविर्भाव हुआ और फिल्मो के निर्माण म अच्छी खासी वद्धि हुई। सोवियत फिल्म कला के क्षेत्र म निम्नलिखित व्यक्तियो को लेनिन पुरस्कार प्रदान किया गया 'हैमलेट"(१६६५) के लिए फिल्म निर्देशक जी कोजित्सेव, अभिनेता आइ स्मोक्तुनोव्स्की को, ' सनिक का पिता ' (१६६६) के लिए अभिनेता एस जाकारियाद्जे को, अध्यक्ष' (१६६६) के

लिए अभिनेता एम उल्यानोव को, फिल्मी वीरगाथा "मुक्ति" (१९७२) के लिए फिल्म निर्देशक और कथा लेखक वाई ओजेरोव को, कथा लेखक वाई बोन्दारेव, ओ कुर्गानोव, कमरामन आई स्लाब्नविच, कलाकार ए म्याग्कोव को। सोवियत सघ के राज्य पुरस्कार "लनिन पोलण्ड म' (१९६७) के लिए फिल्म निर्देशक एम युत्केविच और कथा लखक ई गाब्रिलोविच को, कोई मरना नही चाहता था" (१९६७) के लिए फिल्म निर्देशक वी जालाकेविसियस, कमरामन आई मिसियस, अभिनता डी बानियोनिस और वी ओया को, मा का दिल" (१९६८) के लिए फिल्म निर्देशक एम दास्कोई कथा लेखक एस वोस्क्रेसेन्स्काया अभिनत्री ई फादोवा को "आओ सोमवार तक इतजार करें (१९७०) के लिए फिल्म निर्देशक एस रोस्तोत्स्की, कथा लखक जी पालोत्स्की कमरामन वी शुम्स्की का कलाकार वी दुलकोव अभिनेता एन मशिरोवा और वी तिखोनाव का 'झील के पास' (१९७१) के लिए फिल्म निर्देशक और कथा लखक एस गरासिमाव कमरामन ए रापोपोत, कलाकार पी गालादजेव (मरणोपरात), अभिनेता एन बेलोरवोस्तिकोवा वी शुक्शिन, ओ याकाव को, "कत्ल का मुजरिम' (१९७१) के लिए फिल्म निर्देशक वी वोल्चेक कथा लेखक ए अग्रानाविच, अभिनत्री ई कोजेल्कावा को प्रदान किये जा चुके है।

सोवियत सघ म कथा और वत्त चित्रा के अतिरिक्त ३९ फिल्म स्टुडियो बडी सख्या म जन विज्ञान और शक्षिक रूपक और कार्टून (हास्य-व्यग्य चित्र) फिल्मा का निर्माण करते है। १९७१ म १८१ कथा चित्रों के अतिरिक्त उन्होन ३७ पूरी लम्बाई की जन विज्ञान फिल्म और वत्त चित्र, ११०२ लघु फिल्म और ११६७ समाचार दशन निर्मित किय।

सोवियत सघ में स्थापित सावजनिक फिल्म प्रोजेक्टरो की सख्या १ ५७,२०० है, इनम से १,३३,१०० देहातो म हैं। हर रोज १३ १४ करोड लोग सिनमा देखने जाते हैं, अथात साल म ४ अरब ७० करोड लोग फिल्म देखत है।

सोवियत चलचित्रकारो का काम सोवियत सघ की मत्रिपरिषद की सिनमाकला की राज्य समिति (गोस्किनो) द्वारा निर्देशित होता है। सभी चलचित्रकार सोवियत सघ के फिल्म निर्माता सघ के सदस्य ह। चलचित्रिकी के सभी क्षेत्रा म अनुसधान काय कलाओ के इतिहास सस्थान मे, मास्को स्थित अखिल सघीय फोटोग्राफिक और सिनमा अनुसधान सस्थान मे और स्टुडियो म, मुद्रण प्रयोगशालाओ म होता है। सभी विशिष्टताओ के सिनमाकर्मी चलचित्रिकी के अखिल सघीय राज्य सस्थान और अय उच्चतर तथा विशेषीकृत माध्यमिक शक्षिक प्रतिष्ठानो मे प्रशिक्षित किय जात हैं।

सोवियत फिल्मकर्मी समाजवादी देशा तथा अय देशा के फिल्मकर्मियो के साथ सहयोग करत हैं। वे विदेशी हमपेशा लोगो के साथ मिल कर सयुक्त रूप मे फिल्म निर्मित करत हैं, अतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहा (जसे कान, वनिस और कार्लोवी वारी म आयोजित) म भाग लेते हैं, इत्यादि।

हर दो साल म एक बार मास्को एव विश्व फिल्म समारोह का आयोजन करता है। १९७३ म ८६ देशा के एक हजार फिल्म कर्मिया न आठवें मास्को समारोह म सहभागिता की थी जिसका आदर्श वाक्य था 'फिल्म कला म मानवतावाद के लिए राष्ट्रा के बीच मित्रता और शान्ति के लिए।" समारोह कार्यक्रमा के अन्तगत पूरी लम्बाई के कथा चित्र लघु फिल्मा, बाल फिल्मा की प्रतियोगिताओ की और सिनेमा की मूल समस्याओ पर विचार विमर्श के लिए गोष्ठिया के आयोजन की व्यवस्था रहती है।

सकस सोवियत सकस अतीत की अपनी जनवादी परम्पराओ को सफलतापूर्ण ढग स विकसित कर रहा है। सधाये हुए जानवरा, घोडा के करतब शामिल करन वाल परम्परागत खेलो के अतिरिक्त कलाबाज और बाजीगर तथा अपन सामाजिक हास्य व्यग्य के लिए प्रसिद्ध विदूषक बहुत लोकप्रिय हो चुके है। पोपोव, कारादश और निकु लिन इस कला मे अग्रगण्य है।

पशुओ को प्रशिक्षित करने मे प्रसिद्ध हैं वी एदेर, आई बुग्रिमावा, ए बुम्लायव, ए अलेक्सान्द्रोव, वी जापादनी एम नाजारावा, वी फिलातोव और आई रुबान। जादूगर एमिल कियो और उनक बेटा इगार और एमिल के नाम विश्वविख्यात हैं। तनी रस्सी पर चलने वाला का दल, जिनम अग्रगण्य हैं वी वोल्झान्स्की, भी समान रूप स लोकप्रिय है।

सोवियत सघ के बहुत से जनतत्रा मे अपने जातीय सकस हैं। इनम उजबक, उक्राइनी, अजरबजानी, बेलोरूसी, लिथुआनियाई और आर्मीनियाई जातीय सकस शामिल हैं। य सकस अपने प्रदशन कायक्रमो मे लोक सकस की परम्पराओ से प्रेरणा लेते है। जातीय सकसो के सर्वोत्तम कलाकारो मे उजबेकिस्तान का ऊ टो पर कलाबाजी के करतब दिखाने वाला कादीर गुल्याम दल, तुवा के आस्काल-ऊल बाजीगर दाघस्तान का रसोव्का कलाबाज दल और बेलोरूस के जादूगर ए शाम उल्लेखनीय हैं।

सोवियत सघ मे ५० स अधिक स्थायी और १४ सफरी सकस, १३ पशु सकस और ५० "स्टेज पर सकस" नाम वाली मडलिया हैं जो १ करोड ८० लाख से अधिक दशका के लिए अपने कायक्रम प्रस्तुत करती हैं। सोवियत सघ म एक सकस स्कूल, नय सकस कायक्रम तयार करन के लिए एक स्टूडियो और एक सकस सग्रहालय है। विविध मनोरजन और सकस नाम की एक पत्रिका भी है। सोवियत सकस विदेशा म अपन कायक्रम प्रस्तुत करते है जो हमेशा बडे आकषण वाल होते हैं।

शौकिया प्रतिभा सोवियत सघ म नाटय, समवेत-गायन, सगीत और बले कला के बहुत से शौकीन हैं। देश भर म एस लोग भारी सख्या म मौजूद हैं जिनका शौक नाचना, गाना, कविता पाठ करना या लोक वाद्य सहित सभी प्रकार के वाद्या का वादन करना है। ये कलाप्रेमी विभिन्न शौकिया प्रतिभा दलो म एकताबद्ध हैं। एस करीब ४,००,००० दल हैं जिनकी कुल सदस्य सख्या १ करोड २० लाख से अधिक है। शौकिया प्रतिभा दल कारखाना, शक्षिक प्रतिष्ठानो, कार्यालया सेना दस्ता और सामू

हिक तथा राजकीय फार्मों मे मौजूद हैं। इनमे हर कोई भाग ले सकता है। दलो का निर्देशन या तो अनुभवी शौकिया कलाकार या फिर पेशावर कलाकार करते है।

चित्रकला सोवियत चित्रकला जो जनता के जीवन और कम्युनिज्म के लिए उसके सघर्ष से निकट रूप से सम्बद्ध है और जो इस कारण लोगो को व्यापक रूप से आकर्षित करती है, १६२० के वर्षों मे विकसित होनी शुरू हुई। यह वह समय था जब समाजवादी यथार्थवाद के सद्धान्तिक तथा कलात्मक नियम रूप धारण कर रहे थे और चित्रकला के क्षेत्र मे नये विषयो और नयी शैलियो की तलाश जा रहा था जिसका सोदाहरण प्रतिपादन एम ग्रेकोव और ए देइनेका की कला ने किया, जिन्होने ऐतिहासिक क्रान्तिकारी चित्र चित्रित किये। पुरानी पीढी, क्राति पूर्व की पीढी के चित्रकार जैसे एस मिल्युतिन, के युओन के पेत्रोव वोदकिन और पी कोचालोव्स्की ने नयी ओजस्विता अर्जित की, नये सिर से प्रेरणा प्राप्त की।

जनगण ने, उन जनगण ने भी जिनके पास क्रान्ति से पहले चित्रफलक नही थे, उदाहरणार्थ, मध्य एशिया के जनगण चित्रकला के स्वय अपने स्कूल विकसित करने शुरू किये। सद्धान्तिक अर्थ, चरित्रो का प्रतीकीकरण और आशावाद सोवियत चित्रकला के अनिवार्य लक्षण हैं जो अपने त्रिविम, स्थानिक और भावात्मक रग प्रभावो को प्राप्त करने के लिए और इसानी चरित्रो को मनोवैज्ञानिक गहनता प्रदान करने के लिए विधियो की विविधता काम मे लाती है। रूप चित्रकला मे चरित्र की रचनात्मक भावना को व्यक्त करने पर बल दिया जाता है जबकि प्राकृतिक दृश्य चित्रकला म इसानी प्रयास के माध्यम से प्रकृति के कायापलट के विषय के साथ साथ सुललित भाव सम्मिलित रहता है। शैली चित्रकारो का विषय है, सुदरता और लोगो के रोजमर्रा के जीवन का महत्व। राष्ट्र के इतिहास की विशिष्ट घटनाओ को चित्रित करने वाले ऐतिहासिक क्रातिकारी चित्रो का बडा सामाजिक महत्व है। चित्रकला सभी सघटक जनतत्रो मे फल फूल रही है।

सोवियत कलाकारो की सर्वोत्तम कृतियो मे स एस गरासिमोव को उनके चित्रो के सग्रह 'रूसी भूमि' (१९६६) के लिए ए प्लास्तोव को उनके चित्रो "सामूहिक फाम गाव के लोग" (१९६६) के लिए, वाई पिमेनोव को 'नय जिले' (१९६७) के लिए लेनिन पुरस्कार प्रदान किया गया। सोवियत सघ के राज्य पुरस्कार आई क्लीचेव को चित्रो के सग्रह 'मेरा तुर्कमेनिया" (१९६७) के लिए, वी ईवानोव को 'मूसी घास बनाना', "तम्बू मे' "परिवार' (१९४५), 'रूसी महिलाए 'दोपहर का भोजन"(१९६८) के लिए टी सालाखोव को "मरम्मत कर्मी', 'सगीतकार के कारायव का व्यक्ति चित्र', "कस्पियन सागर के तट पर" (१९६८) के लिए प्रदान किये गये।

मूर्तिकला सोवियत सघ म मूर्तिकला के सभी रूपो का, पोर्ट्रेट, शैली प्रधान ऐतिहासिक, अलकरणमूलक और पशु सहित, प्रतिनिधित्व है। १९१८ म लेनिन ने शिक्षिक पग के तौर पर क्रातिकारियो, वैज्ञानिको और सास्कृतिक क्षेत्र के कर्मियो

स्मारको की स्थापना की एक योजना का विशदीकरण किया। इस योजना ने बुतनराशो को शक्षिक उद्देश्य की हित पूर्ति करने वाली और साथ ही महान सामाजिक महत्व वाली कृतियो की रचना करने के लिए प्रेरित किया। स्मारकीय मूर्तिकला (स्मारक, कीर्ति स्तम्भ और मूर्ति वास्तुशिल्पीय समुच्चय) सोवियत सघ म इस कला के विकास की मुख्य प्रवत्ति है। स्मारकीय मूर्तिकला के क्षेत्र म पहली सफलताए एन आन्द्रेयव, आई शाद्र एस मेकु रोव, एस लेवदेवा और एम मानिजेर के नामो स जुडी हुई है। वी मुखिना ने एक मूर्ति समूह मजदूर और सामूहिक फाम की किसान लडकी" परिस मे १६३७ मे आयोजित विश्व मेले के लिए निर्मित किया जो सोवियत समाज का प्रतीक माना जाने लगा।

बहुत से सोवियत मूर्तिकारो ने महान देशभक्तिपूण युद्ध मे जनता की वीरता का कीर्तिगान करने वाले स्मारक और फासिज्म के अत्याचारो का शिकार बन लोगो की स्मृति को स्थायी बनाने वाले स्मारक बनाने का लक्ष्य अपने सामने रखा। इस सिल सिले मे सोवियत सघ म मूर्ति समूहो बुतो और आवक्ष मूर्तियो (एन तोम्स्की एम मानिजेर और अन्य) सहित बहुत से स्मारक स्थापित किये जा रहे हैं। ई वुचेतिच ने बर्लिन मे एक प्रभावशाली समुच्चय की रचना की है। सोवियत मूर्तिकला की सर्वोत्तम कृतियो मे से उल्लेखनीय है वोल्गोग्राद मे स्थापित प्रभावशाली स्मारकीय समुच्चय 'स्तालिनग्राद युद्ध के वीरो को' (इ वुचेतिच लेनिन पुरस्कार, १६७०), सालास्पिल्स म उस लातवियाई कस्बे मे फासिस्ट आतक के शिकार हुए लोगो को समर्पित स्मारकीय समुच्चय (जी असारिस) और बलोरूस मे स्थापित 'खातीन' स्मारक (वाई ग्रादोव)।

लेनिन पुरस्कार (१६७२) लेनिन को समर्पित स्मारक के लिए एन तोम्स्की को और सोवियत सघ का राज्य पुरस्कार (१६७०) उफा म सालावात युलायेव को समर्पित स्मारक के लिए एस तावासियेव को प्रदान किया गया।

एम अनिकुशिन ए किबालिकोव एल केर्बेल और जी जोकुबोनिस रचित मूर्तिया अपने लोकप्रिय आकपण के लिए प्रसिद्ध हैं। वे लोगो के विचारो और जिंदगी की गहरी समझ के द्योतक है। स्टूडियो मूर्तिकला मे लाइन और कम्पोजिशन के सिल सिले मे नये समाधान तलाशे जा रहे हैं जिनके प्रतिनिधिगण विषय के मनोवज्ञानिक निरूपण के सिद्धात के जन्मदाता एस कोनेन्कोव और ई बेलाशोवा के पदचिह्नो का अनुसरण कर रहे है।

हस्तशिल्प सोवियत सघ के अधिक लोकप्रिय हस्तशिल्प हैं रूसी सघ मे लकडी, पत्थर, हड्डी का महीन काम, प्रलाक्षा का काम, भाण्डकम, कढाई, धातु उत्कीणन और कालीन निर्माण, उक्राइन म भाण्डकम और काष्ठ का जडाऊ काम, बलोरूस म भाण्डकम और कशीदाकारी, उजबेकिस्तान म कशीदाकारी, भाण्डकम और काष्ठ व पत्थर पर नक्काशी, आर्मीनिया अजरबजान, मोल्दाविया और तुर्कमेनिया म कालीन नाई, जाजिया मे धातु उत्कीणन, भाण्डकम, लकडी और चमडे का महीन काम और

बुनाइ। दस्तकारी की बहुत सी वस्तुओं को विश्वव्यापी लोकप्रियता प्राप्त है—उदाहरण के लिए, पालेख और फेदास्किनो के प्रलाक्षा चढे डिब्बे, खोख्लोमा के रंग हुए मिट्टी के बरतन, दीम्कोवो के खिलौने, वोलोग्दा के कढाई कम, उत्तरी कावेशिया की उत्कीणित चान्दी, उक्राइनी "कुमानत्स" जग और तेक्नि कालीन को।

अधिकतर दस्तकार सहकारी संघो म संगठित हैं और उनकी कला वस्तुए मुख्यत कला प्रदर्शनी कक्षा और उपहार दुकानो के जरिये बेची जाती हैं।

वास्तुकला देश म समाजवादी पुनर्निर्माण न जिसम भूमि पर व्यक्तिगत स्वामित्व का उन्मूलन और निर्माण योजना की राजकीय पद्धति का लागू किया जाना शामिल था वास्तुकला को समाज की सेवा म लगा दिया।

देश के उद्योगीकरण का काम औद्योगिक निर्माण मे प्रगति के साथ साथ चला। योजना के अनुसार देश भर मे निर्मित नय औद्योगिक केन्द्रो के गिद नगर उठ खडे हुए और पुरान कस्बे मूलत पुनर्निर्मित किये गये।

सोवियत वास्तुकला का इतिहास डिजाइन के अधिक अच्छे तरीको की निरन्तर तलाश का और निर्माण काय को सुव्यवस्थित करने के प्रयास का इतिहास है। सोवियत वास्तुकारो के प्रयास मानक डिजाइनें और आधुनिकतम सरचनात्मक तत्वो को सामने लाने और विकसित करने की दिशा म निर्देशित हैं।

जो चीज आधुनिक सोवियत वास्तुकला की विशिष्टता है वह है उसकी स्थान की भावना, जितना अधिक सम्भव हो उतनी धूप और प्रकाश को आच्छादन की इच्छा और इमारत को वातावरण के प्राकृतिक परिवेश या वास्तुशिल्पीय समुच्चय के अभिन्न अंग के रूप मे बनाना। कृत्रिम माध्यम के तौर पर वास्तुकला की—जिसम लोग रहते, काम करते और सास्कृतिक कार्यकलाप चलाते है—मानवतावादी धारणा रिहाइशी जिलो के स्वतत्र विन्यास मे अभिव्यक्ति पाती है, जसे मास्को म नये चर्योमुश्की और कुन्त सेवो जिलो म, लेनिनग्राद के नोवो इज्माइलोव्स्की प्रोसपेक्त म, कियेव के रुसानोव्का और विल्नियस के जिमुनाई और लज्दिनाई जिलो म और मास्को क्रेमलिन के कांग्रेस के प्रासाद जसी सरचनाओ मे।

उल्यानोव्स्क मे वी मेजेन्तसेव तथा अन्या (लेनिन पुरस्कार, १९७२) द्वारा निर्मित लेनिन स्मारक समुच्चय एक उत्कृष्ट वास्तुशिल्पीय सरचना है।

सोवियत संघ म कस्बो निर्माण महायोजनाओ द्वारा नियंत्रित होता है जो पुरान कस्बो के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के दौरान ऐतिहासिक तथा वास्तुशिल्पीय महत्व के स्थानो का सुरक्षित बनाये रखना और इस प्रकार विभिन्न युगो की कलात्मक शलियो का सरक्षण सम्भव बनाती है।

ललित कलाओ की कृतियां—जसे मूर्तिकला सम्बन्धी स्मारक, उभारदार चित्र, भित्तिचित्र मोजेक—नगर के वास्तुशिल्पीय समुच्चयो की सुन्दरता म वृद्धि करती हैं।

सबसे अधिक ग्राहक सख्या वाले केन्द्रीय समाचारपत्र हैं प्रावदा (६६ लाख प्रतिया) इजवेस्तिया (८४ लाख) त्रूद (५६ लाख) सेल्स्काया झिज्न (७० लाख) कोम्सोमोल्स्काया प्रावदा (८४ लाख) और पायोनेर्स्काया प्रावदा (६८ लाख)।

मुख्य पत्रिकाए जिनके सस्करण बहुत बडी सख्या मे प्रकाशित होते है इस प्रकार है कम्युनिस्ट (सोवियत सघ की कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति की सद्धान्तिक पत्रिका) ओगोन्योक (एक सामाजिक राजनीतिक और साहित्यिक साप्ताहिक), नोवी मिर ज्नाम्या, ओकत्याब्र और इनोस्त्रान्नाया लितेरातुरा (लेखक सघ के तत्वावधान म प्रकाशित होन वाली मासिक पत्रिकाए) राबोनित्सा और क्रेस्त्यांका (महिलाओ की पत्रिकाए) नौका इ झिज्न और नौका इ रेलिजिया (मासिक) (ज्नानिय" सासाइटी द्वारा प्रकाशित पत्रिकाए), मुर्जिल्का, पायोनेर, स्मेना, युनोस्त और तेख्निका मोलोदेझी (बाल और युवक पत्रिकाए) और जा रुबेझोम (पत्रकार सघ द्वारा प्रकाशित विदेशी प्रेस की साप्ताहिक समीक्षा)।

सोवियत सघ का ग्रथ सूची केन्द्र अखिल सघीय पुस्तक सदन (१९१७ मे स्थापित) है जहा समग्र मुद्रित सामग्री सग्रहीत और पजीवद्ध की जाती है। सघ और स्वायत्त जनतत्रो म भी पुस्तक सदन मौजूद है। वे पुस्तक सार पत्रिका सार, समाचार पत्र सार, सन्दभ साहित्य, आदि प्रकाशित करते है।

टेलीविजन और रेडियो सोवियत सघ की मत्रिपरिषद की टेलीविजन और रेडियो की राज्य समिति सोवियत टेलीविजन और रेडियो का सचालन करती है।

टेलीविजन प्रसारण प्रणाली क अतगत इतना बडा क्षेत्र आता है कि वह देश की दो तिहाई से अधिक जनसख्या की आवश्यकता को पूरा करती है। कुल टेलीविजन टेली कास्टिंग समय ओसतन दिन म १६५६ घटे बठता है। पणाली के अतगत ६ केन्द्रीय टी वी चनल हैं जिनका कुल प्रसारण समय दिन म ३८ घट बठता ह।

दश म १२७ टी वी केन्द्र है। प्रत्यक का अपना अपना कायक्रम होता है। उनम से विशालतम है मास्को टी वी केन्द्र जिसका नाम अक्तूबर क्रांति की ५०वी जयती क नाम पर रखा गया है। टी वी कायक्रम प्रसारित करन के लिए थल और अतरिक्ष दोना ही सचार-साधनो का इस्तमाल किया जाता है। थल अभिग्रहण के तान-बाने के भीतर १४५ शक्तिशाली और ५६० कम शक्ति वाले प्रसारण केन्द्र और दुनिया की सबस लम्बी केबुल और रेडियो प्रसारण लाइनें शामिल है।

मास्को किएव, त्बिलिसी और १९७१ के अत स ताशकद, बाकू और लेनिनग्राद क स्टूडियो औसतन दिन म ५ घट रगीन कायक्रम प्रसारित करते हैं। केन्द्रीय टी वी स्टूडियो क रगीन कायक्रम देश के ६६ नगरो म प्रसारित किय जाते हैं।

सोवियत सघ सयुक्त सोवियत फ्रांसीसी रगीन टी वी परियोजना सेकाम ३ म सहभागिता करता है। सोवियत सघ एक अतरिक्ष टी वी और रेडियो सचार प्रणाली का परिचालन करता है जो सोवियत सचार उपग्रह ' मोलनिया" और दश के दूरवर्ती १ म स्थित "ओर्बिता" किस्म के ३७ थल केन्द्रो का प्रयोग करती है। "इटर

विजन" और "यूरोविजन" प्रणालिया बहुत से देशो के साथ टी वी कायक्रमो के आदान प्रदान मे समथ बनाती है।

केन्द्रीय रेडियो दिन म कुल मिला कर १४२ घटे के लिए ८ चनलो पर प्रसारण करता है। देश का कुल प्रसारण समय दिन म औसतन १०४० घट बठता है। सावियत रेडियो केद्र सोवियत सघ म वोली जान वाली ६५ भाषाआ मे और ५७ विदेशी भाषाआ म अपने कायक्रम प्रसारित करता है।

पुस्तकालय और क्लब सोवियत सघ म ३ ६० ००० पुस्तकालय है। वे सभी के लिए नि शुल्क है और सभी की पहुच म है। देश की करीब आधी आबादी, अर्थात लगभग १२ करोड लोग देश क पुस्तकालया का इस्तेमाल करते है। इनम १,२८,००० सामान्य पुस्तकालय है जिनम से ६० ७०० देहातो म है। देश म विशेषीकृत पुस्तकालय भी है जो वज्ञानिक तथा अय विशेष साहित्य (तकनीकी कृपि सबधी आदि) उपलब्ध करत है। स्कूलो के भी अपने पुस्तकालय है। सावियत सघ के पुस्तकाल्यो म कुल मिला कर ३ अरब ३० करोड पुस्तकें है।

प्रमुख सोवियत पुस्तकालय है मास्को स्थित लेनिन राजकीय पुस्तकालय जिसम २ करोड ५० लाख पुस्तकें पत्रिकाए और अय प्रकाशन हैं। इस पुस्तकालय मे हर वप २७,००,००० लोग आत है।

राज्य और ट्रेड यूनियन नयी पुस्तकें खरीदन के लिए पुस्तकाल्या को दी जान वाली अपनी निधारित धनराशि मे बराबर बद्धि कर रही है। इस प्रकार खरीदी जान वाली पुस्तको मे विदेशा म प्रकाशित हाने वाला वज्ञानिक तथा तकनीकी साहित्य शामिल रहता है। विदेशी प्रकाशन आदान प्रदान के अतगत भी प्राप्त हात हैं। लगभग १०० प्रमुख सोवियत पुस्तकाल्यो न १०० देशा के साथ आदान प्रदान सबधी करार सम्पन्न किय है। सोवियत पुस्तकाल्य कुल मिला कर विदेशा मे औसतन ६,०० ००० पुस्तकें और पत्रिकाए और लगभग ३० लाख एकस्व प्राप्त करत हैं। बदल म व विदेशा को एक लाख स अधिक पुस्तकें और पत्रिकाए तथा २५ लाख के करीब एकस्व भेजत है।

क्लब और संस्कृति प्रासाद तथा संस्कृति गह भी वज्ञानिक तथा राजनीतिक सूचना के प्रचार के महत्वपूण केद्र है।

देश म कुल मिला कर १ ३४,००० क्लब और संस्कृति प्रासाद तथा गृह हैं, जिनम स ८० प्रतिशत देहातो म है। सगीत नत्यकला, साहित्य सिनमा और नाटयकला म दिलचस्पी रखन वाले व्यक्तिया को अनक शौकिया कला दल और स्टूडियो तथा थियटर कम्पनिया अपनी सुविधाए प्रदान करती है। क्लब और इसी प्रकार के प्रतिष्ठान सम्बधित क्षेत्रा क विशेषज्ञा द्वारा निर्देशित होत है। क्लब अक्सर व्यावसायिक अभिनताआ, लखका और कलाकारा को मेजवान बनात हैं।

सावजनिक पाक सास्कृतिक तथा मनोरजन सुविधाए प्रस्तुत करत हैं। पाक की सुविधाआ का उपयोग करन के साथ-साथ लोग व्याख्यान सुन सकत है, कसट सुन

सक्त हैं आदि । सोवियत सघ म ८२३ पाक हैं जिनम वष म १ अरब लाग मास्कृतिक या मनोरजन सुविधाओ का उपयोग करने जात हैं ।

सग्रहालय सोवियत सघ म ११४४ सग्रहालय हैं जो वष म १० करोड से अधिक दर्शको को आकर्षित करत हैं । सग्रहालया के लिए धन की व्यवस्था राज्य करता है। प्रवेश या तो नि शुल्क है या फिर शुल्क मामूली रहता है । देश म एतिहासिक क्रान्तिकारी ऐतिहासिक, स्मारक और प्रकृति विज्ञान सबधी सग्रहालय, आचलिक अध्ययन सग्रहालय और कला तथा चित्र गलरिया हैं । राजकीय सग्रहालया के अतिरिक्त करीब ३,००० सग्रहालय एसे हैं जो सावजनिक आधार पर चलाय जात हैं ।

दुनिया भर मे विख्यात मास्को स्थित केन्द्रीय लेनिन सग्रहालय म क्रान्ति के अमर नता के जीवन तथा राजनीतिक, प्रशासनिक और वज्ञानिक कायकलाप का चित्रित करने वाली वस्तुए है । उल्यानोव्स्क, वह कस्बा जहा लेनिन का जन्म हुआ था, स्थित लनिन स्मारक समुच्चय, शुशेन्स्कोये (लेनिन का साइबेरियाई निवासन स्थल") गाव स्थित सग्रहालय आरक्षित क्षेत्र और लेनिन के नाम से सम्बद्ध अन्य स्थान लोगो के लिए पुण्य स्थल हैं ।

पूण रूप से सम्पन्न और दिलचस्प सग्रहा वाले अन्य सग्रहालया म माक्स और एगल्स सग्रहालय सोवियत सना सग्रहालय, बहुतकनीकी सग्रहालय, प्राच्य कला सग्रहालय, रूसी वास्तुकला सग्रहालय (मास्को) स्तालिनग्राद प्रतिरक्षा सग्रहालय (वोल्गाग्राद) लेनिनग्राद प्रतिरक्षा सग्रहालय, मास्को विश्वविद्यालय का मानव विज्ञान सग्रहालय लनिनग्राद स्थित मानवजाति विज्ञान सग्रहालय, सोवियत सघ की विज्ञान अकादमी का जीवाश्म विज्ञान सग्राहालय, जीव विज्ञान का तिमिर्याजेव सग्रहालय, साहित्यिक सग्रहालय और नाटकीय सग्रहालय उल्लेखनीय है ।

पुश्किन लेव तोल्स्तोय, दोस्तोयव्स्की स्तानिस्लाव्स्की, मायाकोव्स्की, चेखोव, गोर्की त्चाइकोव्स्की, शेव्चेन्को कोलास, त्सियाल्कोव्स्की और अन्य विशिष्ट विभूतिया क नामो से सम्बन्धित स्मारक सग्रहालय भी काफी दिलचस्प है ।

सोवियत सघ म १७२ कला सग्रहालय और चित्र गलरिया है । समृद्धतम गलरिया म से एक है मास्को स्थित त्रेत्याकोव गलरी, जिसम ३७ ००० कला कृतिया—चित्र मूर्तिया और रेखाकन—हैं जिनमे से कुछ ११वी सदी के है । यहा रूसी चित्रकारा की—आन्द्रेई रूब्लेव (१५वी सदी) से लेकर हमार विख्यात समकालीन कलाकारो तक की—सर्वोत्तम कला कृतिया मौजूद हैं ।

दूसरा प्रसिद्ध सग्रहालय विश्व के विशालतम सग्रहालया मे से एक लनिनग्राद स्थित हेर्मीताज है । इसम प्राचीन मिस्री कला, यूनानी और रोमन मूर्तिया, राफल, लियोनार्डो द विंसी, माइकेलएंजेलो, गियोर्गिआन, तितियन मुरिल्लो, वलासक्वज, गेन्सबोरो पौसिन, वाटेड्यू, रम्ब्राद्त, रूबेन्स और वान डिक के चित्र मौजूद हैं ।

सोवियत सघ म हर वष छोटी-बडी करीब ४ ००० प्रदर्शनिया आयोजित की जाती हैं । चलती फिरती प्रदशनिया जो हर वष कइ सौ समुदाया ज्यादातर ग्रामीण

समुदायो की सांस्कृतिक जरूरतो को पूरा करती हैं काफी महत्वपूर्ण है। सोवियत सघ विदेशो मे प्रदर्शनिया भेजता है और स्थायी रूप से विश्व प्रदर्शनियो म भाग लेता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक सम्पर्क आज सोवियत सघ का ११८ देशो के साथ किसी न किसी रूप म सांस्कृतिक सम्बन्ध मौजूद है और उनम से ७० देशो के साथ उसने सांस्कृतिक सहयोग के करार हस्ताक्षरित कर रखे है। हर वर्ष करीब १५ ००० अभिनेता, चित्रकार और संस्कृति के क्षेत्र के अन्य कर्मी दूसरे देशा का पर्यटन या यात्राए करते है।

१९७२ मे सोवियत सघ न विदेशो मे अभिनेताओ के १६७ दल, लम्बी अवधि के अनुबन्धा पर १५० विशेषज्ञ सांस्कृतिक कर्मियो, संस्कृति के क्षेत्र के करीब ७०० लब्धप्रतिष्ठ व्यक्तियो को भेजा जिन्होंने विभिन्न कार्यों मे शिरकत की और सहकर्मियो के साथ मुलाकातें की, आदि। १३० से अधिक सोवियत प्रदर्शनिया विदेशा म आयोजित हुइ।

सांस्कृतिक क्षेत्र के १७० स अधिक सोवियत विशेषज्ञ विदेशा म काम कर रहे हैं। इनम विकासशील देशा मे काम करने वाले ११० विशेषज्ञ शामिल हैं। काहिरा मे वे सगीत विद्यालय और उच्चतर बले सस्थान मे पढा रहे है, उन्होंने आपरा और बले मण्डलिया, एक सर्कस कम्पनी एक लोक नृत्य मण्डली और एक पुतली थियेटर स्थापित करन म भी मदद की है।

१९७२ मे ५४ देशा के करीब ५५० विद्यार्थिया ने सोवियत सगीत विद्यालया बले स्कूलो और संस्कृति तथा कलाओ के क्षेत्र म कर्मियो का प्रशिक्षण करन वाले इसी प्रकार के प्रतिष्ठाना म शिक्षा प्राप्त की। १९७२ मे सोवियत सघ विदेशा से आने वाले कलाकारो के १३२ विभिन्न दलो का मेजबान बना था जिन्होंने सभी १५ सोवियत जनतत्रो के १२४ शहरो म कन्सर्ट कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

सोवियत सघ ८६ देशो के साथ रेडियो कार्यक्रमो टलीविजन फिल्मो समाचार-दर्शन फिल्मो, सगीत रिकार्डिंगो और अन्य सामग्री का आदान प्रदान करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए अपने काम के दौरान सोवियत सघ का संस्कृति मत्रालय और उसके सगठन लेखको सगीतकारो कलाकारो, वास्तुकारो और पत्रकारो की यूनियनो, विदेशो के साथ मैत्री और सांस्कृतिक सम्बन्धो की सोवियत सोसाइटी सघ और विभिन्न मैत्री सोसाइटियो के साथ घनिष्ठ सम्पर्क बनाये रहते हैं।

धर्म और चर्च

सोवियत संघ का कोई भी नागरिक किसी धर्म को मानने या बिलकुल ही न मानने के लिए स्वतंत्र है।

सोवियत संघ के संविधान की धारा १२४ में कहा गया है "नागरिकों के लिए अन्त:करण की स्वतंत्रता सुनिश्चित बनाने के लिए सोवियत संघ में चर्च को राज्य से और स्कूल को चर्च से अलग किया जाता है। धार्मिक पूजा की स्वतंत्रता और धर्म विरोधी प्रचार की स्वतंत्रता को सभी नागरिकों के लिए मान्यता दी जाती है।"

राज्य विभिन्न धार्मिक निकायों के अन्दरूनी मामलात में दखल नहीं देता और इसी प्रकार ये निकाय भी राज्य के मामलों में दखल नहीं देते। एक भी चर्च राज्य से भौतिक या नैतिक समर्थन नहीं पाता।

व्यक्ति का धर्म उसके नागरिक जीवन को प्रभावित नहीं करता। एक भी सरकारी फार्म या कागज पर, चाहे वह पासपोर्ट हो, प्रश्नावली हो या जनगणना प्रपत्र हो, व्यक्ति को अपना धर्म, अगर कोई है कभी लिखना नहीं पडता। प्रसंगवश यह कहा जा सकता है कि यही कारण है कि सोवियत संघ में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों की संख्या निर्धारित करना मुश्किल है।

सभी धर्मों को समान अधिकार और सुयोग प्राप्त हैं—उनके आकार का भेद भाव किए बिना। सोवियत कानून केवल ऐसे धार्मिक दलों पर रोक लगाता है जो धर्म के कूटवेश में नागरिक के व्यक्तित्व और प्रतिष्ठा का अतिक्रमण करते हैं उसके स्वास्थ्य को क्षति पहुंचाते हैं या राज्य के कानूनों की अवज्ञा करने और अपने नागरिक या लोक हित सम्बन्धी कर्तव्यों का पालन करना अस्वीकार करने के लिए अपने अनुयायियों का आह्वान करते हैं।

सरकार के स्थानीय निकायों की सहमति से कोई भी धार्मिक संस्था या सोसाइटी, बशर्ते उसमें कम से कम बीस सदस्य हों उस भूमि के मुफ्त इस्तेमाल का हक प्राप्त कर सकती है जिस पर चर्च या अन्य कोई पूजागृह बना हो। स्वभावत सम्बन्धित भक्तगण रख रखाव और मरम्मत का खर्च देते हैं। पादरी और अन्य धार्मिक शिक्षक दान और धार्मिक अनुष्ठान के लिए प्राप्त फीस से बने कोष से पारिश्रमिक पाते हैं।

धार्मिक संस्थाएं अपनी सामयिक पत्रिकाएं प्रार्थना पुस्तक और अन्य धार्मिक साहित्य प्रकाशित कर सकती हैं। वे पूजाघरों और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए मोमबत्ती और अन्य विभिन्न वस्तुएं बनाने वाले कारखानों के लिए इमारतें किराए पर

ल सकती हैं बना सकती हैं या खरीद सकती हैं। विभिन्न धार्मिक सोसाइटियां और चर्चों की आमदनी और माल करमुक्त है।

विशालतम धार्मिक सम्प्रदाय निम्नलिखित हैं

रूसी परम्परागत चर्च इस चर्च पर सर्वोच्च प्रभुत्व समय समय पर आयोजित पादरियों की सभाओं का रहता है जो रूसी परम्परागत चर्च का धर्माध्यक्ष, मास्को और अखिल रूस का धर्माध्यक्ष निर्वाचित करती हैं। धर्माध्यक्ष धर्मसभा के सहयोग से पादरियों की सभाओं के बीच की अवधि मे सर्वोच्च अधिकार का प्रयोग करते हैं।

रूसी परम्परागत चर्च धर्म प्रदेशो मे विभाजित है। प्रत्येक धर्म प्रदेश का अध्यक्ष एक महाधर्माध्यक्ष होता है। इस चर्च के विदेशो मे भी—अमरीका, फ्रांस, आस्ट्रिया इस्राइल आदि—कई धर्म प्रदेश और अन्य धार्मिक सस्थान हैं।

धर्माध्यक्ष अलेक्सियूस की मृत्यु के बाद एक वर्ष से अधिक समय के लिए स्थानापन्न क्रुतित्स्की और कोलोम्ना के धर्माध्यक्ष तथा धर्मसभा के वरिष्ठ सदस्य पिमेन थे। २ जून १९७१ को वह सर्वसम्मति से मास्को के निकट जागोर्स्क स्थित त्रियक सेर्गियस मठ मे धर्मपीठ की सभा मे मास्को और अखिल रूस के धर्माध्यक्ष निर्वाचित हुए। उसी समय सभा ने ईसाइयो के नाम एक विश्वव्यापी अपील जारी की जिसमे उनसे ' एक और युद्ध के खतरे को रोकने के लिए और राष्ट्रों के बीच मित्रता, सद्भावना और सहयोग को सुदृढ करने के लिए अपने प्रयासो को समर्पित करने" का आह्वान किया गया।

जार्जियाई परम्परागत चर्च यह एक स्वायत्त सम्प्रदाय है जिसके अध्यक्ष हैं अखिल जार्जिया के धर्माध्यक्ष कैथलिको के धर्मपिता डविड पचम। वह जार्जिया की राजधानी त्बिलिसी म रहते हैं।

आर्मीनिया का ग्रिगरी चर्च सोवियत सघ या विदेशो मे रहने वाले आर्मीनियाई लोग इसी चर्च को मानते हैं। इसके प्रधान है वाजगेन प्रथम, जो सभी आर्मीनियाई कैथलिको के धर्मपिता है। वह आर्मीनिया की राजधानी येरेवान के बाहर स्थित इचमियादजिन गिरजे मे रहते हैं।

पुरातन विश्वासी या पुरातन धर्म पहले-पहल इसका आविर्भाव महाफूट के परिणामस्वरूप १७वी सदी मे हुआ। केन्द्रीय रूस, उक्राइन, बलोरूस, मोल्दाविया और बाल्टिक जनतन्त्रो मे इस सम्प्रदाय के मानने वाले लोग है।

इसलाम अधिकाश सोवियत मुसलमान सुन्नी हैं। इसके अलावा शिया भी हैं। देश म चार स्वतन्त्र धार्मिक केन्द्र है मध्य एशिया और कजाख़स्तान के लिए उजबेकिस्तान की राजधानी ताशकन्द स्थित मुसलिम बोर्ड जिसके अध्यक्ष हैं मुफ्ती जियाउत दीन बाबाखानोव, सोवियत सघ के यूरोपीय भाग और साइबेरिया के लिए बश्कीर स्वायत्त जनतन्त्र की राजधानी उफा स्थित मुसलिम बोर्ड जिसके अध्यक्ष है मुफ्ती शाकिर हियालेत दीनोव, उत्तरी काकेशस के लिए दागेस्तान स्वायत्त जनतन्त्र स्थित बुइनाक्स्क

लिम बोर्ड जिसके अध्यक्ष हैं मुफ्ती मोहम्मद हाजी युवानोव और ट्रांसकाकेशिया के लिए आजरबजान की राजधानी बाकू स्थित मुस्लिम बोर्ड जिसके अध्यक्ष हैं शेख उल इस्लाम गुनमान जादे अली आगा। सभी चारों बोर्ड सामुदायिक प्रतिनिधियों, मुसलमानों के सर्वोच्च धार्मिक अधिकारी वर्ग के सम्मेलनों द्वारा निर्वाचित किये जाते हैं।

सोवियत मुसलमान सामान्य समस्याओं पर विचार विमर्श करने और सामूहिक तीर्थ यात्राएं करने के लिए नियमित रूप से सम्मेलनों का आयोजन करते है।

रोमन कैथलिक चर्च इसके अनुयायी मुख्यतः पश्चिमी उक्राइन और पश्चिमी बेलोरूस बाल्टिक जनतंत्रों और रूसी संघ के कुछ भागों में मौजूद हैं। इसका कोई एक प्रशासी केन्द्र नहीं है। इसके पास पोप आश्रम धर्म प्रदेश और गिरजे हैं।

सुसमाचारी लूथरवादी चर्च एस्तोनिया, लातविया, में है। एस्तोनियाई धर्म संघ एक परिषद द्वारा नियन्त्रित होता है जिसके अध्यक्ष हैं आर्कबिशप टूमिंग। लातवियाई धर्म संघ सर्वोच्च चर्च सभा द्वारा नियन्त्रित होता है जिसके अध्यक्ष आर्कबिशप मातुलिस है।

सुसमाचारी ईसाई बपतिस्मा दाता इसका सर्वोच्च प्राधिकारी निकाय सुसमाचारी ईसाई बपतिस्मा दाता प्रतिनिधियों की सभा है जो तीन साल में कम से कम एक बार आयोजित की जाती है। यह सभाओं के दौरान सर्वोच्च प्राधिकार का इस्तेमाल करने के लिए सुसमाचारी ईसाई बपतिस्मा दाताओं की अखिल सोवियत संघ परिषद का निर्वाचन करती है। अध्यक्ष है इल्या इवानोव।

यहूदी धर्म प्रत्येक नगर में यहूदी प्रार्थना भवन हैं जहां यहूदी लोग जमा होते हैं—मास्को, लेनिनग्राद कियेव, मिंस्क, रीगा विल्नियस किशिनेव, ताशकंद त्बिलिसी स्वेर्दलोव्स्क, ल्वोव, ओदेस्सा और कई अन्य स्थानों पर ऐसे भवन हैं। यहूदी प्रार्थना भवन स्वतन्त्र रूप से काम करते है।

बौद्ध धर्म इसके अनुयायी बुर्यात, काल्मीक और तुवा स्वायत्त जनतंत्रों में और रूसी संघ के चिता और इर्कुत्स्क प्रदेशों में मौजूद हैं। सोवियत संघ के बौद्ध धर्मावलम्बियों के केन्द्रीय बोर्ड के अध्यक्ष हैं बांदिदो खम्बो लामा साम्ब्रायेव झाम्बाल दार्जी।

सोवियत संघ में मौजूद अन्य सम्प्रदायों में उक्राइन के ट्रांसकार्पेथियाई प्रदेश में स्थित धर्मसुधार चर्च, एस्तोनिया में एक संचालक द्वारा नियन्त्रित मैथडिस्ट सम्प्रदाय और सातवें दिन के अवतरणवादियों मालोकनी और मेन्नोनिटों के छोटे समूह शामिल हैं।

सोवियत संघ में चर्च को स्कूल से अलग रखा गया है और सोवियत संघ के किसी भी सामान्य शिक्षा प्रतिष्ठान में किसी प्रकार की कोई धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती। पादरी वर्ग का प्रशिक्षण करने के लिए चर्च के अपने शैक्षिक संस्थान है।

रूसी परम्परागत चर्च जागोर्स्क और लेनिनग्राद में दो धर्मविज्ञान अकादमियां और पांच धर्मविज्ञान विद्यालय चलाता है। कैथलिकों के रीगा और काऊनास में दो

विद्यालय, आर्मीनियाई चर्च की एक्मीयादजिन में एक धर्मविज्ञान अकादमी मुसलमानों का बाखारा में एक मदरसा और ताशकन्द में एक धर्मविज्ञान कालेज और यहूदी सम्प्रदाय का मास्को में एक येशिवा है। एस्तोनिया और लातविया स्थित लूथरवादी लोग पादरी का काम करने हेतु लोगों का प्रशिक्षण करने के लिए विशेष धर्मवैज्ञानिक पाठ्यक्रम चलाते हैं।

उपयुक्त धर्मवैज्ञानिक प्रतिष्ठान विद्यार्थियों को स्नातक और स्नातकोत्तर कार्य करने के लिए विदेशों के उपयुक्त केन्द्रों में भी भेज सकते हैं जैसे काहिरा स्थित अल-अजहर विश्वविद्यालय में, लीबिया स्थित एल्-बइदा के इस्लाम धर्म विश्वविद्यालय में, आक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज के धर्मविज्ञान स्कूलों में मेरफील्ड स्थित एगलीकन कम्युनिटी में और गाटिंगन (जर्मन संघ गणराज्य) के विश्वविद्यालय में। यहां केवल कुछ एक केन्द्रों का ही उल्लेख किया गया है।

सोवियत संघ में सर्वोत्तम ज्ञात धर्ममठ और धर्माश्रम है जागोर्स्क स्थित ट्रिनिटी सर्गियस धर्ममठ, पश्चिमी उक्राइन में पोचायेव धर्ममठ और प्स्कोव के बाहर स्थित प्स्कोव-पेचेर्स्क धर्ममठ, जो रूसी परम्परागत चर्च द्वारा चलाये जाते है, और एक्मीयादजिन स्थित आर्मीनियाई चर्च का धर्ममठ।

सोवियत धार्मिक संस्थाओं के विदेशों में अपनी किस्म के संगठनों के साथ व्यापक सम्पर्क हैं। पादरी लोग विशुद्ध धार्मिक मामलात से सम्बन्धित सम्मेलनों और कांग्रेसों में शिरकत करने के अतिरिक्त शान्ति की सुरक्षा के सवाल पर विचार विमर्श करने वाले मंचों में भी शिरकत करते हैं।

चर्चों की विश्व परिषद में रूसी और जार्जियाई परम्परागत चर्चों को, एस्तोनिया और लातविया के लूथरवादियों को, आर्मीनियाई, जार्जियाई और सुसमाचारी ईसाई बपतिस्मा-दाताओं को प्रतिनिधित्व प्राप्त है। सोवियत ईसाइयों को शान्ति के लिए प्राग ईसाई आन्दोलन के नाम से ज्ञात ईसाई चर्चों के अन्तर्राष्ट्रीय संघ में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। सुसमाचारी ईसाई-बपतिस्मा दाताओं को बपतिस्मा दाता विश्व संघ और यूरोपीय बपतिस्मा दाता संघ में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। बौद्धों को बौद्धों के विश्व फेलोशिप में प्रतिनिधित्व प्राप्त है। सोवियत संघ के धार्मिक संगठन यूरोपीय चर्चों के सम्मेलन में, लूथरवादी विश्व संघ के यूरोपीय कैथलिकों के सम्मेलन में, शान्ति के समर्थन के लिए एशियाई बौद्ध सम्मेलन में और इस्लाम सम्बन्धी अनुसंधान की अल्-अजहर अकादमी के काम में भाग लेते हैं।

राज्य और विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों के बीच सम्पर्क के लिए सोवियत सरकार ने धार्मिक मामलात की एक विशेष परिषद स्थापित की है। यह विशुद्ध धार्मिक मामलात में दखल नहीं देती और केवल इस बात पर ध्यान देती है कि सम्बद्ध सोवियत कानून का पालन हो।

अन्त करण की स्वतत्रता के, जिसकी गारटी सोवियत सघ का सविधान देता है सिद्धात का अर्थ केवल किसी भी धर्म को मानने की प्रत्येक नागरिक की स्वतत्रता ही नही है बल्कि अनीश्वरवादी अवधारणाओ को खुल कर प्रकट करने का भी अधिकार है। वैज्ञानिक अनीश्वरवाद आस्तिकों को अधविश्वासो से स्वय को मुक्त करने मे और विश्व तथा विश्व मे घटित होने वाली घटनाओ के बारे मे सही भौतिकवादी दृष्टिकोण विकसित करने मे मदद करता है। लेकिन यह बताना उचित होगा कि यह काम केवल समझाने बुझाने के जरिए मे ही किया जाता है, धार्मिक भावनाओ को ठेस पहुचाने या किसी के नागरिक अधिकारो का अतिक्रमण करने की इजाजत बिल्कुल नही है।

●